
182
शिवम सीरीज
अलबर्टो मोराविया
रोम की नारी
अलबर्टो मोराविया का विश्व प्रसिद्ध उपन्यास
एक ऐसी नवयौवना की कथा, जिसकी मां ने उसे एक कुशल मॉडल बनाना चाहा था, मगर उसकी महत्वाकांक्षाओं ने उसे 'रोम की नारी' बना मर्दों पर हुकूमत करने का गुर सिखा दिया।

विश्वप्रसिद्ध उपन्यास



रोम की नारी

"मगर इसमें बुराई क्या है?" गिसेला ने आश्चर्य से पूछा।

"हो सकता है आपकी दृष्टि में यह कोई बुरा काम न हो, लेकिन मेरी दृष्टि में यह अच्छा काम नहीं है। मैं ऐसा इसलिए नहीं कर सकती क्योंकि मैं गिनो से प्रेम करती हूं। यदि मैंने ऐसा करना स्वीकार कर लिया तो मैं गिनो को मुंह दिखाने योग्य नहीं रहूंगी।" मैंने दृढ़ स्वर में कहा।

"ऐड्रिना! बेवकूफ मत बनो! जब मैं कह चुकी हूं, अगर तुम यह प्रस्ताव स्वीकार करती हो, तो गिनो इस बारे में कुछ नहीं जान पायेगा!"

"क्या यह काम ठीक होगा?" मैंने गिसेला से कहा।

"ये सब ठण्डे दिमाग से सोचने वाली बातें हैं। थोड़ा मस्तिष्क पर जोर दो। यदि मुझसे कोई इस तरह प्रस्ताव करे, तो वह क्यों किसी को बताना चाहेगा।" गिसेला मेरी आंखों में आंखें डालकर बोली।

एक ऐसी नौयौवना की कथा, जिसकी मां ने उसे मॉडलिंग के पेशे में डालना चाहा, मगर उसने अपनी मां की भावनाओं से कहीं अधिक ऊंची उड़ानें भरना सीख लिया।

रवि पॉकेट बुक्स

33, हरी नगर, मेरठ-250 002

● *प्रकाशक :*

रवि पॉकेट बुक्स

33, हरी नगर, मेरठ-250 002

(0121) 2521067, 2531011

Website : www.ravipocketbooks.com

● *उपन्यास :*

रोम की नारी

● *मूल लेखक :*

अल्बर्टो मोराविया

● *सम्पादन :*

आबिद रिजवी

● *लेजर टाईप सैटिंग :*

एस.टी.एस. कम्प्यूटर्स

मेर० । फोन : 2402878

● *मुद्रक :*

आर० एम० आफसैट प्रिन्टर्स

मेरठ Ph. 515595

रोम की नारी

● *मूल्य :* **बीस रुपये केवल [20/-]**

विश्वप्रसिद्ध उपन्यास



रोम की नारी

अल्बर्टो मोराविया

विश्वप्रसिद्ध उपन्यासकार
अल्बर्टो मोराविया की, भावनाओं
से ओत-प्रोत विश्वविख्यात अमर कृति

रोम की नारी

इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि अपनी उम्र के सोलहवें साल में मैं बेहद खूबसूरत थी। मेरे मुख पर एक गजब का आकर्षण था। लम्बा गुलाबी चेहरा, सुराहीदार गर्दन, सुतवां नाक और गुलाब की नाजुक पंखुड़ियों का अहसास कराते सुर्ख होठ, पतली एवं लम्बी बांहें, झील सी गहरी आँखें, इन पर झुकी हसीन पलकें, कमान की तरह भौंहें, मेरी शख्सियत को संवारने में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहे थे।

मैं जब कभी भी किसी बात पर खुलकर हंसती खिलखिलाती तो मेरे आकर्षक दांत सच्चे मोतियों की तरह चमक उठते थे। मेरे घने-लम्बे सुनहरे बाल मेरे रूप-सौन्दर्य में और भी चार चाँद लगा देते थे। जब कभी मैं दर्पण में अपना रूप-यौवन निहारती, तो खुद को किसी सिनेमा की हीरोइन से कम न समझती थी।

अपनी मम्मी की दृष्टि में मैं रोम की सबसे खूबसूरत युवती थी। उनका विचार था कि उनकी लड़की से बढ़कर रूप-यौवन में कोई दूसरी लड़की पूरे रोम में हो भी नहीं सकती।

जब भी मेरी मम्मी मेरे रूप-यौवन की तारीफ करतीं, मैं शर्माकर नजरें झुका लेती थी। उन दिनों मुझे अपनी सुन्दरता के प्रति कोई विशेष लगाव न था। मैं इस तरफ से पूर्णत: लापरवाह थी। मम्मी की बातों को मैं सीरियस न लेती थी।

मगर आज जबकि मैं सम्पूर्ण यौवन से सम्पन्न हो चुकी हूँ, यौवन के मधुमास से गुजर रही हूँ तो मुझे लगता है कि मेरे बारे में मेरी मम्मी द्वारा किया गया मूल्यांकन बिल्कुल सही था। आज मुझे प्रतीत होता है कि एक जवान पुत्री के रूप-यौवन की सच्ची पारखी उसकी माँ ही हो सकती है। उसकी माँ से बढ़कर कोई दूसरा शुभचिन्तक हो नहीं सकता।

मेरी मम्मी का ख्याल बिल्कुल सही था, क्योंकि उस वक्त मेरी खूबसूरत टांगें पतली तथा सीधी, इनके ऊपर गोल घुमावदार नितम्ब, कमर लम्बी, छोटा सीना तथा चौड़े कंधे थे। मेरा पेट पूर्णत: सन्तुलित और संकुचित था। मेरी नाभि मेरे पेट की मांसल गहराई में छिपी हुई थी।

मैं जब भी अपनी मम्मी के सामने आती, तो वह मेरे रूप-यौवन की तारीफ करती न थकती थीं। उनका कहना था कि मेरे नख-शिख बहुत

चित्ताकर्षक हैं और मेरा सुडौल शरीर मेरी खूबसूरती को बढ़ाता है। वास्तव में औरत का पेट सपाट न होकर अन्दर को खिंचा हुआ होना चाहिए।

उन दिनों मेरे मखमली सीने पर दो यौवन-पुष्प तेजी से बढ़ रहे थे। ये काफी मांसल तथा ठोस थे, यद्यपि मुझे अपने इन थिरकते यौवन उभारों में एक अजीब सी हलचल तथा खिंचाव सा अनुभव होता था, फिर भी मैंने इन उन्मुक्त कपोतों को अपनी कसी हुई अंगिया में कैद करना सही न समझा।

जब मैंने अपने मादक उभारों को असामान्य रूप से बढ़ते हुए अनुभव किया तो मैंने अपनी समस्या मम्मी को बतायी। मम्मी ने मेरी आशंकाओं का निवारण करते हुए कहा, ''पुत्री! यह कोई फिक्र की बात नहीं है। सीने पर मांसल उभारों का होना एक स्त्री का सबसे बड़ा आकर्षण है। इनके न होने से नारी के रूप-यौवन का कोई अस्तित्व ही नहीं रह जाता। अपने शरीर सौष्ठव को कायम रखने के लिए सीने पर आकर्षक तथा उन्नत उभारों का एक खास योगदान होता है।''

स्नानागार में स्नान करते समय अथवा ड्रैसिंग टेबल के आगे खड़ी होकर जब भी मैं कपड़े उतारती, तो मुझे अपना निर्वस्त्र जिस्म किसी आकर्षक प्रतिमा की तरह लम्बा, छरहरा और हल्का-फुल्का नजर आता था। जब मैं फैन्सी तथा चुस्त पोशाकें धारण करती तो एक भरपूर नवयौवना दिखाई पड़ती थी।

मैंने जिन कलाकारों के लिए मॉडलिंग का पेशा अपनाया, वे मेरे जिस्म को खूबसूरत और आकर्षक मानते थे। वे मेरे अंग-प्रत्यंग को सांचे में ढला हुआ मानते थे। उन्हें मेरे सुगठित जिस्म में वे सभी खूबियां दिखाई देती थीं, जो कि एक अच्छी मॉडल-गर्ल में होनी चाहिएं।

अपने अविवाहित जीवन में मेरी मम्मी भी एक मॉडल गर्ल रही थीं। मुझे यौवन की दहलीज पर कदम रखते हुए देख उन्होंने मॉडलिंग के लिए प्रेरित किया। मम्मी ने मुझे एक रोज एक ऐसे कलाकार से मिलवाया; जिसको कि इस बारे में अच्छा खासा अनुभव था। इस कलाकार से मम्मी अच्छी प्रकार परिचित थीं।

एक बार यही कलाकार कुछ पोशाकें सिलवाने के लिए मम्मी के पास आया। मम्मी ने बड़ी समझदारी, परिश्रम तथा लगन के साथ ये पोशाकें सिलकर तैयार कीं। कलाकार को उनका काम पसन्द आ गया। बाद में मम्मी के पास पोशाकें सिलने के लिए आती रहती थीं तथा यह उनका पेशा बन चुका था।

मम्मी ने बीते दिनों को याद करते हुए बताया, ''पुत्री, तुझे भी मॉडलिंग का पेशा अपना लेना चाहिए। यह कोई बुरा कार्य नहीं है। इसमें उन्नति के अच्छे मौके मिलेंगे।''

पहली बार जब मैंने स्टूडियो में कदम रखा, तो मैं स्वंय को सहमी हुई सी अनुभव कर रही थी। मम्मी के द्वारा स्टूडियो जाने के लिए मैं उनके

द्वारा काफी दबाव डालने के पश्चात् ही उनके साथ जाने को तैयार हो सकी थी। मैंने वहाँ जाने से पहले मम्मी की इस बात का सख्त विरोध भी किया था, मगर उनके आगे मेरी एक भी न चली। मुझे मॉडलिंग के पेश में ढकेलने का श्रेय मेरी मम्मी को ही जाता है।

यह सिर्फ मैं ही जानती हूँ कि मुझे उस स्टूडियो में एक अजनबी कलाकार के सामने पहली बार निर्वस्त्र होते हुए कितनी शर्म एवं संकोच का सामना करना पड़ा था। कड़कड़ाती सर्दी में मेरा चेहरा शर्म से तमतमा रहा था। मेरा उफनता यौवन सर्दी की वजह से थर्रा उठा था। शर्म के कारण मैं अपनी झुकी हुई नजर उस अजनबी कलाकार से मिलाने की हिम्मत न बटोर सकी थी।

इस वक्त मेरी मम्मी भी मेरे साथ ही थीं, वह मेरे अंग-प्रत्यंग की अनूठी शोभा का बढ़-चढ़कर बखान कर रही थीं। वह मेरे सुन्दर अंगों को लक्ष करके कहने लगीं, "देखो! क्या सांचे में ढला हुआ शरीर है। पतली-पतली खूबसूरत टांगें, क्या घुमावदार नितम्ब हैं, तथा इसके मखमली सीने का तो कहना ही क्या, देखते ही ऐसा प्रतीत होता है मानो दो शंक्वाकार पर्वतों की चोटियाँ निरन्तर विकास की तरफ अग्रसर हो रही हों। क्या तुम्हें इतनी खूबसूरत लड़की मॉडलिंग के लिए आसानी से मिल जायेगी? मेरी लड़की लाखों में एक है। यह सम्पूर्ण यौवन एवं सुन्दरता की साक्षात् प्रतिमा है। इसके जैसी रूप-यौवन से सराबोर मॉडल-गर्ल तो तुम्हें पूरे रोम में नहीं मिल पायेगी।"

मम्मी के मुँह से बढ़-चढ़कर बातें सुनकर कलाकार हंसने लगा। मैं शर्म के मारे पानी-पानी हो चुकी थी। मम्मी को देखकर मुझे ऐसा महसूस हुआ कि उन्हें मेरे युवा शरीर की नुमाइश करने और मेरे अंग-प्रत्यंग की शोभा का वर्णन करने में तनिक भी लाज या संकोच महसूस नहीं हो रहा था। उन्हें मेरे अंग-प्रदर्शन व उसका वर्णन करने में गर्व महसूस हो रहा था।

मेरी मम्मी की भावनाओं की कद्र करते हुए कलाकार ने उन्हें विश्वास दिलाया, "निस्संदेह आपकी लड़की बेहद खूबसूरत है। हमारे मॉडलिंग के पेशे के लिए वह हर प्रकार से उपयुक्त रहेगी।"

सामान्य कद-काठी का यह कलाकार देखने में 40 साल के लगभग लगता था। यद्यपि मैं उसके लिए एक आकर्षण की चीज थी, फिर भी उसने मेरे निर्वस्त्र जिस्म को निर्विकार भाव से देखा।

बाद में मेरे बारे में भरपूर जानकारी हासिल करने के बाद ही वह मेरी तरफ आकृष्ट हुआ। वह हमेशा मेरे प्रति दया एवं सहानुभूति के साथ ही पेश आता था। मेरी खूबसूरती से यद्यपि वह अधिक प्रभावित था और मन ही मन मुझे चाहता भी था, मगर हम दोनों के मध्य पहले दिन वाली दूरी बरकरार रही। वह चाहकर भी मुझसे समीपता न बढ़ा सका।

जब कलाकार ने मेरी मम्मी को अपनी पुत्री के रूप-यौवन की बढ़-चढ़कर तारीफ करते देखा, तो उसने फौरन कागजों के ढेर में दबा एक

खूबसूरत फोटो निकालकर मम्मी की तरफ बढ़ाते हुए कहा, "यह देखो, बिल्कुल आपकी लड़की जैसी है, जरा गौर से देखो, हू-ब-हू वही है।"

इस फोटो को मैंने भी उत्कंठापूर्वक देखा। यह बिस्तर पर लेटी हुई एक अर्द्धनग्न नवयौवना का सुन्दर फोटो था। नवयौवना के पार्श्व हिस्से में एक मखमली पर्दा टंगा हुआ था, दो देवदूत उस पर पंखा झल रहे थे। हीरे की खूबसूरत अंगूठियाँ नवयौवना की नाजुक अंगुलियों में चमक रही थीं। चित्र के परिवेश से ऐसा अहसास होता था मानो कोई हुस्नोशबाब की मलिका अपनी आरामगाह में विश्राम कर रही हो।

चूंकि मैं एक साधारण लड़की थी इसलिए कलाकार के भाव को समझने में नाकामयाब रही। हमारी उत्कण्ठा को देखते हुए कलाकार ने कहा कि एड्रिना बिल्कुल इस नवयौवना की तरह सुन्दर है।

कलाकार बोला, "क्या तुम जानती हो कि यह सुन्दर तस्वीर डायना की है?"

"क्या कहा, डायना? कौन डायना?" मम्मी ने हैरानी से कहा।

"दरअसल यह फोटो सुन्दरता की देवी डायना का है।" कलाकार ने हमें समझाते हुए बताया।

यह सुनकर मम्मी के मुख पर खुशी झलकने लगी। उन्होंने मुझसे कहा कि मुझे भी इसी स्थिति में लेटना होगा। मेरी मम्मी ने अपने बीते हुए दिनों का जिक्र करते हुए कहा, "मैं भी अपने जमाने में रोम की सबसे ख्याति प्राप्त मॉडल रही हूँ, मगर मुझे शादी करने की वजह से इस कैरियर को त्यागना पड़ा था।"

ठीक तभी कलाकार ने मुझे एक पोज देते हुए सोफे पर लिटाया तथा कैनवास पर मेरी छवि को अंकित करने लगा। मेरे खूबसूरत शरीर की एक-एक बारीकी को वह अपने तजुर्बेकार हाथों से कैनवास पर उतार रहा था।

चित्र अभी अधूरा ही था कि मेरी मम्मी की आवाज अचानक कमरे में गूँजी, "मैं पूछती हूँ कि तुम मेरी बेटी को घंटे भर इस हालत में लिटाये रखने के लिए क्या दोगे?"

कैनवास पर दृष्टि गड़ाए हुए ही कलाकार ने मम्मी को एक मामूली सी रकम बतायी। इतना सुनते ही मम्मी के क्रोध की सीमा न रही। उन्होंने फौरन कपड़ों को मेरे निर्वस्त्र शरीर पर फेंकते हुए कहा, "उठो एड्रिना! अपनी पोशाक पहनो। अब यहाँ से निकल चलने में ही हमारी भलाई है, वास्तव में यहाँ आकर हमने बड़ी भूल की है।"

जैसे ही मैं अपने कपड़े पहनने लगी, कलाकार की हैरत का ठिकाना न रहा। वह अपना काम रोककर बोला, "आखिर बात क्या है एड्रिना? क्या पोज देने का मूड नहीं है?"

मेरे कुछ बोलने से पहले ही मम्मी फुंफकारी, "कुछ नहीं।" जल्दी का बहाना करते हुए मम्मी बोली, "बैठे-बैठे मेरा मुँह क्या देख रही हो,

जल्दी करो एड्रिना! हमें अभी बहुत से कार्य करने हैं।''

मम्मी के तेवर देखकर कलाकार ने घबराते हुए पूछा, ''देखो, इस प्रकार गुस्सा होने से कुछ न बनेगा, अगर काम करना चाहती हो, तो खुलकर बताओ कि मैं तुम्हें कितनी रकम दूँ ताकि तुम्हें कोई एतराज न हो। हमारे साथ काम करने के लिए आपसी तालमेल का होना आवश्यक है।''

एक भयानक अन्दाज में चिल्लाते हुए मम्मी बोली, ''हम इतने मूर्ख नहीं हैं कि इस मामूली सी रकम के लिए अपना कीमती वक्त बर्बाद करते फिरेंगे। अभी बाजार में हमारी गुडविल (साख) खराब नहीं हुई है। हम उन निकम्मे लोगों में से नहीं हैं जो छोटी सी रकम के लिए कलाकारों के आगे काम माँगते फिरते हैं। अभी मेरी बेटी की उम्र 16 साल ही है। इसके शरीर में गजब की चुस्ती, फुर्ती तथा अनूठा आकर्षण है। इस नायाब हीरे की परख व कद्र तो कोई विरला जौहरी ही कर पायेगा। इसके लायक धनराशि तुम्हारे पास हो ही नहीं सकती।''

मम्मी किसी से जब भी कुछ पाना चाहती हैं तो वे हमेशा क्रोध में चीखती-चिल्लाती हुई आपे से बाहर हो जाती हैं। अपने रोजमर्रा जीवन में वे बिल्कुल चुप रहती हैं। मैं उन्हें अच्छी प्रकार जानती हूँ। उन्हें बिना मतलब कभी किसी पर गुस्सा नहीं आता। लेकिन इच्छानुसार उपलब्धि न होने पर वे इस तरह चीखने लगती हैं मानो बाजार में खरीदार उनकी मेहनत अथवा चीज का सही मूल्यांकन न कर रहा हो।

इस बात को कलाकार भी भली-प्रकार जान चुका था कि पर्याप्त पैसा न मिलने की वजह से ही मम्मी आपे से बाहर हो रही हैं। समय की नजाकत को देखते हुए उसने विनम्रता पूर्वक मम्मी से पूछा, ''अभी मुझे यह तो बताइए कि मैं आपके लिए कितनी धनराशि का बन्दोबस्त करूं ताकि आप मुझे प्रसन्नतापूर्वक सहयोग दे सकें?''

मम्मी अपने गुस्से को नियन्त्रित करके बोलीं, ''मैं आपसे यह पूछना चाहती हूँ कि अभी-अभी आपने मुझे जिस मॉडल गर्ल का फोटो दिखाया था, क्या आपने उसे भी इस छोटी सी रकम पर अपने साथ कार्य करने के लिए तैयार कर लिया था?''

मम्मी के सवाल को सुनकर कलाकार हँसने लगा। अपनी हँसी पर काबू पाते हुए उसने कहा, ''भला आपको उससे क्या लेना-देना। यह तो उस वक्त की मॉडल गर्ल है, जबकि कलाकार लोग मॉडल को केवल एक बोतल शराब या एक जोड़ी दस्ताने में भी कार्य करने के लिए सहमत करा लेते थे।''

यह सुनते ही एक बार फिर से मम्मी का पारा आसमान पर हो गया। वह उसे फटकारते हुए बोलीं, ''हमारा तुम्हारे साथ तालमेल बिल्कुल बैठने वाला नहीं है। तुम मॉडल का शोषण करना चाहते हो। तुम इस प्रकार एक मॉडल के अद्वितीय रूप-यौवन का उपहास करके उसका मनोबल गिराना चाहते हो। अब हम तुम्हारे पास क्षण भर भी ठहरने वाले नहीं हैं।''

इस तरह मम्मी को आपे से बाहर होते देख कलाकार ने काफी

शलीनता से काम लिया। उसने उन्हें समझा-बुझा कर एक मुनासिब धन पर काम करने के लिए राजी कर लिया। कलाकार ने मेज की दराज से एक मोटी सी रकम निकालकर मेरी मम्मी के हाथों में थमा दी। मम्मी नोट गिनकर अब काफी प्रसन्न नजर आ रही थीं। उनके बाहर जाते ही कलाकार ने दरवाजा बन्द कर लिया । मैं फिर से पूरी तरह निर्वस्त्र होकर चित्र जैसी मुद्रा में सोफे पर लेट गई।

कलाकार ने चित्र बनाते वक्त मुझसे पूछा, ''क्या तुम्हारी मम्मी घर पर भी तुम्हारे साथ ऐसा ही बर्ताव करती हैं?''

''जी नहीं, वह मुझे बेहद प्रेम करती हैं, मुझे सबसे अधिक चाहती हैं।'' मैंने सोफे पर लेटे हुए ही जवाब दिया।

''तुम्हारी मम्मी के बारे में मेरी तो यह धारणा बन चुकी थी कि शायद वह धन-दौलत को ही सर्वाधिक महत्व देती होंगी। शायद माँ की ममता व प्यार-दुलार से वहँ तुम्हें हमेशा से वंचित ही रखती हों।'' कलाकार ने मेरी सुन्दर आँखों में झांकते हुए पूछा।

कलाकार की भ्रान्तिपूर्ण धारणा को दूर करने के लिए मैंने बताया, ''दरअसल यह बात नहीं है। वास्तव में मेरी मम्मी मुझे बहुत प्यार करती हैं। वह मुझे हर हाल में प्रसन्न देखना चाहती हैं। उन्होंने अपने जीवन में अनेक प्रकार के तजुर्बे किए हैं। गरीबी और दुःखों के साथ उन्होंने काफी संघर्ष किया है।''

इसके अतिरिक्त मैंने कलाकार को अपने जीवन की और भी बहुत सी बातें बताईं। मॉडल गर्ल के रूप में यह मेरा पहला दिन था। मैंने अपनी तरफ से कलाकार को पूरा सहयोग दिया था। मैं अपने कर्त्तव्य के लिए पूर्णतः सचेत एवं निष्ठावान थी। वैसे बाद में मैंने मॉडलिंग का काम छोड़ दिया था।

जाते वक्त मम्मी मुझसे एक मिल्कबार में मिलने को कह गयी थी। एक घण्टे का काम का समय पूरा होते ही मैं मम्मी के पास जा पहुँची। मुझे देखते ही मम्मी ने पूछा, '' कहो एड्रिना! मॉडलिंग का पहला दिन कैसा रहा? कलाकार व तुम्हारे बीच कैसी बातचीत हुई? उसके साथ गुजरा हुआ पहला दिन तुम्हें कैसा लगा?

मम्मी की उत्कण्ठा को देखकर मैंने बताया, ''वह एक सौम्य प्रकृति का भद्रपुरुष है। वह काम के दौरान सम्पूर्ण धैर्य तथा संयम से काम लेने वाला और बहुत ही कम बोलने वाला शान्तिप्रिय आदमी है।''

मेरा जवाब सुनकर मम्मी को बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्हें एकाएक मेरी बातों पर यकीन नहीं हुआ। उन्होंने मुझे बहुत सी ऊँच-नीच की बातें समझाते हुए कहा, ''इन कलाकारों को कभी भी अपना नहीं समझना चाहिए। ये हर मॉडल को एक मात्र खिलौना या बिस्तर से अधिक नहीं समझते। ये उनकी मजबूरियों का नाजायज फायदा उठाने के लिए उनका यौनशोषण करने से भी नहीं चूकते। उनके पास जाने पर अपना मान-सम्मान तथा सतीत्व कुछ

भी तो बाकी नहीं बचता। अपने आत्मसम्मान तथा सतीत्व को बचाकर तुम इनसे कुछ भी पाने की आशा नहीं कर सकोगी। तुम अपने इस अद्वितीय रूप यौवन के बल पर इनसे कुछ भी प्राप्त कर सकती हो। कुछ भी पाने से पहले बहुत कुछ खोना पड़ता है।''

मेरा यह पहला अनुभव था जबकि मैं मर्दों के स्वभाव के बारे में अपनी मम्मी से खुलकर बातचीत कर रही थी। मेरे दिमाग में न जाने कितने सवाल उठ रहे थे। मैं मम्मी की हर बात को बड़े गौर से सुनकर उसका मनन कर रही थी।

मम्मी ने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा, ''बेटी! ये लोग ऊपर से ही प्रेम का दिखावा करते हैं, वास्तव में इनकी जेबें खाली होती हैं। अगर तुम अपनी जिन्दगी को सुखी-सम्पन्न व समृद्ध देखना चाहती हो, तो तुम्हें किसी अमीर व्यक्ति अथवा भद्रपुरुष के सम्पर्क में आना होगा।''

''मगर, मम्मी! मैं तो किसी ऐसे भद्र पुरुष अथवा धनी व्यक्ति को जानती तक भी नहीं, न ही तुमने मुझे कभी उनसे मिलवाया है।'' मैंने सहजभाव से मम्मी से कहा।

''देखो एड्रिना! तुम कुछ वक्त के लिए मॉडलिंग का पेशा अपना सकती हो। कुछ वक्त बाद कोई न कोई रास्ता निकल ही आयेगा। कदम-दर-कदम ही मंज़िल तय होती है।'' मम्मी ने अपनी पारखी नजरें मेरे मुख पर गड़ाते हुए कहा।

एक तरह से देखा जाए तो मम्मी की यह सलाह अनावश्यक ही थी, क्योंकि मैं एक के पश्चात दूसरे कलाकार से मिली और मैंने पाया कि ये लोग शान्तिप्रिय और नेकदिल इन्सान होते हैं। हालांकि कभी-कभी मुझे कोई कलाकार ऐसा मिल जाता था जोकि बातों का सिलसिला आगे बढ़ाने का दुस्साहस कर बैठता था, मगर मेरे बदले हुए तेवर को देखकर वह भी अपने मंसूबे अपने दिल में ही दफन कर लेता था।

वास्तव में उन कलाकारों का काम पेन्टिंग करना था, इश्क प्यार जैसी बेहूदा हरकतों में उन्हें कोई विशेष रुचि न थी। मेरी शारीरिक बनावट का चित्रांकन वे कैनवास पर उसी भावना से किया करते थे, जैसे कि एक कुशल चिकित्सक अपने रोगी का इलाज करते वक्त करता है।

कभी-कभी कलाकार के पास उसके दोस्त एवं परिचित लोग भी आया करते थे जोकि अक्सर मुझसे बातें करने के लिए उतावले रहते थे। उनमें से कुछ मनचले युवक तो मुझसे स्टूडियो से बाहर मिलने का ही मौका खोजा करते थे, मगर मैं उनसे खास सावधान रहती थी। मैं अपने आत्मसम्मान और मर्यादा के प्रति पूरी तरह निष्ठावान थी। साथ ही मैं अपने शरीर-सौष्ठव तथा कार्य के प्रति भी सजग रहती थी।

किसी सुयोग्य आदमी के साथ विवाह करके एक सुखी परिवार में सुस्थापित होना ही मेरे जीवन का खास मकसद था। मैं अपनी खून-पसीने से कमाई गई सारी रकम अपनी मम्मी को ही सौंप देती थी। मैं घर में सिलाई

-कढ़ाई के काम में भी मम्मी का हाथ बंटाती थी, यही हमारी आजीविका का एक मुख्य साधन रह गया था।

मेरे पिताजी को गुजरे हुए काफी दिन बीत चुके थे। वे रेलवे के एक कर्मचारी थे। हम रेलवे कालोनी के एक छोटे से फ्लैट में रहते थे, जोकि मकान की दूसरी मंजिल पर था। इसके आसपास चारों तरफ हरियाली का माहौल था। कालोनी के सामने ही नगर की चारदीवारी थी जिसमें कि दरवाजे बने हुए थे। इनमें एक तो हमारे घर के निकट ही था।

कालोनी के समीप ही लूना पार्क था। अपने मकान की खिड़की से ही मैं इस पार्क का मनोरम दृश्य देख सकती थी। गर्मी के दिनों में लूना पार्क में अच्छी खासी रौनक दिखाई देती थी। अपने घर की खिड़की से मुझे लैम्प पोस्ट, हरे-भरे, पेड़, लम्बी-चौड़ी सड़कें तथा उन पर दौड़ते लोगों की भीड़-भाड़ साफ दिखाई देती थी। मैं दृष्टि गड़ाये इस मनोहारी दृश्य को देखती रहती थी।

मुझे संगीत की स्वर लहरी भी स्पष्ट सुनाई पड़ती थी। रात में अक्सर मैं संगीत की मीठी स्वर लहरी को सुनते-सुनते ही स्वप्नलोक में खो जाया करती थी। इन दिनों मैं बहुत भावुक थी। मैं आसमान की बुलन्दियों को छूना चाहती थी। मगर मेरे छोटे से कमरे तथा उसमें फैले अन्धकार में बड़ा मुश्किल और असम्भव जान पड़ता था। मुझे पूरा शहर लूना पार्क में ही सिमटा हुआ नजर आता था। मैं अपने कमरे में खुद को बहुत अकेला महसूस करती थी। मम्मी ने मुझे पार्क जाने पर प्रतिबन्ध लगाया हुआ था। यह बन्दिश मेरे दिलोदिमाग को हर वक्त कुरेदती रहता था।

जहाँ तक मेरा सोचने का दायरा था, मैं इसी निर्णय पर पहुँचती थी कि पिता की मौत के कारण, मम्मी के विधवा होने के दु:ख के कारण, गरीबी व उनके ऊपर जिम्मेदारियों का बोझ व जमाने की गुस्ताख दृष्टि को देखते हुए ही मम्मी ने मुझे पार्क में जाने से रोका होगा। वास्तव में पिताजी की मौत ने हमसे जिन्दगी भर की खुशियाँ छीन लीं। हम लगभग बेसहारा हो गए थे।

मैंने जैसा कि पहले भी कहा था कि मेरा मकसद विवाह करके सुखमय जीवन बिताना था। यह ख्याल मेरे मन में अपने घर की निकटवर्ती कोठियों में रहने वाले धनवान लोगों को देखकर ही आया था। रेलवे के मकान बहुत छोटे, गन्दे तथा भद्दे प्रतीत होते थे। इनमें रहना एक बहुत बड़ी सिरदर्दी थी। इनमें नाम मात्र को भी कोई सुख-सुविधा नहीं थी। बल्कि सामने वाली कोठियों में सभी तरह की सुख-सुविधाएं दिखाई पड़ती थीं।

एक दिन मैं गर्मी के मौसम में अपनी मम्मी के साथ सड़क पर घूम रही थी। ठीक तभी एक कोठी की खुली हुई खिड़की से मैंने एक सम्पन्न परिवार का बड़ा मनोहारी नजारा देखा। इस नजारे को देखकर एक सुखी तथा सम्पन्न परिवार की भावना मेरे दिल में भी बलवती होने लगी थी।

मैं आज भी उस नजारे को भुला नहीं पाती। यह नजारा था एक

साफ-सुथरे कक्ष का, जिसमें महकते सुन्दर फूलों का गुलदस्ता, बराबर में एक टेबिल लैम्प एक खाने की मेज पर बड़े सुन्दर अन्दाज में रखा हुआ था। खाने की मेज पर परिवार के पाँच-छः लोग बैठे थे। इनमें तीन सदस्य तो बच्चे ही थे जिनकी उम्र दस वर्ष से भी कम ही होगी। खाने की मेज पर बच्चों की मम्मी खाना सजाने के पश्चात सूप परोसने की प्रसन्न मुद्रा में खड़ी थीं।

इस कमरे में मुझे सबसे ज्यादा उस टेबिल लैम्प के प्रकाश ने आकर्षित किया, जिसमें बच्चों की चहक भरी उछल-कूद, उनकी बचपन किलोल तथा मम्मी-पापा की खुशी साफ दिखाई पड़ रही थी। कमरे में चारों तरफ सुख-सन्तोष व प्रसन्नता का वातावरण दीख पड़ता था।

इस मनोहारी नजारे को देखकर मैं भी अपने मन में ऐसे ही सुखों से सम्पन्न एक आदर्श परिवार का सपना संजो बैठी। हो सकता है कि अनेक लोगों ने मेरे बारे में यह धारणा बना ली है कि यह मेरी महत्वाकांक्षा ही रही होगी। मगर यह सजा-संवरा कमरा व इसका सुखमय वातावरण हमारी रेलवे कलोनी के गन्दे तथा छोटे घर की अपेक्षा जन्नत नजर आ रहा था।

मेरी भावी जिन्दगी के लिए मम्मी बड़ी-बड़ी योजनाएं बनाती रहती थीं। उन्हें यह आशा ही नहीं, अपितु पूर्ण यकीन भी था कि मुझे मेरी खूबसूरती के बल पर कोई भी कामयाबी आसानी से हासिल हो सकती है। उनका विश्वास था कि मैं अपने रूप-यौवन के द्वारा रोम के धनवान तथा भद्रपुरुषों की बेपनाह दौलत को प्राप्त कर सकती हूँ।

मम्मी की यह धारणा थी कि शादी करके एक परिवार चलाना ही जीवन में सबकुछ नहीं है। हम वास्तव में बहुत गरीब थे। मम्मी मेरे रूप-यौवन को ही अपनी एक मात्र धरोहर समझती थीं। मम्मी ने मुझे पैदा किया था। मुझे इस रूप-यौवन के जरिये से ही मम्मी के कर्जों को उतारकर उनके सपनों को साकार करना था। मेरे दिमाग में यह योजना शायद नासमझी के कारण ही आई होगी।

यद्यपि मैं मम्मी की भावनाओं से भली-प्रकार परिचित थी, लेकिन मैं उनसे कभी भी यह पूछने का साहस न कर सकी थी कि सौन्दर्य के माध्यम से दरिद्रता से छुटकारा कैसे मिल सकता है।

मम्मी की काफी बातों के द्वारा ही मैं जान गयी थी कि मेरा जन्म होना उनके जीवन की सबसे बड़ी असफलता थी। मेरा जन्म अकस्मात तथा अनचाहा ही हुआ था। एक तरह से मेरा जन्म एक हादसे का ही अंजाम था। मम्मी ने मेरा जन्म रोकने के लिए कोई कदम नहीं उठाया था।

मेरे पिता एक रेलवे कर्मचारी थे। क्योंकि मेरे जन्म पहले मेरी मम्मी इस अनचाहे गर्भ को गिरवाने के पक्ष में नहीं थीं इसलिए उन्होंने न चाहकर भी मेरे पिता से शादी कर ली थी। अक्सर मैंने मम्मी को यह कहते सुना, ''तुमने मुझे कहीं का नहीं छोड़ा, तबाह कर दिया है मुझे।''

मम्मी की इन बातों का मतलब स्पष्ट था कि अगर मेरा जन्म न होता,

तो वे उस रेलवे कर्मचारी से शादी ही न करतीं तथा वे कार व बंगला जैसी सुख-सुविधाओं से वंचित न रह पातीं। मम्मी मेरे बारे में पूर्णत: सतर्क थीं। वे नही चाहती थीं कि उनकी बेटी भी उसी भूल को दोहराए। क्योंकि उस समय मेरे रूप-यौवन में गजब का निखार आ चुका था। और मैं मम्मी से कई गुना ज्यादा खूबसूरत जान पड़ती थी।

मेरी मम्मी की नजरों में विवाह तथा परिवार का अर्थ निर्धनता, गुलामी तथा एक अल्पकालीन सुख से है जो कि पति की अकाल मृत्यु की वजह से तत्काल खत्म हो जाता है। अक्सर मम्मी मुझे यही समझाने की कोशिश करती थीं कि परिवार की कल्पना ही औरत का सबसे बड़ा दुर्भाग्य है। उनका विचार था कि औरत को इस मरीचिका से यथा सम्भव दूर ही रहना चाहिए।

एक रोज अचानक मेरी मम्मी के दिल में मुझे एक सफल नर्तकी बनाने का ख्याल आया। मम्मी एक ऐसे वैरायटी शो कम्पनी के मालिक से चिरपरिचित थीं, जो कि उनसे अक्सर स्त्री कलाकारों की पोशाकें सिलवाया करता था। यद्यपि मेरी मम्मी की नजरों में नृत्य का कारोबार भी कुछ खास सन्तोषजनक नहीं था, मगर उनकी धारणा थी कि एक मंजिल तय करने के बाद ही दूसरी मंजिल हाथ लगती है। रोम की जानी-मानी हस्तियों में मेरी एक विशेष पहचान बनाने के लिए रंगमंच पर मेरी नृत्य-कला का प्रदर्शन होना बहुत जरूरी था।

मुझे इस काम के लिए बड़े कड़वे-मीठे अनुभवों से गुजरना पड़ा। क्योंकि नृत्य-कला से मेरा दूर का भी रिश्ता नहीं था। मैं इस क्षेत्र में पूर्णत: नादान व अन्जान थी। अपने सपनों को साकार करने के लिए मम्मी ने मुझसे बिना पूछे ही एक वैरायटी शो कम्पनी के मालिक से मेरे विषय में बात कर ली। मम्मी ने मुझे बताया, "एड्रिना! मैंने तुम्हारे बारे में एक नृत्य-कला विशेषज्ञ से बात की है, उन्होंने तुम्हें बुलवाया है। तुरन्त मेरे साथ चलने के लिए तैयार हो जाओ।"

मैं मम्मी के साथ एक बूढ़े संगीतकार के पास गयी। पर मुझे उसमें कोई दिलचस्पी न जग सकी। मम्मी ने दिलचस्पी जगाने के लिए मुझसे तरह-तरह की बातें कहीं।

मम्मी की बातों से मुझे ऐसा महसूस हो रहा था कि वे आधुनिक सुन्दरता के विषय में अधिक नहीं जानती थीं। एक कमरे में बैठा वैरायटी शो कम्पनी का मालिक हमारी प्रतीक्षा कर रहा था। मेरे ख्याल से तो वह यहाँ से बैठकर उन नवयौवनाओं के नृत्य अभ्यास को ही देख रहा होगा।

कम्पनी मालिक का कद छोटा तथा दाँत नकली थे। वह चुस्त पोशाक में सजा-संवरा, नाश्ता कर रहा था। उसने नाश्ता करके कुल्ला किया तथा रूमाल से मुँह साफ करके बोला, "थोड़ा और नजदीक आओ बेबी! मुझे अपनी टांगें दिखाओ।"

कम्पनी मालिक की आवाज सुनकर मम्मी को मेरे बारे में थोड़ी

घबराहट हुई, मगर मुझे स्टूडियो में एक मॉडलिंग गर्ल की हैसियत से काम करते रहने के कारण अब अंग प्रदर्शन में इतनी शर्म अथवा संकोच का अनुभव नहीं होता था। मैंने अपनी स्कर्ट को ऊपर उठाकर खूबसूरत टांगें उसकी तरफ कर दीं। यद्यपि मेरी टांगें घुटनों से ऊपर मांसल तथा मोटी हो गयी थीं मगर अब भी इनमें एक गजब का आकर्षण समाया हुआ था। मेरी टांगों पर नजरें डालते हुए कम्पनी मालिक ने कहा, ''तुम्हारी कितनी आयु होगी बेबी!''

मेरे कुछ बताने से पहले ही मम्मी ने कहा, ''अभी इसकी उम्र ही क्या है, यह तो इस अगस्त माह में 18 साल की पूरी होगी।''

यह सुनकर कम्पनी मालिक कुछ सोचता हुआ खड़ा हो गया। उसने फोनोग्राम पर अपनी पसन्द का रिकार्ड चढ़ाया। वह फिर अपनी सीट पर जा बैठा। मेरे गदराये यौवन पर अपनी पारखी दृष्टि गड़ाते हुए उसने कहा, ''ठीक है, अब तुम इस संगीत की धुन पर नृत्य करने की कोशिश करो। लेकिन अपनी पोशाक को इतना ऊपर जरूर रखना ताकि तुम्हारी टांगें चमकती रहें।''

मम्मी ने सोचा कि मैं यह सुनकर कहीं घबराकर हताश न हो जाऊँ, इसलिए मेरा मनोबल बढ़ाने के लिए वे फौरन बोल पड़ीं, ''जी दरअसल बात यह है कि इसने नृत्य-कला में अभी कदम बढ़ाना ही सीखा है। आपके कुशल निर्देशन में रहकर यह शीघ्र ही संगीत की बारीकियों को समझने लायक हो जायेगी। मैं समझती हूँ कि आने वाले वक्त में, आपके लिए यह संगीत नृत्य-कला का एक नायाब हीरा साबित हो सकेगी।''

लेकिन मेरे बारे में मम्मी द्वारा की गई प्रशंसा कम्पनी मालिक पर कोई अच्छा प्रभाव न डाल सकी। उसने मम्मी को चुप रहने का संकेत करके मुझे नृत्य करने के लिए उकसाया। मैं अपनी स्कर्ट को ऊपर करके, अपनी टांगों को दायें-बायें घुमाती हुई नृत्य का अभ्यास करने लगी।

पल भर मेरे नृत्य को उदासीनता पूर्वक देखने के बाद उसने बुरा सा मुंह बनाते हुए फोनोग्राम बन्द कर दिया। उसने अपनी जेब से सिगरेट निकालते हुए कहा, ''मुझे अफसोस है कि ये इस काम में नहीं चल पायेगी।''

यह सुनते ही मैं सतर्क हो गई थी क्योंकि मुझे पता था कि जब भी मम्मी को ऐसा जवाब मिलता था तो गुस्से के मारे उनका दिमाग सातवें आसमान पर हो जाता था। मैं आने वाली दुखद बेला की आशंका से मम्मी की बांह पकड़कर बाहर लाने लगी।

मगर मैं अपने लक्ष्य में सफल न हो सकी। क्योंकि मम्मी में न जाने कहाँ का जोर आ गया था। वह मुझसे हाथ छुड़ाकर लाल-पीली आँखें दिखाती हुई कम्पनी मालिक की तरफ पलटीं और फुंफकारती हुई बोलीं, ''क्या कहा, यह नृत्य नहीं कर पायेगी? मैं पूछती हूँ कि यह क्यों नहीं कर पायेगी?''

सिगरेट जलाते हुए कम्पनी मालिक मम्मी की इस फुंफकार को बड़े

ध्यान से सुन रहा था। मगर उसने इस विषम परिस्थिति में भी धैर्य एवं संयम का परिचय देते हुए कहा, "आप मेरी बात को समझने की चेष्टा कीजिए, ये नृत्य हरगिज नहीं कर पायेगी।"

"मैं पूछती हूँ तुम्हें मेरी लड़की में ऐसी कौन सी कमी नजर आती है जो तुम इसके प्रति ऐसी बेरुखी दिखा रहे हो। मेरी लड़की के सुगठित शरीर में समाया अद्वितीय आकर्षण तुम्हें क्यों नजर नहीं आ रहा है? उसे नृत्य सिखाने में तुम पक्षपातपूर्ण रवैया क्यों अपनाना चाहते हो? क्या मेरी पुत्री तुम्हें रूप-यौवन में अन्य लड़कियों से किसी बात में कम नजर आती है? मैं निश्चयपूर्वक कह सकती हूँ कि मेरी लड़की के रूप-यौवन का सही मूल्यांकन करने में तुम्हारी पारखी नजरें धोखा खा रही हैं।"

इतना सुनकर कम्पनी मालिक के भी तेवर बदल गए। वह अपना अन्तिम फैसला सुनाते हुए कहने लगा, "वास्तव में मैं तुम्हारा दिल नहीं तोड़ना चाहता था, मगर मैं मजबूर हूँ। इनकी आकृति व शारीरिक गठन नृत्य कला के योग्य नहीं है।"

मेरी आशंका के अनुसार ही मम्मी ने चीखना-चिल्लाना आरम्भ कर दिया था। उन्होंने नृत्य-कला को सीखने के लिए मेरे आकर्षक जिस्म को पूर्णत: सही मानते हुए एक जोरदार तर्क प्रस्तुत किया, "मैं पूछती हूँ क्या तुम्हें मेरी पुत्री का खूबसूरत चेहरा हू-ब-हू मैडोना से मिलता-जुलता नजर नहीं आता? क्या मेरी बेटी के उन्नत उरोज, घुमावदार तथा खूबसूरत टांगें उससे किसी भी तरह कम नजर आते हैं? मैं समझती हूँ कि तुम्हारे सीने में एक निष्पक्ष निर्णायक का दिल ही नहीं है। तुम पक्षपात कर रहे हो पक्षपात!"

वह मम्मी की ऊटपटांग बातों को सुनता हुआ सिगरेट में कश मार रहा था। उसने मेरी मम्मी के भ्रम को दूर करते हुए बताया, "अब तक के तजुर्बों के अनुसार मैं आपको एक बार फिर समझाना चाहता हूँ कि आपकी लड़की एक-दो वर्ष में एक कामयाब नर्स तो बन सकती है, मगर नर्तकी नहीं।"

बेचारा कम्पनी मालिक मेरी मम्मी के गुस्से से परिचित नहीं था, शायद ऐसा उसने इसीलिए कहने का दुस्साहस कर लिया होगा। उसका अन्तिम फैसला सुनते ही मम्मी के गुस्से का ठिकाना ना रहा। मम्मी का चेहरा बड़ा भयानक लग रहा था। उन्होंने लपककर कम्पनी मालिक के होठों से सिगरेट खींच ली। उसके सामने खड़ी होकर वह उसे खा जाने वाली दृष्टि से घूरे जा रही थीं।

जैसे ही वह स्वयं को निर्दोष साबित करने के लिए होठ हिलाना चाहता, मम्मी भयानक गालियों से उसका स्वागत कर देती थीं। मम्मी उसकी किसी भी सफाई को सुनने के लिए तत्पर नहीं हो रही थीं। अन्त में मम्मी ने वह सिल्क के वस्त्र जो कि उसने सिलने के लिए दिये थे, उसके मुंह पर दे मारे तथा फुंफकारती हुई कहने लगीं, "अब मैं इन वस्त्रों को छूने वाली

भी नहीं हूँ, जहाँ तुम्हारा दिल करे सिलवा लेना, अगर उन्हें फैन्सी ड्रैस पहनने का इतना ही शौक है तो वे खुद ही अपनी फिटिंग के वस्त्र सिलकर पहनें। तुम यदि मुझे सोने-चाँदी में भी तोलना चाहोगे तो भी मैं तुम्हारे कार्य में हाथ बँटाने वाली नहीं हूँ''

बार-बार मम्मी की उँगलियाँ ऐंठ रही थीं मानो वह कम्पनी की मालिक की गर्दन दबोचने के लिए बेचैन हो रही हों। मम्मी का गुस्सा उग्र रूप धारण करता जा रहा था। समय की नजाकत को समझते हुए किसी भी अनिष्ट की आशंका से मैं मम्मी को समझा-बुझाकर कमरे से बाहर ले आई।

मैं अगले रोज मॉडलिंग वाले कलाकार से मिली, तो मैंने उससे भी इस पहले रोज वाली घटना का जिक्र किया। कम्पनी के मालिक की बातों को जानकर उसने एक जोरदार ठहाका लगाया तथा कहने लगा, ''देखो एड्रिना! मैं तो तुमसे पहले भी यह बात कई बार कह चुका हूँ कि तुम्हें इस जमाने में पैदा न होकर चार शताब्दी पुराने जमाने में जन्म लेना चाहिए था। आज के दौर में औरत जाति की सबसे बड़ी विडम्बना यह है कि उस बेचारी को एक अनावश्यक बोझ माना जाता है। जबकि आज से चार शताब्दी पहले बिल्कुल उल्टा रिवाज था।''

कम्पनी मालिक की बात भी अपनी जगह सही ही थी। क्योंकि वह जानता था कि इस वक्त आम जनता की मांग खूबसूरत, लचकदार इकहरे बदन वाली, सामान्य नितम्बों वाली और छोटे-छोटे उभरे हुए कुच-युगल वाली, आकर्षक चेहरे वाली नव यौवनाओं की है।

मॉडलिंग वाले कलाकार ने मेरे उफनते रूप-यौवन पर एक उचटती सी दृष्टि डालकर कहा, ''इस समय तुम्हारे उरोज तुम्हारे मखमली सीने पर पूर्णतः विकसित हो चुके हैं। तुम्हारे नितम्ब भी जरूरत से अधिक ही भारी दीख पड़ते हैं। निस्संदेह तुम्हारा चेहरा आकर्षक तथा मासूम है। इसमें तुम कर भी क्या सकती हो। तुम एक अच्छी मॉडल गर्ल के रूप में काम कर सकती हो। यह तुम्हारा सुगठित जिस्म मेरी आशाओं के सर्वथा अनुरूप है। आने वाले समय में तुम्हारा किसी उपयुक्त तथा योग्य युवक के साथ विवाह करा दिया जायेगा। इसके साथ ही तुम घर-परिवार, पति तथा बच्चों के उत्तरदायित्व में घिर जाओगी।''

''लगता है आपने तो मेरे मुंह की बात ही छीन ली है, मैं तो स्वयं यही चाहती हूँ।'' मैंने अपनी बात पर जोर देकर कहा।

यह सुनकर कलाकार ने कहा, ''अच्छा! सही है, अब थोड़ा झुककर इस स्थिति में खड़ी हो जाओ।'' इसके साथ ही कलाकार ने मुझे एक खास मुद्रा में खड़ा किया। वह मुझे उस हालत में बहुत पसन्द करता था। वह अक्सर कहा करता था कि उसकी कलाकृतियां नहीं बिक रही हैं। आखिर में उसने मेलॉन जाकर अपने द्वारा बनाये गए चित्रों की प्रदर्शनी लगाने का फैसला किया और वहीं जा बसा।

अगर वह रोम में ही रहता तथा मैं उसी के पास काम करती रहती,

तो वह मुझे अच्छी से अच्छी सलाह देता तथा अन्य भी बहुत कुछ दे सकता था। उसके जाने के पश्चात भी मैं मॉडल के रूप में ही कार्य करती रही। मैं उसके निर्देशानुसार ही अपनी आजीविका को चला रही थी।

मगर दूसरे कलाकार इतने दयालु नहीं थे और वे मेरे व्यक्तिगत जीवन के बारे में अधिक रुचि नहीं लेते थे। मेरा जीवन अनेक सुन्दर सपनों की आकांक्षाओं तथा उम्मीदों से पूरित था। वैसे अभी तक मेरे जीवन में कोई खास घटना घटित नहीं हो सकी थी।

□□□

अक्सर मैं सोचा करती थी कि शादी करके एक सुखमय संसार बसा लेने मात्र से ही राहत मिल जाती होगी। मैं सुखमय परिवार को ही एक आदर्श जीवन बिताने का साधन मान बैठी थी। शायद यह मेरा भ्रम मात्र ही था।

स्टूडियो जाते वक्त मुझे हर सुबह सड़क पर आकर बस पकड़नी पड़ती थी। उसके लिए मुझे काफी इन्तजार करना पड़ता था। टिन शैड के पास ही अक्सर मुझे एक नौजवान अपनी कार को धोता या साफ करता हुआ दिखाई पड़ता था।

उसकी गुस्ताख नजरें रोजाना मेरे रूप-यौवन का पीछा किया करती थीं। आज भी मैं उसके चेहरे को भुला नहीं पाती। उसका रंग गेहुंआ, चेहरा पतला, सपाट छोटी नाक, दो सुन्दर आँखें और मोतियों के समान चमकते सफेद दांत उसके चेहरे पर गजब का आकर्षण उत्पन्न करते थे।

उसकी तरफ मेरे आकर्षित होने की सर्वप्रमुख वजह यह थी कि वह किसी अमेरिकन अभिनेता से कम नहीं लगता था। जब वह अच्छी पोशाक धारण करके निकलता, तो बड़ा सभ्य एवं सुशिक्षित प्रतीत होता था। वह एक नेक दिल और मिलनसार आदमी था। मुझे उसका मधुर व्यवहार बेहद पसन्द था। मेरा अन्दाजा था कि वह किसी बड़े सम्पन्न घराने से सम्बन्ध रखता है तथा वह कार उसकी अपनी ही है। मैं रोजाना उसके आकर्षक व्यक्तित्व के प्रति मोहित होती जा रही थी।

एक दिन सुबह ही मैं बस पकड़ने के लिए टिन शैड में प्रतीक्षा कर रही थी। मुझे खड़े-खड़े काफी देर हो चुकी थी मगर अभी मेरी अभीष्ट बस न आई थी। अचानक मुझे एक चौंकाने वाली आवाज ने अपनी तरफ आकर्षित किया। जैसे ही मैंने आवाज की दिशा में अपनी दृष्टि घुमाई, मुझे कार में बैठा वही नवयुवक हाथ के संकेत से अपनी तरफ बुलाता दिखाई पड़ा।

पहले तो मैंने उसके प्रस्ताव पर कोई खास ध्यान न दिया, लेकिन उसके बार-बार आग्रह करने पर मुझे उसकी भावनाओं की कद्र करनी पड़ी। वैसे भी मुझे जक्त पर पहुंचना बहुत जरूरी था और बस न जाने कितनी लेट थी। इसलिये समय पर स्टूडियो पहुंचने का अन्य कोई विकल्प न जानकर मैं उसकी कार की तरफ मुड़ गई।

कार की खिड़की खोलते हुए उसने मुझसे विनम्रतापूर्वक कहा, ''बन्दे

को आप कहां ले जाना पसन्द करेंगी?''

''मेहरबानी करके जल्दी करें, मुझे स्टूडियो पहुंचना है। '' यह कहते हुए मैं पिछली सीट पर बैठ गई।

उसने दरवाजा बन्द करते हुए कहा, ''आप फिक्र न करें, हम जल्दी ही स्टूडियो पहुंच जायेंगे। अगर आप इजाजत दें तो एक चक्कर लगा लें, फिर आप जहां चाहेंगी मैं ले चलूँगा।''

इसके साथ ही उसने कार को स्टार्ट कर दिया। वह कार को पागलों की मानिन्द दौड़ाये जा रहा था। कुछ ही समय बाद हम लोग शहर से बाहर थे। एक्सीलेटर पर उसके पैर का दबाव बराबर बढ़ता ही जा रहा था। उसकी कार क्रमशः 80, 90, 100, 120 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार पकड़ चुकी थी। इतनी तूफानी गति से गाड़ी चलाकर वह मुझे प्रभावित करना चाहता था। मगर मुझे स्टूडियो पहुंचने की जल्दी थी, इसलिये मैं उससे गाड़ी की गति को नियन्त्रित करने को न कह सकी।

अचानक उसने गाड़ी की गति धीमी की तथा गर्दन को पीछे घुमाकर कहने लगा, ''क्या मैं आपकी उम्र जान सकता हूँ?''

''जी 18 वर्ष के लगभग होगी।'' मैंने शालीनता पूर्वक जवाब दिया।

''अरे सिर्फ 18 वर्ष, मैं तो सोचता था कि आपकी उम्र इससे कुछ अधिक होगी।'' उसने एक प्रभावपूर्ण अंदाज में कहा।

मैंने शर्माकर अपनी पलकें झुका लीं। मुझे देखकर उसने पूछा, ''क्या अपना नाम नहीं बतायेंगी?''

''जी मेरा नाम एड्रिना है, और आपका...?'' मैंने साहस बटोरकर कहा।

''बन्दे को 'गिनो' कहकर पुकार सकती हो।'' उसने स्टेयरिंग को थामते हुए बताया।

''फिलहाल तुम करते क्या हो?'' मैंने उत्सुकतावश पूछा।

उसने मेरे चेहरे पर हल्की सी दृष्टि डालते हुए कहा, ''मैं एक बड़े कारोबार में लगा हुआ हूँ।''

''जिस कार में आप मुझे घुमा रहे हैं क्या यह आपकी व्यक्तिगत कार है?'' मैंने वास्तविकता को जानने के मकसद से कहा।

''हां... हां... क्यों नहीं? क्यों नहीं? इसे आप मेरी ही समझें।'' उसने घबराते हुए कहा। उसने कार को ऐसे देखा, मानो वह कोई छोटी सी वस्तु हो।

''मगर यह बात मेरे गले नहीं उतरी।'' मैंने पूरे यकीन के साथ कहा।

''क्या तुम्हें मेरी बातों पर यकीन नहीं होता, सही है जैसा तुम्हारा दिल करे। वैसे अपने सच्चे उद्‌गारों को शब्दों द्वारा ही प्रकट किया जा सकता है, दिल चीरकर तो नहीं दिखाया जा सकता।'' उसने अपनी बात को सच प्रमाणित करने के मकसद से कहा।

''तुम वास्तव में एक ड्राईवर हो।'' मैंने निर्भीकता पूर्वक कहा।

मेरे इस व्यंग्यात्मक ताने से वह और भी बेचैन सा हो गया।

"क्या मैं तुम से पूछ सकता हूँ कि तुमने जो मेरे बारे में अनुमान लगाया है वह मेरी किस कमी को देखते हुए लगाया है?" आदमी ने गाड़ी को बहुत धीमी करते हुए पूछा।

"मैंने ऐसा अन्दाजा आपके हाथों को देखकर लगाया था।" मैंने उसका भ्रम दूर करते हुए बताया।

उसने शर्माकर अपने हाथों की ओर ध्यान दिया जो कि वास्तव में गन्दे थे। जल्दबाजी में वह उन्हें धोना भी भूल गया था। यह देखकर वह अपनी इस भारी गलती पर पछताने लगा। अपनी भूल मानते हुए वह कहने लगा, "लगता है मैं अपना कोई राज तुमसे चाहकर भी नहीं छुपा सकूँगा। तुम्हारा अन्दाजा पूर्णतः सत्य है। मैं वास्तव में एक ड्राईवर ही हूँ। अब तो आप खुश हैं न?"

"नहीं... नहीं... मुझे आपसे कोई शिकवा नहीं है। मेहरबानी करके मुझे जल्दी से अब स्टूडियो ले चलो।" मैंने विनती पूर्वक कहा, "मुझे बहुत देर हो रही है।"

"लगता है आप मुझसे सचमुच नाराज हो गई हैं, क्योंकि मैंने खुद को आपके सामने एक व्यापारी बताया था।"

मुझे उसकी इन बातों पर बड़ा क्रोध आ रहा था। मगर मैं स्वयं को अकेली जानकर अपने अरमान मसोसकर बैठी हुई थी। अन्त में मजबूर होकर मुझे कहना ही पड़ा, "कृपया बातें ज्यादा न करके फौरन शहर वापिस चलिये, शराफत की भी एक हद होती है। मेरी शराफत का नाजायज लाभ मत उठाइये।"

"अरे आप तो सचमुच बुरा मान गईं, दरअसल मैं तो आपसे ऐसे ही मजाक कर बैठा था। क्या मुझे आपसे हंसी-मजाक करने का भी हक नहीं है?"

"मुझे इस प्रकार का मजाक बिल्कुल भी पसन्द नहीं है।" मैंने आँखें तरेरकर कहा।

"बड़ी अजीब लड़की हो। मैंने तो यह सोचा था कि तुम जवान लड़की हो और देखने में किसी राजकुमारी से कम नहीं लगतीं। अगर मैं तुम्हें शुरू में ही बता देता कि मैं एक बेहद गरीब ड्राईवर हूँ तो शायद तुम मेरी ओर देखना भी पसन्द नहीं करतीं। मैंने तो यही सोचकर खुद को व्यापारी कहने की गलती की थी।" युवक ने खिसियाते हुए कहा

मैं उसकी भावनाओं को भली-प्रकार समझती थी। उसके ये शब्द चालाकी पूर्ण थे। वह मेरी तारीफ के साथ-साथ चापलूसी भी करता जा रहा था। हां, इतना जरूर है कि मैं उसकी बातों से प्रभावित हुए बिना न रह सकी थी। उसकी लुभावनी बातों ने मेरा दिल जीत लिया था।

"वास्तव में मैं तो एक मॉडलिंग गर्ल हूँ। जिस तरह शोफर का कार्य करके आप अपनी आजीविका चलाते हैं, उसी तरह मैं भी एक पेशेवर मॉडल

हूँ। अगर आप मुझे राजकुमारी समझते हैं, तो यह तुम्हारी महानता है।'' मैंने अपनी असलियत को उजागर करते हुए बताया।

व्यक्ति को यह सुनते ही एक अजीब सा झटका लगा। और वह कहने लगा, ''मैं आपकी बात का कुछ साफ अर्थ नहीं लगा सका आपने अभी-अभी क्या कहा था–मॉडल? यानि आप मॉडलिंग करती हैं?''

''जी हां! मैं एक मॉडलिंग गर्ल हूँ। मैं रोज स्टूडियो में जाकर एक कलाकार के आगे पूरी तरह निर्वस्त्र होकर उसकी अभीष्ट स्थिति में लेट जाती हूँ। मेरी आकर्षक काया पर दृष्टि गड़ाकर ही वह कैनवास पर मेरे अद्वितीय रूप-यौवन का चित्रांकन करता है। मैं तुमसे कुछ भी नहीं छिपाना चाहती। मेरी जिन्दगी खुली किताब के समान है, जिसके किसी भी पन्ने को तुम उलटकर पढ़ सकते हो।'' मैंने खुले अलफाजों में कहा।

''मगर यह सब आप किसलिए करती हैं? क्या तुम्हारे सिर पर मम्मी-डैडी का साया नहीं है? लेकिन ऐसी कौन-सी मजबूरी है जो आपको यह सब करने को प्रेरित करती है?''

''जी अभी मुझे अपनी मम्मी का संरक्षण हासिल है। मैं उन्हीं के पास रहती हूँ। मेरी क्या हिम्मत कि मैं उनकी मर्जी के बिना घर से बाहर भी झांक सकूँ।'' मैंने जवाब दिया।

''और तुम्हारी मम्मी तुम्हें एक पराये मर्द के आगे रोजाना निर्वस्त्र होकर घंटों लेटे रहने की इजाजत दे देती हैं? आखिर यह सब क्यों चल रहा है?'' आदमी ने आश्चर्य पूर्वक पूछा।

''मैंने कहा न यह सब मॉडलिंग के कारोबार की सबसे बड़ी कमजोरी है। अंग-प्रदर्शन से परहेज रखने वाली कोई भी लड़की एक कामयाब मॉडल बन ही नहीं सकती। अंग-प्रदर्शन उसके जीवन का एक अभिन्न हिस्सा बनकर रह जाता है।'' मैंने युवक की उत्सुकता देखकर जवाब दिया।

यद्यपि मुझे अपने कारोबार के प्रति कभी नाराजगी अथवा अरुचि नहीं हुई थी और होनी भी न चाहिए थी, फिर भी उस आदमी की स्नेह भरी बातों ने मुझे बहुत आकर्षित किया था।

मेरी नजर में वह युवक एक उच्च ख्यालों वाला नेकदिल इन्सान था। ईमानदारी तथा कर्त्तव्य परायणता उसमें कूट-कूटकर भरी थी। क्योंकि मेरी मर्जी शुरू से ही एक सीधे-सादे साधारण युवक के साथ अपना सुखमय जहान बसाने की थी तथा मेरे विचार से यह आदमी सर्वथा उपयुक्त जान पड़ता था। किसी गैर मर्द के सामने रोजाना निर्वस्त्र होने वाली बात पर उसने जिस तरह आश्चर्य एवं दुःख प्रगट किया और मेरे प्रति जो उसने अपार सहानुभूति दिखाई उससे मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि मेरे लिए उससे अच्छा जीवन साथी और कोई नहीं हो सकता है। वह हर तरह से मेरी कल्पनाओं के अनुरूप ही था।

उसके पूछने पर मैंने कहा, ''मॉडलिंग के कार्य के लिए मम्मी खुद ही मुझे उस कलाकार के निकट लेकर गई थीं।''

''क्या आप यह कहना चाहती हैं कि तुम्हारी मम्मी आपको बिल्कुल प्यार नहीं करतीं या उन्हें लोकलाज का तनिक भी डर नहीं है अथवा मैं यह समझूँ कि वे आधुनिकता की अंधी दौड़ में तुम्हें नम्बर-वन देखना चाहती हैं?'' युवक ने मेरे मुख पर प्रश्नात्मक नजर डालते हुए कहा।

''जी वास्तव में ऐसा कुछ भी नहीं है क्योंकि मेरी मम्मी मुझे बहुत प्यार करती हैं। शादी से पहले मम्मी भी एक सफल मॉडल रह चुकी हैं। इस प्रकार मैं समझती हूँ कि मॉडलिंग के पेशे में कोई बुराई भी नहीं है। इस कारोबार में मेरे जैसी न जाने कितनी लड़कियां अपनी आजीविका कमाने में लगी हैं। उन्हें समाज में पूरी प्रतिष्ठा तथा मान-सम्मान हासिल है।'' मैंने उस आदमी की बात का विरोध करते हुए कहा।

वह आदमी अब भी मेरी किसी भी बात से सहमत नहीं था। मेरे कन्धे पर हाथ रखते हुए उसने असहमति में गर्दन हिलाई तथा कहने लगा, ''शायद तुम नहीं जानतीं कि मैं तुमसे मिलकर वास्तव में कितना प्रसन्न हूँ, मैं तुम्हें दिल की गहराईयों से चाहता हूँ।''

''मगर मैं भी तो आपसे कुछ कम प्रसन्न नहीं हूँ। मैं भी तुम्हें दिल से अपना मानती हूँ।'' मैंने उत्सुकतापूर्वक कहा।

न जाने क्यों मुझे उसके प्रति एक अजीब आकर्षण सा होता जा रहा था। उसके प्रति मेरे दिल में एक समर्पण की भावना जन्म ले चुकी थी जो कि हर क्षण बढ़ती ही जा रही थी। अगर वह इस समय मेरे जिस्म पर चुम्बनों की बौछार भी करता तो भी मुझे कोई परेशानी न होती। मैं उसे भरपूर सहयोग प्रदान करती। मगर वह यह सब कर पाने की हिम्मत ही न जुटा सका। उसने अत्यन्त विनम्रतापूर्वक कहा, ''देखिये, तुमसे फिलहाल मैं यही कहना चाहूँगा कि तुम्हें मॉडलिंग का पेशा शोभा नहीं देता।''

मैं उसकी कृतज्ञता की भावना से प्रभावित हुए बिना न रह सकी। उसे मुझसे बड़ी सहानुभूति थी। उसने मुझसे बताया, ''मेरे ख्याल से तुम्हारे जैसी सुन्दर कमसिन नवयौवना को यह शर्मनाक पेशा नहीं अपनाना चाहिए। तुम्हें घर पर रहकर ही मम्मी के कार्यों में हाथ बटाना चाहिए। तुम्हारे जैसी कोमलांगी नवयौवना को किसी सुयोग्य आदमी को देखकर अपना छोटा-सा घर-परिवार बसा लेना चाहिए। ताकि आने वाले वक्त में तुम्हारे पति का सच्चा प्यार मिल सके और नन्हें-मुन्नों की किलकारियों से तुम्हारा घर-आंगन गूँज उठे।''

उसके और मेरे ख्यालों में काफी समानता थी। अपने तथा उसके विचारों में समानता पाकर मैं बहुत प्रसन्न तथा सन्तुष्ट थी। मैंने उसके ख्यालों के प्रति सहमति प्रकट करते हुए कहा, ''आपके विचारों से मैं पूरी तरह सहमत हूँ, लेकिन मेरी मम्मी के बारे में आपको गलत धारणा नहीं बनानी चाहिए। वह मुझे मॉडल सिर्फ इसलिए बनाना चाहती थीं, क्योंकि उन्हें मुझसे बेहद प्यार था। मेरे मंगलमय भविष्य की कामना करना और मुझे प्रगति के रास्ते पर अग्रसर करना और मेरा पथ-प्रदर्शन करना उनका पहला कर्त्तव्य था।''

उस व्यक्ति ने कहा, "ऐसी सलाह तो अपनी जवान पुत्री को कोई भी नहीं देना चाहेगा जैसी कि आपकी मम्मी ने आपको दी है। वास्तव में उनमें दूरदर्शिता तथा सूझबूझ की काफी कमी है।"

"किसी भी आदमी के बारे में कुछ भी सोचने-विचारने के लिए आप पूरी तरह स्वतन्त्र हैं, मैं आपकी धारणा को नहीं बदल सकती। मगर इस बात को नकारा नहीं जा सकता कि वे मुझे दिल की गहराइयों से चाहती हैं और मेरे भविष्य तथा वर्तमान को संवारने के लिए तन-मन-धन से समर्पित हैं।" मैंने उस व्यक्ति की आँखों में झांकते हुए कहा।

अब हम सड़क के किनारे गाड़ी रोककर पिछली सीट पर बैठे हुए थे। हम दोनों में काफी देर तक इसी तरह की बातें होती रहीं। यद्यपि वह मई का महीना था, मगर गर्म हवाएं नहीं चल रही थीं। हमारे पास से गुजरने वाली कुछ तीव्रगामी कारें ही नजर आ रही थीं। काफी दूर-दूर तक पेड़ों की परछाइयाँ दिखाई पड़ रही थीं। यह एक सुनसान स्थान था।

बातों का सिलसिला खत्म होने के बाद उसने अपनी घड़ी पर नजर डाली तथा कहने लगा, "अच्छा चलो, शहर वापस चलते हैं।"

यद्यपि हम दोनों के मध्य कोई खास फासला नहीं था। मैं उससे बिल्कुल सटकर बैठी हुई थी। मैं सोच रही थी कि वह इस एकान्त का फायदा उठाकर मुझे अपनी बलिष्ठ बांहों में जकड़ लेगा। मेरे गुलाबी होठों का रसपान किये बिना वह न रह सकेगा। मेरा विचार था कि उसके धैर्य तथा संयम का बांध मेरी बेपनाह सुन्दरता के आगे टूट जायेगा। मगर मेरी यह धारणा भी ठीक न निकली। मुझे उसकी उदासीनता को देखकर मायूसी ही हाथ लगी। लेकिन मैं इसमें कर भी क्या सकती थी। वह भी अपनी मर्जी का ही मालिक था। शायद इसकी वजह यही थी कि मैं उसको दिल की गहराइयों से चाहने लगी थी। मैं उसके दहकते होठों का एक गहरा चुम्बन पाने के लिए आतुर हो रही थी। मैं उसे सच्चे अर्थों में चरित्रवान, धैर्यवान तथा गाम्भीर्य युक्त पुरुष मानती थी।

स्टूडियो आते ही उसने गाड़ी रोक दी। उसने मुझसे रोजाना मिलने का वायदा करते हुए कहा, "मैं तुम्हें रोजाना स्टूडियो लाने व ले जाने का उत्तरदायित्व निभाता रहूँगा। वैसे भी इस वक्त मेरी गाड़ी खाली रहती है। अब तुम्हें बस के लिए प्रतीक्षा करने की जरूरत नहीं रहेगी।"

मैंने उसका प्रस्ताव प्रसन्नतापूर्वक मंजूर कर लिया। इस युवक से मिलकर मुझे बेहद प्रसन्नता हो रही थी। मुझे लगा कि मैंने अपनी मंजिल पा ली है। उसने मुझे बिना किसी हीन भावना के तथा निर्विरोध पसन्द किया था। वह उच्च विचारों वाला, गम्भीर व्यक्तित्व का अमीर युवक था। उसका आकर्षक शरीर तथा मनमोहक व्यक्तित्व मेरी पहली पसन्द थे। वास्तव में वह एक बहुमुखी प्रतिभा वाला नौजवान था।

मैं अपने दिल की बात मम्मी से नहीं कह पा रही थी। मुझे इस बात का भय था कि मम्मी कभी भी एक मामूली से गरीब शोफर से सम्बन्ध बनाने

की इजाजत नहीं दे सकेंगी। मेरी इस नादानी को वे कभी क्षमा न कर पायेंगी।

अगले रोज प्रात: ही वह मुझे निश्चित जगह पर लेने पहुंच गया। वायदे के मुताबिक वह मुझे स्टूडियो ले गया। ठीक समय पर वह मुझे वापिस घर छोड़ गया।

इससे अगले दिन वह मुझे फिर स्टूडियो के लिए लेने आया। आज मौसम भी बहुत खुशगवार था। वह मुझसे बातें करने के लिए गाड़ी को शहर से बाहर की सड़कों पर दौड़ाने लगा। अब गाड़ी की रफ्तार कुछ धीमी हो चुकी थी। हम दोनों मीठे वार्तालाप में खो गये।

उसका व्यवहार हमेशा गम्भीर एवं सन्तुलित ही होता था। वह मेरे साथ सदैव सम्मानसूचक शब्दों से ही पेश आता था। उस वक्त मुझे उसमें दुनिया की हर खूबी नजर आती थी। अक्सर मैं उसके साथ एक सुखमय परिवार के ख्वाब देखा करती थी। मैं उसे हर तरह से अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप ही समझती थी।

इस तरह मुझे बिना अधिक सोचे-समझे ही अचानक गिनो से प्यार हो गया। बुजुर्गो का यह कथन पूरी तरह ठीक प्रतीत होता है कि प्यार एक ऐसा मायावी दर्पण है जो कि एक निर्दयी और कठोर राक्षस को भी अपने काबू में कर लेता है।

उसने जब पहली बार मेरा चुम्बन लिया तो मैं सम्मोहित सी हो उठी थी। उसके कसावदार चुम्बन के आगे मैंने स्वयं को पूरी तरह समर्पित कर दिया था। अपने प्यासे होठों पर उसके दहकते होठों का स्पर्श पाते ही मैं निहाल हो उठी थी। मुझे ऐसा महसूस हुआ मानो मेरी सदियों से प्यासी आत्मा तृप्त हो उठी हो।

अपनी बलिष्ठ भुजाओं के शिकंजे से मुझे स्वतन्त्र करते हुए उसने कहा, "एड्रिना! आज से हम एक अटूट बन्धन में बंध गए हैं, मैं जल्दी ही तुम्हें विवाह करके अपना लूँगा।"

मैं उसके इन मधुर अलफाजों के लिए न जाने कब से तरस रही थी। मैं कार की खिड़की खोलकर बाहर निकली। काफी देर हम सड़क के किनारे खड़े होकर बातें करते रहे। मैं अपने दिल को वश में न रख सकी। मैंने भी चलते वक्त उसके चेहरे पर एक चुम्बन जड़ दिया। इसके साथ ही मैं उसके मिलने की सुहानी यादों को दिल में समेटे हुए न चाहते हुए भी उसे छोड़कर घर की तरफ मुड़ गई।

इसके पश्चात उसने न जाने कितने चुम्बन हासिल किये होंगे। ईश्वर इस बात का साक्षी है कि वे सब एकतरफा ही थे। उनमें मेरा कोई उतावलापन नहीं था। ये सारे चुम्बन एक पुराने सिक्के की मानिन्द थे, जो कि अनेक हाथों से होकर आगे बढ़ता रहता है।

मैं प्रथम चुम्बन को कभी नहीं भुला पाऊंगी, क्योंकि इससे मुझे आत्म-सन्तोष मिला था तथा साथ ही मिला था एक आश्वासन कि मेरी चलायमान जिन्दगी में एक गजब का ठहराव आयेगा। हम जल्दी ही विवाह

के अटूट बन्धन में बंधकर एक सुखी परिवार बसायेंगे।

मुझे उस वक्त अपने पैरों के नीचे से जमीन खिसकती नजर आ रही थी। आसमान घूमता नजर आ रहा था। मैं धीरे-धीरे पीछे को झुकती जा रही थी। उसकी गर्म सांसें मुझे अपने मुख से टकराती महसूस हो रही थीं। उसकी जीभ मेरे मुँह में रोमांच पैदा कर रही थी। मुझ पर उसकी दीवानगी का नशा तेजी से छाता जा रहा था। आज से पहले मैं यह नहीं जानती थी कि चुम्बन एक विलक्षण ताकत होती है। मैं इस अलौकिक सुख से पूरी तरह अनभिज्ञ थी। मैं लगभग मदहोश थी।

मेरे जीवन में गिनो के आ जाने से और उसके मधुर व्यवहार से मुझे इस बात का पूरा यकीन हो गया था कि हमें सगाई की रस्म अदा करने की कोई जरूरत नहीं है। हम एक हो चुके हैं तथा निकट भविष्य में विवाह भी कर लेंगे। इसलिये मैंने अपने मन की बात मम्मी को बता देना ही सही समझा। मैं हर्षातिरेक में मम्मी को वे बातें भी बता देना चाहती थी, जो कि मेरे और गिनो के बीच होती रहती थीं। मैं अपनी मम्मी को अपना आखिरी रहस्य तक बता देना चाहती थी।

उस वक्त मम्मी खिड़की के पास सिलाई मशीन पर काम कर रही थीं। मैंने अपने मस्तिष्क में उठते ख्यालों को शब्दों का जामा पहनाते हुए कहा, ''म... मम्मी... मैंने श... शादी करने का वायदा किया है।''

इस समय मेरे गाल अंगारों की प्रकार सुर्ख हो रहे थे। मेरे अचानक इस वाक्य को सुनकर मम्मी ने चौंकते हुए पूछा, ''मगर किससे?''

''एक आकर्षक नौजवान से, जिससे मैं अभी कुछ वक्त से मिल रही थी।''

''उसका रोजगार कैसा है?'' मम्मी ने अपनी पारखी दृष्टि मेरे चेहरे पर गड़ाते हुए पूछा।

''मम्मी जी! वह एक ड्राइवर है।'' मैंने मम्मी की उत्सुकता देखकर कहा।

मैं अभी इतना ही कह पाई थी कि मम्मी के क्रोध का ठिकाना न रहा। वह मशीन रोककर मेरी तरफ फुर्ती से लपकीं। मेरे नाजुक बालों को बेरहमी से झिंझोड़ते हुए मम्मी ने कहा, ''क्या तेरी इतनी हिम्मत बढ़ गई कि तू अपनी शादी का खुद ही निर्णय करने लगी है? क्या मैंने तुझे इसी दिन के लिए पाल-पोसकर बड़ा किया था कि तू मेरी आशाओं पर पानी फेर दे। मैं पूछती हूँ कि एक दो टके के ड्राइवर के साथ प्रेम लीला करने की तेरी हिम्मत कैसे हुई। तू मुझे चैन से न जीने देगी, न ही मरने देगी।''

इसके साथ ही मम्मी ने मुझ पर बेहिसाब लात-घूंसे बरसाने आरम्भ कर दिये। वह बेरहमी की सभी हदें पार कर चुकी थीं। जैसे-तैसे करके मैंने उनसे अपने बाल तथा हाथ छुड़ाये और मेज के दूसरी तरफ अपने बचाव के लिए नीचे को झुक गई।

मम्मी फुंफकारती हुई किसी जहरीली नागिन की मानिन्द मेरे खून की

प्यासी बनीं, मेज के चारों तरफ मेरे पीछे दौड़ रही थीं। उन्होंने क्रोधावेश में भरकर एक बड़ी कैंची से मुझ पर जानलेवा हमला कर दिया। मगर सौभाग्यवश इस जानलेवा हमले से भी मैं बाल-बाल बच गई थी। कैंची दीवार से टकराकर टूट चुकी थी।

मैं अपने को बेसहारा और गुनाहगार समझकर फूट-फूटकर रोने लगी। मैं बार-बार मम्मी के आगे रोती-गिड़गिड़ाती कि मुझे इस बार क्षमा कर दो। अन्त में मेरी करुण पुकार से मम्मी का भी दिल दहल गया। वे मूर्छित होकर फर्श पर ही लुढ़क गइं। मगर अब भी मैं उनके पास जाती हुई घबरा रही थी। मेरे दिल में उनके प्रति एक अजीब सी दहशत समा गई थी।

कुछ देर पश्चात मम्मी को होश आ गया। वह मेरे आँसुओं को पोंछती हुई बोलीं, "न जाने तुम्हारे उज्ज्वल भविष्य के लिए मैंने क्या-क्या सपने देखे थे। मैं तुम्हें रोम की सबसे धनवान और सुखी महिला के रूप में देखना चाहती हूँ मगर तुम हो कि उस दो टके के शोफर के पीछे आँखें बन्द करके दीवानी हो रही हो। न जाने इस मामूली से व्यक्ति में तुम्हें कौन सी खूबियां नजर आती हैं।"

मैंने मम्मी की बात का खंडन करते हुए कहा, "मेरी बात का यकीन तो कीजिए मम्मी जी, वह वास्तव में निर्धन नहीं है। वह पक्के इरादों वाला एक परिश्रमी आदमी है। धैर्य, संयम और ईमानदारी उसमें कूट-कूटकर भरी है। अपने परिश्रम तथा सच्ची लगन से दुनिया की हर खुशी वह मेरे दामन में भर देगा।"

"पता नहीं तुम क्या समझती हो उस मामूली से ड्राइवर को?" मम्मी ने घृणा वाले अन्दाज में बुरा सा मुंह बनाते हुए कहा, "यही ड्राइवर एक दिन तुम्हारी बर्बादी की वजह बनेगा। यह शोफर तुम्हारे दुर्भाग्य का सूचक है। तुम्हारी यह बदकिस्मती तुम्हें मेरी तरह कहीं का नहीं छोड़ेगी।"

अगले दिन गिनो के बार-बार पूछने पर मैंने हिम्मत बटोरकर कहा,"मुझे अफसोस है कि मम्मी आपसे मिलना नहीं चाहती हैं क्योंकि उनका कहना है कि एक ड्राइवर के बजाय किसी अमीर भद्र पुरुष से विवाह कराओ।"

रोजाना की मानिन्द आज भी हम कार से ही जा रहे थे। उसने मेरी तरफ दुःखी एवं निराशाजनक नजर डाली। उसके चेहरे पर छायी मायूसी को देखकर मुझे भी बड़ा दुःख हुआ था।

मैंने सहानुभूतिपूर्वक पूछा, "शायद तुम्हें मेरी बात बुरी लगी होगी।"

उसने कहा, "एड्रिना! मुझे बड़ी बेइज्जती अनुभव हो रही है। यदि मेरी जगह कोई दूसरा होता, तो वह कभी भी तुम्हारी मम्मी से मिलने की ख्वाहिश न करता। मगर हमने शादी करने का वायदा किया है। अब यह तुम्हारी ही जिम्मेदारी है कि मम्मी को मनाकर सब कुछ सही कर लो।"

"यह सब आप मुझ पर छोड़ दीजिए, आप बेफिक्र होकर अपने

कारोबार में तरक्की हासिल कीजिए, मैं मम्मी को स्वयं मना लूँगी।'' मैंने उसे सान्त्वना देते हुए कहा।

''मैं सोचता हूँ कि मुझे अब अपनी जेबें नोटों से भरकर ही आना चाहिए तभी तुम्हारी मम्मी खुश हो सकेंगी।'' गिनो ने पूरे यकीन के साथ कहा।

मुझमें गिनो की बातों का खडंन करने की हिम्मत नहीं थी, क्योंकि मैं जानती थी कि वह कभी गलत बात नहीं कहता। उसकी हर बात में वजन होता था।

मैंने गिनो से कहा, ''क्या आप जानते हैं कि हमें अब क्या करना है? एक दिन मैं आपको मम्मी के पास ले जाऊंगी तथा चकित कर दूँगी, तब वह अपनी आँखें बन्द नहीं कर पायेंगी।''

मैं इस योजना को जल्दी ही अमल में लाने लगी। मैंने एक रोज शाम का वक्त निश्चित किया। मैं गिनो को साथ लेकर अपने घर गई। मम्मी उस समय अपना काम निपटाकर सफाई कर रही थीं।

''मम्मी यह गिनो है।'' मैंने उसको मम्मी के सामने लाकर खड़ा करके कहा। यह कहते हुए मैंने गिनो को अपने पीछे खड़ा कर लिया क्योंकि मैं कुछ अनिष्ट की आशंका से डर रही थी। मगर मेरी आशंका उस वक्त निर्मूल हो गई जब मम्मी ने कहा, ''आपसे मिलकर खुशी हुई।'' यह कहकर मम्मी कमरे से बाहर चली गई।

''देखो मेरी भविष्यवाणी सच निकली न? मेरा दिल तो बार-बार यही कहता था कि एक न एक दिन मम्मी हमारी बात मान ही लेंगी, सब कुछ सही हो जायेगा। भगवान ने दो प्रेमियों की करुण पुकार अन्ततः सुन ही ली।'' मैंने गिनो से कहा। मैं उसका एक चुम्बन लेने के लिए उसके निकट सिमट गई।

इस पर गिनो ने कहा, ''नहीं... नहीं! आपकी मम्मी ने मेरे बारे में ठीक ही सोचा होगा। मैं एक बुरा व्यक्ति हूँ।''

उसमें वाक-चातुर्य का प्रमुख गुण था। वह जानता था कि किस वक्त किससे क्या कहना चाहिए। वह हमेशा संयमित और सम्मानसूचक शब्दों का ही उपयोग करता था। मैं उसकी किसी बात का प्रतिवाद न कर सकी।

मम्मी लौटकर आ चूकी थीं। वे गिनो की तरफ देखे बिना कहने लगीं, हमारे दोनों के लिए खाना बहुत है। तुमने मुझे इनके आने की कोई खबर नहीं दी थी, आओ बाहर बार में चलते हैं।''

यह सुनकर गिनो ने विनम्रता पूर्वक बताया, ''दरअसल मैं यहां खाना खाने नहीं आया था, बल्कि आपको और एड्रिना दोनों को ही शाम के खाने पर बुलाने आया था।''

वह एक सभ्य पुरुष की धीमी आवाज में विनम्रता पूर्वक कह रहा था। मम्मी कुछ देर झिझकीं तथा शान्त भाव से मेरी तरफ देखती रह गई। फिर निःसंकोच होकर बोलीं, ''एड्रिना चाहे तो वह जा सकती है।''

मैंने प्रसन्नता पूर्वक मशवरा दिया, "मैं समझती हूँ कि हमें नीचे बार में ही चलना चाहिए।"

"जैसा आप लोग सही समझें।" गिनो ने सामान्य भाव से कहा।

आखिर में मम्मी ने हमारी बात मान ली। वे तैयार होने के लिए दूसरे कक्ष में चली गईं। मुझे ऐसा लगा मानो मैंने इस प्रेम-युद्ध की विशेष लड़ाई जीत ली हो। यद्यपि यह मेरी जीत केवल एक मजाक था और हम एक नाटक कर रहे थे। मम्मी के दूसरे कमरे में जाते ही हम दोनों परस्पर आलिंगनबद्ध हो गए। हमने चुम्बनों का आदान-प्रदान भी किया।

आज मुझे एक बड़ी फिक्र से मुक्ति मिल गई थी, जो मुझे काफी दिन से अन्दर ही अन्दर खाये जा रही थी। अब विवाह का रास्ता पूर्वत: निष्कंटक हो चुका था। गिनो के विनम्र दृष्टिकोण का मैं दिल से शुक्रिया करने लगी थी। मैं उसे दिल की गहराइयों से चाहती थी। इसके प्रति मेरे दिल में कभी कोई छल-कपट नहीं रहा।

कमरे से निकलकर हम तीनों नीचे उतरे तथा नजदीक के एक बार में जा पहुंचे। बार में पहुंचकर गिनो मम्मी का दिल जीतने के लिए हर मुमकिन प्रयास कर रहा था। उसने मेरी तरफ ध्यान देने की अपेक्षा मम्मी की तरफ ध्यान केन्द्रित किया। मैं भी यही चाहती थी कि वह मम्मी का दिल जीत ले, ताकि हमारे विवाह में मम्मी को किसी विरोध की भूमिका न निभानी पड़े।

गिनो ने उन्हें प्रसन्न करने के लिए पैग बना दिया था। इस वक्त गिनो मदिरा व चापलूसी दोनों की एक साथ खुराक दे रहा था। आज वैसे भी मम्मी अपनी सामर्थ्य से ज्यादा ही पी गई थीं।

हालांकि मम्मी ने गिनो के सामने हथियार डाल दिए थे तथा वह उसको पसन्द करने लगी थीं, फिर भी वे हमारी शादी के वायदे को बुरा ही मानती रही थीं।

बातों का सिलसिला अभी भी जारी था। मेरे कारोबार मॉडलिंग की बात आने पर गिनो ने स्पष्ट शब्दों में कहा, "मेरी दृष्टि में मॉडलिंग एक अच्छा व्यवसाय नहीं है। आपकी नजरों में मैं बेवकूफ हो सकता हूँ, पुराने विचारों का हो सकता हूँ। आप जैसा चाहें समझें, मगर यह बात मेरे गले नहीं उतरती कि एक नवयौवना किसी गैर आदमी के आगे निर्वस्त्र होकर घंटों लेटी रहे। इस बात का कोई औचित्य मेरी समझ में नहीं आता।"

"समझ में क्यों नहीं आता?" मम्मी ने भारी आवाज में फुंफकारते हुए कहा तथा मुझे चेतावनी दी, "उसके ख्याल तुम सुन रही हो न? ये आने वाले तूफान की ही निशानी है।"

"क्योंकि यह अच्छी आदत नहीं है।" गिनो ने दृढतापूर्वक कहा।

जब मम्मी जरूरत से अधिक मदिरापान कर लेती थीं या बहुत क्रोधावेश में होती थीं, तो उनके ख्याल एवं भावनाएं स्पष्ट नजर आती थीं। ऐसी स्थिति उत्पन्न होने पर मैं उनकी बातों का उत्तर नहीं देती थी।

"क्या कहा, अच्छी आदत नहीं है? अच्छा...।" वह ऊँची आवाज में बोलीं। लोगों ने उनकी ऊँची आवाज सुनकर खाना खाना बन्द कर दिया तथा हमारी तरफ देखने लगे, "आदत...आदत... अरे! कुछ मैं भी तो सुनूँ कि तुम कौन सी आदत को अच्छा समझते हो? शायद तुम्हारी दृष्टि में तो सही आदत यही है कि वह तुम्हारे सकेतों पर दिन भर नाचती रहे। घर का खाना पकाये, झाडू-पोंछा और सफाई करे, सिलाई करे, कपड़े धोये। शाम होने पर पति के पास आये तथा उसकी तरफ पीठ करके सो जाये। अपने आप को मिटा डाले, पति की सेता में अपना सुख-चैन भुला दे, कभी भी सांस लेने का वक्त नहीं मिले। जवानी में बुढ़िया हो जाये, इसी को कहते हो क्या अच्छी आदत?"

मम्मी ने पल भर सांस लेकर फिर बोलना शुरू किया, "अब तुम जानना चाहोगे कि मैं क्या सोचती हूँ? जीवन एक बार ही मिलता है। तुम मर गये तो मर गये। तुम्हारी आदत रखी रह जाती है। जीना है तो अच्छी प्रकार शान से जियो। मेरी नजर में एड्रिना ने बिल्कुल सही कदम उठाया है। अगर वह अंग प्रदर्शन करती है तथा लोगों को उसका रूप-यौवन अच्छा लगता है तथा वे इसकी भरपूर कीमत भी चुकाते हैं तो मैं समझती हूँ कि यह कोई घाटे का कारोबार नहीं है। अपने दर्शकों की आवश्यकताओं का ध्यान रखने के लिए अगर उसे इससे भी ज्यादा अंग प्रदर्शन करना पड़े, तो भी वह कर सकती है"

मम्मी की इन बेहूदा बातों पर मुझे बहुत शर्म आ रही थी। वे गुस्से में आपे से बाहर हो रही थीं। उन्होंने चीख-चीख कर सारा रैस्टोरेन्ट सिर पर उठा लिया था। वह फुंफकारती हुई बोलीं, "ठीक है, वह चाहे तो तुम से मैरिज कर सकती है, मैं उसे कभी नहीं रोकूँगी।"

यह सुनकर गिनो ने कहा, "मैं समझता हूँ कि आप अपने मकसद में कामयाब नहीं हो सकेंगी।"

"मैं पूछती हूँ कि तुम्हारे दिल में यह ख्याल आया कैसे? क्या तुम समझते हो कि एड्रिना की तुम्हारे साथ मैरिज का वायदा करने पर मैं बहुत खुश हूँ कि उसने एक अदने से फकीर शोफर को पसन्द किया? मैं हजार गुना पसन्द करती, अगर वह इसकी अपेक्षा सड़कों पर होती। क्या तुम समझते हो कि जो एड्रिना इतनी खूबसूरत है और हजार गुना कमा सकती है, वह शेष जीवन में तुम्हारी नौकरानी बनने जा रही है? तुम्हारी यह बहुत बड़ी भूल है। तुम गलत समझ रहे हो। गलत कह रहे हो।" मम्मी लाल-पीली आँखें निकालते हुए बोलीं।

उनकी तरफ जो भी देखता, वे उसी पर चिल्लाने लगतीं। उनके इस दुर्व्यवहार पर मुझे बड़ी लज्जा आ रही थी। लेकिन गिनो जरा भी विचलित नहीं हुआ था। जब उसने देखा कि मम्मी थक चुकी हैं और उनकी सांस फूल रही है, तो उसने शराब की बोतल लेकर उनके गिलास में पुन: शराब डाल दी। वह कहने लगा, "यह लीजिए थोड़ी सी बाकी है।"

मम्मी ने गिनो के हाथ से यह गिलास भी लेकर अपने होठों से लगा लिया। जो लोग हमारी तरफ देख रहे थे वे पुन: अपनी बातचीत में लग गए।

गिनो ने कहा, "देखिये, आपकी एड्रिना को तो बेपनाह सुन्दर होने की वजह से हमारी मालकिन की मानिन्द जीवन जीना चाहिए।"

"किस तरह का जीवन गिनो?" मम्मी ने उत्सुकतावश पूछा।

"हमारी मालकिन 11 या 12 बजे सुबह उठती हैं। वह अपना नाश्ता बिस्तर पर ही चांदी के बर्तनों में लेती हैं। नौकरानी नहाने से पूर्व ही उनके लिए हल्के गर्म पानी में खुश्बू और नमक डाल देती है, ताकि नहाने में अच्छा लगे। दोपहर बाद अपनी कार में शापिंग करने के लिए बाजार जाती हैं। इसके पश्चात आकर दोपहर का खाना लेती हैं। थोड़ा आराम करने के पश्चात तरोताजा होकर वे अच्छी ड्रेस धारण करती हैं।

शायद तुम जानना चाहोगी कि उनके पास कितनी पोशाकें हैं? पोशाकों से उनकी अलमारियां भरी पड़ी हैं। वह अपनी कार से दोस्तों से मिलने क्लब जाती हैं। वहाँ पर ताश खेलती हैं, मदिरापान करती हैं। मनमोहक संगीत की धुनों पर थिरकती हैं। उनके दोस्त एवं परिचित भी बहुत अमीर लोग होते हैं। उनके पास भी लाखों रुपये हैं तथा बहुत सारे जेवर हैं।"

गिनो की हर बात को मम्मी एक बच्चे की तरह बड़े गौर से सुन रही थीं। मानो वे सब भूल चुकी थीं कि थोड़ी देर पहले वह क्या चीख रही थीं।

"लाखों रुपये...?" मम्मी लालच में बोलीं– "और वह खूबसूरत भी है?"

सिगरेट का धुआं उगलते हुए गिनो बोला, "सुन्दर...?... जी नहीं... वह तो एक दम किसी पतली-दुबली, बूढ़ी, मरियल कुतिया जैसी लगती है।" इस प्रकार वह गिनो की धनवान मालकिन के बारे में बातचीत करते रहे।

मैंने अगले दिन गिनो से पूछा, "क्या आपको मम्मी ने क्षमा कर दिया है?"

गिनो ने जवाब दिया, "हालांकि, मम्मी मेरे विचारों से एग्री नहीं थीं, फिर भी वे उन्हें भली-प्रकार समझती थीं। उनके साथ बड़ा धोखा हुआ था और वे गरीबी की जिन्दगी जी रही थीं, इसलिए उन्हें दरिद्रता से सख्त नफरत थी। वे बड़ी दयनीय लग रही थीं।"

गिनो ने आगे कहा, "मैंने ऐसा अनुभव किया कि मम्मी मुझे भी चाहती थीं।"

मैंने गिनो से कहा, "मैं तुम्हारी कृतज्ञ हूँ कि आपने मेरी मम्मी को इतनी अच्छी प्रकार से समझाने का प्रयास किया।"

अब मुझे गिनो से और ज्यादा लगाव हो गया था। मैं खुद को गिनो से काफी छोटा समझने लगी थी। मैंने अहसास किया कि उसके धैर्य और समझदारी से मम्मी को मना लेने के बजाय मैं उसे कुछ भी नहीं दे सकी थी। शायद यह मेरे दिल का भ्रम था जो कि गिनो के बहुत से अहसान होने पर भार महसूस कर रहा था। मेरा मन बार-बार यही कह रहा था कि मुझे

उसका बदला चुकाना चाहिए।

जहाँ तक मेरा अन्दाज है, गिनो प्रत्येक कदम फूँक-फूँककर रख रहा था। वह धीरे-धीरे मुझे मम्मी व को प्रभावित कर रहा था। उसने कोई अधीरता अथवा जल्दबाजी नहीं दिखाई। उसने मेरे प्यासे अधरों पर अपने दहकते होठ रखकर मेरे तन मन को अपने कब्जे में ले लिया था। उसके प्यार में मैं अपनी सुधबुध खो बैठी थी। मगर मैं पूरे निश्चय के साथ कह सकती हूँ कि उसके प्रेम के पीछे एक कुत्सित भावना पनप रही थी।

अक्सर हमारे कार में बाहर घूमते रहने के दौरान अभी तक गिनो मेरे होठों, कपोल अथवा गर्दन का ही चुम्बन लेता रहा था, लेकिन जब एक सुबह वह मेरे कपोल का चुम्बन ले रहा था तो उसकी गुस्ताख उंगलियाँ मेरे ब्लाउज के बटनों की ओर बढ़ने लगीं।

इस वक्त मुझे अपने भीतर अजीब-सा ठण्डापन महसूस हो रहा था। उसके कन्धे के ऊपर से कार में लगे दर्पण में देखने पर मुझे पता चला कि मेरी अधखुली वक्ष की मांसल गोलाइयाँ साफ दिखाई दे रही हैं। हालांकि यह देखकर मुझे शर्म तो जरूर महसूस हुई, मगर मैं चाहकर भी अपने इस उफनते यौवन को अपनी चुस्त ब्लाऊज में कैद न कर सकी थी।

गिनो मेरे चेहरे के हाव-भाव को बड़े गौर से देख रहा था। धीरे-धीरे उसने मेरे ब्लाउज के आखिरी बटन को भी खोल डाला। अब मेरे यौवन उभार साफ उजागर हो रहे थे। उसकी इस हरकत से मैं काफी उत्तेजित हो चुकी थी। कुछ देर पश्चात उसकी उंगलियाँ मेरी मांसल गोलाइयों को सहला रही थीं। वह मेरी प्रत्येक गतिविधि पर ध्यान रखे हुए था, वह मेरी तरफ से पूर्णत: आश्वस्त हो चुका था क्योंकि मैंने उसका कोई विरोध नहीं किया।

स्टूडियो समीप आते ही मैंने फुर्ती से अपनी पोशाक की तरफ ध्यान दिया। अपने मादक उभारों को अपनी चुस्त ब्लाउज के भीतर कैद किया और खिड़की खोलकर स्टूडियो की तरफ लपकी।

□□□

मुझे भली प्रकार याद है वह रविवार का दिन था। अचानक गिनो मेरे पास आया, उसने मुझसे कहा, "मेरे मालिक अपने देश में गये हैं। उनके नौकर और नौकरानी छुट्टी पर गये हैं। इस समय मालिक की विला मेरे अधिकार में है। मैं तुम्हें उनकी विला दिखाना चाहता हूँ।"

गिनो ने मुझसे विला के विषय में अनेक बार बातचीत की थी। मुझे उनकी विला व ऐश्वर्य के बारे में सुनकर बार-बार देखने की इच्छा जागृत होती रही थी। गिनो का यह प्रस्ताव मैंने प्रसन्नतापूर्वक मान लिया मगर उस वक्त मेरी जिज्ञासा विला को देखने की कम थी, उसके पीछे मुख्य मकसद तो कुछ और ही था।

फिर भी मैंने अपनी इच्छा को दबाते हुए कहा, "मेरे विचार से तो

हमारा वहां जाना कुछ सही नहीं लगता।'' मैंने कार में बैठकर उसे चेतावनी देते हुए कहा, ''आपके कहने पर मैं चल तो रही हूँ, मगर वहाँ हम लोग ज्यादा देर नहीं रुकेंगे।''

मैंने बड़ी सावधानीपूर्वक न चाहते हुए भी हिचकते-सकुचाते यह सब कहा। गिनो ने फिर से यकीन दिलाते हुए कहा, ''एड्रिना! हम सिर्फ विला को ही देखने जायेंगे और उसके पश्चात बाजार में घूमने जायेंगे।''

कुछ ही देर पश्चात लम्बी-चौड़ी सड़कों का चक्कर लगाती हुई हमारी कार विला के करीब आ पहुँची। यहाँ का मौसम काफी शान्तिपूर्ण था। यह विला एक दूसरी विला के साथ ढलान पर सड़क के किनारे बनी थी। यह विला बड़ी सुन्दर और आकर्षक थी।

उसके सामने लाल ईंटों और सफेद पत्थर की खूबसूरत चित्रकारी थी। उसकी टैरेस और बरामदे बड़े-बड़े एवं आकर्षक बने थे। विला के आंगन में काफी ऊँचे-ऊँचे पेड़ तथा सुन्दर बगीचे थे। लान में हरियाली, मखमली घास उगी थी।

इस विला की सुन्दरता देखते ही बनती थी।

यह इलाका धन-धान्य से परिपूर्ण लोगों का था। ऐसा लगता था मानो मैं किसी दूसरे स्वप्नलोक में आ गई हूँ। मुझे यहाँ पर रहना कितना अच्छा लगेगा। उस समय मुझे अपना रेलवे कालोनी वाला घर काफी छोटा और रहने के लिए अपर्याप्त लग रहा था।

मैंने गिनो से कहा, ''गिनो! मैंने यहाँ आकर वाकई में गलती की है।''

''क्यों...?'' उसने शान्तिपूर्वक कहा, ''इसमें फिक्र करने या घबराने की क्या बात है... मैंने कहा न कि यहाँ अधिक वक्त नहीं लगेगा।''

''गिनो वास्तव में तुम अभी यह नहीं समझ पा रहे हो कि मैं कहना क्या चाहती हूँ।'' मैंने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा, ''यहाँ आकर मैंने गलती इसलिए की है कि यहाँ आने के बाद अपने रेलवे कालोनी वाले घर में रहने पर लज्जा महसूस होगी तथा वहाँ का पड़ौस ...

''एड्रिना! मैं मानता हूँ कि तुम्हारी यह बात अपनी जगह बिल्कुल सही है।'' गिनो ने राहत महसूस करते हुए कहा, ''मगर इसमें हम कर भी क्या सकते हैं? मेरे ख्याल में तो तुम्हें किसी लखपति के यहाँ पैदा होना चाहिए था। इन कोठियों में तो अमीर लोग ही रहा करते हैं।''

गिनो ने विला का गेट खोला और मुझे अपने साथ अन्दर ले जाने लगा। ऊँचे वृक्षों की कतारें मार्ग के दोनों तरफ दिखाई दे रही थीं। मार्ग में कुछ ऐसे सुन्दर और आकर्षक पत्थर बिछाये गये थे जिन्हें कि काट-छांटकर वर्गाकार या गोलाकार स्वरूप दिया गया था। विला का मुख्य दरवाजा आकर्षक रंग-बिरंगे शीशों से बना हुआ था।

दरवाजे को खोलकर हम एक बड़े हाल में प्रविष्ट हुए। यह उससे भी सुन्दर तथा आकर्षक था। इसमें प्रकाश तथा सजावट की विशेष व्यवस्था की गई थी। इसके थोड़ा आगे चलने पर हमें सफेद संगमरमर की बनी

चमचमाती सीढ़ियां दिखाई दीं, जिन पर चढ़ते हुए हम ऊपर जा पहुँचे।

इस हाल की सजावट को देखकर मेरी आत्मा खुश हो गई। इस चिकने व चमचमाते फर्श पर मेरी पैर रखने की मर्जी नहीं हो रही थी कि कहीं गन्दा न हो जाये। मुझे पंजों के बल चलती देखकर गिनो अपनी हंसी को नहीं रोक पा रहा था। वह कहने लगा, ''तुम चाहे जितना भी शोर करो, यहाँ कोई सुनने वाला नहीं है।''

इस हॉल से निकलकर हम मेहमान के कमरे में जा पहुँचे। इसमें आराम कुर्सी, डाइनिंग टेबिल, सोफे और बीच में एक ओर शीशे की बनी टेबिल रखी थी। फर्श पर सुन्दर गलीचे पड़े थे। इस कमरे की साज-सजावट भी वास्तव में दर्शनीय थी।

इसके एक तरफ कोने में छोटा सा बार भी बनाया गया था जिसमें अनेक तरह की शराब की बोतलें सजाई गयी थीं। शोकेस में चाँदी के बर्तन व अन्य कीमती सामान चमक रहे थे। पास ही कॉफी मशीन भी रखी हुई थी।

मैंने उत्सुकतावश गिनो से पूछा, ''इन लोगों का खाना कहाँ तैयार होता है?''

''रसोईघर में... नौकरों के कमरे नीचे तहखाने में हैं।'' गिनो ने जवाब दिया। मेरे जीवन का यह पहला अवसर था जबकि मैं इतनी भव्य तथा विशाल विला में खड़ी थी। मैं हर वस्तु को छूकर देखने का मोह न त्याग सकी थी। यहाँ का सारा वातावरण मुझे एक सुहाना सपना सा लग रहा था। यहाँ की प्रत्येक चीज नई, आकर्षक तथा कीमती दिखाई दे रही थी।

मैं यहाँ के शीशे, लकड़ी, संगमरमर, धातु तथा अनेक वस्तुओं की अपने घर की काली-पीली दीवारों, भद्दे फर्श और टूटे-फूटे पुराने फर्नीचर और जगह-जगह से सीमेन्ट उखड़ी छत से किसी भी तरह की तुलना न कर सकी। अब मुझे मम्मी की बातों में बहुत बड़ी सच्चाई का अहसास होने लगा था। आज मुझे मानना ही पड़ा कि जगत में पैसा ही सर्वोपरि है। पैसे के बल पर दुनिया का बड़े से बड़ा सुख साधन हासिल किया जा सकता है।

विला में घुमाते वक्त गिनो मुझे बार-बार बता रहा था कि उसके मालिकों का रहन-सहन, खान-पान, नहाने-धोने तथा ऐशोआराम के वहाँ क्या-क्या साधन मौजूद थे।

उसने मुझे अपने मालिक के बारे में बताया, ''हमारे मालिक-मालकिन चायना प्लेट में खाना खाते हैं, उनके कांटे-छुरी भी चांदी के होते हैं। उनके पास पांच कीमती खाने के बर्तनों के सैट थे। विभिन्न तरह की शराबें थीं। हमारी मालकिन कीमती जेवरात पहनती थीं। शाम के वक्त काला डिनर सूट पहनती थीं।

डिनर खत्म होने पर नौकरानी चांदी की ट्रे में विदेशी ब्रांड के सात तरह के सिगरेट सजाकर पेश करती थी। डाइनिंग रूम से बाहर आने पर उनके लिए कॉफी और अन्य पेय रखे रहते थे।

अक्सर हमारी मालकिन के यहाँ विदेशी मेहमान भी आया-जाया करते थे। वे लाखों की कीमत वाले कीमती हीरों से जड़ित एक नैकलेस को उन खास मेहमानों के आने के वक्त ही धारण करती थीं।

मैंने अपने बालों को एक झटका देते हुए कहा, "यह तो मैं तुमसे सैकड़ो बार सुन चुकी हूँ।"

गिनो ने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए बताया, "हमारी मालकिन कभी तहखाने में नहीं जाती थीं, अगर उन्हें नौकरों को कोई आवश्यक निर्देश देना होता था, तो वे इण्टरकाम का ही उपयोग करती थीं।"

इस तरह गिनो अपनी मालकिन की प्रशंसा करता जा रहा था तथा गरीब लोगों का उपहास उड़ा रहा था। इस समय हम सीढ़ियां चढ़ते हुए दूसरी मंजिल पर जा रहे थे। उसने सहारे के लिए अपनी मजबूत भुजाएं मेरी बगल में डाल रखी थीं तथा मुझे धीरे-धीरे कसकर अपने साथ सटा लिया था।

न जाने क्यों इस समय मुझे ऐसा लगा कि हम किसी राजा-रानी से कम नहीं हैं। उस कोठी के वास्तविक स्वामी हम ही हैं। हम सुधबुध खो बैठे थे तथा मेरी मर्जी आराम करने की हो रही थी।

गिनो ने मेरी हालत का अन्दाजा लगाते हुए कहा, "एड्रिना! आओ बैडरूम में चलते हैं।"

गिनो के साथ जाने के लिए मैंने उस रोज अपनी सबसे अच्छी ड्रेस धारण कर रखी थी। मैंने इसके अलावा सिल्क की ब्लाउज एवं आकर्षक जूते पहन रखे थे। काली-सफेद चैक की शर्ट के ऊपर काली जैकेट पहनी हुई थी। यद्यपि मेरी ड्रेस का कोई कपड़ा बुरा नहीं था, मगर हमारे पड़ौस के जिस दर्जी ने मेरी पोशाक सिली थी, वह कोई खास अनुभवी नहीं था।

उसने स्कर्ट बहुत छोटी बना दी थी, जिससे कि मेरी कमर कस रही थी। हालांकि इस पोशाक में मेरे घुटने ढके हुए थे, मगर मेरी जांघें पीछे से साफ उजागर हो रही थीं।

इस जैकेट को पहनकर मुझे ऐसा महसूस हो रहा था कि मेरा उफनता यौवन इससे बाहर निकलने को आतुर है। मेरे मादक उभार मेरी चुस्त जैकेट के पीछे से अपनी एक भिन्न पहचान बना रहा थे। मेरा ब्लाउज एक साधारण कपड़े का था, इस पर कोई कढ़ाई भी नहीं की गई थी। मेरे जूते भी एकदम पुराने फैशन के थे।

मेरे पास हैट भी नहीं था, इसलिए मेरे बाल कन्धों पर ही झूल रहे थे। फिर भी यह ड्रेस धारण करके मुझे गर्व अनुभव हो रहा था। मैं इस बात से पूर्णतः लापरवाह थी कि सड़क पर हर कोई मेरी तरफ मुड़कर देख रहा है।

मेरा दिल गिनो की मालकिन के बैडरूम में घुसते ही एकदम उदास हो गया। यहाँ उसकी मालकिन की बहुत सी कीमती पोशाकें, साड़ियाँ, गाऊन और अन्य मंहगी व भड़कीली पोशाकें लटकी हुई थीं। इस समय मुझे ऐसा लगा मानो मैंने काले कौए की तरह पोशाक धारण कर रखी थी।

इस वक्त मुझे अपनी गरीबी पर रोना आ रहा था। मेरा गर्व चूर-चूर हो गया। मेरे दिल में रह-रहकर यही ख्याल आ रहा था कि मुझे कभी जीवन में सुख नहीं मिल पायेगा। न ही मैं कभी ऐसी कीमती तथा आकर्षक पोशाकें धारण कर सकूँगी तथा न ही इतने भव्य तथा विशाल घर में रह सकूँगी।

मेरे मनो-मस्तिष्क पर ख्यालों का दबाव इतना बढ़ता जा रहा था कि मुझे महसूस हो रहा था जैसे मैं अभी फफककर रो पडूँगी। चेतनाशून्य होकर मैं बिस्तर के एक किनारे पर जा बैठी। मेरी उदासीनता को देखते हुए गिनो बोला, "क्या बात है एड्रिना? इतनी मायूस क्यों हो रही हो?"

गिनो मेरे समीप ही सरक आया। मेरी नाजुक हथेली को अपने हाथों में लेकर वह धीरे-धीरे प्रेम से सहलाने लगा।

मैंने उसकी उत्सुकता को कम करने के लिए बहाना बनाया, "कुछ नहीं, यों ही मुझे अपने एक चचेरे भाई की याद आ गई थी।"

"तुम सही तो हो एड्रिना? लगता है आज तुम्हारा मूड ठीक नहीं है।" गिनो ने मेरे सुनहरे बालों में प्यार से उंगली फिराते हुए कहा।

"वहाँ तो देखिए।" मैंने शीशे की तरफ संकेत करते हुए गिनो से कहा, "हम दोनों बैठे हुए दर्पण में ऐसे लग रहे हैं, जैसे कि गंवार लोग कहीं से घूमते हुए एक सभ्य पुरुष के मकान में गलती से आ बैठे हों।"

इस समय मैं काफी भावुक हो उठी थी। मेरे दिल में तरह-तरह के विचार आ रहे थे। गिनो ने मेरी मायूसी और ईर्ष्या की भावना को परखा जो कि मुझे अन्दर तक जला रही थी। उसने कहा, "छोड़ो! शीशे की तरफ मत देखो।" इसके साथ ही उसने मेरे उफनते यौवन को अपनी भुजाओं में ले लिया। उसने मौके का फायदा उठाते हुए मेरे अंग-प्रत्यंग पर बेहिसाब चुम्बन जड़ दिये। उसने मेरा हौसला बढ़ाया तथा बड़े प्यार से दिलासा दिया, "हम भी सुखी जीवन बितायेंगे, हमारे पास भी एक कार होगी, तथा प्यारे-प्यारे बच्चे होंगे।"

कुछ समय बाद वह मुझे बाथरूम की तरफ ले गया, जोकि एक साधारण कमरे से भी बड़ा था। उसमें सफेद चमकदार टाइलें लगी थीं और निकिल की हुई टोंटियां, फ़व्वारे और अन्य कीमती सामान मौजूद थे। उसने दीवार में लगी एक अलमारी को खोलकर दिखाया तथा कहने लगा, "देखो एड्रिना! हमारी मालकिन के बहुमूल्य कपड़े यहां भी रखे हुए हैं।"

मेरे मन में अचानक ख्याल आया कि इन पर जरूरत से अधिक सोचना बेकार है। मेरे मन में तरह-तरह के विचार उठ रहे थे। मैंने सोचा कि क्यों नहीं मैं भी गिनो की मालकिन की मानिन्द बन सकती हूँ और यहाँ पर रह सकती हूँ? क्या मैं उससे खूबसूरती में किसी तरह कम हूँ?

अगले ही पल मैं अपनी दयनीय स्थिति को देखकर काफी निराश हुई। फिर मेरे दिल में विचार आया, "कोई बात नहीं, मैं ऐसे भव्य एवं विशाल मकानों में नहीं रह सकती हूँ, ऐसे बहुमूल्य वस्त्र धारण नहीं कर सकती हूँ, लेकिन गिनो की मालकिन की मानिन्द प्यार तो कर सकती हूँ। शायद उससे

भी अच्छी प्रकार से कर सकती हूँ।''

मैंने गिनो से पूछा, ''तुम मुझे बार-बार वस्त्र क्यों दिखा रहे हो? मुझे इन सबसे क्या लेना-देना है?''

इस पर गिनो ने कहा, ''मैं समझता था कि तुम्हारी इच्छा होगी कि मेरी मालकिन किस तरह से रहती है।''

''मुझे इन कपड़ों को देखने की तनिक भी मर्जी नहीं है।'' मैंने कहा, ''निस्सन्देह ये अच्छे तथा बहुमूल्य हैं, मगर मैं यहाँ ये कपड़े देखने नहीं आई हूँ।''

मेरी बात सुनकर उसकी आँखों में चमक उत्पन्न हो गई थी। मैंने गिनो की आँखों में झांकते हुए कहा, ''मैं तो तुम्हारा व्यक्तिगत कमरा देखने आई थी।''

''एड्रिना! मेरा व्यक्तिगत कमरा तो नीचे तहखाने में है।'' गिनो ने उत्सुकता से जवाब दिया, ''क्या हम लोग नीचे चलें?''

शान्तिपूर्वक मैंने उसके चेहरे की तरफ देखा, तब कुछ देर पश्चात उससे पूछा, ''कहीं तुम मुझे बेवकूफ तो नहीं बना रहे?''

''लेकिन मैं... ।'' गिनो ने मेरी तरफ आश्चर्य से देखा।

''यह तो तुम भी भली-प्रकार जानते हो कि मैं तुम्हारी मालकिन के मकान और कपड़ों की प्रशंसा करने अथवा सुनने ही नहीं आयी हूँ। यहाँ हम घूमने-फिरने और प्रेम करने भी आये हैं। अच्छा आओ चलें, इससे ज्यादा विलम्ब करना कोई अक्लमन्दी का काम नहीं है।'' मैंने उत्तेजित होकर कहा।

मैं स्वयं भी इस तरह अचानक बदलाव आने और संकोच को उतार फेंकने से आश्चर्यचकित हो गई थी। हम कमरे को छोड़कर फौरन सीढ़ियों से नीचे की ओर जाने लगे। उसने फिर से मेरी बगल में हाथ डाल लिए तथा हर सीढ़ी उतरते हुए मेरे कपोलों का चुम्बन लेने लगा।

नीचे के तल पर पहुँचकर गिनो ने एक दरवाजा खोला जो कि एक लम्बे पैसेज का मार्ग था। शाम का समय हो गया था यहाँ पर घोर अन्धकार छाया हुआ था। गिनो बिना लाइट जलाये ही मेरे गले में बाँहे डाले मुझे लिए जा रहा था। आखिर में एक कमरे का दरवाजा खोलकर उसमें प्रवेश किया और हमारे अन्दर जाते ही दरवाजा बन्द कर लिया।

इस घोर अन्धकार में हम दोनों मजबूत आलिंगन की मुद्रा में चिपके खड़े थे। गिनो मेरे उफनते यौवन पर बेहिसाब चुम्बन अंकित कर रहा था। इसके बाद उसने मुझे एक मखमली डबल बैड पर गिरा दिया। वह मुझे केलिक्रीडा के लिए उत्तेजित कर रहा था तथा मेरे शरीर के अनावश्यक वस्त्रों के बोझ को बारी-बारी से हटा रहा था। वह ऐसा इसलिए कर रहा था क्योंकि, मैंने खुद ही उसके आगे समर्पण का भाव प्रगट किया था।

वैसे भी मैं अपने जिस्म पर कपड़ों का बोझ बहुत कम पसन्द करती थी। मैं शीघ्रातिशीघ्र अपने उफनते यौवन को इनसे स्वतन्त्र करना चाहती थी। मैं बार-बार यही सोचती थी कि वह अपनी जिस मालकिन की इतनी

अधिक तारीफ कर रहा है, मेरे मुकाबले में उसका रूप-यौवन तो कुछ भी नहीं होगा। मेरे सांचे में ढली बेपनाह खूबसूरती को देखकर वह दंग रह जायेगा।

अगर उसके पास बेशुमार धन-दौलत है, तो मैं भी किसी सुन्दरता की देवी से कम नहीं हूँ। मैं भी सुन्दरता के खजाने से मालमाल हूँ। वास्तव में मेरा खूबसूरत जिस्म इस निर्णायक घड़ी की प्रतीक्षा कर रहा था। मुझे इन हसीन क्षणों का महीनों से इन्तजार था।

काफी कोशिश के पश्चात भी मैं अपनी भावनाओं को अपने काबू में न रख सकी थी। हम दोनों पिंजरे में छोड़े गये किसी भूखे जंगली पशु की प्रकार आतुर थे। मुझसे सारा कुछ प्राकृतिक लग रहा था। अपनी इस भौतिक सुख की दुनिया के किसी भी ऐश्वर्य की तुलना नहीं कर सकती थी।

हालांकि मैं यह जो कुछ भी कर रही थी वह सब अवैध, अनैतिक तथा गैरजरूरी था, लेकिन मुझे इसमें भी अस्वाभाविक एवं बुरा नहीं लग रहा था। इसलिए मुझे गिनो से प्रेम का आदान-प्रदान करने में कोई विशेष परेशानी नहीं हो रही थी। इस छोटे से अन्धेरे कमरे में हम दोनों किन्हीं सुलझे हुए दुश्मनों की तरह पूरे दम-खम से जूझ रहे थे। गिनो मुझे अपनी बलिष्ठ भुजाओं में जकड़कर मेरे उफनते यौवन से प्रेमामृत की अन्तिम बूँद तक निचोड़ लेना चाहता था।

हम दोनों अपनी सुहानी मंजिल की तरफ बढ़ते ही जा रहे थे। गिनो मेरे मायूस चेहरे पर झुका हुआ था। मंजिल की बुलन्दियों पर पहुँचते ही मुझे एक अजीब सा अहसास हुआ। मेरे जिस्म की प्रत्येक हड्डी चरमरा कर रह गई थी। हमारी तेज सांसें एक-दूसरे से टकरा रही थीं। मुझे ऐसा महसूस हो रहा था मानो किसी ने मेरे जिस्म में दहकते ज्वालामुखी का लावा उड़ेल दिया हो। अगले ही क्षण मुझे ऐसा लगा मानो सदियों से प्यासी आत्मा शान्त हो उठी हो।

कुछ देर पश्चात सन्तुष्ट होकर अपनी थकान उतारने के लिए हम दोनों एक-दूसरे से अलग दिशा में लेट गए थे।

काफी देर पश्चात जब होश आया तो मैंने देखा कि मैं वास्तव में जीवन की सबसे बड़ी भूल कर चुकी थी। मुझे लग रहा था कि कहीं गिनो मुझसे शादी करने से मना न कर दे।

मैंने गिनो से कहा, "शादी के पश्चात हम कहाँ रहेंगे?"

उस विला को देखकर मुझे ऐसा महसूस हुआ कि वहां सुख-सन्तोष व खुशी की बजाय सब वस्तु हो सकती हैं। सुन्दर वस्त्र, कीमती गहने,चांदी के बर्तन, ढेर सारे शो पीस तथा बेशुमार धन-दौलत हो सकती है। हम किसी भी कीमत पर अपना मकान बनाने के लायक नहीं हैं। हमसे इस विला के एक कोने के बराबर भी मकान नहीं बन सकता है। मगर इस विला की शानो-शौकत और विलासिता की चीजों को देखकर मेरे दिल में वाल्टर का विचार उत्पन्न हुआ।

मैंने अपने ख्यालों से गिनो को सहमत करने का प्रयास किया, क्योंकि मैं निर्धनता में जन्मी तथा पाली-पोसी गई थी इसलिए मुझे गरीबी के जीवन का अच्छा खासा तजुर्बा था। मेरा मन करता कि गिनो से विवाह करके एक सुखमय संसार बसाया जाये।

उस दिन हम दोनों बहुत थके हुए थे। हम दोनों इसी बैड पर पड़कर सो गये। चन्द्रमा की किरणें रात में एक रोशनदान से हमारे कक्ष में आ रही थीं। हमें इस चांदनी के प्रकाश में खुद को देखकर खुद ही शर्म का आभास होने लगा था। घड़ी की तरफ नजरें डालने पर पता चला कि आधी रात हो चुकी थी। मैं अचानक बिस्तर से कूदकर उठी तथा कहने लगी, "आज न जाने मेरी मम्मी मेरा क्या हाल बनायेंगी।"

चन्द्रमा की चाँदनी में ही मैंने फुर्ती से अपने कपड़े पहिने।

अचानक मेरी चुस्ती-फुर्ती को देखकर गिनो बोला, "क्यों,क्या हुआ एड्रिना! अभी तो बारह ही बजे हैं?"

"आज से पहले मैं कभी भी इतनी देर तक रात में घर से बाहर नहीं रही। अक्सर मैं शाम होने के पश्चात घर से बाहर कहीं नहीं जाती। यह मेरा उसूल है कि मैं शाम के वक्त मम्मी के पास जरूर लौट आती हूँ।" मैंने गिनो पर अपनी फिक्र जाहिर करते हुए कहा।

"तुम तो बेकार फिक्र करती हो। क्या तुम यह नहीं कह सकतीं कि हम कार में अन्य दिनों की प्रकार ही टहलने गये थे और हमारी कार अचानक एक सुनसान स्थान पर खराब हो गई थी।" गिनो ने अपना सुझाव देते हुए कहा।

"मगर मेरी मम्मी इतनी भोली कहाँ हैं जो वे इस मनघड़न्त कहानी पर यकीन कर लेंगी।" मैंने गिनो से अपनी मजबूरी बताते हुए कहा।

आखिर में गिनो मेरी बात मान गया। हम फौरन विला से बाहर आ गए तथा गिनो ने गाड़ी बाहर निकाली। हम गाड़ी पर सवार होकर घर के लिए चल दिए। हालांकि गिनो की बनाई हुई योजना मेरे दिलो-दिमाग पर छाई हुई थी, मगर मुझे डर लग रहा था कि मेरी मम्मी किसी भी प्रकार से इस बात पर यकीन करने वाली नहीं हैं। तथा अनुमान लगा लेंगी कि वहां हमने क्या-क्या गुल खिलाये होंगे।

मेरे निकट मकान के सामने के दरवाजे की दूसरी चाबी मौजूद थी। मैंने उसका ताला खोला तथा दबे पाँव कमरे में प्रविष्ट हो गई। मेरा अनुमान था कि मम्मी बिस्तर पर सो चुकी हैं। मेरा यकीन और भी पक्का हो रहा था, क्योंकि पूरे घर में चारो तरफ अन्धकार छाया हुआ था। मैं बिना लाईट जलाये ही, पंजों के बल, अपने बिस्तर की तरफ बढ़ रही थी।

मैं बिस्तर तक पहुँच भी न सकी थी कि अचानक मम्मी ने उठकर बड़ी बेरहमी से मेरे सिर के बालों को पकड़ लिया। वे मुझे लगभग घसीटती हुई अपने कमरे में ले गयीं। मम्मी ने मुझे धक्का देकर सोफे पर धकेल दिया। उन्होंने मुझे कुछ कहने-सुनने का अवसर दिये बिना ही बड़ी बेरहमी से अपनी

छड़ी से मारना आरम्भ कर दिया। मैं अपने सिर व चेहरे को छड़ी के भरपूर वार से बचाने के लिए बार-बार अपने नाजुक हाथों को आगे कर लेती थी। मेरी हथेलियां और कमर लहुलुहान हो चुकी थी।

उन्हें मेरे रोने-गिड़गिड़ाने पर जरा भी तरस नहीं आ रहा था। उन्होंने रूई की मानिन्द मेरा अंग-प्रत्यंग धुन कर रख दिया था। अब मेरे भीतर इतनी सामर्थ्य नहीं थी कि मैं करवट भी बदल सकूँ। मम्मी का पारा सातवें आसमान पर देखकर मेरी रूह काँप गयी।

मुझे बेरहमी से पीटते हुए मम्मी भी बहुत थक चुकी थीं। उनका साँस फूलने लगा था। वे भी बुरी प्रकार हाँफ रही थीं। मगर मैं अब भी सोफे पर पड़ी रो रही थी।

कुछ समय पश्चात वह मेरे पास सोफे पर आ बैठीं, अगले ही क्षण बिना कुछ कहे-सुने ही उठ गयीं। लाइट ऑन की तथा मेरी ओर झुककर कूल्हों पर हाथ रखकर कहने लगीं, ''मैं दावे के साथ साबित कर सकती हूँ कि तू गिनो के साथ रंगरेलियां मना रही थी।''

यद्यपि मैं अपना अपराध कुबूल करके मम्मी को यह बताना चाहती थी कि हाँ हमने प्रेम किया है, लेकिन मम्मी का उग्र रूप होने के कारण मैं ऐसा करने का दुस्साहस न कर सकी। मुझे पता था कि इतनी सी जुबान खोलते ही वह मेरी खाल उधेड़ डालेंगी।

मम्मी ने अब फिर से मोर्चा संभाल लिया था। बल्ब की रोशनी में मम्मी की सुलगती आँखें बड़ी भयानक प्रतीत हो रही थीं। मैंने अपनी सफाई पेश करते हुए कहा, ''मम्मी! आप मेरी पूरी बात तो सुन लीजिए—मैं वक्त पर पहुँचने में मजबूर थी, क्योंकि हमारी गाड़ी एक सुनसान स्थान पर खराब हो गई थी। कार की रिपेयरिंग और हमारे समय पर पहुँचने के लिए वहाँ कोई भी साधन उपलब्ध नहीं था। हमारे लेट होने के पीछे अन्य कोई राज नहीं है।''

''गुस्ताख लड़की! मेरा मूर्ख बनाना चाहती है... ऐसी बहानेबाजी मैं खूब समझती हूँ... तुम जैसी झूठी, मक्कार और माँ-बाप को धोखा देने वाली लड़कियों की कारें अक्सर सुनसान स्थान में ही खराब होती हैं... गैराज व मैकेनिक को तो वे मीलों दूर छोड़ जाती हैं। वास्तविकता तो तुम्हारे चेहरे पर झलक रही है।'' मम्मी ने गर्जकर कहा।

''मैं बिल्कुल सत्य कह रही हूँ मम्मी...मैं तुमसे झूठ नहीं बोल सकती... मैंने ऐसा कोई शर्मनाक कदम नहीं उठाया, जिससे तुम्हारी शान को धब्बा लगे।'' मैं सिसकते हुए बोली।

''पहले शीशे में जाकर अपनी मनहूस शक्ल पर ध्यान दो। तुमने एकान्त में जाकर क्या किया है व क्या नहीं इसका तुम्हें उत्तर मिल जायेगा। तुम्हारे चेहरे की उड़ी रंगत वह सब कुछ बता चुकी है जो कि तुम छिपाना चाहती हो। तुम मेरी तजुर्बेकार आँखों में धूल नहीं झोंक सकतीं। मैं तुम्हारी मम्मी हूँ, और तुम्हारे विषय में मुझसे बेहतर कोई नहीं जान सकता।'' मम्मी

ने शोर मचाकर पूरा घर सिर पर उठा लिया था।

"मम्मी! मैं बहुत थकी हुई हूँ...मैंने किसी से प्रेम नहीं किया है। सिर्फ थकान की वजह से मेरा चेहरा उतरा हुआ है।" मैंने विनम्रतापूर्वक कहा।

"मैं अपने तजुर्बे की रोशनी में बता सकती हूँ कि तूने गिनो के साथ वह सब कुछ किया है जो तुझे मेरी मर्जी के विरुद्ध हरगिज नहीं करना चाहिए था।" मम्मी मेरी कोई सफाई पेश नहीं होने देना चाहती थीं।

मुझे हैरत ही नहीं अपितु फिक्र भी हो रही थी कि मम्मी बराबर इसी बात पर जोर दे रही थीं कि मैंने गिनो से प्यार किया है।

मम्मी मुझसे यह जानने को भरसक कोशिश कर रही थीं कि मैंने गिनो के आगे अपनी मर्जी से ही अपना सब कुछ समर्पित किया है अथवा उसने मेरी इच्छा के विरुद्ध बलात्कार किया है। इस तरह मम्मी को चीखते-चिल्लाते काफी देर हो चुकी थी। अचानक वे उठीं तथा मेरी बाँह पकड़कर खड़ा किया।

मैं अपने बचाव में बार-बार हाथों को अपने मुख के आगे कर रही थी।

"मैं तुम्हें बिल्कुल नहीं मारूंगी... घबराओ नहीं... आओ मेरे साथ चलो।" मम्मी के बर्ताव में काफी नरमी आ चुकी थी।

इस वक्त मम्मी कुछ जल्दी में थीं। वह मेरी बाँह को पकड़कर सीढ़ियों से नीचे उतरकर सड़क पर जा रही थीं। मैं नहीं समझ पा रही थी कि वे मुझे कहाँ ले जाना चाहती थीं।

सामने कैमिस्ट की दुकान पर प्राथमिक उपचार केन्द्र भी है, वहाँ बत्ती जल रही थी। मम्मी मुझे उसी तरफ ले जाने लगीं। मैंने उनसे एक बार फिर छुटकारा पाने की कोशिश की, मगर मम्मी मुझे आगे की तरफ धकेलती हुई ले चलीं।

सामने कैमिस्ट की दुकान पर कैमिस्ट तथा डॉक्टर ही मौजूद थे। इस वक्त वे दुकान बन्द करने की तैयारी में लगे हुए थे। मम्मी ने दुकान की सीढ़ियों पर चढ़ते हुए कहा, "डाक्टर साहब! यह मेरी बेटी है इसका डॉक्टरी निरीक्षण कराना चाहती हूँ।"

डॉक्टर ने हमें प्राथमिक उपचार केन्द्र के एक कक्ष की तरफ संकेत करते हुए चलने को कहा।

हमारे पीछे-पीछे आते हुए डॉक्टर बोला, "मुझे कम से कम यह तो बताइये कि आखिर बात क्या है? मुझे किस बात की डॉक्टरी जाँच करनी होगी?"

"डॉक्टर साहब! इस कुतिया ने अपने प्रेमी के साथ कही मुँह काला किया है। मगर, यह कहती है कि मैंने ऐसा कुछ भी नहीं किया है। मैं चाहती हूँ कि आप इसका डॉक्टरी परीक्षण करके सच्चाई पेश करें।"

चिकित्सक ने मम्मी की बातों में आनन्द लेना आरम्भ किया। उसने मुस्कुराते हुए कहा, "मगर यह जाँच करने का काम तो किसी विशेषज्ञ का

है, इसमें भला मैं क्या कर सकता हूँ?''

''आप दिन भर न जाने कितने लोगों का परीक्षण करते हैं, क्या इसकी जाँच नहीं कर सकते?'' मम्मी ने चिल्लाते हुए कहा, ''मैं तुम्हारी कोई भी बात सुनने को तैयार नहीं हूँ, मुझे इसकी तुरन्त जाँच करानी है और आपको हर हाल में करनी होगी।''

मम्मी के तेवर देखकर डॉक्टर घबरा गया। उसने मेरी तरफ मुड़कर कहा, ''खामोश हो जाइये... आपका क्या नाम है?''

मैंने शर्माते हुए कहा, ''एड्रिना... ।'' मैं डॉक्टर के प्रति मम्मी के अभद्र बर्ताव के कारण काफी शर्मिन्दा थी। गुस्से में मम्मी अक्सर पागलों की तरह बर्ताव करने लगती हैं। उनकी इस कमजोरी से सभी पड़ोसी परिचित थे।

''इसकी मुखमुद्रा और नाड़ी परीक्षण से तो यही लगता है कि यह ऐसा कर चुकी है।'' डॉक्टर ने मेरे प्रति सहानुभूति रखते हुए जाँच को टालने के मकसद से कहा। वह मम्मी से किसी भी प्रकार पीछा छुड़ाना चाहता था।

कुछ देर सोचकर डॉक्टर ने कहा, ''इसमें हानि भी क्या है? ये दोनों जल्दी ही विवाह कर लेंगे, अपना सुखमय घर-संसार बसाने में बुराई ही क्या है। अगर अन्त ठीक हो जाये, तो सब ठीक हो जाता है।''

''डॉक्टर! अपने काम से काम रखो... मुझे समाज के उसूल मत सिखाओ।'' मम्मी ने सख्ती से कहा।

''ठीक है...ठीक है... तुम शान्त हो जाओ।'' डॉक्टर ने मम्मी को शान्त करने की कोशिश करते हुए कहा। अगले ही पल वह मेरी तरफ मुड़कर बोला, ''देखिए, वास्तव में तुम्हारी मम्मी जाँच ही कराना चाहती हैं। अतः आप मेरे साथ भीतर चलिए और कुछ वक्त में जांच करके वापस भेज दूँगा।''

थोड़ा साहस बटोर कर मैंने मम्मी से कहा, ''मम्मी! मैं अपनी भूल मंजूर करती हूँ। तुम्हारा अन्दाजा ठीक है, मैंने गिनो से प्रेम किया है। आइये, घर चलते हैं।''

''नहीं, बिल्कुल नहीं... अब तुम जांच कराकर ही घर जाओगी।''

मम्मी के सामने मेरी एक भी न चल सकी। मेरे भरसक खंडन के बाद भी मम्मी ने डॉक्टर से मेरी जाँच कराई।

मेरा जरूरी परीक्षण करने के पश्चात डॉक्टर यह कहने लगा, ''यह लड़की सही कह रही है, अब तो आपको तसल्ली है न?''

अपने पर्स से नोट निकालते हुए मम्मी ने पूछा, ''आपकी फीस?''

मैं इस दौरान बिस्तर से उठकर अपनी पोशाक को संभाल रही थी। डॉक्टर ने सभ्यतापूर्वक कुछ भी लेने से इंकार कर दिया।

डॉक्टर ने मुझसे धीमे से पूछा, ''क्या तुम अपने प्रेमी से सचमुच प्रेम करती हो? क्या तुम्हें उसके प्रेम पर पूरा भरोसा है?''

''बेशक! हम दोनों एक-दूसरे को दिल की गहराइयों से प्रेम करते हैं।

हम दोनों एक-दूसरे के प्यार के प्रति पूरी प्रकार आश्वस्त हैं।'' मैंने पूरे यकीन के साथ कहा।

''मगर तुम लोग शादी कब तक करना चाहते हो?'' डॉक्टर ने उत्सुकतापूर्वक सवाल किया।

मैं डॉक्टर की बात का कोई जवाब देती कि पहले ही मम्मी चीखते हुए बोली, ''मैं यह बात दावे के साथ कह सकती हूँ कि वह इससे कभी शादी नहीं करेगा।''

''डॉक्टर साहब! हम निकट भविष्य में ही शादी करने जा रहे हैं, केवल हमारे कागजात तैयार होने की देर है।'' मैंने हिम्मत बटोरकर कहा। मेरी आँखों में आत्मविश्वास की चमक देखकर डॉक्टर ने मेरी पीठ थपथपाई इसके पश्चात वह बाहर चला गया।

मेरा ख्याल था कि घर पहुँचते ही मम्मी मेरे साथ फिर से हंगामा खड़ा कर देंगी। बेरहमी से बरसने वाली छड़ियों की मार और गाली-गलौच पर उतारू मम्मी के भयानक रूप की कल्पना करने मात्र से ही मेरी रूह कांपने लगी।

मगर हुआ इसके विपरीत ही। क्योंकि डॉक्टर के पास से घर जाते वक्त वह मेरे साथ शान्त भाव से चल रही थीं। उन्होंने घर पर जाकर गैस जलाई, मेरे लिए खाने की कोई चीज गर्म की तथा प्लेट में रखकर मेरे पास ले आई।

इस वक्त मैं उसी सोफे पर बैठी थी, जहाँ कुछ देर पहले मम्मी ने मेरी जमकर पिटाई की थी। खाने का सामान मेज पर रखा हुआ था। मम्मी को गम्भीर हालत में बैठे देखकर मुझे बड़ा आश्चर्य हो रहा था।

कुछ देर शान्तिपूर्वक इन्तजार करके मम्मी कहने लगीं, ''एड्रिना! आज खाना नहीं खाओगी क्या?''

भूख से तो बेचैन थी ही, इसलिए चुपचाप उठकर खाना खाने के लिए तैयार हो गयी। मम्मी बार-बार मुझसे कुछ खाने के लिए आग्रह कर रही थीं। प्लेट में मीट के कुछ टुकड़े और उबले अंडे रखे थे जो कि अन्य दिनों की अपेक्षा सामान्य डिनर था।

मैंने अरुचि प्रकट करते हुए बताया, ''मम्मी! यह सब तो बहुत अधिक है, मुझसे इतना नहीं खाया जायेगा।''

''खा लो एड्रिना! इसकी तुम्हें सख्त आवश्यकता है।'' कुछ देर पश्चात मम्मी ने पूछा, '' शायद गिनो ने तो तुम्हें कुछ खिलाने की जरूरत महसूस नहीं की होगी?''

मैंने वास्तविकता बताते हुए कहा, ''काफी थके होने की वजह से हमें नींद ने घेर लिया था तथा बाद में आँखें खुलने पर हमें पता चला कि काफी देर हो चुकी थी।''

दरअसल सामान्य हालत में मेरी मम्मी मुझे बहुत चाहती थीं। उन्होंने मुझे कुछ भी नहीं कहा तथा मेरी तरफ अपलक निहारती रहीं। उनका यह

उसूल था कि वे हमेशा मुझे खिलाकर ही रसोई में बचा-खुचा खाना खाकर अपना पेट भर लेती थीं। वह सदैव मुझसे कम और साधारण सा भोजन खाती थीं। मेरे लिए वे हमेशा पौष्टिक तथा भरपेट भोजन की व्यवस्था करके रखती थीं। कभी-कभी मेरे लिए खाना जुटा पाने के प्रयास में उन्हें भूखे पेट भी सो जाना पड़ता था।

कुछ देर पश्चात मैंने मम्मी से कहा, ''मम्मी लगता है आपने मुझे अभी तक क्षमा नहीं किया है। तुम्हारी नाराजगी की एक मात्र वजह यही है न कि मैंने गिनो से प्यार किया है? मगर मेरी बात का विश्वास करना मम्मी कि हम शीघ्र ही शादी कर लेंगे। उसने मुझसे शादी करने का वायदा किया है।''

मम्मी ने प्यार से मेरे सिर पर हाथ फिराते हुए कहा, ''यह सही है कि मैं उस समय तुमसे बहुत नाराज थी, मैं तब बेहद गुस्से में थी, क्योंकि तुम मुझे बिना बताये ही घर से आधी रात तक गायब रही थीं, मगर अब मैंने अपना गुस्सा थूक दिया है। अब मैं बिल्कुल भी तुम से क्रोधित नहीं हूँ। मैं तुम्हारी मम्मी हूँ। शायद तुम यह नहीं जानतीं कि तुम्हें खुद से पल भर के लिए जुदा करने पर मेरे दिल पर क्या गुजरती है। अब तुम्हें परेशान होने की कोई जरूरत नहीं है। अब गुजरी बातें भुलाकर खुश होकर खाना खालो।''

मेरी मम्मी मुझे पहले बच्चे की प्रकार डांटकर फिर से मनाने की चेष्टा कर रही थीं।

''क्यों मम्मी...?'' मैंने जोर देकर कहा, ''क्या आपको अब भी यकीन नहीं होता कि वह मुझसे शादी करेगा?''

मम्मी ने कहा, ''हाँ...हाँ तुम सही कहती हो। मुझे उसकी बात पर यकीन है, मगर खाना तो खा लो।''

मैंने कहा, ''नहीं, तुम्हें हमारी बात का यकीन नहीं हो रहा है, तुम मेरा दिल समझाने के लिए ही ऐसा कह रही हो।''

''तुम मेरी तरफ से निश्चिन्त होकर खाना खा लो। मुझे तुम पर पूरा भरोसा है एड्रिना।'' मम्मी ने बड़े प्रेम से कहा।

''जब तक तुम सच्चाई नहीं बताओगी, मैं भोजन नहीं खाऊंगी। मुझे सब कुछ सच-सच बताओ मम्मी कि आखिर तुम्हारे दिल में क्या है। अब तुम इतना खुश क्यों दिखाई दे रही हो?'' मैंने मम्मी से जिज्ञासापूर्वक कहा।

''नहीं...नहीं एड्रिना ऐसी कोई बात नहीं है।'' इतना कहते हुए वे प्लेट उठाकर रसोई में चली गई। मैं उनके लौटने का इन्तजार करती रही।

उनके वापिस आने पर मैंने पूछा, ''मम्मी! क्या तुम सचमुच प्रसन्न हो?''

''हाँ एड्रिना! आज मैं बहुत प्रसन्न हूँ।'' मम्मी ने एक खास अन्दाज में कहा।

''लेकिन इस सबका कारण?'' मैंने उत्सुकतावश पूछा।

"क्योंकि अब यह बात साफ हो चुकी है कि गिनो तुमसे किसी भी हालत में शादी करने वाला नहीं है। वह कभी भी तुमसे ताल्लुक तोड़ लेगा।" मम्मी ने पूरे यकीन के साथ कहा।

"मगर मम्मी मेरा दिल कहता है कि गिनो मुझसे शादी अवश्य करेगा। वह मुझे किसी हालत में भी धोखा नहीं दे सकता।" मैंने अपने दिल की बात मम्मी तक पहुँचाते हुए कहा।

"मगर इसे भी तुम एक कड़ुआ सच समझना कि अब तुम यह शादी नहीं करोगे।" मम्मी ने गूँजते हुए स्वर में भविष्यवाणी की।

मैंने उदास मन से पूछा, मगर मम्मी! हमारा विवाह न होने से तुम्हें क्या लाभ होगा?"

"यदि वह तुमसे विवाह करने के पक्ष में होता, तो वह भूलकर भी शादी से पहले तुमसे प्रेम न करता। न ही वह तुम्हारे इस अकेलेपन का फायदा उठाता।" मम्मी ने अनुभवी नजरें मेरे चेहरे पर गड़ाते हुए कहा।

कुछ देर पश्चात मम्मी ने मुझे आपबीती सुनाते हुए कहा, "तुम्हारे पापा के साथ शादी के वायदे में मैं भी इसी प्रकार दो साल तक बंधी रही। लेकिन शादी से पूर्व एक-दो बार चुम्बन के अलावा हमने कभी भी मर्यादाओं का उल्लंघन नहीं किया।"

इसके पश्चात मम्मी ने मुझे समझाते हुए कहा, "वह किसी मनचाहे खिलौने की भाँति तुमसे खेलता रहेगा और एक दिन दिल भर जाने पर तुम्हें छोड़ देगा। तुम्हारी प्रेमलीला के इस दु:खद अन्त के लिए मैं तुमसे शर्त भी लगा सकती हूँ। यदि वह तुमसे शादी करना चाहता, तो तुझे इस तरह बर्बाद न करता और न ही इतनी नासमझी या अधीरता दिखाता।"

मम्मी की सच्चाई पर मैं यकीन करने की हिम्मत न जुटा सकी। मेरे नेत्र इस वक्त सजल हो उठे थे।

मम्मी ने मुझे नसीहत देने के लिए एक दृष्टांत पेश करते हुए कहा,"मैं भली-प्रकार जानती हूँ कि यह सब क्या है। तुम कभी भी परिवार बनाकर सुखी रहना नहीं चाहती हो। तुम तो एन्जेलिना की तरह उड़ान भरना चाहती हो। उस एन्जेलिना की तरह जो कि एक आधुनिक ख्यालों वाली लड़की थी तथा सदैव मनचले मर्दो के साथ मौज-मस्ती व सैर-सपाटा किया करती थी। वह हमारे पास-पड़ौस में काफी बदनाम हो चुकी थी। आखिर में वह दो-तीन शादी के वायदे टूटने पर एक वेश्या बन गई थी।"

यह कहानी सुनाकर मम्मी ने एक बार फिर मेरी आँखों में झांकते हुए कहा, "मैं फिर से तुम्हें सोचने के लिए मजबूर कर रही हूँ।" इसके साथ ही वे उठकर रसोई में जा पहुँचीं तथा बर्तन धोने लगीं।

मैं अकेले में थी तो मम्मी के ख्यालों ने मुझे झकझोर कर रख दिया। मैं गिनो की बेवफाई के डर से कांप उठती थी। मैं मम्मी के अनुसार गिनो के वायदे तथा व्यवहार पर सोच रही थी। न तो मुझे मम्मी की बातें ही गलत लगती थीं तथा न गिनो की। मैं इन दोनों में ही तुलना करती रही।

कभी मुझे मम्मी की बातों में जिन्दगी के महान तजुर्बे भरी बातें जान पड़तीं तो दूसरे ही पल मुझे गिनो की बातों में प्यार, सहानुभूति और आत्मसन्तोष की झलक मिलती। सोचते-सोचते मेरा मस्तिष्क थक चुका था और मैं चेतनाशून्य होकर बिस्तर पर लेट गई।

मैं संशय में थी कि गिनो को मम्मी का सन्देह कि वह मुझ से शादी करेगा या नहीं, बताऊँ या नहीं। अन्त में मैंने हिचकिचाते हुए उससे न बताने का ही निश्चय किया। मुझे बड़ा भय लग रहा था कि मम्मी ने जो शक प्रगट किया था वह बड़ा दुखदायी था। ईश्वर करे यह सच्चाई में न बदले। फिर भी मैंने अपनी मम्मी के सन्देह को गिनो को इसलिए नहीं बताया था कि कहीं ऐसा न हो जाये कि यह ख्याल गिनो के दिमाग में पहले से न हो और मेरे कहने पर वह ऐसा सोचने लगे।

अब पहली बार ही मुझे अपनी भूल का अनुभव हो रहा था कि एक नारी का एक मर्द के हाथों अपना सर्वस्व समर्पण कर देना अधिक समय तक कोई कसर नहीं रखता है तथा फिर आदमी अपने ढंग से व्यवहार करते हैं।

उस दिन के पश्चात मैं जैसे-जैसे गिनो से मिली, मेरा विश्वास पक्का होता जा रहा था। जब एक दिन हम दोनों कार में घूम रहे थे, मेरे मन में वही भय था कि वह विवाह की बातें नहीं करेगा।

मेरी उम्मीद के विपरीत, जब गिनो ने कार रोकी, तो उसने कहा, "एड्रिना! हमारी शादी की तारीख पाँच महीने के बाद रखी गई है। इससे एक दिन भी अधिक वक्त नहीं लगेगा।"

गिनो ने मानो मेरे दिल की बात कह डाली थी। मैं बहुत प्रसन्न थी और मेरा दिल चाह रहा था कि मैं उड़कर आसमान को छू लूँ।

मैंने गिनो के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा, "तुम जानते हो कि मैं क्या सोच रही थी? मैंने सोचा था कि हमारे बीच जो कुछ हो चुका है, उसके पश्चात तुम मुझे छोड़ दोगे।"

"यदि मुझसे जाने या अनजाने में भी यह गुनाह हो, तो भगवान मुझे बड़ी से बड़ी सजा दे।" उसने इस अपराध से तौबा करते हुए कहा, "क्या तुम मुझे झूठा समझती हो?"

"मैं तुम्हें झूठा कहाँ बता रही हूँ? लेकिन आदमी अक्सर ऐसा ही करते आये हैं।" मैंने बात को संभालते हुए कहा।

"क्या तुम मुझसे भी ऐसी आशा करती हो?" उसने खीझकर कहा, "मुझे तुमने मुलजिम मान लिया है। क्या तुम भी मुझे ऐसा ही समझकर प्रेम कर रही थीं?"

"नहीं ऐसी बात नहीं है। मैं तुम्हें सच्चा प्रेम करती हूँ। मगर मुझे डर है कि तुम आगे से मुझे इतना प्रेम नहीं दे पाओगे।" मैंने अपनी आशंका जाहिर करते हुए कहा।

"एड्रिना! तुम्हें इस बात का अहसास कैसे हुआ कि मैं तुम्हें प्यार नहीं करता हूँ?" गिनो ने तुनककर पूछा।

''मेरा मन ऐसा ही कहता है।'' मैंने गिनो की आँखों में झांकते हुए कहा।

''देखो एड्रिना! तुमने मुझे ऐसी हालत में लाकर खड़ा कर दिया है कि मुझे बहुत क्रोध आ रहा है। अब मैं तुम्हें सीधा स्टूडियो ले जा रहा हूँ।'' यह कहकर गिनो ने कार स्टार्ट कर दी।

उस वक्त गिनो बड़ा डरावना लग रहा था। मैंने उसे रिझाने के उद्देश्य से अपनी गोरी बाँहें उसके गले में डाल दीं। मैं उससे क्षमा याचना करती हुई कहने लगी, ''नहीं-नहीं गिनो! छोड़ो, मैं ऐसे ही जिक्र छेड़ बैठी थी... गुस्सा-नाराजगी, गिले-शिकवे भुला दो। तुम मेरे अपने हो और मैं तुम्हारी. ..केवल तुम्हारी गिनो! प्यार तथा तकरार अपनों से ही किया जाता है गैरों से नहीं! बोलो...बोलो गिनो क्या तुम मुझे अब भी क्षमा नहीं करोगे?''

गिनो मेरा हाथ झटकते हुए बोला, ''जब तुम ऐसा कहती हो, तो इसका अभिप्राय है कि तुम ऐसा ही सोचती भी हो और अगर तुम ऐसा सोचती हो तो साफ जाहिर है कि तुम्हें मुझसे प्रेम ही नहीं है।''

''मगर गिनो! मैं तो तुम्हें दिल की गहराइयों से प्यार करती हूँ।'' मैंने उसके सीने पर सिर रखकर कहा।

''मगर मैं तो तुम्हें प्यार ही नहीं करता।'' गिनो ने व्यंग्यात्मक मुद्रा में कहा,''तुम्हारे ख्याल में तो मैं सिर्फ तुम्हारे रूप-यौवन से खेल रहा था। मेरा विचार तुम्हें छोड़ने का है, बड़े हैरत की बात है कि तुम्हें इस बात का अभी अहसास ही नहीं हो सका।''

यह सुनते ही मेरी आँखों से आंसुओं की झड़ी सी लग गई। मैंने रोते हुए कहा, ''मगर गिनो! तुम इस तरह की बातें क्यों कर रहे हो? आखिर मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?''

''तुम्हारी कोई गलती नहीं है एड्रिना! यह सारी गलती मेरी ही है।'' उसने एक्सीलेटर पर पैर का दबाव बढ़ाते हुए कहा, ''मगर अब मैं तुम्हें स्टूडियो ले जा रहा हूँ।''

वह तेजी से कार चला रहा था। मेरा सिर घूम रहा था। ऐसा महसूस हो रहा था कि पेड़, जमीन, सड़क और मकान सब कुछ घूम रहे हैं।

मैंने चीखकर कहा, ''गिनो, गाड़ी रोक दो, नहीं तो मैं खिड़की खोलकर गाड़ी से कूद जाऊंगी।''

उसने मेरे मुख पर एक सरसरी नजर डाली। कार को धीमा किया और गाड़ी को सड़क के किनारे लगाकर बोला, ''अच्छा! कहिए, तुम क्या कहना चाहती हो?''

मैंने यह सोचते हुए कि वह वास्तव में जो कह रहा है सच्चाई है तथा वह मुझे छोड़ने जा रहा है, उसको दिल भर कर बुरा-भला कहा। मैंने उससे नाराजगी व्यक्त करते हुए कहा, ''मैंने तुम पर कितना विश्वास किया और तुमने मेरे साथ धोखा करके दिखाया। तुम दगाबाज, झूठे, कपटी, फरेबी हो। बेवफाई तुम्हारी नस-नस में समायी हुई है।''

"ऐसा कभी नहीं हो सकता। मैंने तुमसे सच्चा प्रेम किया है, मैंने तुम्हें जीवन का सर्वस्व माना है। मेरा मन कहता है कि तुम मेरे साथ चाहकर भी इतना बड़ा विश्वासघात नहीं कर सकते।"

मैं जोर-जोर से रो रही थी तथा चिल्ला रही थी। वह शान्त भाव से देखे जा रहा था। उसने धीरे-धीरे अपना रुख बदला तथा मेरे पास आकर एक चुम्बन लिया। उसके सुलगते होठों का स्पर्श पाते ही मुझे ऐसा प्रतीत हुआ मानो जीवनदान मिल गया हो तथा मेरी जीत हो गई हो।

मैंने अपनी आंखों के संकेत से उसे पिछली सीट पर बुला लिया। उसने मेरे समीप आकर कार की सभी खिड़कियाँ बन्द कर लीं। इसके साथ ही उसने मुझे अपने मजबूत आलिंगन में ले लिया। एक बार फिर से हमारे सब्र का बाँध टूट चुका था। यह तजुर्बा बहुत थका देने वाला रहा।

हालांकि मैं सोच रही थी कि यही मेरी जीत है, लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं था। मैं उसके हाथों की और भी ज्यादा मजबूर कठपुतली बनती जा रही थी। इसका यह अन्जाम निकला कि मैं एक बिल्कूल आसानी से प्राप्त की जा सकने वाली वस्तु बनती जा रही थी। मेरे अल्फाज निष्प्रभावी होते जा रहे थे। शरीर का आकर्षण ही बाकी रह गया था। उसके कपटपूर्ण बर्ताव से मैं मोहवश चेतनाशून्य तथा अन्धी होती जा रही थी।

हमारी शादी की तिथि निश्चित हो चुकी थी। मैंने अपना सम्पूर्ण ध्यान शादी की आवश्यक तैयारियों पर केन्द्रित कर दिया था। मैंने गिनो के आगे प्रस्ताव रखा कि हम दोनों मम्मी के पास चलेंगे। उसी मंजिल पर एक और कमरा खाली पड़ा हुआ था। यह भी मम्मी के कब्जे में ही था, मगर कभी भी काम में नहीं आता था।

रुपयों की कमी में इस कमरे की सफाई-पुताई आदि भी नहीं हो पाती थी। इस कमरे में घर का टूटा-फूटा तथा अनुपयोगी सामान ही पड़ा रहता था। हमने आपस में बातचीत करके जरूरी कार्यक्रम तय किए। हमने इस कमरे को ही सही कराने का निर्णय लिया। दुल्हन का जोड़ा मैंने स्वयं ही तैयार करने का फैसला किया।

हालांकि मम्मी बेहद निर्धन थीं, फिर भी मुझे पता था कि कुछ पैसा मम्मी ने मेरे लिए बचाकर रखा हुआ है। मम्मी का कहना था कि यह ध न समय आने पर ही काम में लिया जायेगा। अब यह धन मम्मी ने किस वक्त के लिए सुरक्षित कर रखा था, यह मैं भी नहीं जानती थी।

मेरी कल्पना के अनुसार एक निर्धन आदमी, जिसका अनिश्चित भविष्य हो, उसके लिए सिर्फ बेटी का विवाह ही वह सही वक्त नहीं हो सकता था, जो अपनी खून-पसीने की कमाई को उसमें लगा सके। फिर भी हिम्मत बटोरकर मैं मम्मी के पास आई और उनसे पूछने लगी, "मम्मी! आपने जो पैसा बचाकर रखा है क्या वह मेरी शादी के समय ही काम में लेंगी?"

"हाँ बेटी! उस पैसे का इससे अच्छा प्रयोग और क्या हो सकेगा?"

मम्मी ने प्रसन्नतापूर्वक जवाब दिया।

"अच्छा! बहुत अच्छा! मम्मी अगर तुम भविष्य में मुझे प्रसन्न देखना चाहती हो तो वह सारा पैसा मुझे दे दो, ताकि हम बराबर वाला खाली कमरा ठीक कराकर उसमें गिनो के साथ रह सकें। मम्मी! यदि यह पैसा वास्तव में आपने मेरी शादी के लिए ही सुरक्षित करके रखा हुआ है, तो इसको खर्च करने के लिए इससे बढ़िया और क्या समय हो सकता है। मैं समझती हूँ कि आपको वह पैसा हमें सहर्ष दे देना चाहिए।"

इस पर मुझे आशा थी कि मम्मी से यह पैसा प्राप्त करना कोई हँसी खेल नहीं है। इसे पाने के लिए मुझे उनसे काफी बहस करनी पड़ेगी। क्रोध में आकर वे मुझे बुरी प्रकार से फटकार लगायेंगी तथा धन देने से साफ इन्कार कर देंगी।

लेकिन मेरी उम्मीद के विपरीत मम्मी एकदम शान्त थीं तथा मेरे प्रस्ताव पर सहमत हो गई। उनके भाव उपेक्षा भरे थे। उन्हें अभी भी इस बात का यकीन नहीं हो पा रहा था कि गिनो उनकी बेटी से शादी कर सकता है।

मम्मी ने अचानक खामोशी तोड़ी, "एड्रिना! मेरा मन कहता है कि वह तुम्हें कुछ देने वाला नहीं है।"

"मगर मम्मी! मेरा दिल तो कहता है कि वह हमें बहुत कुछ देगा। फिर भी कुछ न कुछ तो इन्तजाम करना ही होगा।" मैंने मम्मी की बात काटते हुए कहा।

उस वक्त मम्मी खिड़की के पास बैठी सिलाई कर रही थीं । अपना काम रोक कर उन्होंने कहा, "मेरे कमरे में जाकर अलमारी का ऊपरी दराज खोलो। तुम्हें उसमें गत्ते का एक डिब्बा दिखाई देगा। उसी में मेरी पासबुक और कुछ सोना रखा हुआ है। वह सब-कुछ तुम्हारा ही है।"

सोने की कीमत कुछ ज्यादा नहीं होगी, मम्मी के पास सोने के गहनों के नाम पर एक अंगूठी, एक चेन तथा कानों की दो बालियाँ थीं। जब से मैं बच्ची थी मम्मी उन्हें उपयोग नहीं करती थीं। वह इन्हें कपड़ों में छिपाकर रखती थीं।

"एड्रिना! मैं तुम्हें एक बार फिर याद दिलाना चाहती हूँ कि मैंने इन्हें बड़ी से बड़ी परेशानी झेलकर भी सुरक्षित रखा है, इनका प्रयोग करना तुम्हारी जिम्मेदारी है।" मम्मी ने मेरी तरफ आशापूर्ण दृष्टि से देखते हुए कहा।

मेरी आकांक्षाएं केवल मम्मी का आर्थिक सहयोग प्राप्त करना ही नहीं थीं, अपितु मेरी अभिलाषा थी कि मम्मी हमारी प्रसन्नता में खुलकर भाग लें तथा हमारा उत्साहवर्द्धन करें।

मैंने जज्बाती होकर कहा, "मम्मी! अगर तुम मुझे प्रसन्न देखने के लिए ही यह सब कुछ कर रही हो, तो मुझे यह सब नहीं चाहिए।"

"यकीन करो एड्रिना! मैंने तुम्हारी प्रसन्नता के लिए ही यह धन व जेवरात संभालकर रखा हुआ था।"

"क्यों मम्मी, क्या अभी भी यह बात तुम्हारे गले नहीं उतरती कि गिनो मुझसे विवाह करेगा?" मैंने जिज्ञासापूर्वक पूछा।

"न तो यह बात आज तक मेरे गले उतरी है तथा न ही निकट भविष्य में इसकी उम्मीद ही है।"

"फिर आप मुझे जो पैसा व जेवरात सौंप रही हो, इस सबका क्या कारण हो सकता है?" मैंने उत्सुकतावश मम्मी से पूछा।

"मैं भली प्रकार जानती हूँ कि अब तुम बच्ची नहीं हो, अपना भला-बुरा ठीक से समझती हूँ। मुझे तुम पर पूरा यकीन है कि इस पैसे व जेवरात का तुम सदुपयोग ही करोगी। वैसे भी फर्नीचर और जरूरी सामान तो घर में होना ही चाहिए। तुम्हें इस दौलत व जेवरात के समुचित उपयोग का पूरा अधिकार है।" मम्मी ने गंभीरतापूर्वक कहा।

"मम्मी! आप मेरे साथ सामान खरीदने मार्किट तो चलेंगी न?" मैंने मम्मी से आग्रह पूर्वक कहा।

"नहीं! मैं हरगिज नहीं जा सकूँगी।" मम्मी ने चीखते हुए कहा, "इन सबसे भला मुझे क्या लेना-देना है। मैं इस बारे में न कोई सलाह दूँगी और न तुमसे कुछ पूछूँगी। तुम जैसा सही समझो करो, जो अच्छा लगे खरीदो।"

मम्मी अब हर प्रकार से समझाने पर भी नहीं मनायी जा सकीं। उनके गुस्से को काबू में कर पाना मेरे वश से बाहर की बात हो चुकी थी। मेरे व मम्मी के ख्यालों में काफी मतभेद था। मम्मी का विचार था कि मेरी शादी गिनो के साथ नहीं हो सकेगी। जबकि मेरा ख्याल था कि गिनो मुझसे शीघ्र ही विवाह कर लेगा। मैं एक दिन मम्मी को गिनो से विवाह करके ही दिखाऊंगी और उनका सन्देह दूर करके उन्हें बता दूँगी कि मैंने वास्तव में एक सही मार्ग अपनाया है। इस वक्त मेरी जिन्दगी जुए की तरह दांव पर लगी थी, केवल ताश के एक पत्ते पर तथा वह ताश का पत्ता था गिनो।

गिनो के बर्ताव से कभी इस बात का आभास नहीं होता था कि वह शादी का प्रस्ताव ठुकरा देगा। शादी की तैयारी के वक्त भी वह मेरे साथ रहा। मैंने मम्मी से कहा, "मम्मी! गिनो भी विवाह की तैयारी के लिए हमें कुछ धन देगा।"

गिनो ने एक दिन मुझे थोड़ा सा पैसा देते हुए कहा, "मैं आशा करता हूँ कि आप पैसे की कमी के लिए मुझे अवश्य क्षमा कर देंगी। क्योंकि अभी मुझे पैसे भी भेजने पड़ते हैं इसलिए अभी पर्याप्त पैसा नहीं बचा पा रहा हूँ।"

उसकी इस तरह की बातों से मेरा विश्वास बढ़ता जा रहा था कि वह बहुत वफादार है। मगर वास्तव में यह सब मेरी आँखों में धूल झोंकने के लिए ही किया जा रहा था।

इन दिनों मैं बहुत खुश दिखाई पड़ती थी। हमारा कोई भी दिन ऐसा नहीं होता था कि जिस दिन हम न मिल पाते हों। प्यार का कोई भी मौका हम अपने हाथ से न निकलने देते थे। कार की पिछली सीट हो, या कोई अन्धेरा कोना, गिनो का घर हो चाहे सिनेमाघर, किसी भी जगह को हमारी

प्रेम--स्थली बनने में ज्यादा देर न लगती थी। मैं हर वक्त उसकी बाँहों में ही रहना पसन्द करती थी। मैं उससे क्षण भर के लिए भी जुदा न होना चाहती थी।

मम्मी ने विवाह की तैयारी के लिए हमें जो पैसा दिया था, उसी को लेकर हम दोनों कुछ खरीदारी के मकसद से बाजार घूमने जाते थे। फर्नीचर की दुकानों पर जाते थे तथा दुल्हन के जोड़े का कपड़ा पसन्द करने जाते थे।

धन की भारी कमी के कारण, हमें जो भी सामान पसन्द आता, वह काफी महंगा लगता तथा हम उसे खरीदने में स्वयं को असमर्थ पाते थे। घोर मायूसी के साथ हमें शोरूम से निकलना पड़ता। हम मन में यह इच्छा लिए हुए कि यह सामान हमारे पास होना चाहिए उनकी महंगी कीमतों पर हैरानी प्रगट करते थे।

मैं जब से गिनो के मालिक की विला से लौटी थी, मेरे ख्वाब भी ठीक उसी प्रकार के शानदार फर्नीचर तथा बहुमूल्य वस्त्रों के बन चुके थे, लेकिन सीमित साधन होने के कारण उन्हें न पाकर हमें बड़ी पीड़ा होती थी।

बहुत सी दुकानों पर घूमने और आपसी बातचीत के पश्चात आखिरकार हमने फैसला लिया कि बढ़िया सा फैन्सी फर्नीचर आसान किश्तों में खरीद लेते हैं और प्रति सामान की किश्तें चुकाते रहेंगे। इस तरह एकमत होकर हमने एक डबल-बैड, ड्रैसिंग टेबिल, कुर्सी-मेज तथा अलमारी आदि फर्नीचर किश्तों पर खरीद लिया। इसके बाद मकान में रंग-रोगन कराने की योजना बनाई। हमें परदे और अन्य जरूरी सामान भी खरीदना था।

हमारे नये घर में जिस रोज से फर्नीचर आया था, मैं बेहद प्रसन्न दिखाई पड़ती थी। मुझे अपने विवाह की तारीख की बड़ी बेचैनी से प्रतीक्षा रहती थी। मैंने अपना नया घर सचमुच इतना साफ तथा सुन्दर सजा लिया था कि उसे देखकर मैं फूली न समाती थी।

अक्सर मम्मी की दृष्टि बचाकर मैं कमरे में जाकर यह देख आती थी कि सभी चीजें उम्दा और बेहतरीन हैं या नहीं और हमें साथ रहने पर कैसा लगेगा। मुझे कमरे की सजावट में अभी भी बहुत सी कमियां नजर आ रही थीं, मगर यही सोचकर सन्तोष करना पड़ता था, कि एकदम तो सारी सुख-सुविधाएं किसी को भी नहीं मिल पातीं, धीरे-धीरे हमारे पास भी सब-कुछ हो जायेगा। गिनो के मालिक की विला में जाने के पश्चात मेरा ख्याल भी बिल्कुल वैसा ही जीवन बसर करने का होता जा रहा था।

मेरा दिल बार-बार यही करता कि हमारे पास भी वे सभी सुख-सुविधाएं, आकर्षक फर्नीचर, कीमती वस्त्र, फैन्सी बर्तन तथा विलासिता की अन्य सभी सामग्री होनी चाहिए। मेरी हमेशा यही कामना रहती कि हमारे पास भी अपनी एक कार तथा कोठी होनी चाहिए। मैं स्वयं को धनवान महिलाओं की तरह सदैव सजी-संवरी तथा आकर्षक बनाएं रखना चाहती थी।

मैं जब स्टूडियो में मॉडलिंग के पेशे में थी, मेरी दोस्ती एक अन्य मॉडल गिसेला से हो गई थी। वह देखने में हृष्ट-पुष्ट और लम्बे कद की नवयौवना थी। उसका रंग गोरा, केश गहरे सुनहरे, और आँखें छोटी-छोटी गहरी नीली तथा चेहरा सुर्ख था।

गिसेला का आचार-व्यवहार मेरे आचरण के एकदम अलग था। वह शीघ्र ही गुस्सा हो उठती थी। वह कुशाग्र बुद्धि, प्रत्येक बात को तथ्यों की रोशनी में मापने वाली एक स्वावलम्बी नवयौवना थी।

अक्सर मैं उसकी काली जैकेट से, जो काफी कीमती एवं आकर्षक थी, जला करती थी। उसका एक प्रेमी था, जिसका नाम रिकार्डो था। वह भी लम्बे कद का एक भारी-भरकम आदमी था। वह नित्य-प्रति नये-नये कीमती सूट पहनकर गिसेला से मिलने आता था। यद्यपि वे दोनों अच्छे दोस्त थे, लेकिन उनके बीच शादी जैसा कोई रिश्ता कायम नहीं हुआ था। इतना होते हुए भी कोई ऐसी प्यार की मर्यादा अथवा हद नहीं थी जिसका उन्होंने उल्लंघन न किया हो। वे यौनसुख का भरपूर मजा लेते थे।

हालांकि मेरे विचार से गिसेला बिल्कुल मूर्ख थी, मगर साथ ही इस बात से भी इंकार नहीं किया जा सकता कि उसके पास जीवन का अच्छा तजुर्बा था। उसके विचार मेरी मम्मी के ख्यालों से बहुत कुछ मिलते-जुलते थे। उनमें फर्क सिर्फ इतना था कि अपने ख्यालों को प्रगट करने के लिए मम्मी तो प्रचंड रूप धारण कर लेती थीं और लड़ाई-झगड़ा व मार-पीट करने तक से भी नहीं चूकती थीं, लेकिन गिसेला के विचारों में मौजमस्ती थी। हमेशा अधिक से अधिक धन जुटाने के लिए लालायित रहती थी।

मम्मी अपने ख्यालों को सिर्फ प्रगट कर सकती थीं, वे उन्हें अमल में नहीं ला सकती थीं। जबकि गिसेला का स्वभाव इससे काफी भिन्न था। वह किसी भी ख्याल को प्रगट कम करती थी, तथा अमल में ज्यादा लाती थी।

हमारे रहन-सहन को देखकर उसे बड़ी हैरत होती थी। उसे इस बात पर भी बड़ा अचम्भा होता कि मेरे पास सही से पहनने के लिए वस्त्र भी नहीं हैं, अच्छे जूते नहीं हैं, मम्मी घर में सिलाई करती हैं तथा छोटा सा घर काफी गन्दा है।

उसने मुझे भी घर का माहौल बदलने की योजना बताई थी। वह अक्सर कहा करती थी, ''एड्रिना! तू सचमुच अपने विवाह का फैसला बदलकर शीघ्र ही मेरी तरह से सुखी-सम्पन्न हो सकती है। तू तो वास्तव में बेवकूफ है जो अब तक पवित्रता का राग अलाप रही है।''

जब मैंने उससे अपने प्रेमी गिनो की दोस्ती का जिक्र किया, तो उसने यह जानकर कि वह एक मामूली सा ड्राइवर है, अपना मुँह फेर लिया तथा कहने लगी, ''एड्रिना! तुम तो वास्तव में बेवकूफ हो। मुझे लगता है कि तुम उससे शादी के ख्यालों में फंसकर अपना जीवन तबाह कर डालोगी।''

गिनो मेरा होने वाला पति था तथा गिसेला एक अच्छी सहेली थी।

आज मुझे उन दोनों के फर्क का आभास होता है, जिस भावना से वे दोनों बातें करते थे। लेकिन, मैं तो समझती थी कि गिनो मेरा शुभचिन्तक है और गिसेला एक ऐसी बदचलन लड़की है जो कि मुझे भी पथभ्रष्ट कर सकती थी। लेकिन फिर भी वह मुझे चाहती थी तथा मेरे भविष्य को लेकर ही परेशान रहती थी। उसका ध्येय मुझे भ्रष्ट करने का नहीं था।

मैंने एक दिन मिल्क बार में गिनो व गिसेला की मुलाकात करवा दी। मेरी उम्मीद के विपरीत गिसेला पूरी तरह गम्भीर थी, जबकि गिनो उसे आकर्षित करने और उससे बातें करने का प्रयास करता रहा। उसने गिसेला के सामने भी अपनी मालकिन के सुख-ऐश्वर्य का जिक्र किया। मगर गिसेला ने गिनो की बातों में कोई खास रुचि नहीं ली। गिसेला को आखिर में यही कहना पड़ा कि तुम वाकई भाग्यशाली हो, जो एड्रिना तुम्हें मिल गई है।"

गिनो ने आश्चर्यपूर्वक पूछा, "वह कैसे?"

"क्योंकि ड्राइवर अक्सर अपनी दोस्ती घरों में काम करने वाली नौकरानियों तक ही सीमित रखते हैं।" गिसेला ने निर्भीकतापूर्वक कहा।

यह सुनते ही गिनो का रंग बदल गया, मगर वह अपनी भावनाओं पर शीघ्र ही नियन्त्रण पाने वाला था और उसने धीरे से जवाब दिया, "आपकी बात से सहमत हूँ। हमारे सामने एक ड्राइवर ने खाना पकाने वाली से विवाह कर लिया। ऐसा क्यों नहीं किया जा सकता। ऐसा तो मैं भी कर सकता था। मैं एड्रिना के भी एक मॉडल होने की अपेक्षा एक महरी (घर में काम करने वाली) होना कहीं ज्यादा पसन्द करता। मेरा मतलब एड्रिना से ही नहीं है। अपितु एक मॉडल को एक कलाकार के आगे वस्त्र उतारकर तरह-तरह के पोज बनाने पड़ते हैं। यह एक कड़ुआ सच है तथा हो सकता है कि वह एक मॉडल गर्ल उन्हें प्रसन्न करने के लिए बाध्य भी होती हो।"

गिनो ने एक सिगरेट का पैकेट निकालकर गिसेला को दिया, "क्या तुम धूम्रपान करोगी?"

गिसेला ने इंकार में गर्दन हिलाते हुए कहा, "जी नहीं, आओ एड्रिना! हमें बहुत देर हो रही है।"

गिनो से विदा लेकर हम अपने घर की तरफ चल दिए।

सड़क पार करते हुए गिसेला ने मुझसे कहा, "एड्रिना! तुम तो बहुत ही जज्बाती हो, मैं तो एक मामूली से शोफर से भूलकर भी शादी न करती।"

मैंने उत्सुकतावश गिसेला से पूछा, "क्या वह तुम्हें अच्छा नहीं लगा?"

गिसेला ने मेरे सवाल का उत्तर देते हुए कहा, "सच जानना एड्रिना! मुझे तो वह बिल्कुल पसन्द नहीं आया। पहली बात तो यह है कि तुमने बताया था कि वह बहुत लम्बा है, जबकि वह एकदम नाटा है। वैसे भी उसकी शक्ल स्वाभाविक नहीं लगती: उसकी बातों में इतनी बनावट रहती है कि उसे कोई दूर से भी पहचान लेगा। उसकी बातें यकीन करने योग्य नहीं हैं, उनमें झूठ ही झूठ है। वह मात्र एक ड्राइवर है। उसके साथ सुखमय जीवन नहीं बिताया

जा सकता।''

मैंने गिसेला की बात को काटते हुए कहा, ''मगर मैं उसे दिल की गहराइयों से चाहती हूँ।''

गिसेला ने कहा, ''सही है तुम उसे प्यार करती हो, मगर वह तो तुम्हें प्यार नहीं करता, तुम्हारे इस एकतरफा प्रेम की कोई खास क़ीमत नहीं है।''

मुझे गिसेला की इस भविष्यवाणी से एक बार फिर गहरा धक्का लगा। मम्मी की मानिन्द वह भी गिनो को जाँच-परखकर इसी निर्णय पर पहुँची थी कि वह मुझे छोड़ देगा, हमारे सारे ख्वाब धूल में मिल जायेंगे।

मुझें सर्वाधिक पीड़ा इस बात की हो रही थी कि मैं जिस बात को महीनों में नहीं परख सकी थी, उसे गिसेला ने एक घंटे भर में ही जाँच लिया था। इसके विपरीत गिसेला के बारे में गिनो की राय भी अच्छी नहीं थी।

गिनो ने गिसेला के विषय में अपनी राय प्रकट करते हुए कहा, ''एड्रिना! मेरे ख्याल में तो तुम्हारी सहेली गिसेला किसी वेश्या से कम नहीं है।''

गिनो के मुख से गिसेला के विषय में ऐसे विचार जानकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। कुछ पल रुककर गिनो ने कहा, ''तुम्हें यह मानना ही पड़ेगा कि वह एक सड़क छाप लड़की है। यह तो खुद तुमने भी महसूस किया होगा कि वह कितने कीमती वस्त्र धारण करती है। इतने महंगे शौक पूरे करने के लिए वह पैसा कहाँ से जुटा पाती होगी।''

मैंने गिनो की बात का जवाब देते हुए कहा, ''उसके महंगे शौक पूरे करने के लिए उसका प्रेमी उसे पूरा खर्चा बर्दाश्त करता है।''

''मगर मैं तो दावे के साथ कह सकता हूँ कि हर रात में उसका एक नया प्रेमी होता है।''

''मैं कुछ समझी नहीं कि तुम आखिर कहना क्या चाहती हो?'' मैंने अपने दिमाग पर जोर डालते हुए बताया।

''मेरी बात बिल्कूल साफ है तथा इसका सीधा-सादा मतलब है कि वह हर रोज एक नए दोस्त की खोज में रहती है। वह प्रेमियों को प्रतिदिन वस्त्रों की मानिन्द बदलती है। मैं तुम्हें अब एक बात और बतला देना चाहता हूँ कि तुम्हें उसमें और मुझमें से किसी एक को चुनना होगा।'' गिनो ने गम्भीरतापूर्वक कहा।

''क्या कहा आपने किसी एक को चुनना होगा?'' मैंने हैरत से कहा।

''जी हाँ, मैंने वही कहा है जो तुम्हें सुनायी पड़ा है। अगर तुमने भविष्य में उससे मिलने की कोशिश की, तो मेरे पास आने की जरूरत मत समझना।'' गिनो ने स्पष्ट रूप से कहा।

मैंने गिनो को समझाने की काफी चेष्टा की, लेकिन कोई लाभ न हुआ।

दरअसल बात यह थी कि वह गिसेला के उपेक्षापूर्ण बर्ताव से काफी आहत हो चुका था। मेरा ख्याल था कि वह भी ऐसे ही विचारों का है। क्योंकि

उसने गिसेला के आचरण को पसन्द नहीं किया, इससे यही बात मस्तिष्क में आती है वह एक वफादार प्रेमी है।

गिनो ने भावुक होते हुए कहा, "मैं यह बर्दाश्त नहीं कर सकता कि मेरी प्रेमिका किसी औरत के साथ कोई ताल्लुक रखे।"

आखिरकार मैंने यही सोचकर कि कहीं ऐसा न हो जाये कि हमारी शादी का प्रस्ताव मध्य में ही खण्डित हो जाये, मैंने गिनो से वायदा किया कि मैं भविष्य में कभी भी गिसेला से नहीं मिलूँगी। हालांकि मैं भली-प्रकार जानती थी कि गिसेला भी मेरी एक अच्छी सहेली है और हम दोनों एक ही स्टूडियो में काम करते हैं तथा मैं अपना वायदा एक रोज भी नहीं निभा सकूँगी।

उस दिन के पश्चात से मैं गिनो से छुपकर ही गिसेला से मिला करती थी। गिनो व अपने मध्य में घटित होने वाली प्रत्येक बात को मैं गिसेला से बता दिया करती थी। मेरी बातों को सुनकर गिसेला अक्सर कहा करती थी, "एड्रिना! तेरा यह अन्धविश्वास मेरे वर्तमान तथा भविष्य दोनों को ही बर्बाद कर डालेगा।"

उसका प्रेमी रिकार्डो गिसेला और मेरे मध्य कोई फर्क नहीं मानता था। वह हमारे मॉडलिंग के पेशे को भी बुरा नहीं समझता था। मुझ पर वह किसी तरह का व्यंग्य नहीं करता था। वह स्वभाव से हँसमुख था। वह हमेशा हँसी-मजाक करता रहता था और चुटकुले सुनाता था।

वह वास्तव में बुरा नहीं था। न हो वह चालाकी भरी या छलकपट की बातें करता था। मेरी शादी का वायदा भी उसकी दृष्टि में एक मजाक ही था। जब गिसेला ने मुझे अपने फैसले पर अडिग पाया तो उसने मुझ पर बुरी प्रकार बिगड़कर अनेक प्रहार किए और हर तरह से कोशिश करने लगी कि मैं गिनो से विवाह करने का विचार छोड़ दूँ।

मेरे कमजोर बिन्दु की पकड़ करते हुए उसने कहा, "तुम्हारे ये कपड़े, मैं समझती हूँ तुम्हारे लिए शर्मनाक वस्तु है। इसके विपरीत मेरा प्रेमी रिकार्डो कभी भी मुझे खाली हाथ नहीं रहने देता है तथा मेरी प्रत्येक सुख-सुविधा का पूरा ख्याल रखता है। ऐसे घटिया वस्त्रों में तो वह मुझे कभी देखना भी पसन्द नहीं करेगा। एड्रिना! अब तुम अपने प्रेमी और रिकार्डो में खुद ही अन्तर महसूस कर सकती हो।"

मैं किसी भी कीमत पर गिनो की बुराई सुनने को तैयार नहीं थी। अगर कोई उसकी शान में लेशमात्र भी गुस्ताखी करना चाहता, तो मुझे बड़ा गुस्सा आने लगता था। मेरा चेहरा तमतमा उठता और आँखों में आँसु छलक आते थे।

मेरे प्रति दया और सहानुभूति की भावना रखते हुए एक दिन रिकार्डो ने कहा, "एड्रिना! किसी दिन तुम गिसेला के साथ आना, मैं तुम्हें तोहफा स्वरूप हैण्डबैग देना चाहता हूँ।"

रिकार्डो की इस बात का गिसेला ने हिंसक रूप में प्रतिवाद किया,

''नहीं रिकार्डो! कोई उपहार नहीं। इसको उपहार देने वाला इसका प्रेमी गिनो है, उसको ही तोहफा देने दो। इसका उसी के तोहफे पर अधिकार बनता है।''

रिकार्डो ने बिना सोचे-समझे ही मुझसे तोहफा देने की बात कह दी थी, यह उसके अच्छे स्वभाव होने का प्रमाण लग रहा था। मगर यह बात गिसेला को बहुत बुरी लगी थी।

मेरे आत्म-सम्मान को रिकार्डो की बात से बहुत ठेस पहुँची थी, इसलिए मैं उसी दिन दोपहर के पश्चात बाजार गई और मैंने अपने ही पैसे से एक हैंडबैग खरीद लिया। मैं अगले रोज अपनी बगल में वह नया हैंडबैग दबाकर गिसेला व रिकार्डो से मिली और उनसे कहा, ''देखो, मेरे गिनो ने मुझे यह तोहफा दिया है।''

मेरी सिर्फ यही एक जीत थी जो कि हमारी तीखी नोंक-झोंक में मुझ पर आघात किया गया था। मुझें इसकी कीमत अपने पास से ही अदा करनी पड़ी थी, इसलिए मुझे परेशानी उठानी पड़ी।

गिसेला ने अनुभव किया कि उसकी इसी नोंक-झोंक के कारण मेरे आत्म-सम्मान को ठेस पहुँची है और मुझे इस प्रकार के वार्तालाप से घोर अपमान महसूस हुआ है, तो उसने मुझे अपने तरीके से मनाने का प्रयास किया तथा कहने लगी, ''अपना दिमाग खराब करने से पहले, कम से कम यह तो सुन लिया होता कि मेरा उन बातों को कहने का क्या मतलब था।''

मैंने थोड़ा शान्त होते हुए कहा, ''क्या मतलब था, फिर से समझाओ ना?''

मेरी उत्सुकता को देखकर गिसेला ने कहा, ''एड्रिना! यह तो तुम जानती ही हो कि मैं तुम्हें प्यार करती हूँ। मैं तुम्हें अपनी बहिन के समान समझती हूँ। निःसन्देह तुम बहुत खूबसूरत हो। अपने इस रूप-यौवन के बल पर तुम जो चाहो पा सकती हो। मुझे तुम्हें इस दयनीय हालत में फटे-पुराने वस्त्र धारण किए हुए देखकर बड़ी नफरत होती है। इन कपड़ों में किसी कूड़ा बीननेवाली से कम नहीं लगतीं।''

वह यह कहते हुए थोड़ी सी झिझकी। उसने मेरी तरफ ध्यान से देखा और कहने लगी, ''एक महाशय हैं, जोकि मेरे बहुत ही अच्छे मित्र हैं। वे तुम्हें भी देख चुके हैं तथा तुम्हें चाहते भी हैं। यद्यपि वह विवाहित हैं, मगर उनका परिवार दूर देश में रहता है। वह पुलिस विभाग में एक बड़े अधिकारी हैं। अगर तुम उनसे मिलना चाहो तो मैं तुम्हें उनसे मिलवा सकती हूँ।

वह वास्तव में एक अच्छा इन्सान है। उसकी व तुम्हारी मुलाकात के बारे में कोई जान भी नहीं पायेगा। इस विषय में तुम्हें चिन्ता करने की कोई जरूरत नहीं है, वह एक बहुत ही व्यस्त अधिकारी है और महीने में तुम्हारी ज्यादा से ज्यादा दो या तीन मुलाकातें ही हो पायेंगी।

तुम्हारी व उसकी बात बन जाने के बाद वह तुम्हारे व गिनो के मिलने पर भी कोई मुसीबत नहीं करेगा। गिनो से यदि तुम विवाह भी कर लोगी तो भी उस अधिकारी को इस बात से कोई परेशानी नहीं होगी। लेकिन वह इस

बात का जरूर ध्यान रखेगा कि तुम्हें गिनो के साथ कोई दुःख न उठाना पड़े। तुम्हारा इस बारे में क्या विचार है?''

''आपके इस मशवरे के लिए धन्यवाद।'' मैंने स्पष्ट शब्दों में कहा, ''मैं इसे कभी नहीं मान सकती।''

''मगर इसमें बुराई क्या है?'' गिसेला ने आश्चर्य से पूछा।

''हो सकता है आपकी दृष्टि में यह कोई बुरा काम न हो, लेकिन मेरी दृष्टि में यह अच्छा काम नहीं है। मैं ऐसा इसलिए नहीं कर सकती क्योंकि मैं गिनो से प्रेम करती हूँ। यदि मैंने ऐसा करना स्वीकार भी कर लिया तो मैं गिनो को मुँह दिखाने योग्य भी नहीं रहूँगी।'' मैंने दृढ निश्चय के साथ कहा।

''एड्रिना! बेवकूफ मत बनो! जब मैं कह चुकी हूँ, अगर तुम यह प्रस्ताव स्वीकार करती हो, तो गिनो इस बारे में कुछ नहीं जान पायेगा।''

''क्या यह काम ठीक होगा?'' मैंने गिसेला से कहा।

''ये सब ठण्डे दिमाग से सोचने वाली बातें हैं। थोड़ा मस्तिष्क पर जोर दो। यदि मुझे कोई इस तरह प्रस्ताव करे, तो वह क्यों किसी को बताना चाहेगा?'' गिसेला मेरी आँखों में आँखें डालकर बोली।

''...नहीं...नहीं, मुझसे यह सब नहीं हो सकेगा। मैं इस प्रस्ताव को मंजूर नहीं कर सकती।'' मैंने स्पष्ट अलफाजों में इंकार करते हुए कहा।

इसी तरह उसने और भी बहुत सी बातें कीं, लेकिन मैं उसके प्रत्येक प्रस्ताव को ठुकराती रही। आखिर में नाराज होकर वह अपने घर चली गई।

मैंने बिना सोचे-विचारे ही गिसेला का प्रस्ताव ठुकरा दिया। जब मैंने अकेले में इन बातों पर गम्भीरता से विचार किया, तो मुझे पश्चाताप होने लगा। मैंने सोचा, 'गिसेला शायद सही ही कह रही थी कि प्यार से खाना-पीना व अन्य चीजें हासिल नहीं हो सकतीं जो कि जीवन के लिए परम आवश्यक हैं। उसने मुझे यह सब हासिल करने का तरीका भी बताया था जिसकी मुझे बहुत अधिक जरूरत भी थी।'

मगर मैंने इस विचार को फौरन त्याग दिया और गिनो के साथ शादी की बात फिर से सोचने लगी। मेरा विचार था कि मैंने जिसके लिए अपना सभी कुछ समर्पण किया है, वह अवश्य विवाह करेगा।

मैंने काफी सोच-विचार कर मम्मी को गिसेला के प्रस्ताव के बारे में बताया। मेरे ख्याल में मम्मी को बताने के दो कारण थे—एक तो यह कि वे मेरे ख्याल पर बहुत प्रसन्न होंगी। दूसरी बात यह कि इससे उनके आत्मसम्मान में बढ़ोतरी होगी और वह कहेंगी कि मेरी बात पूरी हुई। और उनका मुझे दोषी ठहराना और भी सही माना जायेगा, लेकिन मुझे उनके विचार जानकर बड़ा अचम्भा हुआ। उनकी लालची आँखों में एक चमक थी और चेहरे पर खुशी छा रही थी।

मम्मी ने उत्सुकतावश पूछा, ''एड्रिना! कौन है वह?''

मैंने हिम्मत बटोर कर कहा, ''एक सज्जन है मम्मी।'' मुझे यह बताते

हुए बड़ी लज्जा महसूस हो रही थी कि वह पुलिस के एक अधिकारी हैं।

मम्मी ने उत्सुकतावश पूछा, ''क्या कहा तुमने? ...वह एक अमीर व्यक्ति है?''

मैंने जवाब दिया, ''हाँ मम्मी! उसके पास बहुत सा धन है।''

मैं आगे मम्मी से यह बताने का साहस न जुटा सकी कि मैंने इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया है।

''क्यों एड्रिना! क्या वह तुम्हें प्रेम करता है? यदि वास्तव में ऐसा है तो तुम्हें उससे अधिकाधिक परिचय बढ़ाना चाहिए।'' मम्मी ने बड़ी उत्सुकता से पूछा।

''लेकिन मम्मी! मुझे इस सबकी जरूरत ही क्या है? मुझे उसमें कोई खास रुचि नहीं है, क्योंकि वह तो पहले से ही एक विवाहित आदमी है। इसीलिए मैं उससे मिलना नहीं चाहती। इसके अतिरिक्त, यदि वह अविवाहित भी रहा होता तो भी मैं किसी दूसरे पुरुष के बारे में कैसे सोच सकती थी?'' मैंने अपने दिल की बात मम्मी के सामने प्रगट करते हुए कहा।

''मगर एड्रिना! कुछ बातें ऐसी भी होती हैं जो कि एक-दूसरे से जुड़ी होती हैं, उनका ज्ञान, उनकी उपलब्धि, उनका तजुर्बा किसी दूसरे पुरुष से बिना मिले नहीं हो सकता। कुछ मामलों में यह सब करना आदमी की जरूरत बन जाता है।'' मम्मी ने मुझे गम्भीरतापूर्वक समझाते हुए कहा, ''वह अमीर है, जवान है, साथ ही मुझे चाहता भी है। यह मैं तुम्हें पहले भी समझा चुकी हूँ कि एक रास्ता ही किसी व्यक्ति को दूसरे मार्ग पर ले जा सकता है। मेरा दिल तो यहाँ तक कहता है कि वह तुम्हारी सहायता निःस्वार्थ भाव से भी कर सकता है।''

''नहीं मम्मी...नहीं... यह सब मुझसे नहीं हो सकेगा, ऐसा करना तो दूर, ऐसा सोच भी नहीं सकती।'' मैंने अपनी मर्जी प्रगट की।

''एड्रिना! मेरे ख्याल में तो यह कोई अक्लमन्दी वाली बात नहीं है।'' मम्मी ने मेरी तरफ घूरते हुए कहा।

मम्मी ने मुझे समझाने का फिर प्रयास करते हुए कहा, ''एड्रिना! तुम्हें एक बार फिर समझाना चाहती हूँ कि गिसेला वाकई में एक अच्छी लड़की है। साथ ही वह तुम्हारी शुभचिन्तक भी है। उसने तुम्हारे अच्छे भविष्य की कामना करते हुए ही तुमको यह सब समझाया है, लेकिन उसकी जगह कोई दूसरी लड़की होती तो वह तुमसे यह जानकर जलन करने लगती। वह तुम्हें दुनियादारी की आवश्यक बातें हरगिज न बताती। इसीलिए मेरी नजर में वह तुम्हारी सबसे अच्छी सहेली है।''

गिसेला ने मेरे इंकार करने के पश्चात कभी भी उस व्यक्ति के विषय में जिक्र तक नहीं किया था। अब उसने मुझे तंग करना भी समाप्त कर दिया था। मुझ पर गिसेला की तरफ से बार-बार यही दबाव डाला जाता था कि मैं अपने फैसले पर दोबारा ख्याल करके देखूँ।

उसकी दृष्टि में गिनो के विचार अच्छे नहीं थे। मैंने मम्मी से कहा,

''गिनो से तो गिसेला घृणा करती है और कहती है यदि मेरी जगह वह होती, तो यह वायदा कभी का तोड़ चुकी होती। गिसेला को गिनो भी पसन्द नहीं करता है तथा उसने भी मुझे गिसेला के साथ कहीं भी जाने को इन्कार किया है।''

''यह तो सीधी सी बात है। भला वह तुम्हें गिसेला के साथ क्यों देखना चाहेगा? उसको हमेशा इस बात का भय बना रहेगा कि तुम गिसेला के प्रेमी से उसकी तुलना करोगी तथा वह कहीं भी नहीं ठहर पायेगा।'' मम्मी ने समझाते हुए बताया।

''मम्मी! तुम मेरी बात का यकीन तो करो, गिसेला सचमुच एक अच्छी लड़की नहीं है।'' मैंने मम्मी को सच्चाई से अवगत कराया।

''एड्रिना! मेरी बात को समझने की चेष्टा करो, गिसेला ही वास्तव में तुम्हारी शुभचिन्तक है। वह एक आधुनिक विचारों वाली समझदार लड़की है। मैं तुम्हारी मम्मी हूँ, इसलिए तुम्हें दुनियादारी व ऊँच-नीचे की बातें समझाना मेरा कर्त्तव्य बनता है। यह तुम्हें मानना ही पड़ेगा कि गिसेला के विषय में सोचने का तुम्हारा तरीका बिल्कुल गलत है। गिसेला तुम्हारे विषय में जो कुछ भी कह रही है, वह बिल्कुल ठीक कह रही है तथा तुम्हारे भले के लिए ही कह रही है। आगे अपना भला-बुरा तुम्हें स्वयं देखना चाहिए, तुम जो अच्छा समझो करो।'' मम्मी ने मुझे समझाने में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी थी।

''मम्मी! मैं सचमुच बहुत दुःखी हूँ। अब अगर तुम मुझ पर इस बात के लिए अधिक दबाव डालोगी, तो मैं अपनी जान खोने के लिए मजबूर हो जाऊंगी। इस विषय में जिस वक्त भी मुझसे किसी ने अनावश्यक दबाव डाला, वह क्षण मेरे जीवन का अन्तिम क्षण होगा।'' मैंने मम्मी को आखिरी चेतावनी देते हुए कहा।

तेज गर्मी का एक दिन था। आकाश एकदम नीला और स्वच्छ था। अचानक गिसेला मुझसे बोली, ''एड्रिना! आज मैंने अपने प्रेमी रिकार्डो व उनके एक दोस्त के साथ कार से बाहर घूमने की योजना बनाई है। अब हमें एक चौथे दोस्त की जरूरत है और मैंने तुम्हें अपने साथ ले जाने के विषय में सोचा है। अगर तुम चाहो तो हमारे साथ चलकर पिकनिक का आनन्द ले सकती हो।''

मैंने गिसेला का यह प्रस्ताव एक साधारण पिकनिक समझकर स्वीकार कर लिया। मैं गिनो और मम्मी से बहाना बनाते हुए कहने लगी, ''मम्मी! आज हमारे स्टूडियो में दूसरे दिनों की अपेक्षा कुछ ज्यादा ही काम है, मुझे बहुत जल्दी जाना होगा।''

यह कहकर मैं तैयार होकर घर से निकल पड़ी। गिसेला के घर के बाहर कार तैयार खड़ी थी। खिड़की खोलकर गिसेला और उसका प्रेमी रिकार्डो अगली सीट पर बैठ गये। एक और दूसरा अपरिचित पुरुष मेरे साथ पिछली सीट पर बैठ गया। गिसेला ने उस अजनबी आदमी का मुझसे परिचय

कराया। उसका नाम स्टीफन एस्ट्रीटा था। उसी समय मैंने अनुमान लगाया कि यह वही व्यक्ति हो सकता है, जिसके बारे में गिसेला ने कुछ वक्त पहले मुझसे चर्चा की थी।

यह देखने में बड़ा विनम्र लगता था। औसत कद-काठी का होते हुए भी उसका सपाट चेहरा देखने में बड़ा अच्छा लग रहा था इसीलिए मुझे उस वक्त उससे मिलने में कोई नाराजगी महसूस नहीं हुई। उसका बात करने का तरीका बड़ा चापलूसी भरा था। मैंने जैसे ही उसकी तरफ अपना नाजुक हाथ बढ़ाया उसने प्रेम से चूम लिया।

सड़क पर दौड़ती हमारी गाड़ी हवा से बातें कर रही थी। इस मध्य हम कठिनता से ही बोले होंगे। मेरा यह कार में शहर से बाहर यात्रा करने का तीसरा या चौथा अवसर होगा। एक अनजाना सा डर मुझे भीतर ही भीतर कचोट रहा था।

मैंने खिड़की से बाहर की तरफ झांकना शुरू कर दिया। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो बाहर धरती, और सूर्य भी हमारे साथ-साथ दौड़ रहे थे। लेकिन इसके विपरीत मेरे पास ही बैठा एस्ट्रीटा मेरे मासूम मुख की खूबसूरती में खोया हुआ था।

गिसेला और उसका प्रेमी रिकार्डो परस्पर बातें करने में तल्लीन थे। इस वक्त मुझे एस्ट्रीटा के ऊपर तरस आ रहा था। वह बार-बार कुछ कहने के लिए हिम्मत बटोरता हुआ लग रहा था, मगर यह निश्चित नहीं कर पा रहा था कि बातों का सिलसिला कहाँ से आरम्भ करे। उसकी इस दयनीय हालत पर तरस खाते हुए मैंने ही उसके साथ बातचीत की भूमिका बाँधते हुए कहा, ''कितनी सुन्दर अंगूठी है?''

उसने अपनी आँखें झुकाते कहा, ''यह तो मेरे बाप की है। उनके आखिरी समय में ही मैंने इसे उनकी उंगली से उतार लिया था।''

''ओह! माफ करना।'' मैंने क्षमा याचना करते हुए दूसरी अंगूठी की ओर इशारा करके कहा, ''क्या आप विवाहित हैं?''

''जी हाँ! ईश्वर की दया से मेरी पत्नी-बच्चे व भरा-पूरा घर-संसार है।'' उसने गम्भीरता पूर्वक जवाब दिया।

''आपकी पत्नी तो सचमुच बहुत खूबसूरत होगी?'' मैंने लजाते हुए पूछा।

''जी आपके मुकाबले में तो वह कुछ भी नहीं है।'' उसने बिना किसी मुस्कुराहट के धीमी आवाज में जवाब दिया।

मैंने बात की तह में पहुँचने की नीयत से पूछा, ''वह तो तुम्हारे साथ ही रहती होंगी न?''

''जी ऐसा मुमकिन नहीं है।'' उसने बात को आगे बढ़ाते हुए कहा, ''वह यहाँ से दूर एक कस्बे में बच्चों के साथ रहती है। यहाँ तो मैं सिर्फ अकेला ही रहता हूँ। क्या आप किसी दिन मेरे यहाँ आना चाहेंगी?''

मैंने उसकी बात को अनसुनी करने का बहाना करते हुए बताया,

''क्या तुम दोनों पति-पत्नी एक ही छत के नीचे रहना पसन्द नहीं करते?''

''जी दरअसल बात यह है कि हम कानूनी रूप से तलाकशुदा हैं।'' उसने आपबीती सुनाते हुए कहा, ''मेरी शादी बहुत छोटी उम्र में ही हो गयी थी। मैं उस वक्त दुनियादारी की कोई खास जानकारी नहीं रखता था। मेरी पत्नी अच्छे खाते-पीते परिवार की थी। वह अपने साथ अच्छा खासा दहेज लेकर आई थी। लेकिन आरम्भ से ही हमारे विचारों में काफी मतभेद बना रहा।''

इसके साथ ही उसने अपनी जेब से पर्स निकालकर उसमें लगा एक फोटो दिखाया--जिसमें एक तरफ दो बच्चे खड़े थे जो देखने में जुड़वा लग रहे थे। इन्होंने सफेद ड्रेस धारण की हुई थी। उनके पीछे एक औरत खड़ी थी जो कि उनके कंधों पर हाथ रखे हुए थी।

मैंने उसका फोटो उसे वापस लौटा दिया जो कि उसने फिर पर्स में रख लिया।

''मैं आपके साथ रहना पसन्द करूंगा।'' उसने बड़े संकोच के साथ बताया।

''मगर आप तो मेरे बारे में अभी कुछ भी नहीं जानते।'' मैंने उसके इस आकस्मिक प्रस्ताव पर विरोध करते हुए कहा।

''मैं तुम्हारे बारे में बहुत कुछ जानता हूँ। मैं पिछले एक माह से भी अधिक वक्त से तुम्हारा पीछा करता आ रहा हूँ।'' एस्ट्रीटा ने साहस बटोरकर कहा।

अब भी वह मुझसे जरूरी फासला बनाए हुए था। वह मुझसे बड़े अदब से पेश आता हुआ धीरे-धीरे मुझे मनाने की चेष्टा कर रहा था। मैंने उसके इरादे को भांपते हुए कहा, ''मैं तो पहले ही किसी से विवाह का वायदा कर चुकी हूँ।''

''आपके बारे में बात तो मुझे गिसेला ने भी बताई थी। मैं तुम्हें यकीन दिलाता हूँ कि तुम्हारी जिन्दगी में मेरे आने से, तुम्हारे और गिनो की शादी में कोई अड़चन उत्पन्न नहीं हो सकती। अतिरिक्त प्रेम-प्रसंगों से शादी विवाह के सम्बन्धों में कोई फर्क नहीं पड़ता। इस बारे में कोई भी चिन्ता करना व्यर्थ होगा।'' एस्ट्रीटा बोला।

''मगर मेरे लिए तो यह बात बहुत अहमियत रखती है।'' मैंने उसकी तरफ देखते हुए स्पष्ट शब्दों में कहा।

मेरी तरफ दयनीय भाव से दृष्टिपात करने हुए उसने कहा, ''यह मेरा दिल ही जानता है कि मैं तुम्हें कितना प्यार करता हूँ। शायद तुम यह नहीं जानतीं कि मैं तुम्हें दिल की गहराइयों से चाहता हूँ।''

''जी हाँ, इस बात से तो मैं भी इंकार नहीं कर सकती कि तुम्हें मुझसे बेहद लगाव है।'' मैंने उसका दिल रखने के लिए कह दिया।

उसने अपने दिल की बात बेझिझक निकाल दी, लेकिन मेरे निकट बैठा होने पर भी फिर से मेरा हाथ छूने की हिम्मत न जुटा सका।

उसकी इस दयनीय हालत पर रहम खाते हुए मैंने ही मौन भंग किया, "मैं समझती हूँ कि अगर तुम मुझे चाहने लगे हो, तो इससे तुम्हें तो कोई हानि नहीं हो सकती?"

"क्या आप भी मुझे प्यार करती हैं?" एस्ट्रीटा ने उत्सुकता के साथ कहा।

"जी नहीं... यह मात्र तुम्हारा भ्रम है।" मैंने स्पष्ट शब्दों में कहा।

"मैं एक बार फिर आपका ध्यान इस तरफ आकर्षित करना चाहता हूँ कि मैं बहुत अमीर हूँ, मैं तुम्हारे एक ही इशारे पर सुख ऐश्वर्य के सभी साधन जुटा सकता हूँ। मैं तुम्हें यकीन दिलाता हूँ कि यदि तुम मेरा साथ देना पसन्द करोगी तो तुम्हें जीवन में कभी पछतावा नहीं होगा।"

"मगर मुझे तुम्हारे इस दौलत ऐश्वर्य से क्या लेना-देना है, मैं तो इसकी कोई जरूरत ही नहीं समझती।" मैंने उसके प्रस्ताव को ठुकराते हुए कहा।

मुझे उसकी दयनीय हालत पर रहम भी आ रहा था, साथ ही उसकी बेहूदा बातों पर मैं अपनी हंसी को न रोक पाती थी। वह मेरी चापलूसी में जी-जान से जुटा हुआ था।

मैंने उसका दिल रखने के लिए कहा, "ठीक है, जैसा आप उचित समझें।"

"तुम्हारे मादक शरीर से इत्र व फूलों जैसी सुगन्ध आ रही है।" उसने मेरे उफनते यौवन पर अपनी गुस्ताख दृष्टि डालते हुए कहा।

"यह मात्र तुम्हारा भ्रम है, दरअसल मेरे पास कोई इत्र नहीं है।" मैंने उसकी आशंका का निवारण करते हुए कहा।

"आपके पास इत्र नहीं है तो क्या हुआ? मैं आपको तोहफा स्वरूप दे दूँगा।" उसने धीमे स्वर से कहा।

विटारबो की हद में पहुँचते ही कार की गति धीमी हो चुकी थी। सफर के दौरान गिसेला व उसके प्रेमी रिकार्डो ने हमसे एक बार भी बात नहीं की थी। भीड़-भाड़ की वजह से उस समय रिकार्डो का ध्यान गाड़ी ड्राइव करने में लगा हुआ था। तभी गिसेला हमारी तरफ मुड़कर बोली, "तुम दोनों गुपचुप क्या कर रहे हो? मैं सब कुछ देख रही हूँ। क्या तुमने समझा था कि मुझे कुछ भी नजर नहीं रहा होगा?" गिसेला ने मुस्कराकर अपने मन के उद्‌गार प्रगट किए।

"कुछ हमें भी तो बताओ कि तुमने हम दोनों के मध्य क्या-क्या देखा-सुना?" मैंने भी मुस्कराकर कहा, "हम तो सिर्फ बातों के माध्यम से ही एक-दूसरे का परिचय हासिल कर रहे थे।"

एस्ट्रीटा चुपचाप ही हम दोनों सहेलियों की नोंक-झोंक का मजा ले रहा था।

अब भी मुझे गिसेला के बर्ताव एवं व्यंग्यात्मक भाषा पर क्रोध आ रहा था। मैं देख रही थी कि उसने मेरे साथ कितनी बेहूदा चाल चली थी।

मुझे इस वक्त एस्ट्रीटा की चुप्पी पर भी बड़ा क्रोध आ रहा था।

"मगर मैं तुम्हें एक बार फिर समझा रही हूँ कि तुमने मेरी भावनाओं के साथ खिलवाड़ करके मुझसे अच्छा बर्ताव नहीं किया है।" मैंने तुनककर कहा।

"अब छोड़ो भी एड्रिना! तुम तो हर बात को गम्भीरता से लेने लगती हो—भला इसमें इतना उत्तेजित होने की क्या जरूरत है? हम तुम्हें गिनो से अलग करना बिल्कुल नहीं चाहते। दो सच्चे प्रेमियों का दिल दुखाने का हमारा फिलहाल कोई इरादा नहीं है।" गिसेला ने प्रेम से मेरा हाथ दबाते हुए कहा।

गिसेला का प्रस्ताव स्वीकार करके मुझे इस पिकनिक पर आने का बड़ा दुःख हो रहा था। कस्बे के मध्य चौराहे पर जाकर हम अपनी कार से नीचे उतरे। यह अक्टूबर का महीना था। धूप कोई खास तेज नहीं थी। एस्ट्रीटा मेरे साथ-साथ चलने की कोशिश करता रहा।

वह अब भी गम्भीर हालत में एक हाथ पैन्ट की जेब में डालकर चल रहा था। इस वक्त वह मेरे साथ किसी अंगरक्षक की भाँति चल रहा था। इसके विपरीत गिसेला अपने प्रेमी रिकार्डो के साथ खुलकर मजाक कर रही थी। वे दोनों ठहाका लगाकर हँस रहे थे। भीड़ में से कुछ लोग हमारी तरफ भी देख रहे थे।

हम सभी एक कैफे में जा पहुँचे। मुझे वहाँ एस्ट्रीटा किसी आदमी को डाँटता हुआ दिखाई पड़ा। मैंने उससे उसे डाँटने की वजह पूछी तो एस्ट्रीटा ने कहा, "वह नामुराद तुम्हारी तरफ बुरी भावना से घूर रहा था।"

मैंने उसकी बात पर यकीन करके पीछे मुड़कर देखा, तो पाया कि एक जवान लड़का कैफे के दरवाजे के बाहर खड़ा हुआ अभी भी मेरी तरफ देख रहा था।

"अरे वह देखता है तो देखने दो।" मैंने लापरवाही से कहा, "इसमें हमारा क्या जाता है? अपनी आँखों से वह कुछ भी देख सकता है।"

"इसकी अक्ल ठिकाने लगाने में मुझे ज्यादा समय नहीं लगेगा। मुँह पर एक हाथ पड़ते ही अपनी गलती का अहसास हो जायेगा।" एस्ट्रीटा ने पुलिसिया मुद्रा में सीना फुलाते हुए कहा।

"अगर आपने किसी कमजोर व बेगुनाह के साथ बदसलूकी की, तो मैं तुमसे कभी भी बात नहीं करूंगी। उसे इस तरह डाँटने व मारने-पीटने का आपको कोई नैतिक हक नहीं है। तुम मेरे होते कौन हो जो मुझे सुरक्षा प्रदान करने के लिए इतने सचेत हो?"

मुझे इस तरह नाराज देखकर वह शान्त हो गया और कैश काउन्टर की तरफ शीतल पेय का आर्डर देने के लिए चला गया। कुछ ही देर बाद हमने शीतल पेय लिया। इसके पश्चात हम बाहर आ गए और धूप में चहलकदमी करने लगे।

तभी मैंने एक दोमंजिले घर की तरफ संकेत करके कहा, "देखो! यदि

मेरे पास इस तरह का एक छोटा सा घर हो, तो मैं वहाँ रहना पसन्द करूंगी।"

"तुम भी एड्रिना सचमुच बहुत भोली हो, तुम्हारे अन्दर हद से ज्यादा सीधापन है। भला वह भी कोई मकान है? मुझे तो तुम्हारी इस पसन्द को देखकर हैरत होती है। क्या तुम इस कस्बे में रहना पसन्द करोगी?" एस्ट्रीटा ने मेरी तरफ देखकर कहा।

"एड्रिना! मैं दावे के साथ कह सकती हूँ कि तुम यहां ज्यादा रोज तक नहीं रह पाओगी। यहाँ के अरुचिपूर्ण माहौल से तुम शीघ्र ही उकता जाओगी। जब कोई बड़े शहर में रहने लगता है, तो छोटे कस्बे में नहीं रह सकता है।" गिसेला ने अपने ख्यालात प्रकट करते हुए कहा।

"यह तुम्हारी गलतफहमी है।" मैंने एस्ट्रीटा की तरफ मुड़कर कहा, "एक आदमी जो कि मुझे बहुत प्यार करता है, उसके साथ यहाँ पर रहने में मुझे जो अपार प्रसन्नता होगी, उसे मेरा दिल ही जान सकता है। इस विषय में तुम्हारा क्या विचार है?"

"हाँ...हाँ, मैं तुम्हारे साथ यहाँ भी रहने को तैयार हूँ।" एस्ट्रीटा ने मेरी चापलूसी करते हुए कहा।

"मगर मैंने तो कभी तुम्हारे साथ रहने के लिए सपने में नहीं सोचा होगा, तुमने मेरी मर्जी जाने बिना इतना बड़ा फैसला कैसे कर लिया?" मैंने विरोध प्रकट करते हुए कहा।

"तो क्या आपकी शादी के पश्चात गिनो के साथ यहीं रहने का इरादा बन चुका है?" एस्ट्रीटा ने झेंपते हुए पूछा।

"जी हाँ, मेरा बिल्कुल ऐसा ही इरादा बन रहा है।" मैंने आत्मविश्वासपूर्वक कहा।

हमें घूमते हुए काफी वक्त हो चुका था। सभी को बड़े जोरो की भूख लगी थी। इसलिए हम लोग पास के ही एक रैस्टोरेन्ट में जा घुसे। नीचे का तल काफी भरा हुआ था। इसलिए हम लोग ऊपर चले गए। अक्सर यहाँ सन्डे के दिन निकटवर्ती किसानों की अच्छी खासी भीड़ जमा रहती है।

रैस्टोरेन्ट के ऊपर एक छोटा सा हॉल था, जिसके बीचोबीच एक मेज बिछी हुई थी। गिसेला इस वक्त आसपास की जांच कर रही थी। उस हाल के बराबर में एक कमरा था। गिसेला ने उसमें झांककर देखा। वेटर से पूछने पर उसे महसूस हुआ कि वह एक बैडरूम है। अगर खाने के बाद आराम की जरूरत हो, तो इसे प्रयोग में लाया जा सकता है।"

"हाँ हमें भी आराम की जरूरत है।" रिकार्डो ने गिसेला की खूबसूरत आँखों में झांकते हुए कहा, मगर गिसेला ने अपने प्रेमी की बात को अनसुनी कर दिया। मैं भी गिसेला की चाल को भली प्रकार समझ रही थी। वे दोनों मेज के एक ओर बैठे तथा एस्ट्रीटा और मैं दूसरी ओर बैठ गए।

कुछ वक्त बाद वहाँ शराब के पैग, सलाद व नमकीन आदि लेकर वेटर आ गया। मैं भूख से बुरी तरह परेशान थी इसलिए मैंने सलाद ही खानी

शुरू कर दी। गिसेला ने मुझे तंग करने के इरादे से व्यंग्य किया, "जरा जमकर खाना एड्रिना! ऐसा सुनहरी अवसर शायद तुम्हें गिनो के साथ न मिल सके।"

"वह किसी भी बात में अन्य लोगों से कम तो नहीं है, आखिर में कमाता है, दिन भर जी तोड़ परिश्रम करता है, निःसन्देह वह एक नेकदिल इन्सान है।" मैंने उसके व्यंग्य का जवाब देते हुए कहा।

"इस बात के लिए मैं तुमसे शर्त लगा सकती हूँ कि दिनभर जी तोड़ मेहनत करने के पश्चात दालभात का खर्च भी नहीं हो सकता।" गिसेला ने मेरी दुखती रग को छेड़ते हुए पूछा।

"अरे अच्छा हुआ दाल-भात की बात छेड़कर तुमने मुझे याद दिला दिया, खाने का आर्डर देना मैं भूल ही गया था।" यह कहता हुआ रिकार्डो कैश काउन्टर की तरफ बढ़ गया।

"सचमुच एड्रिना तुम भोली ही नहीं बेवकूफ भी हो। तुम्हें तो कोई ऐसा प्रेमी चुनना चाहिए जिसके पास तुम्हें आराम की सभी वस्तु देने की सामर्थ्य हो। हम तुम्हारे उज्ज्वल भविष्य के लिए ही यह सब बताना चाहते हैं, नहीं तो हमें तुमसे क्या लेना-देना है, तुम जहाँ चाहो जाओ तथा किसी को भी अपना जीवन साथी बनाओ, हम पर इस चीज का कोई प्रभाव पढ़ने वाला नहीं है।" गिसेला ने मुझे गम्भीरतापूर्वक समझाते हुए कहा।

उस समय मैं बिल्कुल शान्त रही। मैं सोच रही थी कि यदि गिनो को आज की घटना का पता चल गया, तो वह मुझसे विवाह का वायदा तोड़ देगा। मैंने गिसेला से कहा, "गिसेला! तुमने मेरे साथ बहुत बड़ा विश्वासघात किया है। गिनो इसे हरगिज मंजूर नहीं करेगा।"

"क्यों एड्रिना! आखिर ऐसा तुम किस आधार पर कह सकती हो?" गिसेला ने लाल-पीली आँखें निकालते हुए पूछा।

"मैं ऐसा इसलिए बोल रही हूँ, क्योंकि वह मुझे तुम्हारे साथ तो देखना भी नहीं चाहता।" मैंने गिसेला को अपनी मजबूरी बताते हुए कहा।

इस पर गिसेला ने कहा, "वह गन्दा, फक्कड़ आदमी किसी भी मर्ज की दवा नहीं है, मैं इस बात को नजदीक भविष्य में सिद्ध कर दूँगी।"

"नहीं...नहीं गिसेला! मेरे गिनो की इज्जत की इस प्रकार धज्जियां न उड़ाओ, वह जैसा भी है वह मेरा अपना है।" मैंने सजल नेत्रों से कहा।

एड्रिना! सच्चाई सदैव कड़ुवी होती है और यह एक ऐसी जड़ी-बूटी के समान है जो कि आसानी से किसी के गले नहीं उतरती। यही वजह है कि हम तुम्हारे हित के लिए जो कुछ भी समझाते हैं, तुम्हें बुरा लगता है।" गिसेला ने मुझे समझाते हुए कहा।

"गिसेला! मैं जानती हूँ कि तुम्हारी बात भी किसी सीमा तक अपने आप में ठीक है लेकिन मैं इसके खिलाफ कुछ भी नहीं सोच सकती हूँ।"

मेरे और गिसेला के वार्तालाप के दौरान एस्ट्रीटा बिल्कुल शान्त था। वह मेरी तरफ ही अपलक निहार रहा था। हालांकि मैं उसे डांटना चाहती

थी कि वह मेरी तरफ ऐसे घूर रहा था, मगर मैं गिसेला व रिकार्डो के डर के कारण कुछ न कह सकी।

धीरे-धीरे एस्ट्रीटा के गुस्ताख हाथ मेरी तरफ बढ़ने लगे। उसने जैसे ही मेरी नाजुक कलाई पर दबाव डालना आरम्भ किया, मैं उसका विरोध करने के लिए छटपटाने लगी, मगर तभी गिसेला ने अचानक जोर से हंसते हुए कहा, ''एड्रिना! तुम गिनो की अच्छी वफादार हो, मगर यह मैं क्या देख रही हूँ, तुम दोनों मेज के नीचे ही हाथ मिला रहे हो?''

घबराकर मैंने एस्ट्रीटा से अपना हाथ छुड़ाना चाहा, मगर उसने मेरी नाजुक कलाई को और भी अधिक बेरहमी से दबा दिया।

''अरे! तुम क्यों बेकार कबाब में हड्डी बन रही हो? उन्हें अकेला छोड़ दो न? आखिर उनके मिलन में तुम्हें हानि क्या है? क्यों उनकी भावनाओं से खिलवाड़ कर रही हो?'' रिकार्डो ने गिसेला से कहा।

''भला मैं क्यों उनकी प्रेम डगर में रोड़ा बनने लगी? मैं तो यूँ ही एड्रिना से छेड़छाड़ कर रही थी। मुझे इन दोनों से कोई जलन नहीं है। मैं तो इनके लिए यही शुभ कामना करती रहूँगी कि हमेशा इनके प्रेम का अंकुर फलता-फूलता रहे।'' गिसेला ने रिकार्डो से कहा।

गिसेला ने एक पैग मेरी तरफ भी बढ़ा दिया था। मैं उसे पीने का मोह न त्याग सकी थी। धीरे-धीरे मदिरापान का दौर बढ़ता रहा। मैं नशे में धुत होने लगी थी। हॉल में सामने की दीवार पर एक बड़ी सी खूबसूरत पेन्टिंग लगी हुई थी, जिसमें एक जवान जोड़ा एक-दूसरे के अधरामृत का पान कर रहा था।

गिसेला ने पेन्टिंग पर नजर डालते हुए नशे में कहा, ''वा ...ह! क्या पोज है? आओ रिकार्डो हम भी इसी पोज को सजीव करते हैं।

वे दोनों पोज के अनुसार ही एक-दूसरे के होठों का पान करने के लिए परस्पर आलिंगनबद्ध हो गए। लेकिन नशे की स्थिति में रिकार्डो देर तक खड़ा न रह सका। वह नाटकीय स्थिति से गिसेला के ऊपर गिर गया। वह गिसेला के अंग-प्रत्यंग को चूम रहा था। गिसेला भी प्रेम के इस आदान--प्रदान में रिकार्डो से कम नहीं थी।

आखिर में गिसेला ने मुझसे कहा, ''एड्रिना! अब तुम्हारी तथा एस्ट्रीटा की बारी है, देखती हूँ, तुम कितनी अच्छी मॉडलिंग कर सकती हो?''

''मेरा इसके साथ क्या ताल्लुक है और यह मेरा लगता कौन है जो मैं इसके साथ यह प्रेमलीला का ढोंग रचूँ?'' मैंने गुस्से में कहा।

''एड्रिना! तुम भी कितने पुराने ख्यालों वाली लड़की जान पड़ती हो? लगता है रूढ़िवादता तुम्हारे अन्दर से अभी समाप्त नहीं हो सकी है। वह तो केवल एक खेल की तरह है। इससे ज्यादा कुछ भी नहीं है।'' गिसेला ने झल्लाकर कहा।

''नहीं...यह प्रेमक्रीड़ा मुझे नहीं करनी।'' मैंने खुलकर खंडन किया। मगर रिकार्डो एस्ट्रीटा को ऐसा करके दिखाने के लिए उकसा रहा था।

"भगवान के लिए मेरी स्थिति पर रहम खाओ, मुझे मत सताओ। कृपा करके मुझे अकेला रहने दो।" मैंने सजल आंखों से गिड़गिड़ाते हुए कहा।

एस्ट्रीटा ने मेरी तरफ देखा और गिसेला से आँखों ही आँखों में पूछा। गिसेला ने 'हाँ' में गर्दन हिलाई। एस्ट्रीटा ने उसका संकेत होते ही मेरी कमर को और भी सख्ती से कस लिया। अब वह मेरे साथ हँसी-मजाक न करके मेरे उफनते यौवन पर अनेकों चुम्बन जड़ रहा था।

मैंने कोई शब्द बोले बिना ही उससे छुटकारा पाने की पूरी चेष्टा की। मैं उससे बचने की जितनी भी चेष्टा करती, उतना ही उसकी बांहों का कसाव मेरे जिस्म पर बढ़ता जाता था। वह मुझसे निकटता बढ़ाता ही जा रहा था। मगर इतने सामीप्य के बावजूद भी शायद वह अपने मकसद में कामयाब नहीं हो पा रहा था।

आखिर में गिसेला उसकी सहायता के लिए आगे बढ़ी। उसने अचानक मेरे दोनों हाथ पकड़ लिए। गिसेला ने उसे उकसाते हुए कहा, "जल्दी करो एस्ट्रीटा! अब तुम्हारी बारी है।"

इतना सुनते ही वह मेरे ऊपर आ गया था। यद्यपि मैंने अपना फेस बचाने का हर असम्भव प्रयास किया, मगर उसने एक हाथ से मेरी ठोडी पकड़कर मेरे गाल पर एक जोरदार चुम्बन जड़ दिया। इसके साथ ही मैं निढाल होकर गिर पडी।

मेरे गिरते ही दोनों तालियाँ बजाते हुए बोले, "शाबास एस्ट्रीटा!"

मैं लगातार रोये जा रही थी।

मैंने उनसे कहा, "आज मैं तुम्हारी बातों में आ गई तभी तुम मेरे साथ यह बर्ताव कर रहे हो। अब मैं कभी भी तुमसे बात नहीं करूंगी। अब मुझे यहाँ मत रोको। अगर मुझे किसी ने रोकने की कोशिश की तो मैं आत्मघात पर मजबूर हो जाऊंगी।"

"अरे एड्रिना! यह मैं क्या देख रहा हूँ?" रिकार्डो ने कहा, "केवल चुम्बन देने पर इस कदर क्रोध? तुम्हारे इस मासूम चेहरे पर यह बेवक्त का क्रोध शोभा नहीं देता। इस गुस्से को थूक दो एड्रिना।"

एस्ट्रीटा के मुँह पर लिपस्टिक लग चुकी थी। इसे देखकर गिसेला ने कहा, "अगर गिनो यहाँ आ गया तो वह क्या कहेगा? आप दोनों जाइए तथा पहले अपने-अपने मुँह साफ करके आइए। अगर इस बीच वेटर आ गया तो वह क्या सोचेगा?"

इसके पश्चात मैं वाश बेसिन पर गई तथा अपना चेहरा साफ करके वापिस मेज पर आ गई। हमने बाकी शराब को खत्म किया और खाना खाने बैठ गए। इस वक्त मेरी खाना खाने की बिल्कुल भी इच्छा नहीं हो रही थी। गिसेला ने वेटर से और शराब मंगा ली थी। वह मेरे गिलास में इन्कार करने पर भी डालती ही जा रही थी।

इस वक्त गिसेला पूरी तरह उत्तेजित हो चुकी थी। वह नशे में रिकार्डो

की जांघ पर बैठ गई। रिकार्डो उसके भार से दर्द के कारण चिल्लाने लगा। इस बार एस्ट्रीटा भी उठ गया तथा मेरी पतली कमर में हाथ डालकर मेरे अंग-प्रत्यंग पर चुम्बन जड़ने लगा। अब वह मेरी गर्दन, होठ, गालों तथा उरोज सभी जगह भूखों की मानिन्द टूट-टूट कर पड़ रहा था। मैं नशे के कारण बेसुध हो चुकी थी इसलिए मैं ऐसी हालत में उसका प्रतिवाद भी न कर सकी थी।

मैं किसी बेजान प्रतिमा की मानिन्द निर्विरोध खड़ी रही। मुझे ऐसा लग रहा था कि मानो मुझे घर के एक कोने में किसी पत्थर की मूर्ति की तरह खड़ा कर दिया गया हो। एक ऐसी मूर्ति के समान जिस पर कि कोई भी चित्रकार इच्छा से चाहे जो रंग भर दे लेकिन प्रतिमा को उसके विरोध का कोई अधिकार तथा सामर्थ्य नहीं होती। एस्ट्रीटा का प्रेम वासनामय एवं जंगली वहशीपन जैसा था। वह अब भी मेरे साथ मनमानी करने के लिए इच्छा से मेरा अंग-प्रत्यंग तोड़-मरोड़ रहा था।

गिसेला ने कहा, ''यह सही है एड्रिना।''

गिसेला को मैं भी खरा सा जवाब देना चाहती थी, मगर मैं नशे में धुत होने की वजह से उसे कुछ न कह सकी। मुझ पर हर क्षण नशा चढ़ता ही जा रहा था। मैं पूरा गिलास उठाकर एक सांस में पी गई। एस्ट्रीटा ने मेरी मदहोशी का नाजायज लाभ उठाते हुए कहा, ''आओ, दूसरे कमरे में चलते हैं।''

गिसेला ने भी मुझे प्रेरित करते हुए कहा, ''अरे सही ही तो कह रहा है। नेक काम में देर कैसी? और अब प्रतीक्षा किस बात की है?''

मैं मानती हूँ कि मैंने शराब जरूर पी रखी थी, लेकिन मैं इतनी बेसुध नहीं थी कि उनका वास्तविक मतलब समझने की कोशिश ही न कर सकूँ।

एस्ट्रीटा ने उठते ही अपना एक हाथ मेरी पतली कमर में डालकर मुझे कमरे के अन्दर ले जाने का प्रयास किया। मैंने उसका विरोध करते हुए कहा, ''मैंने तो तुमसे सपने में भी कभी ऐसी उम्मीद न की होगी, लेकिन आज तुम लोग मेरे साथ धोखा कर रहे हो। मेरी मदहोशी का इस तरह नाजायज फायदा न उठाओ।''

मगर एस्ट्रीटा मेरी बातों को अनसुनी करके अभी भी मुझे अन्दर ले जाने की चेष्टा में लगा हुआ था और रिकार्डो व गिसेला भी मुझे अन्दर की तरफ धकेल रहे थे। अन्त में वे सभी मुझे कमरे में धकेलने में कामयाब हो गए। एस्ट्रीटा ने अन्दर से गेट बन्द कर लिया।

मुझे ऐसा लग रहा था कि गिसेला सचमुच बड़ी कठोर तथा बेरहम हो गई थी। वह यह नहीं समझ सकी थी कि वह कर क्या रही है। आज की योजना काफी कपटपूर्ण थी। रिकार्डो का बर्ताव भी एकदम अलग था।

''नहीं.... नहीं।....मुझे वह सब करने के लिए मजबूर न करो जो कि मुझे बिल्कुल नहीं करना चाहिए।'' मैंने गिड़गिड़ाते हुए एस्ट्रीटा का भरसक विरोध किया।

''मगर क्यों नहीं?'' एस्ट्रीटा ने मेरे ऊपर झुकते हुए कहा, ''आखिर इसमें तुम्हारी हानि क्या है?''

''यह बात तो कभी मेरे दिमाग में भी नहीं आई थी कि तुम इतने धूर्त निकलोगे, मैंने तो केवल दोस्ती के नाते ही तुम लोगों के साथ आना स्वीकार कर लिया। मुझे इस बात का कहाँ पता था कि तुम मेरे साथ इतना बड़ा धोखा करोगे। वास्तव में यह मेरी काफी बड़ी भूल थी।'' मैंने एस्ट्रीटा की बाँहों में छटपटाते हुए कहा।

''एड्रिना! मैंने कहा न कि अब क्रोध थूक दो। सीधे-सीधे समर्पण के लिए तैयार हो जाओ, नहीं तो यह सब गिनो को बता दिया जायेगा।'' एस्ट्रीटा के कथन में धमकी भरी थी।

यह तो मैं भी भली प्रकार जानती थी कि मेरी यह भूल मुझे कहीं का भी न छोड़ेगी। मैंने काफी दूर-दूर तक अपना दिमाग दौड़ाया, मगर मेरी समस्या का कोई हल मुझे न सूझ सका। इस घटना के पश्चात गिनो मुझे कभी स्वीकार नहीं कर सकता था।

इस बात का अहसास मैंने भी कर लिया था कि जो लड़कियाँ अपने मम्मी-पापा का कहना नहीं मानतीं, उनके साथ समाज क्या बदसलूकी करता है। आखिर में अपने भाग्य का दोष समझकर मुझे इस परिस्थिति से भी समझौता करना पड़ा। यद्यपि मेरे दिल में गिसेला के प्रति प्रतिशोध की ज्वाला भड़क रही थी, मगर फिर मैं भी आंसू बहाने के लिए मजबूर थी। रोते-रोते मेरा गला सूख गया था।

कुछ देर तो एस्ट्रीटा ने मुझे धीरे-धीरे मनाने की कोशिश की। लेकिन जब वह अपने मकसद में सफल न हो सका, तो उसने मुझे बाँहों में भरकर बैड पर पटक दिया। वह बेरहमी से मेरे ऊपर हावी होने लगा। मैंने हिम्मत बटोरकर उसको धक्का देकर बैड से नीचे गिराने की भरपूर चेष्टा की। मैंने एस्ट्रीटा से एक बार फिर कहा, ''मनमानी की भी एक हद होती है, अब बात हद से गुजर चुकी है, चलो बाहर चलते हैं।''

''एड्रिना! क्या तुम मुझसे वाकई नाराज हो? न जाने तुम मुझसे क्यों इतनी घृणा करती हो, जबकि मैं तुम्हें दिल की गहराइयों से प्रेम करता हूँ।'' एस्ट्रीटा ने यह कहते हुए एक बार फिर मेरे उफनते यौवन को अपने बाँहों में कसकर बेहिसाब चुम्बनों से रंग दिया।

इस दौरान मैं उसका खंडन करती हुई निरन्तर अपनी अनिच्छा प्रकट कर रही थी। शायद इस बार एस्ट्रीटा भी मेरी विवशता को समझ चुका था। उसने मुझसे सहानुभूति प्रकट करते हुए कहा, ''एड्रिना! आप यह क्यों भूलती हैं कि मैं भी आपकी मानिन्द एक भावुक इन्सान हूँ। मेरे सीने में भी प्रेम भरा दिल धड़कता है, मैं तुम्हारे साथ यह पाशविक अत्याचार हरगिज नहीं करूंगा। अब आप जा सकती हैं।''

एस्ट्रीटा के मुँह से यह सुनते ही मेरी जान में जान आ गई। बैड से उतरकर मैंने अन्धेरे में ही अपने कपड़े पहने और अपने आप को संभाला।

वाशबेसिन के पास जाकर मैंने अपना मुँह धोया तथा मेकअप ठीक करके बाहर आ गई। मेरे दिल में एस्ट्रीटा के प्रति अपार श्रद्धा उत्पन्न हो चुकी थी।

जैसे ही हम दोनों बैडरूम से बाहर निकले, गिसेला और उसके प्रेमी रिकार्डो ने हमारे स्वागत में तालियाँ बजाई। मगर हम दोनों शान्त थे। वे दोनों हमारी परेशानियों को समझ पाने में पूर्णतः असमर्थ रहे।

मुझसे गिसेला अब भी छेड़छाड़ किए जा रही थी। मुझे उसकी बेरहमी व चालाकी पर बड़ा गुस्सा आ रहा था। उसने मेरे पास आकर मेरा हाथ अपने हाथ में लेने की चेष्टा की, लेकिन मैंने उसे सख्ती से झटक दिया तथा मेज के पास आगे बढ़ गई।

"एस्ट्रीटा! आखिर बात क्या है? हमें तो ऐसा प्रतीत हो रहा है कि जैसे एड्रिना किसी शोक सभा में सम्मिलित होकर लौटी हो!।" रिकार्डो ने एस्ट्रीटा से कहा।

मेरी मानसिक हालत को एस्ट्रीटा समझ चुका था। उसने कहा, "न जाने क्यों तुम हर बात को मजाक में ले जाते हो?"

"तो क्या तुम चाहते हो कि हम भी जोर-जोर से रोना-धोना आरम्भ करके मातम मनाने लगें?" रिकार्डो ने कहा।

गिसेला के नाजुक हाथों को थामते हुए रिकार्डो ने कहा, "आओ गिसेला! अब हमारी बारी है। क्यों न इस बैडरूम का पूरा लाभ उठाया जाये।" इसके साथ ही रिकार्डो गिसेला की कमर में हाथ डालकर बैडरूम में जा पहुँचा।

उनके जाने के पश्चात हम दोनों बाहर ही बैठ गए। शराब का आधा भरा गिलास तथा खाने के अन्य बर्तन मेज पर अभी भी पड़े हुए थे। मैं अभी भी विचारों की उधेड़बुन में लगी हुई थी। मैं एस्ट्रीटा की गिनो के बर्ताव से तुलना कर रही थी।, "यह मुझे कितनी बेसब्री से चाहता है, मगर मेरी यह मजबूरी है कि मैं उसे बदले में प्रेम नहीं दे सकती। यदि इस पर रहम खाती हूँ तो यह मेरी सबसे बड़ी कमजोरी मानी जायेगी। साथ ही मैं गिनो के लिए न्याय भी नहीं कर पाऊंगी।

वह मुझे दिल की गहराइयों से चाहता है इसलिए वह टूट जायेगा तथा यह इसलिए कि मैं उसके प्रेम का बदला नहीं दे सकी थी। मैं उन दोनों के बीच बुरी तरह फंस चुकी थी। मैंने फैसला किया मैं भविष्य में एस्ट्रीटा से नहीं मिला करूंगी और क्योंकि गिनो की दृष्टि में गिसेला एक बुरी लड़की है अतः मेरा उससे मिलना ठीक नहीं होगा।"

मैं काफी देर तक मेज के पास ही बैठी रही। इस वक्त एस्ट्रीटा सिगार फूँकते हुए फर्श पर चक्कर लगा रहा था। वह बार-बार कनखियों से मेरी तरफ देखता हुआ धुएं के गुब्बार छोड़ रहा था। वह मुझे कुछ कहना तो चाहता था, लेकिन अपनी बात कहने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहा था। मैं इन लोगों से पीछा छुड़ाने के लिए यहाँ से जाने के इन्तजार में थी।

"एड्रिना! तुम इतनी गम्भीरता से क्या बात सोच रही हो?" एस्ट्रीटा

ने मौन भंग किया।

मैंने पल भर के लिए सोचते हुए कहा, "मेरा एक नाखून टूट गया है तथा न जाने यह कब व कैसे टूटा है।"

उसके अधर कुछ कहने के लिए फड़फड़ा रहे थे। वह कुछ और ही आरम्भ करना चाहता था, लेकिन उसने बात आगे बढ़ाने का इरादा छोड़ दिया। एक लम्बी प्रतीक्षा के पश्चात गिसेला अपने प्रेमी के साथ बैडरूम से बाहर निकली। वे दोनों वैसी ही प्रसन्न हालत में थे, जैसे कि गये थे। उन्हें यह देखकर बड़ा आश्चर्य हो रहा था कि हम दोनों मायूस बैठे हुए हैं।

हम वहाँ से चलने को तैयार खड़े थे। गिसेला बार-बार मुझे मनाने की चेष्टा कर रही थी, "अरे! तुम इतनी परेशान क्यों होती हो? यदि तुम्हें गिनो के बारे में कोई फिक्र है, तो हम तुमसे वायदा करते हैं कि हम दोनों गिनो से तुम्हारे बारे में कोई जिक्र तक न करेंगे।"

"गिसेला मेरा यकीन करो, मैं वास्तव में बहुत थकी हुई हूँ, मैं फिलहाल कोई बात करने व सुनने की हालत में नहीं हूँ।" मैंने विनम्रतापूर्वक कहा।

मेरी खस्ता हालत को देखते हुए गिसेला ने सीढ़ियों से उतरते हुए सहारा देने के लिए मेरी कमर में हाथ डाल लिये थे। नीचे आकर हम दोनों कार में आ बैठे। कार में बैठकर मेरे मुख पर तेज हवा लग रही थी। तभी गिसेला ने कहा, "एड्रिना! मैं भी काफी थक चुकी हूँ। वक्त भी काफी हो चुका है। चलो घर चलकर आराम कर लेते हैं।"

तब तक वे दोनों आदमी भी कार के पास आ पहुँचे थे। हमारे पास आकर वे कहने लगे, "आज की घटना को लेकर आप दोनों हमसे नाराज तो नही हैं? हमें आशा है कि हमारी गुस्ताखियों के लिए हमें जरूर माफ कर दिया जायेगा।"

गिसेला ने हालात को संभालते हुए कहा, "नहीं... बिल्कुल नहीं, भला इसमें नाराज होने वाली कौन सी बात है? मुझे पूरा यकीन है कि एड्रिना भी सारे गिले-शिकवे मिटा चुकी है, उसे भी कोई नाराजगी नहीं हुई है।" गिसेला अपनी बात के समर्थन में मुझे भी बार-बार उकसा रही थी।

"क्यों एड्रिना? क्या तुम मुझे कभी क्षमा नहीं करोगी?" गिसेला ने मेरी आँखों में आँखें डालकर कहा। वह बड़ी फिक्रमन्द नजर आ रही थी।

"मुझे लगता है कि तुम अभी भी मेरी वास्तविकता और मेरे स्वभाव को नहीं परख पायी हो। तुम यही चाहती हो न कि मैं गिनो का साथ छोड़ दूँ तथा वह भी सिर्फ इसलिए कि तुम्हें वह अच्छा नहीं लगता। मगर तुम्हें यह जानकर बड़ा आश्चर्य और अफसोस होगा कि हमने वह सब नहीं किया, जो तुमने योजना बनाई थी।" मैंने गिसेला से कहा।

गिसेला मेरे पक्के यकीन को देख रही थी तथा महसूस कर रही थी गिसेला ने मुझे समझाते हुए कहा, "एड्रिना! तुम्हें मेरा मतलब समझना चाहिए। मैंने सब कुछ तुम्हारे भले के लिए ही किया है। यह मेरा ही मन

जानता है कि तुम्हारे गिनो से मिलकर मुझे बेहद अफसोस हुआ था।''

बातें करते हुए हम सभी कार में आकर बैठ गए। रिकार्डो ने फिर से ड्राइविंग सीट संभाली। हम कार से वापिस चल दिए। एस्ट्रीटा वापसी में भी मेरे मुख को अपलक निहारता जा रहा था। मगर मैं शीशे से बाहर की तरफ देखती रही।

थोड़ी देर पश्चात ही मैंने अहसास किया कि एस्ट्रीटा ने धीरे से मेरा हाथ छुआ और कोई चीज मेरे हाथ पर रख दी। मैंने सोचा कि कोई कागज का टुकड़ा होगा, शायद उसमें एस्ट्रीटा ने कोई ऐसी बात लिखकर दी हो, जिसे वह कहने की हिम्मत न जुटा पा रहा हो। मगर गाड़ी से नीचे उतरने पर मुझे पता चला कि यह एक बैंक का नोट था जो कि चार तह में मुड़ा हुआ था।

पहले तो मैंने सोचा कि इस नोट को एस्ट्रीटा के मुंह पर दे मारूं, मगर अगले ही पल दिल में विचार आया कि यह बर्ताव सही न होगा। अभी तक मैंने गिसेला से भी कोई धन नहीं लिया था। उसकी शराफत का ख्याल रखते हुए मैंने उसके साथ कोई अभद्र बर्ताव नहीं किया।

रोम वापिस पहुँचने पर हम अलग-अलग जाने को तैयार थे। गिसेला ने अगले रोज मॉडलिंग के लिए जाने का वक्त निर्धारित किया। हमने पहले गिसेला को 'शुभरात्रि' कहकर रास्ते में छोड़ दिया। इसके पश्चात वे मुझे दरवाजे तक छोड़ने गये। मैंने प्रसन्नतापूर्वक उन दोनों को विदा किया।

अपने घर में आते ही मैंने दरवाजा बन्द कर लिया। मैंने बिस्तर पर जाकर देखा कि वह एक नहीं, बल्कि तीन हजार लिरा के नोट थे। मुझे क्षण भर के लिए इन नोटों को देखकर प्रसन्नता भी हुई थी कि इससे फर्नीचर की किश्तों की अदायगी के साथ और भी न जाने क्या-क्या जरूरी सामान खरीदा जा सकेगा। आज से पहले मैंने इतना पैसा एक साथ कभी नहीं देखा था। कभी मैं इन नोटों की तरफ नजर डालती तो कभी अपनी गरीबी को देखकर ठंडी आहें भरने लगती थी।

❑❑❑

अगले दिन मैं जब गिनो से मिली तो मैंने उसके सामने शादी का प्रस्ताव रखा।

''एड्रिना! तुम मेरे प्रेम पर भरोसा करो या न करो, मगर मैं एक शरीफ इन्सान हूँ तथा अपना वायदा पूरा करके ही रहूँगा। मैं जो बात अपने मुँह से निकालता हूँ उसे पूरा करने में जरा भी लापरवाही नहीं करता। मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि यह तुम्हारी मम्मी ही हैं जो बार-बार तुम्हें मेरे विरुद्ध भड़काती रहती हैं।'' गिनो ने मुझे यकीन दिलाते हुए कहा।

''आप मेरी बात का यकीन कीजिए, मम्मी को इन बातों से कुछ लेना-देना नहीं है, आप तो बेकार ही उन्हें बीच में घसीट रहे हैं। हाँ एक बात तो बताओ, क्या हम शादी के पश्चात साथ-साथ एक ही रहेंगे?'' मैंने गिनो से कहा।

''निःसन्देह हम दोनों साथ-साथ एक ही छत के नीचे रहेंगे।'' गिनो

ने मेरी शंका का निवारण करते हुए कहा।

"और खुश भी रह सकेंगे?" मैंने अगला सवाल किया।

"यह हम दोनों के रहन-सहन, आचार-व्यवहार तथा शक्ति पर निर्भर करता है।" गिनो ने मुझे समझाते हुए बताया।

"मुझे अफसोस है तथा मुझे यह असम्भव सा लग रहा है।" मैं स्वयं को रोक नहीं पा रही थी। मैं जोर-जोर से रोये जा रही थी। मेरे इस आकस्मिक बर्ताव पर गिनो बहुत आश्चर्यचकित था।

वह पूछने लगा, "अरे! आखिर यह तो बताओ कि अचानक तुम्हें यह हुआ क्या? तुम इस तरह फूट-फूट कर क्यों रो रही हो?"

दरअसल मुझे कल वाली घटना बार-बार याद आ रही थी।" मैंने कहा, "गिनो तुम बिल्कुल सही कह रहे हो। मैं ही एक बेवकूफ लड़की हूँ।"

"तुम अपनी जुबान से कुछ भी कह सकती हो, तुम्हारे बारे में मैं तो ऐसा नहीं कह सकता तथा न ही मुझे तुम्हारे रोने का कोई कारण समझ में आ रहा है।" उसने आखिर में मुझे समझा-बुझाकर स्टूडियो भेज दिया।

उस दिन मेरे दिल पर काफी बोझ था। मैं दोपहर पश्चात गिरजाघर में अपना जुर्म स्वीकार करने गई। मैं महसूस कर रही थी कि मेरा गिनो के साथ प्रेम भी एक अपराध ही था। मगर वह शादी का वायदा कर चुका था, अतः कोई बोझ मेरे दिमाग में नहीं था।

मैं वर्जिन मैरी में अपार श्रद्धा रखती थी। मम्मी कहती हैं कि तुम्हारी शक्ल मैरी से बहुत कुछ मिलती है। मैं मैडोना में भी श्रद्धा रखती थी, क्योंकि उनकी गोद में एक बच्चा है। उनका बच्चा बड़ा होने पर सूली पर टांग दिया गया था। इसलिये दुःखों को जितना मैडोना समझ सकती है अन्य कोई नहीं समझ सकता। मेरी बचपन से ही उनमें बड़ी श्रद्धा थी। मैं उनकी प्रार्थना किया करती थी।

उस दिन मैं भी जाकर मैडोना की मूर्ति के सामने घुटनों के बल बैठ गई तथा अपना चेहरा हाथों में छिपा लिया। मैंने उनके सामने दिल ही दिल एक प्रार्थना गाई ताकि वह मेरे अक्षम्य अपराधों को माफ कर दें।

साथ ही मैंने गिसेला, रिकार्डो तथा एस्ट्रीटा के लिए भी क्षमा प्रार्थना की ताकि वे उन्हें भी सद्बुद्धि प्रदान करें तथा उनकी इस बेरहमी तथा चालाकी भरी योजना पर माँ मैडोना उनको भी माफ कर दें और यह घटना यहीं खत्म हो जाये।

मुझे ऐसा महसूस हुआ मानो माँ मैडोना मेरी ओर बड़ी सहानुभूति से देख रही थी तथा मैंने एक बार फिर अपने पैरों के बल खड़े होकर अपने मन की शान्ति के लिए दुआ की।

आगे गिरजाघर में चलकर मैं पादरी के पास पहुँची। उसने मुझे विनम्र स्वर में बुलाया। मैंने उनसे अपने जुर्म स्वीकार करने के विषय में बताया। उन्होंने अपने साथ चलने का इशारा किया। वह फादर एलिया की प्रतिमा के पास गये और मैं बॉक्स के बाहर घुटनों के बल बैठ गई। उन्होंने एक छोटी

सी प्रार्थना कही तथा पूछा कि, ''मैं कितने वक्त से इस अपराध बोध हालत में हूँ''

''लगभग एक साल से।'' मैंने गम्भीरता पूर्वक जवाब दिया।

''यह तो काफी लम्बा वक्त है...क्यों?'' पादरी ने कहा।

यह एक फ्रांसीसी पादरी थे। मैं उनके 'क्यों' का जवाब न दे सकी। थोड़ी देर बाद मैंने उन्हें अपनी कहानी सुनाई। गिनो से ताल्लुक, गिसेला की दोस्ती, विटारबो की यात्रा, एस्ट्रीटा की धमकी आदि बताई। मैंने अपनी जानकारी में पूरी बात ज्यों की त्यों सुना डाली।

अपनी आपबीती सुनाने में मुझे हल्कापन सा अनुभव हो रहा था। मुझे ऐसा लगा, मानो मेरे दिल का बोझ उतर रहा हो। पादरी ने शान्त भाव से मेरी पूरी बात सुनी तथा मेरे शान्त होने पर कहने लगे, ''तो तुम इस भाव से कि कहीं तुम्हारी शादी में अड़चन न आ जाये, उनकी बातों में आ गयीं। तुम यह एक और बड़ी भूल कर बैठीं।''

''हाँ फादर! यह बात तो मैं भी स्वीकार करती हूँ।'' मैंने सिर झुकाकर कहा।

''वास्तव में सच्चाई यह है कि इसका तुम्हारी विवाह की बात से कोई ताल्लुक नहीं है। जब तुमने उस आदमी से हमदर्दी की, उसे बात करने का अवसर स्वेच्छा से दिया, उस समय तुम्हारे दिल में कोई लालच था?'' पादरी ने विनम्रतापूर्वक पूछा।

''जी हाँ... अन्दाजा बिल्कुल ठीक है फादर।'' मैंने धीरे से कहा।

''यही मैं भी सोच रहा हूँ। तुम्हारे साथ जो घटना घटी है, यही काफी नहीं है, अगर तुम्हारी शादी भी हो गई, तो तुम एक अच्छी पत्नी नहीं बन पाओगी।'' पादरी ने मुझे समझाते हुए बताया।

''नहीं...नहीं... फादर।'' मैं उनके कठोर अल्फाजों को न सह सकी-''मैं ऐसा नहीं करूंगी।'' मैंने दुखी मन से कहा, ''मुझे इससे कोई लगाव नहीं है तथा मैं इस बात को यहीं खत्म करना चाहती हूँ। मुझे विश्वास है कि मैं एक अच्छी पत्नी साबित हो सकूँगी।''

पादरी को मेरे कथन पर यकीन नहीं हुआ, उसने पूछा ''क्या तुम्हें सचमुच पछतावा हो रहा है?''

''हाँ, वास्तव में हो रहा है।'' अब मैं सोच रही थी कि वह मुझे एस्ट्रीटा से मिला हुआ पैसा लौटाने को कहेंगे। मेरा विचार था कि यदि यह वापिस करने को कहते हैं तो कर दूँगी।

मेरी हालत पर विचार करते हुए पादरी ने कहा, ''अब तुम्हें जितनी जल्दी हो सके, शादी कर लेनी चाहिए और अपने प्रेमी को समझाना चाहिए।''

''उससे तो मैं पहले ही बात कर चुकी हूँ। उसने कहा है कि वह मुझसे ईस्टर पर शादी करेगा।'' मैंने फादर से बताया।

जब मैं अगली सुबह गिनो के साथ जा रही थी तो उसने मुझे बताया

कि उसकी मालकिन कुछ दिन के लिए बाहर जा रही है। इसलिए हम विला में मिल सकते हैं।

ठीक तभी मुझे पादरी को दिये गये वचन की याद आ गई। मैंने गिनो से दृढ़ निश्चय पूर्वक कहा, "मैं वहाँ अब कभी नहीं आ सकूँगी।"

"क्या कहा, कभी नहीं?" उसे बड़ा अचम्भा हुआ। वह बोला, "आखिर ऐसा बदलाव अचानक ही हो कैसे गया? इसके पीछे कोई वजह तो होगी?" गिनो ने मायूस होकर पूछा।

"गिनो! यह तो तुम जानते ही हो, कि मैं तुम्हें प्रेम करती हूँ और अब पहले से भी अधिक करती हूँ। लेकिन मैंने निर्णय किया है कि हमें शादी से पहले प्यार नहीं करना है।" मैंने गिनो से स्पष्ट शब्दों में कहा।

"अच्छा, अब तुम्हारी पूरी बात मेरी समझ में आ गई है।" उसने नफरत से कहा, "तुम्हें इस बात की आशंका थी कि मैं तुमसे विवाह नहीं करूंगा।"

"नहीं, ऐसी बात नहीं है। अगर मैं ऐसा सोचती, तो मैं विवाह की तैयारी में अपनी मम्मी की खून-पसीने की कमाई का पैसा क्यों लगवाती?" मैंने कहा।

"तुम मुझे यह क्या मनघड़न्त कहानी सुना रही हो?" गिनो बेहद नाराज लग रहा था। आज उसे पहली बार इतना क्रोध आ रहा था कि मुझे भी आश्चर्य हो रहा था।

"गिरजाघर में मैं जुर्म स्वीकारोक्ति के लिए गई थी और पादरी ने कहा, कि हमें विवाह से पहले ऐसा कोई भी शारीरिक सम्बन्ध नहीं रखना चाहिए।" मैंने गिनो से कहा।

यह सुनकर गिनो को बहुत निराशा हुई और कहने लगा, "उस पादरी को हमारे इस शादी के मामले में टांग अड़ाने की क्या आवश्यकता थी?"

इस वक्त मौन रहने में ही मैंने अपनी भलाई समझी।

"तुम कुछ भी जवाब क्यों नहीं देना चाहतीं?" गिनो ने फिर से जवाब के लिए दबाव डाला। मगर मेरे पास कहने को अधिक कुछ नहीं था।

"क्या तुम मुझे वापिस शहर ले चलोगे?" मैंने गिनो से कहा।

"ओके, जैसी तुम्हारी मर्जी... वापिस जाना चाहोगी, तो वापिस ले चलूँगा" गिनो ने मायूस होकर कहा।

उस दिन मैंने उसे बहुत दुखी व नाराज देखा था। दूसरे दिन से उसके व्यवहार में और भी फर्क आता चला गया। मैंने इस आकस्मिक भूल से आसानी से छुटकारा पा लिया। सिर्फ पादरी की कही गई बातों पर अमल करके ही यह मुमकिन हो सका था। धीरे-धीरे उसका प्रतिदिन का मिलना और प्यार की उमंगें कम होती जा रही थीं।

मुझे अभी भी कोई सन्देह नहीं था। वह अक्सर गाड़ी में बैठा हुआ सिगरेट के धुएं को उड़ाता रहता था। एक दिन उसने मुझसे कहा, "एड्रिना! हम पारिवारिक कारणों से अभी ईस्टर पर विवाह नहीं करा पायेंगे तथा शादी

का वक्त अगली गर्मियों तक बढ़ाना पड़ेगा।''

गिनो न मुझसे कहा, ''क्या तुम्हें इससे मायूसी हुई है?''

''नहीं... ऐसी कोई बात नहीं है...फिर अभी इसकी जल्दी भी क्या है? क्योंकि अभी तो हमारी शादी का जोड़ा भी तैयार नहीं हो सका है।'' मैंने उसकी बात का जवाब देते हुए कहा।

गिनो ने कहा, ''तुम झूठ बोल रही हो...तुम्हें इससे मायूसी हुई है। तुम समझती हो कि मैं शादी को टाल रहा हूँ।''

''मुझे तुम पर पूरा विश्वास है, मेरे मन में आपके प्रति कोई गिला शिकवा नहीं है, मुझे तुमसे पूरी उम्मीद है कि तुम्हारी शादी मुझसे ही होगी।'' मैंने गिनो से कहा।

''ठीक है! अगर ऐसा है तो तुम मुझसे प्यार ही नहीं करती हो और चाहती हो कि हमारी शादी की तारीख आगे बढ़ती जाये।'' गिनो ने बुरा सा मुँह बनाकर कहा।

''गिनो! मुझसे इस तरह की बातें न करो। यह मेरे लिए बहुत ही दर्दनाक साबित होंगी। मैं तो ऐसा ख्वाब में भी नहीं सोच सकती।'' मैंने सजल नेत्रों से कहा।

उस वक्त गिनो मेरी भावनायें देखना चाहता था और जांच कर रहा था कि क्या अभी भी मैं उसे उतना ही चाहती हूँ। इस शादी की तिथि बढ़ने से मुझे तो कोई सन्देह नहीं हुआ था, लेकिन मम्मी और गिसेला का मत कि वह मुझसे शादी नहीं करेगा और भी पक्का होता जा रहा था।

मम्मी ने इस पर भी कोई टिप्पणी नहीं की थी। एक दिन जब वे मुझे शाम का खाना दे रही थीं, तो मैंने शादी के बारे में फिर से बातचीत आरम्भ की।

मम्मी ने कहा, ''तुम भली प्रकार जानती हो कि तुम्हारे जैसी लड़की को, जो कि शादी के लिए प्रतीक्षा ही करती रहती है, लेकिन शादी कभी भी नहीं कर पाती, उसे क्या कहते हैं?''

यह सुनते ही मेरा चेहरा पीला पड़ गया तथा अर्द्धमूर्च्छित सी होकर बोली, ''क्या कहते हैं मम्मी?''

''एक सजी सजाई गुड़िया जो कि शो केस के लिए रखी जाती है। वह तो तुम्हें एक बचे हुए मांस के टुकड़े की तरह शैल्फ में रख रहा है तथा एक दिन जब मांस सड़ जाता है, तो उसे बाहर फेंक दिया जाता है।''

''नहीं मम्मी नहीं, गिनो के विषय में ऐसा अनुमान लगाना ठीक नहीं है। यह तो किसी पारिवारिक वजह से ही कुछ महीने के लिए शादी की अवधि बढ़ानी पड़ी है। गिनो पर तो आप आरम्भ से ही शक करती रही हैं। वह तुम्हें अच्छा भी नहीं लगता।'' मैंने मम्मी से अपने मन की बात कही।

''मेरी भोली बेटी! तेरे सिर पर गिनो के प्यार का जो भूत सवार था, वह धीरे-धीरे अपने आप उतर जायेगा।'' मम्मी ने प्रेम से कहा।

''मम्मी! आप फिक्र न करें। आज की मौजूदा हालत में न तो वह

गरीब ही है तथा न ही बेवफा। वह शादी का वायदा नहीं तोड़ेगा। वह सब पैसे चुका देगा, यह देखो बैंक नोट, उसने ही हमें विवाह के लिए दिए हैं।'' यह कहते हुए मैंने मम्मी को एस्ट्रीटा द्वारा दिये गये तीन नोट दिखा दिये। मैं अपने इस झूठे बर्ताव पर अन्दर ही अन्दर बहुत पीड़ित थी।

बिना कुछ बोले ही मम्मी बर्तन उठाकर रसोईघर में चली गई तथा वहाँ बर्तन साफ करने लगीं। मुझे उनसे किए व्यवहार पर शर्म आ रही थी। मैं फौरन वहाँ से उठकर मम्मी के पास गई तथा उनके गले में हाथ डालकर प्यार से मनाने की चेष्टा करने लगी। मैंने आँखों में आँसू भरकर कहा, ''मम्मी! क्या आप मुझे कभी क्षमा नहीं करेंगी? कृपा करके मुझे माफ कर दो। जब आप गिनो के बारे में ऐसे विचार प्रकट करती हो, तो मुझे सचमुच बड़ा दु:ख होता है।''

मम्मी ने स्वयं को मुझसे छुड़ाते हुए कहा, ''जाओ, मुझे परेशान न करो एड्निा! भगवान के लिए मुझे अकेला छोड़ दो।''

''मगर मम्मी! तुम मेरी मजबूरी को समझने की कोशिश तो करो। यदि गिनो मुझसे विवाह नहीं करेगा, तो मैं या तो आत्महत्या कर लूँगी अथवा फिर सड़क पर आ जाऊंगी।'' मैंने अश्रुपूरित आँखों से कहा।

गिसेला का भी इसी प्रकार का उत्तर था।

''देखा! हमने सही ही कहा था।''

''क्या गिसेला?'' मैंने आश्चर्यपूर्वक पूछा।

''यही कि वह तुमसे कभी भी विवाह नहीं करेगा। अभी तो यह ईस्टर तक की ही बात थी, फिर क्रिस्मस तक बढ़ेगी तथा तब एक दिन तुम्हारे दिमाग में आयेगा कि यह सब खेल चल रहा है तथा वह तुम्हें छोड़ देगा।''

मुझे गिसेला की बात पर क्रोध आ रहा था। गिसेला मेरी एक ही सहेली थी और मैं उससे कभी मित्रता खत्म नहीं करना चाहती थी। वह ऐसा इसलिए भी कहती थी, क्योंकि रिकार्डो भी उससे विवाह करने वाला नहीं था। मैं गिसेला से साफ-साफ नहीं कर पाती थी, क्योंकि वह समझेगी कि जलन के कारण ही मैं ऐसा कह रही हूँ।

''हमें इस बारे में अधिक बातें नहीं करनी चाहिए। इससे दोनों को बार-बार नाराजगी होती है। शादी होगी अथवा नहीं होगी अथवा कब होगी। इसे भविष्य के लिए छोड़ दो। इससे मेरे मन को बड़ी ठेस पहुँचती है।'' मैंने गिसेला से कहा।

अचानक वह अपनी जगह छोड़कर मेरे पास आई, ''तुम्हारा क्या मतलब है, इससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता है। मैं तुम्हें हमेशा प्रसन्न देखना चाहती हूँ। फिर भी मैं तुमसे एक बात कहे देती हूँ कि एस्ट्रीटा बार-बार मुझसे मिन्नतें करता है और वह तुमसे मिलना चाहता है। क्या तुम उससे मिलना चाहोगी तथा वक्त निर्धारित करोगी?''

''देखो गिसेला! मेरे सामने एस्ट्रीटा का नाम भी न लो।'' मैंने दुखी मन से कहा।

गिसेला का अन्दाज था कि विटारबो की यात्रा पर उसने बुरी तरह व्यवहार किया था। लेकिन वह बोली, ''वह सब कुछ तुम्हें उसके ज्यादातर प्यार के कारण है। वह तुम्हें अपनाना चाहता है।''

''मैं एक बार फिर तुम्हें बता देना चाहती हूँ कि मैं तो उसकी शक्ल तक नहीं देखना चाहती। उससे कहना कि वह भूलकर भी मेरे सामने नहीं आये।'' मैंने नाराज होकर गिसेला से कहा।

''अरे छोड़ो न यार! वह तो एक गम्भीर स्थिति का सभ्य एवं धनवान आदमी है। वह बार-बार तुमसे मिलने के लिए आग्रह करता है। तुम उससे किसी कैफे में मिल क्यों नहीं लेती? मैं भी तुम्हारे साथ ही रहूँगी।'' गिसेला मुझे उकसाते हुए बोली।

''गिसेला उससे मिलना तो काफी दूर की बात है, मैं तो उसका ख्याल तक भी अपने दिल में लाना अच्छा नहीं मानती। मैं किसी भी सूरत में उससे नहीं मिल सकूँगी।'' मैंने निर्णायक तौर से कहा।

''एड्रिना! मैं तुम्हें एक बार फिर समझा रही हूँ कि एस्ट्रीटा से न मिलकर तुम्हें आखिर में अफसोस होगा।''

मैंने झल्लाकर कहा, ''अगर तुम्हें एस्ट्रीटा का इतना ही ख्याल है, तो तुम उसकी तन्हाई को दूर करने के लिए स्वयं क्यों नहीं चली जातीं?''

''अरे हाँ एड्रिना! मैंने भी एक चान्स लिया है। मगर, मैं क्या करूं वह कम्बख्त तो आँख मूँदकर तुम्हारी ही याद में दीवाना होकर, धड़कनें गिन रहा है। मानो दुनिया में उसे तुम्हारे सिवाय और किसी से कुछ वास्ता ही नहीं है।'' गिसेला ने मुझे समझाते हुए कहा।

''मैं उसकी मनोदशा को भली प्रकार समझती हूँ, लेकिन मैं क्या करूं, मुझे तो उसका नाम लेने व सुनने से भी घृणा होने लगी है। मैं उसका जिक्र तक नहीं करना चाहती, भविष्य में उसके बारें में कोई बात न करना।'' मैंने भड़कते हुए कहा।

गिसेला मुझे एस्ट्रीटा से मिलाने का हर मुमकिन प्रयास कर रही थी, लेकिन मैंने उससे मिलना अथवा उसके बारे में सोचना नैतिक दृष्टि से उचित ना समझा। मैंने गिसेला के इस प्रस्ताव को कठोरता से ठुकरा दिया।

❑❑❑

मैं इसी दौरान फर्नीचर की किश्तों से भी मुक्ति पा गई थी। अब मुझ पर कोई खास कर्जा नहीं था। मैंने पहले से भी दुगनी लगन और मेहनत से कार्य करना आरम्भ कर दिया था। मैं अधिकाधिक धन जुटा लेना चाहती थी। फिलहाल मुझे शादी का जोड़ा बनाने की फिक्र सताये जा रही थी।

मैं सुबह स्टूडियो जाती। वहाँ से दोपहर पश्चात आकर मैं मम्मी के साथ कमरे में बैठकर शाम तक सिलाई का काम किया करती थी। हम पुरुषों की रेडीमेड शर्ट सिलने में बहुत होशियार थे, मगर कभी-कभी हम नाइट गाऊन या अन्य पोशाक भी तैयार कर लेते थे। हमारे पास हल्के व कम कीमत वाले कपड़े ही सिलाई के लिए अधिक आया करते थे।

अक्सर सिलाई करते वक्त भी मेरा मन उलझा रहता था। समय कुछ इसी प्रकार तेजी से गुजर रहा था। मैं शाम को लाइट जलाकर, हाथ-मुँह धोकर व वस्त्र बदलकर या तो गिसेला से मिलने के लिए चल पड़ती या मेरे कदम अनायास ही गिनो से मिलने के लिए मच . ं लगते।

जैसे-जैसे हमारी शादी की तिथि निकट आती जा रही थी, मुझे खुशी हो रही थी। वास्तव में जीवन में जब तक किसी वस्तु को पाने की उम्मीद लगी रहती है तो उसे पाने की इच्छा भी होती है। मगर सर्वाधिक कष्ट उस समय होता है जब हर ओर से आदमी निराश हो जाता है और जब आशा के सारे झरोखे बन्द हो जाते हैं।

मुझे अपनी गलियों से गुजरते हुए एक-दो बार ऐसा ही अनुभव हुआ कि एस्ट्रीटा मेरा पीछा कर रहा है। ऐसा अक्सर उस समय होता जबकि या तो मैं सवेरे-सवेरे स्टूडियो जाती या शाम के वक्त गिसेला या गिनो से मिलने के लिए निकलती।

मगर एस्ट्रीटा ने मुझसे मिलने अथवा बात करने की हिम्मत फिर कभी नहीं की। हाँ उसकी गुस्ताख नजरें मेरा पीछा जरूर किया करती थीं। उसको देखने से ऐसा लगता था कि एक अजीब किस्म की असीम प्यार की प्रवृत्ति उसके भीतर पनप रही थी। उससे आँखें चार होते ही मैं एक खूबसूरत अदा के साथ अपना चेहरा घुमा लेती तथा फिर अपने रास्ते लग जाती थी।

मैंने एक रोज शाम के वक्त घर पहुँचकर देखा कि एस्ट्रीटा हैट हाथ में लिए हमारे ही घर में मेज के पास झुका हुआ मम्मी से बातें कर रहा है। मैं सारी शराफत को ताख पर रखकर एकदम क्रोध में भर गई। वह विशेष रूप से मम्मी से इतना घुल-मिलकर बातें करता दिखाई पड़ रहा था।

मैंने सख्त आवाज में कहा, "तुम यहाँ क्या कर रहे हो?"

मुझे देखते ही वह हक्का-बक्का रह गया। वह दयनीय हालत में मेरी ओर देखता रहा। उसके मुँह से कोई भी शब्द नहीं निकल पा रहा था। मम्मी ने उसकी बातों की तरफदारी करते हुए कहा, "एड्रिना! यह भद्र पुरुष कह रहे हैं कि यह तुम्हें जानते हैं। यह पूछना चाहते हैं कि तुम्हारी तबियत अब कैसी है?"

मुझे ऐसा लग रहा था कि उसने मम्मी को कुछ पैसा दे दिया था। वह इसीलिए शान्त भाव से उसकी तरफदारी कर रही हैं। मैंने मम्मी से पूछा, "आप कृपा करके भीतर चली जाइए।"

मम्मी मेरा स्वर सुनते ही रसोईघर में चली गई।

मैंने एस्ट्रीटा को लगभग फटकारते हुए पूछा, "तुम यहाँ क्या कर रहे हो? चले जाओ यहाँ से।"

मुझे देखकर एस्ट्रीटा ने अपने होठ फड़फड़ाये मानो वह कुछ कहने की हिम्मत जुटा रहा हो। मैंने जोर से फर्श पर पैर पटकते हुए कहा, "मैं कहती हूँ कि तुरन्त निकल जाइये मेरे घर से। कहीं ऐसा न हो कि तुम्हें भगाने के लिए मुझे अपने पड़ोसियों को बुलाना पड़े।"

मेरा ख्याल था कि एस्ट्रीटा मुझे ब्लैकमेल भी कर सकता है। मुझे आशंका थी कि वह विटारबो यात्रा के बारे में गिनो से सारी गोपनीय बात बता सकता है। उसके पास मेरे जुर्म को सिद्ध करने के लिए गवाह भी मौजूद थे। मैं अपने ऊपर लगने वाले इल्जामों से इंकार भी नहीं कर सकती थी।

मैंने अन्दाजा लगाया कि पहली बार उसकी इच्छा थी कि मुझसे मिले और अब वह वास्तव में प्रेम करने लगा है। मैंने निश्चय कर लिया था कि कहीं ऐसा प्रयास न किया जाये इससे पहले ही मुझे गिनो को सब कुछ ज्यों का त्यों बता देना चाहिए। लेकिन उसे मुझसे सच्चे अर्थों में प्यार होगा, तो वह मेरी स्थिति को समझकर मुझे माफ कर देगा।

मैंने जैसे ही एस्ट्रीटा के सामने पड़ोसियों को बुला लेने की धमकी दी, तो वह चुपचाप वापिस चला गया। जाते समय भी कुछ कहने के लिए उसके होठ फड़फड़ा रहे थे, मगर वह स्पष्ट रूप से कुछ भी कहने का दुस्साहस न जुटा सका।

एस्ट्रीटा के चले जाने के बाद मैं अन्दर मम्मी के पास गई।

"उस व्यक्ति ने तुमसे क्या कहा?" मैंने मम्मी से जोर देकर पूछा

"कुछ खास नहीं। वह मुझसे पूछ रहा था कि हमारी आजीविका का विशेष साधन क्या है? मैंने उसकी बात का उत्तर देते हुए कहा कि हम तो सिलाई का काम करके ही दो समय की रोटी का जुगाड़ करते हैं। सिलाई का नाम सुनते ही उसने कहा कि मुझे भी आपसे कुछ कपड़े सिलवाने हैं।" मम्मी ने घबराते हुए कहा।

मैंने क्रोध में आग-बबूला होते हुए कहा, "अगर तुम उसके पास गई, तो मैं वाकई तुम्हारी जान ले लूँगी।"

मुझे क्रोध के कारण आपे से बाहर देखकर मम्मी बहुत घबरा गई थीं। वह भयभीत होकर मिमियाती हुई कह रही थीं, "क...कौन कहता है कि मैं वहाँ जाऊँगा? वह किसी दूसरे से कमीजें तैयार करवा लेगा।"

"उसने मेरे विषय में और क्या कहा था?" मैंने मम्मी को खा जाने वाली दृष्टि से घूरते हुए पूछा।

"उसने पूछा था कि तुम्हारी बेटी की शादी कब है?" मम्मी ने कांपते हुए कहा।

"इस पर तुमने क्या जवाब दिया?" मैंने गरजकर पूछा।

"मैंने कहा कि वह अक्टूबर महीने में विवाह करेगी।" मम्मी ने साहस बटोरकर कहा।

"क्या उसने तुम्हें कुछ रुपये दिए?" मैंने मम्मी से कड़कदार आवाज में पूछा।

"नहीं...मुझे तो नहीं दे गया...क्या उसे कुछ देना शेष था?" मम्मी ने सफेद झूठ बोलते हुए कहा। मुझे अभी भी मम्मी की आवाज से महसूस हो रहा था कि वह मम्मी को कुछ नोट दे गया था।

"नहीं...उसने तो मुझे एक पैनी भी नहीं दी है।" यह कहकर मम्मी

ने जैसे ही खुद को बेगुनाह सिद्ध करने के लिए एप्रिन की जेब से अपने खाली हाथ निकालकर मुझे दिखाये, फौरन चार तह में मुड़ा हुआ एक बैंक नोट उनकी जेब से नीचे गिर गया।

हालांकि मैंने यह नोट देख लिया था, मगर फिर भी मम्मी उसे जल्दबाजी में उठाने लगीं।

यह देखकर मुझे याद आया कि विटारबो से लौटते समय उसने मुझे भी तो नोट दिया था, फिर भी मैंने मम्मी को नहीं बताया था अतः मैंने भी उसे अनदेखा करते हुए मम्मी से कहा, ''ख्याल रहे, उससे कुछ लेना नहीं है।''

अगले रोज गिसेला मुझे अकेली ही एक कन्फैक्शनरी की दुकान पर मिली। उससे मेरी काफी देर वार्तालाप चली।

गिसेला ने मुझसे कहा, ''आज मैं तुम्हें एक विशेष बात बताना चाहती हूँ एड्रिना! मेरी बात को ध्यान से सुनो।''

मैंने घबराते हुए कहा, ''अगर कोई बुरी खबर हो तो फिलहाल शान्त ही रहो।''

''न तो इसे बुरी ही कहा जा सकता है तथा न ही अच्छी। यह तो एक पहले से चल रहे हमारे वार्तालाप का हिस्सा मात्र है। मैं तुम से एक बार पहले भी कह चुकी हूँ कि एस्ट्रीटा तुमसे...।''

''गिसेला! मैं उसका नाम तक भी नहीं सुनना चाहती। ईश्वर के लिए मेरी हालत पर रहम खाओ। मैं उसकी किसी बात में रुचि नहीं लेती। मुझे परेशान न करो...मैं तो स्वयं ही...।'' मैंने दुःखी मन से कहा।

''एड्रिना! मेरी बात तो सुनो! बचपना छोड़ो...तुम्हें बड़ी गम्भीरता से सोचना चाहिए। एस्ट्रीटा वास्तव में एक खास व्यक्ति है। वह एक सम्मानित एवं ऊँचे पद पर आसीन है। राजनीतिक क्षेत्र में उसका अच्छा असर है।'' गिसेला ने मुझे उकसाते हुए कहा।

''मुझे उससे और उसकी राजनीति से कुछ भी लेना-देना नहीं है, चाहे वह मंत्री ही क्यों न हो।'' मैंने भड़कते हुए कहा।

''अरे यार! घृणा की भी एक हद होती है। भला ऐसी भी क्या नाराजगी है कि न तो किसी की सुन सको तथा न किसी को अपनी सुना सको।'' गिसेला ने मेरे कान में धीरे से कहा, ''मेरी बात पर ध्यान दो—एस्ट्रीटा ने मुझसे कहा है कि तुम उससे मन्त्रालय में केवल एक बार जाकर मिल लो। उसे तुम्हारे भविष्य के विषय में कोई खास खबर देनी है। वह तुम्हें प्रेम के लिए बिल्कुल मजबूर नहीं करेगा।''

''उसके पास मुझसे सम्बन्धित भला क्या बात हो सकती है?'' मैंने हैरत से कहा।

''अरे कुछ तो होगी ही...एक बार जाकर उससे मिल लेने में तो कोई भी बुराई नहीं है।'' गिसेला ने मुझे उकसाते हुए कहा।

न जाने क्या सोचकर मैंने गिसेला से हामी भर दी। मैं डर के कारण

एकदम पीली पड़ गई थी।

गिसेला ने मेरे कन्धे पर हाथ रखते हुए तसल्ली दी, "एड्रिना! तुम इतना डर क्यों रही हो? क्या उसके पुलिस में होने से भयभीत हो गयी हो? घबराओ नहीं, वह तुम्हें गिरफ्तार नहीं करेगा।"

"सही है, मैं उससे भी मिलकर देखती हूँ। मगर यह तो बताओ कि मुझे कौन से मन्त्रालय में जाना होगा?" मैंने गिसेला से कहा।

गिसेला ने मुझे पता समझाते हुए कहा, "गृह मन्त्रालय में। सुपर सिनेमा के सामने सवेरे-सवेरे किसी भी वक्त उससे मिल सकती हो।"

मैं उस रात घबराहट व बेचैनी की वजह से आराम से सो भी न सकी थी। मेरे दिमाग में अनेक सवाल कुलबुला रहे थे—वहाँ बुलाकर वह मुझे क्या बताना चाहता है? उसने मुझे मन्त्रालय में क्यों बुलाया है? क्या वह मुझे पुलिस से डराना चाहता है? या मुझे बदनाम करना चाहता है? उसके पास गिनो के बारे में कोई खबर भी हो सकती है। क्योंकि अभी तक मैंने उसके परिवार अथवा अतीत के बारे में कोई भी जानकारी हासिल नहीं की थी।

गिनो कहीं आतंकवादी तो नहीं है? उसकी इस ब्लैकमेलिंग की नीति से प्रभावित होकर मैं गिनो का साथ छोड़कर उसको प्रेम करने वाली नहीं हूँ। वह जो तरीका चाहे अपना ले, मैं उसकी इस धमकी में आने वाली नहीं हूँ।

सुबह होते ही मैं तैयार होकर गिसेला के बताए गए पते पर जाने को तैयार हो गई। मैंने चलते समय मम्मी की रसोई से एक सब्जी काटने वाला चाकू भी अपने पास रख लिया। मैंने सोचा कि अगर उसने मेरे साथ मनमानी करने की चेष्टा की अथवा मेरी मजबूरी का नाजायज फायदा उठाना चाहा, तो मैं इसे उसकी गर्दन में घोंप दूँगी।

गृह मन्त्रालय जाने से पहले मैं गिनो से रोजाना मिलने वाले स्थान पर उससे मिलने गई तथा उससे कहने लगी, "गिनो! क्या तुम कभी राजनीति में रहे हो?"

गिनो ने आश्चर्यपूर्वक उसकी तरफ पलटकर पूछा, "तुम्हारा दिमाग तो नहीं फिर गया? राजनीति...और मैं...मेरा तो राजनीति से दूर का भी कोई नाता नहीं रहा...भला राजनीति से मेरा क्या लेना-देना?"

"तथा तुमने कभी सरकार के खिलाफ गतिविधियों में भाग तो नहीं लिया?" मैंने गिनो की आँखों में आँखें डालकर पूछा।

"वास्तव में मैं इतना मूर्ख हूँ नहीं, जितना कि तुम समझ बैठी हो।" गिनो ने झल्लाकर कहा।

"नहीं...मैं तो यों ही आपसे पूछ बैठी थी।" मैंने बहाना किया।

"नहीं ऐसा नहीं हो सकता...बिना मतलब कोई किसी के बारे में जानकारी प्राप्त करना नहीं चाहता। मुझे साफ-साफ बताओ कि यह ख्याल अचानक तुम्हारे दिल में कैसे आ गया?" गिनो ने अपनी बात पर जोर देते हुए कहा।

"इस बात पर तो स्वयं मुझे आश्चर्य हो रहा है कि अचानक ही यह विचार मेरे दिल में उत्पन्न हो गया और मैं आपसे पूछ बैठी।" मैंने गिनो से कहा।

"अरे मुझे इन सब बातों से कुछ भी लेना-देना नहीं है। मैं तो केवल इतना कहना चाहता हूँ कि तुम्हें अपने दिमाग पर अनावश्यक बातों का भार नहीं डालना चाहिए। अब तुम हर चीज को सन्देह की नजर से देखने लगी हो। मेरे विचार में बात-बात पर सन्देह करना तुम्हारी सेहत के लिए ठीक न रहेगा।" गिनो ने मुझे समझाते हुए कहा।

गिनो से विदा होकर लगभग 11 बजे एक घंटा इधर-उधर चलते हुए मैं गृह मन्त्रालय जा पहुँची। अभी मैं यह तय नहीं कर पा रही थी कि मुझे जाना चाहिए या नहीं। मैंने एक फेरी वाले से गिसेला द्वारा बताया हुआ पता पूछा।

उक्त पते पर पहुँचने के लिए मुझे अनेक इमारतें पार करनी पड़ीं। फिर पता करते-करते मैं एक बड़े ऑफिस की भव्य इमारत के सामने जा पहुँची। सामने के बड़े हाल में बैठने की जगह थी। जहाँ पर आगन्तुक बैठकर अपनी बारी की प्रतीक्षा किया करते थे।

थोड़ी देर पश्चात मुझे सामने का दरवाजा खुलता दिखाई दिया। एस्ट्रीटा के साथ एक लम्बी कद-काठी की खूबसूरत लड़की बाहर निकली। जैसे ही मैं उससे मिलने के लिए उठी, उसने मुझे हाथ के संकेत से बिठा दिया। एस्ट्रीटा ने विदा करते वक्त उस नवयौवना के हाथ को चूम लिया। ध ीरे-धीरे सभी आगन्तुकों को अधिकारी द्वारा बुला लिया गया तथा मैं प्रतीक्षालय में अकेली ही बैठी रह गई।

उस वक्त मैं उसके बोलने तथा बर्ताव में परिवर्तन देख रही थी। उसकी तेज आवाज में गम्भीरता तथा रौबीलापन था। वह एक चुस्त-दुरुस्त पुलिस अधिकारी था। इस वक्त वह अब तक की मुलाकातों से बिल्कुल भिन्न रूप में दिखाई पड़ रहा था। गिसेला सही कह रही थी कि वह कोई बड़ा ऑफिसर है। वह सचमुच आकर्षक शख्सियत का मालिक था।

ठीक तभी दोबारा दरवाजा खुला। घण्टी बजी तथा एक चपरासी ने बाहर आकर मेरे नाम की आवाज लगाई। उसने कहा, "अब आप भीतर जा सकती हैं।"

एस्ट्रीटा का कमरा काफी बड़ा था। इसमें सोफा व कुर्सियां एक कोने में पड़ी हुई थीं। एस्ट्रीटा एक बड़ी मेज के दूसरी तरफ बैठा हुआ था।

मैं जैसे ही उसके कमरे में प्रविष्ट हुई, उसने मेरी तरफ ध्यान किए बिना ही मेज पर झुके हुए कुछ कागज पढ़ने का बहाना किया। वह मुझ पर अपने कार्यालय की भव्यता और ऊँचे पद पर आसीत होने का असर डालना चाहता था। मेज के सामने पड़ी हुई कुर्सी पर बैठते हुए मैंने एस्ट्रीटा को लक्ष्य करके कहा, "मैं यहाँ हाजिर हूँ।"

मेरी आवाज सुनते ही उसने पढ़ना समाप्त कर दिया। झटके के साथ

अपनी कुर्सी से उठकर खड़ा हो गया और मेरा स्वागत किया। वह मेरी उम्मीद के विपरीत मुझसे बड़ी नम्रता से मिला। उसने मेरा हाथ अपने हाथ में लेकर चूमा तथा कहने लगा, ''अरे तुम तो वास्तव में आ गई हो?''

''जी हाँ, मैं आपसे ही मिलने आई थी। कहिए तुमने मुझे कैसे याद किया? जो कुछ कहना है संक्षेप में तथा फुर्ती से कह डालिए। मैं जरा जल्दी में थी।'' मैंने एस्ट्रीटा से बताया।

इतना सुनते ही एस्ट्रीटा मुझे कुर्सी से उठाकर सोफे की तरफ ले गया। मुझे बैठने का इशारा करके वह खुद भी मेरे सामने अफसोस की मुद्रा में बैठ गया और कुछ देर तक सिर झुकाये शान्त बैठा रहा।

काफी देर इन्तजार के बाद मैंने मौन भंग किया, ''आप मुझे कोई खास खबर देने वाले थे?''

''कोई ज्यादा खास नहीं। मैं तो यूँ ही तुमसे एक बार मिलना चाहता था तथा कहना चाहता था कि मेरे प्रस्ताव पर एक बार फिर से ख्याल करके देखो। अगर तुम चाहो तो मेरे यहां आकर मेरे घर की शोभा बढ़ा सकती हो। मैं तुम्हारी सुख-सुविधा के लिए कीमती वस्त्र, जेवरात और जो भी वस्तु तुम्हें पसन्द आये, खरीदकर दे सकता हूँ।'' एस्ट्रीटा ने मुझे अपने रंग में रंगने की कोशिश करते हुए कहा।

''क्या इन सब सुनी-सुनाई बातों को दोहराने के लिए ही मुझे याद किया गया था?'' मैंने झल्लाकर कहा।

''क्या आपको मेरे ख्याल अच्छे नहीं लगे?'' एस्ट्रीटा ने उदास होकर कहा।

''नहीं, मैं आपके पास यह सब सुनने के लिए नहीं आई हूँ। इस सब्जैक्ट से हटकर यदि आप कुछ कहना-सुनना चाहते हैं तो मैं हाजिर हूँ, अन्यथा मेरा समय भी आपके समान ही कीमती है।'' मैंने अपनी बात पर जोर देते हुए एस्ट्रीटा से कहा।

''ठीक है, अब हम मतलब की बात पर आते हैं। मेरे पास आपको देने के लिए एक विशेष खबर भी है।'' ठीक तभी यह कहकर एस्ट्रीटा अपनी मेज के पास गया तथा उसमें से एक फाईल निकाल लाया। इस फाईल को देखकर मेरी उत्सुकता बढ़ती जा रही थी कि न जाने वह फाईल किससे सम्बन्धित है।

''क्या है इस फाईल में...?'' मैंने उत्सुकतावश उससे पूछा।

''यह तुम्हारे होने वाले पति के बारे में है।'' एस्ट्रीटा ने स्पष्ट शब्दों में मुझसे बताया।

''आह! गिनो की फाईल की बात होते ही मुझे चक्कर सा आने लगा। मेरी आँखें बन्द होती जा रही थीं। एस्ट्रीटा ने फाईल मेरे सामने रख दी।

''उसका नाम गिनो मोलीनरी है ना?'' एस्ट्रीटा ने मेरी तरफ देखते हुए पूछा।

''जी हाँ।'' मैंने विनम्रतापूर्वक बताया।

"आप लोग अक्टूबर में ही विवाह करना चाहते हैं न?" एस्ट्रीटा ने अगला सवाल किया।

"जी हाँ, आपकी बात बिल्कुल सही है।" मैंने उसकी बात से सहमत होते हुए कहा।

"मगर आपको शायद यह पता नहीं होगा कि गिनो मोलीनरी पहले से ही विवाहित आदमी है। उसकी पत्नी का नाम एन्टोनिटा पारतोनी है जो कि स्वर्गीय इमालियो तथा श्रीमती लवेगना की पुत्री है–चार साल पूर्व उनके एक बच्चा हुआ, जिसका नाम मारिया है... इस समय उसकी पत्नी आरकीटो शहर में अपनी मम्मी के साथ रह रही है।" एस्ट्रीटा ने मुझसे कहा।

यह सुनकर मैं बिना कुछ कहे–सुने ही सोफे से उठ खड़ी हुई तथा फौरन कमरे से बाहर निकल आई।

मैं जब सड़क पर थी, तो मुझे महसूस हुआ कि मुझे एक–एक कदम रखना भारी हो गया है, मैं घर तक नहीं पहुँच सकूँगी। मुझे ऐसा अहसास हो रहा था कि मेरा जीवन एक बहती नदी के समान है जो कि अपने असली रास्ते से भटक गई थी तथा अब फिर अपने रास्ते से बहना है।

सारी दुनिया मुझे अपने ऊपर हंसती हुई लग रही थी। अपना भविष्य भी मुझे अंधकारमय नजर आ रहा था। मैं गिनो को दिल की गहराईयों से चाहती थी तथा उस पर आँख मींचकर यकीन करती थी, लेकिन उसने मेरे साथ कितना बड़ा विश्वासघात किया था।

आज मेरी मम्मी और गिसेला का सन्देह सच में बदल चुका था। उनकी सारी भविष्यवाणियां किसी कडुवी सच्चाई की तरह मुझे स्वीकार करनी पड़ रही थीं। आज मुझे अपना हर सुहाना सपना टूटता और बिखरता नजर आ रहा था। इस खेल में मुझे बड़े सुनियोजित ढंग से छला गया था। मेरा गुनाह केवल इतना ही था कि मैंने अपने ही दगाबाज प्रेमी से सच्चा प्यार किया था और उसे दिल की गहराइयों से चाहते हुए अपना सब कुछ उसको समर्पित कर दिया था। मैंने एक सुन्दर तथा सुखमय घर–संसार का सुहाना ख्वाब देखा था। शायद इसमें मेरे बेपनाह हुस्न और मखमली यौवन का ही कोई दोष रहा होगा जो कि लोगों को अनायास ही मेरी तरफ आकर्षित करता था।

मेरे साथ गिनो ने तो विश्वासघात किया ही था, साथ ही एस्ट्रीटा ने भी मुझसे ब्लैकमेल किया था। गिनो व एस्ट्रीटा दोनों ही मुझे प्रेम करते थे। इसके विपरीत मुझे मेरा ही भाग्य धोखा दे रहा था। ऐसी कड़ी परिस्थिति में मैं किसे दोष दे सकती हूँ? दोनों तरफ से मुझे ही अपराधी सिद्ध किया गया है।

अपने दिल में इस तरह के तर्क–वितर्क करना मुझे हवा में पत्थर फैंकने जैसा लगता है। गरीबी वास्तव में मनुष्य को क्या–क्या ठोकरें खिलाती है? मुझे सदैव गलत लोगों से ही हमदर्दी रही। मैं उनके अक्षम्य अपराधों को भी एक मामूली सी भूल समझकर फौरन माफ कर देती थी। बड़े–बड़े हादसों

को वक्त की जरूरत समझकर अथवा अपना भाग्य समझकर स्वीकार कर लेती थी।

सचमुच मैं किसी जिन्दा लाश की मानिन्द चल-फिर रही थी। मेरे दिल में जो जख्म थे, वे ऊपर से भले ही नजर न आते हों, मगर जख्म तो जख्म ही हैं। जख्म भर जाने के पश्चात भी उनके निशान नहीं मिटा करते। ये निशान ही सदैव उन जख्मों की यादों को ताजा बनाए रखते हैं।

इस तरह विचारों के अथाह समुद्र में गोताखोरी करती हुई मैं घर वापिस लौट आई। मैंने घर जाकर मम्मी से कोई जिक्र नहीं किया। अपने दिल के जख्मों को हवा तक नहीं लगने दी। मैं दोपहर पश्चात फिर स्टूडियो चली गई।

मेरे भीतर एक प्रकार से आत्मग्लानि पैदा हो गई थी। शाम को घर वापिस आकर मैंने शादी की तैयारी में बनाई चीजें एक तरफ उठाकर रख दीं। अपनी शादी का अधूरा जोड़ा ही अलमारी के एक कोने में पटक दिया।

मेरे मायूस चेहरे को देखकर मम्मी बार-बार पूछना चाहती थीं कि वास्तव में बात क्या है। मगर थकावट का बहाना करके मैंने उन्हें भी टाल दिया था।

शाम होते ही मैं बिस्तर पर जाकर पड़ गई थी। मेरी उस वक्त कपड़े बदलने की भी शक्ति जवाब दे चुकी थी।

लगभग चार घंटे तक मैं इसी तरह एक अंधेरे कमरे में पड़ी रोती रही। इसके पश्चात जैसे ही आँखें खुलीं, मम्मी मेरे पास आईं तथा कहने लगीं, "एड्रिना! क्या बात है...क्या आज खाना नहीं खाओगी?"

इस वक्त मेरा मन उठने को नहीं कर रहा था। मैंने आँखें मलते हुए कहा, "मम्मी! आज मेरी खाने की मर्जी नहीं हो रही है। वैसे यदि आप नहीं मानतीं तो जो भी बना है उसमें से बस थोड़ा सा ले आओ।"

"क्यों बेटी...नाराजगी मुझसे है अथवा भोजन से?" मम्मी ने प्रेम से सिर पर हाथ फेरते हुए कहा।

"ऐसी कोई बात नहीं है मम्मी! मुझे आज सचमुच ही भूख नहीं लग रही है।" मैंने मम्मी से पीछा छुड़ाते हुए कहा।

"लगता है आज तुम्हारी तबियत ठीक नहीं है?" मम्मी ने अपनी उंगलियों से मेरी नब्ज टटोलते हुए पूछा।

"आप तो ऐसे ही छोटी-छोटी बातों को लेकर परेशान हो जाती हैं। भली-चंगी तो पड़ी हूँ आपके सामने।" मैंने बात टालते हुए कहा।

"ठीक है, तो मैं इस खाने को वापस ले जा रही हूँ।" यह कहकर मम्मी ने प्लेट उठाकर जैसे ही रसोई में जाने के लिए कदम बढ़ाए मैंने पुकारा "मम्मी! मुझे कल सुबह-सवेरे मत उठाना।"

"मगर क्यों...?" मम्मी ने आश्चर्यपूर्वक मुझसे पूछा।

"मम्मी! अब मैंने भविष्य में मॉडलिंग का काम न करने का निर्णय लिया है। तुम दिन भर मेहनत करती हो तथा बहुत थोड़ा धन कमा पाती हो।"

मैंने मम्मी से स्पष्ट अलफाजों में कहा।

"क्या कोई दूसरा काम मिल गया है...मगर हमारी आजीविका कैसे चलेगी? अब तुम बच्ची तो हो नहीं कि घर की परेशानियां और मजबूरियां तुमसे छिपी रहेंगी। अब तो हमें बहुत से काम करने हैं। उस पर तुम्हारी शादी भी निकट आ रही है। यह तो तुम भी समझती हो कि जी तोड़ मेहनत के बाद भी दो वक्त की रोटी जुटा पाना बड़ा कठिन हो रहा है।" मम्मी ने चिन्ता जताते हुए कहा।

"मम्मी! आपको फिलहाल मेरे बारे में इतना परेशान होने की कोई जरूरत नहीं है। मुझे विश्वास है कि तब तक मेरे पास काफी पैसा आ जायेगा।" मैंने मम्मी को धीरज बंधाया।

"एड्रिना! अचानक तुम्हें यह क्या हो गया है? तुम्हें किसी भी चीज की आवश्यकता कैसे नहीं रही ।" मम्मी ने आश्चर्य प्रगट किया।

"मम्मी कृपा करके मेरे कपड़े उतारने में सहायता करो। वास्तव में मैं बहुत थक चुकी हूँ, अब तुम भी जा कर सो जाओ, मुझे भी बहुत नींद आ रही है।" मैंने मम्मी से याचना भरे शब्दों में कहा।

यह सुनकर मम्मी ने चुपचाप से मेरे कपड़े उतार दिए और पहनने के लिए नाईट गाउन दे दिया।

'शुभ रात्रि' कहकर मम्मी अपने बैड पर चली गईं। मैं भी निढाल होकर अपने बिस्तर पर जाकर लेट गई और गहरी नींद में सो गई।

प्रात:काल जब मेरी आँख खुली तो मेरी बिस्तर से उठने की मर्जी नहीं हो रही थी, आलस्य के कारण मैं फिर से आँखें बन्द कर लेट गई। इस प्रकार मुझे काफी राहत सी महसूस हो रही थी। मुझे बचपन से ही बहुत देर से सोकर उठने की आदत थी। मम्मी काम में लगी रहती थीं मगर लाड़-चाव के कारण मुझे बिस्तर से नहीं उठने देती थीं।

एक सुखी-सम्पन्न परिवार और पारिवारिक जीवन का ख्वाब अब मैं भूल चुकी थी। मैंने अपनी विचारधारा को एक नया मोड़ और नयी दिशा प्रदान की। मैंने सोचा कि प्रेम करना क्या बुरी चीज है? इसकी आड़ में मुझे इच्छानुसार पैसा भी मिलेगा और हमारी गरीबी का भी नामोनिशान मिट जायेगा। मम्मी भी तो कहती हैं कि शादी करके तुम नौकरानी बन जाओगी।

हर घटना के दो पहलू माने गये हैं चाहे वह दु:खदायी हो या सुखदायी हो। मेरी शादी का सपना बिखरते ही मेरी आजादी वापिस लौट आई थी। यद्यपि सुखमय घर-संसार बसाना मेरे दिल की पहली अभिलाषा थी, फिर भी मैं सोचने लगी हूँ कि आराम से जीवन व्यतीत करना भी कोई बुरी चीज नहीं है। इस सुहाने ख्वाब के टूटने से ही सारा दु:ख दूर हो रहा था।

गिसेला के ख्वाब साकार हो रहे थे और मम्मी की भविष्यवाणी भी सच हो रही थी। अब मेरा ख्याल था कि मेरा आकर्षक रूप-यौवन ही मेरी धरोहर है। और इसके बल पर मैं सब कुछ प्राप्त कर सकता हूँ। मैंने एक बार फिर अपने उफनते यौवन को देखा। इसे देखकर मुझमें एक आत्मविश्वास

जगा कि अभी तो मेरे रूप-यौवन में गजब की कशिश है। इसके बल पर मैं दुनियां के हर अमीर व जवाँ मर्द को अपनी उंगलियों पर नचा सकती हूँ।

मुझे इस तरह सोचते-सोचते दोपहर हो चुकी थी। मैं बड़ी मस्ती के साथ बिस्तर से उठी तथा शीशे के सामने खड़ी होकर अपने ही रूप यौवन का मूल्यांकन करने लगी।

अचानक मुझे मम्मी की वो बातें याद आने लगीं जो कि पहले दिन उन्होंने कलाकार के सामने मेरे मखमली रूप-यौवन का बखान करते समय की थीं–'इसके उन्नत उरोज तो देखिए, इसकी टांगें, घुमावदार कूल्हे तथा पतली कमर का तो कहना ही क्या। इसका अंग-अंग सांचे में ढला हुआ दिखाई पड़ता है।'

इसके साथ ही मुझे गिसेला की बातें भी याद आ रही थीं, 'एड्रिना! तू तो रूप-यौवन के अथाह खजाने से परिपूर्ण है। मुझे तो दुनियां की कोई भी खुशी ऐसी नहीं लगती जिसे तू इसके बल पर न पा सके। अगर तू अपने मदमाते रूप-यौवन का सही से प्रयोग करेगी तो आने वाला जमाना तेरा होगा। तू दुनियां भर के नौजवानों के दिल पर हुकूमत करेगी।'

तरोताजा होने के बाद मैंने एक कप कॉफी ली तथा पास के बूथ से गिनो के मालिक की विला का फोन नम्बर डायल किया। अगले ही पल गिनो फोन पर था। गिनो ने मुझसे पूछा कि मेरी तबियत खराब तो नहीं थी। आज उसके बात करने का वही तरीका मुझे व्यंग्यात्मक लग रहा था।

मैंने फोन पर कहा, "मैं एकदम भली-चंगी हूँ। इतनी ज्यादा कि इतना अच्छा जीवन में कभी आभास नहीं किया था जितना कि आज कर रही हूँ।"

"तो मुझसे कब मिलना चाहोगी एड्रिना ?" गिनो ने बेचैनी से पूछा।

"जब आप ठीक समझें।" मैंने फोन पर कहा, "लेकिन मेरी मर्जी है कि उस वक्त मिला जाये जब आपकी मालकिन विला से बाहर गई हुई हों। बिल्कुल वैसे ही जैसे कि विला में पिछली बार मिले थे।"

दूसरी ओर से गिनो का स्वर उभरा, "वह लगभग दस दिन बाद क्रिस्मस पर बाहर जायेंगी, इससे मुमकिन पहले नहीं हो सकेगा।" शायद वह मेरा फोन करने का मतलब समझ चुका था।

"कोई बात नहीं, मैं आपसे दस दिन बाद ही मिल लूँगी।" मैंने गिनो से कहा।

"लेकिन ऐसा क्यों ?" गिनो ने हैरत से पूछा।

"फिलहाल मैं काफी व्यस्त हूँ।" मैंने गिनो को मजबूरी बताते हुए कहा।

"आखिर बात क्या है ? कुछ मुझे भी तो पता चले ? तुम्हारी शान में मुझसे कोई गुस्ताखी हो गयी है क्या ? क्या विला से बाहर भी नहीं मिला करोगी ?" गिनो ने परेशानी प्रकट करते हुए कहा।

मुझे अचानक ऐसा लगा कि उसके दिल में मेरे लिए कोई शंका हो रही है। मैंने कहा, "आप तो बहुत जल्दी घबरा जाते हैं। आप यकीन कीजिए

कि मैं आपको पहले की तरह प्यार करती हूँ लेकिन इन दिनों मैं काम ज्यादा होने के कारण मम्मी के साथ दिन भर बिजी रहूँगी। यह आप जानते ही होंगे कि क्रिस्मस के मौके पर सिलाई का कार्य बहुत बढ़ जाता है। अब मैं देर रात को ही घर से बाहर निकल पाती हूँ, जबकि आप सो चुके होते हैं। कोई बात नहीं, मैं अगले दस दिनों तक धैर्यपूर्वक इन्तजार करूंगी।''

''मगर क्या तुम से सुबह की मुलाकात भी नहीं हो सकेगी?'' गिनो का घबराया हुआ स्वर उभरा।

''इसके लिए मैं विवश हूँ, क्योंकि सुबह के वक्त मैं सोती रहती हूँ।'' मैंने गिनो को अपनी मजबूरी समझाते हुए कहा,''वैसे शायद तुम्हें पता न हो कि मॉडलिंग का काम फिलहाल मैंने छोड़ दिया है।''

''मगर क्यों एड्रिना? अचानक तुम्हें इससे अरुचि कैसे हो गई?'' गिनो ने जोर देकर पूछा।

''दरअसल इस कार्य से मैं काफी ऊब चुकी थी, फिर इस काम में मेहनत के अनुसार कमाई भी नहीं हो पाती। अब तो आप प्रसन्न हैं न? मैं आपसे अगले दस दिन पश्चात ही मिलूंगी। क्या मैं आपको एक अंगूठी दे सकती हूँ?'' मैंने गिनो से कहा।

''बहुत अच्छा...।'' इसके साथ ही दूसरी तरफ से सम्बन्ध विच्छेद हो गया था। मुझे यकीन था कि उसे शक होने के पश्चात भी वह दस दिन से पूर्व नहीं आ सकेगा। उसका शक कि उसका झूठ पकड़ा गया है इससे वह भय खा रहा होगा। मैंने रिसीवर रख दिया। अब मेरे दिल का भय भी दूर हो चुका था कि कहीं मेरी विटारबो की यात्रा का राज गिनो पर उजागर न हो जाए।

□□□

मैं अगले दिन दोपहर बाद गिसेला से मिलने के लिए सीधी उसके कमरे पर जा पहुँची। वह अन्य दिनों की ही तरह आज भी बिस्तर से उठकर हाथ-मुँह धोकर वस्त्र बदल रही थी। वह रिकार्डो के पास जाने के लिए तैयारी में लगी हुई थी।

मैं भी जाकर उसके बिस्तर पर बैठ गई। मैंने गिसेला से कहा, ''मैं तुम्हारे कहे मुताबिक एस्ट्रीटा के पास गई थी। उसने मुझे बताया कि गिनो एक विवाहित पुरुष है, उसकी पत्नी तथा एक बच्चा भी है।''

मेरी बात सुनकर गिसेला को बड़ा अचम्भा हुआ। मैं यह नहीं जान सकी कि वह प्रसन्न थी या आश्चर्य प्रकट कर रही थी। वह भी मेरे पास ही आकर बैठ गई। वह मेरे कन्धों पर हाथ फिराते हुए मेरी आँखों में झांकने लगी।

''नहीं...नहीं...कहीं तुम मुझसे मजाक तो नहीं कर रहीं। यह बात मेरे गले नहीं उतरती। क्या कहा पत्नि तथा बच्चा भी है? मुझे तो अपने कानों पर यकीन नहीं होता।'' गिसेला ने आश्चर्य प्रकट किया।

''लड़की का नाम मारिया है।'' इससे आगे मेरी बोलने की हिम्मत

नही रही थी। यद्यपि गिसेला मुझसे पूरी कहानी सुनना चाहती थी, मगर मुझे शान्त देखकर वह मायूस हो गई।

"एक पत्नी तथा लड़की...। क्या तुम्हें इससे दु:ख नहीं हुआ?" गिसेला ने मेरी आँखों में झांकते हुए पूछा।

"दु:ख होना तो स्वाभाविक था, यह कोई खुशखबरी तो नहीं कि मुझे इससे प्रसन्नता होती।" मैंने गिसेला से कहा।

"तुम्हें यह खबर एस्ट्रीटा ने कैसे दी?" गिसेला ने बात की गहराई में जाने की चेष्टा की।

"मैं एक दिन ऐसे ही घूमती-फिरती गृह मंत्रालय में एस्ट्रीटा के पास जा पहुंची। उससे मुलाकात करने पर उसने मुझे बताया कि गिनो वाकई में एक विवाहित आदमी है।" मैंने गिसेला से कहा।

"इस पर तुमने क्या कहा?" गिसेला ने मुझसे पूछा।

"कुछ नहीं...मेरे पास अब कहने के लिए बचा ही क्या था? मैं चुप बैठी रही।" मैंने गिसेला से कहा।

"एस्ट्रीटा द्वारा दी गई सूचना से तुम्हें कैसा लगा? क्या तुम्हें रोना नहीं आया? मेरे ख्याल से तो यह तुम्हारी जिन्दगी की सबसे बड़ी हार मानी जाएगी।" गिसेला ने मेरी आँखों में आँखें डालकर पूछा।

"नहीं, मुझे रोना नहीं आया, मैं किसी प्रकार अपने आप को संभाले हुए थी।" मैंने गिसेला से कहा।

"मुझे तो लगता है कि अब तुम गिनो से विवाह करना भी पसन्द नहीं करोगी।" उसने प्रसन्नतापूर्वक कहा। कुछ देर रुकने के पश्चात वह बोली, "गिनो ने एक ऐसी भोली-भाली लड़की को धोखा दिया है, जो कि केवल उसी के नाम के लिए जी रही थी। मेरे ख्याल में तो पुरुषों का समाज ही धोखेबाज है। ये सब के सब एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं।"

मैंने गिसेला से कहा, "गिनो को तो अभी खबर ही नहीं है कि उसके गड़े मुर्दे मैंने उखाड़ लिए हैं। मैं उसके सारे राज जान चुकी हूँ।"

"मैं तो तुम्हारी बहुत बड़ी हिम्मत मानती हूँ कि तुम गिनो की इतनी बड़ी कारगुजारी बर्दाश्त कर गयीं, यदि तुम्हारे स्थान पर मैं होती, तो उसे धोखा देने का मजा चखाए बिना न छोड़ती।" गिसेला ने मेरी सहनशीलता की तारीफ करते हुए कहा।

"कोई बात नहीं, प्रेम में तो इससे भी कठिन परीक्षाओं से गुजरना पड़ता है। मैंने गिनो से दस दिन पश्चात की तारीख निश्चित की है और मेरा मन कहता है कि हम फिर प्यार करेंगे। हमारा प्यार सदाबहार रहेगा।" मैंने पूरे यकीन के साथ अपने उद्‌गार प्रकट किए।

गिसेला अपलक मेरी तरफ निहार रही थी, वह कहने लगी, "अरे क्या इतने बड़े जगत में तुम्हें कोई दूसरा दीवाना हाथ नहीं लगा? उससे इतना बड़ा धोखा खाकर भी तुम उसी के नाम की माला जप रही हो। उसी पर अपना सभी कुछ लुटा देना चाहती हो।"

"नहीं...मैं उसे नहीं चाहती हूँ।" मैंने निश्चयपूर्वक कहा।

इसी दौरान गिसेला ड्रेसिंग टेबिल पर तैयार होकर बाहर जाने वाली थी। उसे भी अपने प्रेमी रिकार्डो के पास जाना था। इसलिए हम दोनों कमरे से बाहर आ गई।

गिसेला ने अचानक मौन को तोड़ा, "शायद तुम नहीं जानती होंगी कि रिकार्डो भी मेरे साथ वही खेल खेलना चाहता है जो कि तुम्हारे साथ गिनो ने खेला है।"

मुझसे आपबीती सुनाने का एक मात्र मकसद उसका यह भी जान पड़ता था कि वह मुझे बताना चाहती थी कि इस संसार में अकेली मैं (एड्रिना) ही बदनसीब नहीं हूँ, ऐसा तो बहुत सी औरतों के साथ होता है। पुरुष अक्सर ऐसा ही करते हैं।

"क्या रिकार्डो भी शादीशुदा है?" मैंने गिसेला से पूछा।

"नहीं! लेकिन मुझे ऐसा आभास हुआ है कि यह उसका एक शौक है तथा वह मेरा पागल बना रहा है। वैसे मैंने भी कह दिया है कि मैं तुम्हें कुछ खास नहीं चाहती हूँ। तुम्हारा दिल करे तो मेरा साथ निभाना, वर्ना मेरी तरफ से तुम्हारी खुली छूट है। रहो चाहे न रहो।" गिसेला ने अपने मन की बात बताते हुए कहा।

मैं यही सोच रही थी कि मेरे और गिसेला के सोचने का ढंग कितना भिन्न है? मेरे दिल में सदैव यही अरमान रहता था कि मैं बस गिनो की बनकर रहूँ, जबकि वह अपने प्रेमी के बारे में कभी भी गम्भीरता से नहीं सोचती थी।

मैंने महसूस किया कि अब वह समय आ चुका है, जबकि मुझे अपनी मम्मी को सब-कुछ साफ-साफ बतला देना चाहिए मगर ऐसा करने के लिए मैं हिम्मत नहीं जुटा पा रही थी। लेकिन गिसेला तो अपनी बात को पूरा देखने के लिए ही मेरी हार देखना पसन्द करती थी।

आखिर में मैंने मम्मी को न बताने का ही निश्चय किया क्योंकि मेरे चेहरे की मायूसी व उदासीनता को देखकर मम्मी तो स्वयं ही अनुमान लगा लेंगी कि गिनो ने मेरे साथ बहुत बड़ा धोखा किया है।

मुझे अब शादी के नाम से कुछ घृणा सी हो गई थी। इस विषय पर मैं बहुत ही कम बात करना चाहती थी। अगर मम्मी से मैंने इस विषय में जरा सा भी जिक्र किया, तो वह बात का बतंगड़ बना देंगी। एक प्रश्न में हजार सवाल ढूँढ निकालेंगी।

दूसरे दिन मैंने एक नया ड्रेस पहनने के लिए निकाला और गिनो से मिलने का बहाना करके चली गई। मैंने सोचा था कि इस जोड़े को अब रखे रहने से क्या फायदा है? घर पर मुझे बोरियत भी हो रही थी तथा इस प्रकार मम्मी को सन्देह भी नहीं होगा। इसलिए कितना अच्छा होगा कि बाहर घूमने का ही प्रोग्राम बनाया जाये।

यही सोचकर उस दिन मैंने अच्छा सा बनाव श्रृंगार किया। वैसे मुझे

साज-श्रृंगार का कोई विशेष शौक नहीं था। मैं वैसे भी प्राकृतिक रूप से काफी सुन्दर थी। लोगों को अपनी ओर आकृष्ट करने के लिए मुझे किसी कृत्रिम सौन्दर्य प्रसाधन या कीमती वस्त्र आभूषण की आवश्यकता नहीं पड़ती थी। उस रोज मैं एक अनोखी सजधज व नये वस्त्रों में बेहद आकर्षक लग रही थी। मेरे उफनते मखमली यौवन की एक झलक किसी को भी दिल हारने के लिए मजबूर कर सकती थी।

मैं बाहर निकलकर एक पिक्चर हाल के लिए चली। यद्यपि यह पिक्चर मैं पहले ही देख चुकी थी, मगर समय बिताने के लिए यह कुछ बुरी नहीं थी। पिक्चर समाप्त होते ही मैं पहले से निर्धारित डिपार्टमेन्टल स्टोर पर गिसेला से मिलने गई।

यह एक अच्छा बड़ा स्टोर था। गिसेला ने मुझसे मिलने के लिए इस जगह को क्यों निर्धारित किया था, इसका जिक्र मैं बाद में करूंगी। वैसे प्रत्येक नारी का दिल करता है कि उसके पास अधिकाधिक सुख-साधन हों, लेकिन वे ऐसा नहीं कर पाती हैं। इसकी वजह चाहे जो भी हो, लेकिन वे ऐसा नहीं कर पाती थीं।

ऐसी जगहों पर मिलना-जुलना मुझे अच्छा नहीं लगता था।

मैंने एक गरीब परिवार में जन्म लिया था। गरीबों का मनोरंजन तो इन महंगी जगहों को बाहर से ही ललचायी आँखों से देखने से ही पूरा हो जाता है। अक्सर गिरजाघर में चले जाना भी सही रहता है क्योंकि वहाँ कोई खर्चा भी नहीं होता है तथा लोग खुले मिलते हैं।

धनिक लोग सड़कों पर या गिरजाघर में नहीं घूमते हैं। वह गाड़ी में नगर के भीड़-भाड़ वाले क्षेत्र में गद्दे पर कमर टिकाए हुए अखबार पढ़ते हुए गुजरा करते हैं। सड़क के लोग उनकी तरफ देखते रह जाते हैं। अक्सर मैं भी गाड़ी में गिनो के साथ घूमती हुई बड़े गर्व का अहसास करती थी। उसके साथ मैं ऊँची उड़ान भरने लगी थी। जिसका अन्जाम यह हुआ कि मैं सड़क पर फेंक दी गई थी।

उस वक्त गिसेला एक अधेड़ उम्र के व्यापारी के साथ खड़ी थी। गिसेला ने उसका परिचय यान्सीटी के रूप में कराया था। यह एक लम्बी कद-काठी वाला आदमी था। इसके कन्धे चौड़े थे, मोटे सफेद केश और सुर्ख चेहरा था। उसकी बड़ी-बड़ी गहरी आँखें थीं। सब मिलाकर वह एक आकर्षक व्यक्तित्व का आदमी था।

उसका परिचय पाकर मैं बिना कुछ कहे ही बैठ गई। मुझे काफी लज्जा सी लग रही थी। मेरा आना यान्सीटी ने साधारण रूप से लिया तथा वह गिसेला से बातें करता रहा।

"अब तो गिसेला तुम्हें शिकवा नहीं करना चाहिए।" यान्सीटी ने अपने घुटने पर हाथ रखकर कहा, "मैं पिछले छ: महीने से तुम्हारा साथ निभाता रहा हूँ। अब अपने दिल पर हाथ रखकर तुम स्वयं ही जवाब दो कि क्या किसी भी मुलाकात में मैंने तुम्हें खाली हाथ लौटाया है? मैं समझता हूँ

तुम्हें तो स्वयं याद होगा कि कितनी महंगी-महंगी विदेशी चीजें तुम्हारे लिए लाता रहा हूँ। गिसेला, यह लो एक बैग।''

''क्या आज सिगरेट नहीं पिलवाएंगे?'' गिसेला बोली।

''अरे! यह तो मैं भूल ही गया था। लीजिए...शौक से लीजिए। मैं जो भी तोहफा देता हूँ उसके तीन कारण होते हैं। पहला कारण—मुझे किसी से धन्यवाद लेना अच्छा लगता है। दूसरी वजह—अपने साथ अच्छा व्यवहार कराने के लिए तोहफा देने से अच्छा कोई अन्य साधन नहीं हो सकता। तीसरा कारण—नारियों को हमेशा शक रहता है कि और तोहफा देकर, उनकी भावनाओं को काबु में किया जा सकता है।''

''इस बात से नकारा नहीं जा सकता कि तुम बेहद चालाक हो।'' गिसेला ने व्यापारी की आँखों में झांकते हुए कहा।

''यह आपकी दिमागी सोच है कि आप मुझे क्या समझें। वैसे मैं चालाक नहीं हूँ। मैंने तो अपना केवल अनुभव ही बयान किया है।'' इसके साथ ही वह ठहाका मारकर हँस पड़ा। उसके खूबसूरत दाँत सच्चे मोतियों की तरह चमक रहे थे। उसने कहा, ''आज तक का उसूल है कि मेरे निकट से कोई भी नवयौवना निराश होकर नहीं लौटी है। मैं नारियों की प्रत्येक इच्छा व पसन्द को भली-प्रकार जानता हूँ। मुझसे उनका कोई राज छिपा नहीं है।''

उस वक्त गिसेला उसकी ओर ध्यान दिये बिना ही सिगरेट फूँके जा रही थी।

यान्सीटी कह रहा था, ''मैंने मिलान में अपने ऑफिस की मेज पर एक उक्ति लिखकर रखी है—''ईश्वर उस पर कृपालु होता है, जो मेरा समय व्यर्थ नहीं करते हैं।''

यह कहकर उसने सिगरेट एशट्रे में डाल दी तथा घडी की ओर देखते हुए बोला, ''खाना खाने का वक्त हो गया है, आओ चलें।''

''क्यों? क्या वक्त हुआ है?'' गिसेला ने पूछा।

''ठीक आठ बजे हैं। क्षमा करना, मैं अभी वापिस लौटता हूँ।'' उसने अपनी सीट से उठते हुए कहा।

वह उठा तथा कमरे के दूसरे छोर तक गया। उसके जाते ही गिसेला कहने लगी, ''वह बोलता अधिक है। उसे इस बात से कोई लेना-देना नहीं है कि सामने वाला उसकी बातों में रुचि ले रहा है या नहीं। दूसरे की भावनाओं को दिमाग में रखे बिना ही वह अपनी ही बात सुनाता रहता है। यही इसकी सबसे बड़ी कमजोरी है।''

''हाँ गिसेला! ऐसा तो मैंने भी अनुभव किया है।'' मैंने गिसेला से कहा।

''बस तुम्हारे पास उसकी लम्बी-चौड़ी बातें सुनने के लिए अच्छा खासा समय होना चाहिए। उसकी बातें सुनकर हाँ में हाँ मिलाती रहो। वह तुम्हें बहुत सी बातें बता देगा। वह धन भी बहुत खर्च करता है। उसे लोगों को महंगे-महंगे तोहफा देने का भी बड़ा शौक है।'' गिसेला ने मुझे उसकी

आदत के प्रति आकृष्ट करते हुए कहा।

"मगर, एक बात अभी तक मेरी समझ में नहीं आ सकी, कि वह तुम्हें बार-बार याद क्यों दिला रहा है?" मैंने हैरत प्रकट की।

मेरी बात का गिसेला ने कोई उत्तर नहीं दिया। कुछ वक्त बाद वह वापिस लौट आया। वह बोला, "गिसेला! यह तो मैं जानता हूँ कि तुम्हारा भी जाने का वक्त हो रहा है, लेकिन क्या तुम हमारे साथ सुपर लेना पसन्द करोगी?"

"नहीं...नहीं...धन्यवाद...इस वक्त नहीं...फिर कभी। दरअसल इस वक्त मैं कुछ जल्दी में हूँ, फिलहाल मैं माफी चाहूँगी।" इसके साथ ही उसने अलविदा कहा तथा कमरे से बाहर निकल गई।

"कितनी अच्छी लड़की है।" मैंने कहा।

"हाँ बुरी नहीं है। उसकी बनावट अच्छी थी।" यान्सीटी ने बुरा सा मुँह बनाकर कहा।

"क्या वह तुम्हें पसन्द है?" मैंने यान्सीटी से पूछा।

"मैं अक्सर ऐसी लड़कियाँ पसन्द करता हूँ, जो कि यह जानती हों कि उन्हें क्या करना है। मैं चाहता हूँ कि उनके साथ जितना वक्त भी बिताया जाये वह मेरी ही होकर रहें। गिसेला में यह खूबी नहीं है। यान्सीटी ने मुझसे कहा।

"उसके बारे में आपको ऐसा सोचने पर क्यों विवश होना पड़ा?" मैंने यान्सीटी से कहा।

"मुझे ऐसा इसलिये कहना पड़ रहा है कि वह सिर्फ धन के विषय में ही सबसे अधिक चिन्तित रहती है। उसे हमेशा धन-दौलत से ही लगाव रहा है। मेरे ख्याल में तो ऐसी लड़की कभी सच्चा प्यार नहीं दे सकती। यह तो उसके कारोबार का एक अभिन्न अंग बन चुका है।" यान्सीटी ने मेरी आँखों में झांकते हुए कहा।

कुछ देर पश्चात ही हम घूमते-फिरते एक रैस्टोरेन्ट में जा पहुंचे। वहाँ यान्सीटी जैसे दूसरे अनेक व्यापारी, यात्री, दुकानदार जमा थे। अच्छी खासी भीड़ लगी थी।

यान्सीटी ने वेटर से कहा, "मेरी मेज तो खाली होगी न?"

"जी श्रीमान! बैठिये आपका स्वागत है।" साथ ही रैस्टोरेन्ट के मालिक ने भी मुस्कुराते हुए कहा, "आइये, यान्सीटी महोदय।"

"मुझे तो काफी भूख लगी है।" उसने आगे कहा, "अरे हाँ, याद आया गिसेला तो खाने की मेज पर भोजन ही पसन्द नहीं करती। वह इस बात से आशंकित है कि कहीं जरूरत से अधिक मोटी न हो जाये। उस पर भी अजीब सी सनक सवार है। हर चीज का अपना समय होता है। खाने की टेबल पर तो भरपेट खाना ही चाहिए।"

"लेकिन क्या आप इस बात से इन्कार कर सकते हैं कि खाना अधिक खाते रहने से गैर जरूरी मोटापा बढ़ता है?" मैंने यान्सीटी के चेहरे

पर प्रश्नात्मक नजर डालते हुए कहा।

"क्या तुम भी उसी की बातों में यकीन करती हो?" यान्सीटी ने कहा।

"नहीं मैं ऐसा तो नहीं करती, वैसे आजकल मैं भी कुछ भारी-भरकम होती जा रही हूँ।" मैंने यान्सीटी से कहा।

"अरे नहीं, तुम बिल्कुल सही हो। अधिक वहम करना अच्छी बात नहीं है।" उसने मेरी कमर थपथपाते हुए कहा।

वेटर के आते ही यान्सीटी ने कहा, "सबसे पहले यह कृत्रिम फूलों का गुलदस्ता यहाँ से उठाओ।" उसने मेरी तरफ देखकर कहा, "आपको यहाँ किसी बात की शिकायत नहीं रहेगी।"

निःसन्देह मुझे यहाँ कोई शिकायत भी नहीं हुई। जो भी व्यंजन खरीदे गये थे एकदम अच्छे श्रेणी के थे। मगर यान्सीटी भोजन करते वक्त मुझसे बात ही नहीं कर रहा था। भोजन आते ही वह उस पर इस तरह टूट पड़ा मानो एक लम्बे वक्त से भूखा हो।

इसके विपरीत मुझे कोई खास भूख नहीं थी। मेरा ख्याल था कि आज मैं एक ऐसे आदमी से प्रेम करने जा रही हूँ जिसको ठीक से जानती भी नहीं हूँ। मैं इससे पूर्व गिनो के अलावा किसी अन्य आदमी को नहीं चाहती थी। शायद मेरे भीतर गिनो के विश्वासघात के कारण नफरत व प्रतिशोध के शोले भड़क रहे थे।

इस समय तो मैं यह भी नहीं जानती थी कि इस कारोबार में किस प्रकार के ग्राहक से अधिकाधिक पैसा ऐंठा जा सकता है। जबकि वह धन मेरे जीवन की सबसे बड़ी जरूरत बना हुआ था।

भोजन करने के पश्चात यान्सीटी ने मेरे ऊपर फिर से बातों की झड़ी लगा दी। जैसा कि गिसेला ने मुझे उसके विषय में सचेत किया था कि वह बहुत ही बोर आदमी है, बिल्कुल वैसा ही मैंने अनुभव किया था। अपनी प्रशंसा वह अपने ही मुँह से करता रहता था। मैं जानती हूँ कि अपनी तारीफ स्वयं वही लोग किया करते हैं जिन्हें कोई तारीफ करने वाला नहीं मिल पाता। मुझे उसके अन्दर कोई भी ऐसी खूबी दिखाई नहीं पड़ी जो कि वास्तव में प्रशंसनीय अथवा सराहनीय हो।

मैं बाद में अन्य लेगों से भी मिली। अधिक तो नहीं, लेकिन कुछ ऐसे भी मिले, जो कि यान्सीटी की भाँति ही बेकार थे। अपनी बेबसी और लाचारी पर मुझे बड़ा पछतावा हो रहा था कि मुझे ऐसे अवांछनीय लोगों का साथ देना पड़ रहा था।

"लड़की उदास क्यों हो? तुम्हारे मुख पर यह कैसी मनहूसियत छा रही है?" यान्सीटी ने मेरा ध्यान अपनी तरफ आकर्षित करते हुए कहा।

"नहीं...नहीं...ऐसी कोई बात नहीं है।" मैंने अपनी भूल का अनुभव करते हुए कहा।

"मेरी बात गौर से सुनो—मैं किसी भी कीमत पर उदासी पसन्द नहीं करता। यहाँ तुम्हें मैं मायूसी और उदासी फैलाने नहीं लाया था। तुम्हें जब

तक मेरा साथ निभाना है मैं तुम्हें हँसती, खिलखिलाती और किसी खिले हुए गुलाब की मानिन्द महकता हुआ देखना पसन्द करूंगा।''

यह मैं मानता हूँ कि तुम्हारी व्यक्तिगत जिन्दगी की कुछ समस्यायें हो सकती हैं। मगर फिलहाल मुझे उनसे कोई सरोकार नहीं है। मुझे तुम्हारे नाम, निवास स्थान या कारोबार के प्रति भी कोई जानकारी नहीं चाहिए। तुम्हारा अब तक किससे प्यार चलता रहा अथवा भविष्य में किसे चाहोगी, मेरी इसके बारे में कोई रुचि नहीं है।

आज की रात मेरे और तुम्हारे बीच एक कारोबारी रिश्ता कायम रहेगा। तुम्हारे इस मचलते यौवन व महकती सांसों पर मेरा पूरा हक रहेगा। आज मेरे लिए ली जाने वाली तुम्हारी हर धड़कन का मैं मुंहमांगा मूल्य चुकाऊंगा। तुम मुझे प्रसन्न करने का हर सम्भव प्रयास करोगी। इससे ज्यादा तुम्हारा व मेरा कोई रिश्ता नहीं है।''

''शायद वह इस बात पर नाराज था कि मैं उसकी बातें गौर से नहीं सुन रही थी।

''आप मुझसे भले ही नाराज हों, मगर मैं तो आपसे नाराज नहीं हूँ। वैसे यहाँ धुंआ तथा शोर-शराबा बहुत ज्यादा है जिसके कारण मुझे चक्कर आ रहा है।'' मैंने उसकी आँखों में झांकते हुए कहा।

''अरे तो इसमें परेशान होने की क्या जरूरत है? यहाँ से हम अभी चल देते हैं।'' यह कहते ही उसने वेटर को बुलाया तथा बिल मंगा लिया। बिल अदा करके हम दोनों बाहर निकल गए।

यान्सीटी मेरे कन्धे पर हाथ रखते हुए बोला, ''क्या हम लोग होटल चलें?''

''नहीं...नहीं, इतनी दूर परेशान होने की कोई जरूरत नहीं है।'' मैंने जल्दी से कहा। मुझे आशंका थी कि कहीं होटल में सिक्योरिटी कर्मचारी मेरे कागजात दिखाने के लिए न कह दें। इसलिए मैंने अपना मन दूसरी ओर बना लिया था, ''आओ, मैं तुम्हें अपने घर ले चलती हूँ।''

यान्सीटी ने एक टैक्सी ली तथा मुझे उसमें बिठाकर मेरे घर की ओर चल दिया। वह गाड़ी में भी मुझसे समीपता बनाये हुए था। मेरी गर्दन में हाथ डालकर उसने मेरे अंग-प्रत्यंग पर चुम्बनों की बौछार करना आरम्भ कर दिया। उसकी गुस्ताख उंगलियां मेरे मादक उरोजों से छेड़छाड़ कर रही थीं।

मुझे उसके मुँह से बड़ी दुर्गन्ध आ रही थी। मेरा अनुमान था कि उसके पास पैसे कम ही बचे होंगे। क्योंकि मुझे इस बात की चिन्ता थी कि सारे पैसे खर्च होने पर वह मुझे कुछ विशेष रकम न दे सकेगा।

मैंने फिजूलखर्ची से बचाने के लिए कहा, ''चलो टैक्सी वाले को वापिस कर दो, फिजूलखर्ची अच्छी बात नहीं होती है, पैदल ही निकल चलेंगे। मेरा घर भी नजदीक ही है। टैक्सी की क्या आवश्यकता है?''

इस पर यान्सीटी ने कहा, ''मैं टैक्सी चालक को इतना ज्यादा पैसा देता हूँ कि जहाँ चाहे ले जाऊं तथा जब तक चाहे खड़ा रखूँ।''

यह सुनकर मैंने सोचा कि किसी का भी मुँह बन्द करने के लिए धन पहली शर्त है। पैसे के बल पर किसी से कुछ भी, कैसा भी और कहीं भी काम लिया जा सकता है।

मैंने अपने घर पहुँचने पर कहा, "देखिए, मेरी मम्मी मेरे साथ रहती हैं। आप शोर मत करना, वे एक शान्तिप्रिय महिला हैं।"

उसने मुस्कुराते हुए कहा, "छोटी लड़की! फिक्र न करो। मेरी ओर से तुम्हें शिकायत का अवसर भी न मिलेगा।"

जीने से चढ़कर मैंने दरवाजा खोला। यान्सीटी मेरे पीछे-पीछे ही आ रहा था। मैं उसे अपने नये सजे हुए कमरे में ले गयी। मैंने उसे बड़े प्रेम से नये बैड पर बिठाया। वह हमारी कालोनी को देखकर सोच रहा था कि इनके यहाँ गन्दे और पुराने फर्नीचर पर फटे-पुराने बिस्तर ही मिलेंगे, मगर मेरे सुसज्जित कमरे को देखकर वह वास्तव में खुश था।

मैं अपने कमरे से निकलकर फिर मम्मी के कमरे में गई। मुझे देखकर जैसे ही मम्मी ने उठने की चेष्टा की मैंने इशारे से उन्हें मना कर दिया। मैंने कहा, "तुम्हें फिलहाल उठने की कोई जरूरत नहीं है, मैंने अपना खाना खा लिया है। मेरे साथ एक महाशय हैं। तुम्हें वहाँ किसी भी कीमत पर आने की जरूरत नहीं है।"

मम्मी ने बड़े हैरत के साथ कहा, "आज कौन आया है एड्रिना तुम्हारे साथ?"

"वह चाहे जो भी है लेकिन गिनो नहीं है।" इसके साथ ही मैंने मम्मी के किसी भी अगले सवाल की प्रतीक्षा किए बिना ही कमरे का दरवाजा अन्दर से बन्द कर लिया।

"बड़े विचलित मन से यान्सीटी मेरी तरफ सरक आया। उसने आते ही मुझे अपनी बाँहों में जकड़ लिया। वह किसी भूखे भेड़िए की तरह मुझे नोच-खसोट रहा था। मैंने सोचा कि अभी तो इसने मेरे बाहरी रूप की झलक ही देखी है। वह अभी से मेरे रूप-यौवन का दीवाना बन गया है। जब मैं इसे अपने निर्वस्त्र यौवन की अनूठी मदिरा का पान कराऊंगी तो इसकी क्या हालत होगी। वह मेरे जिस्म के कपड़ों को तार-तार करके उनमें कैद मेरे उफनते यौवन को आजाद करना चाहता था।

उसने बदहवासी की हालत में मेरे अधखुले ब्लाउज की आस्तीन में हाथ डालकर खींच दिया। इसके साथ ही मेरे गोरे-चिट्टे दूधिया कपोत मेरी चुस्त अंगिया से बाहर निकलने को बेचैन हो उठे। मेरे मचलते शबाब को देखकर उसका मस्तिष्क घूमने लगा था।

वह मुझे बेरहमी से नोच-खसोट रहा था मानो मैंने कपड़ों के स्थान पर पारदर्शी कागज चिपका रखे हों। मुझे डर था कि वह कहीं मेरे नये वस्त्र ही न फाड़ डाले।

मैंने उससे कहा, "मेहरबानी करके अपने कपड़े तो उतार लें।"

यह सुनते ही उसने अपने कपड़े उतार फेंके। अगले ही पल मेरा

मदमाता यौवन भी कपड़ों की अनावश्यक कैद से मुक्त हो चुका था।

यान्सीटी ने अपने होठ मेरी तरफ बढ़ाते हुए पूछा, "क्या तुम्हारी मम्मी को हमारे बारे में कुछ जानकारी है?"

"जी हाँ, मैं उनकी मर्जी के खिलाफ कोई कदम नहीं उठाती।" मैंने स्पष्ट अलफाजों में कहा।

"उन्होंने इस बात पर क्या कहा?" यान्सीटी ने उत्सुकतावश पूछा।

"आप इन बातों में अपना समय बर्बाद न कीजिए, उन्हें कोई आपत्ति नहीं है।" मैंने उसकी आशंका दूर करते हुए कहा।

"सच-सच बताओ, उन्होंने इसका खंडन तो नहीं किया?" यान्सीटी ने तीसरा सवाल किया।

"आप अपनी मंजिल की तरफ बढ़िये। उनके विरोध करने या न करने से आपको कोई सरोकार नहीं होना चाहिए।" न जाने इस समय मुझे क्या हो गया था। अचानक क्यों इतना प्रतिशोध भड़क रहा था कि जहाँ पहले मुझे दूसरे व्यक्ति के नाम से ही घृणा होती थी, वहीं आज मैंने लोकलाज को उतार कर फेंक दिया था।

वह मेरे मदमस्त यौवन को अपलक देखे जा रहा था।

मैंने उसका हाथ दबाते हुए कहा, "कृपया शीघ्र कीजिए। न जाने आप कहाँ खो जाते हैं।"

अगले ही क्षण उसने मेरी चेतावनी को मंजूर कर लिया। उसने मेरी पतली कमर में हाथ डाला तथा मुझे डबल बैड पर लाकर धीरे से लिटा दिया। वह धीरे-धीरे मेरे ऊपर छाता चला गया था। वह उन लोगों में से जान पड़ता था जो कि यह सोचते हैं कि जो चीज हमने धन देकर खरीदी है उसका उपयोग करने का पूरा हक है। इसलिए वह भरपूर शक्ति से मेरे रूप-यौवन से खिलवाड़ कर रहा था। मुझे लज्जा आ रही थी कि वह सिर्फ पैसे के बल पर मेरे खूबसूरत जिस्म के अलावा मेरी भावनाओं से भी खिलवाड़ कर रहा था। अपनी मंजिल के निकट पहुँचते ही वह निढाल होकर गिर पड़ा।

यान्सीटी खुश होकर अपने माथे से पसीना पोंछते हुए बोला, "मैं मानता हूँ कि मैं फिलहाल एक नौजवान तो नहीं हूँ, लेकिन मेरा दिल अभी भी जवान है। मेरी भावनाएं, मेरी उमंगें सदाबहार हैं। यह तो तुम्हें भी मानना होगा कि उदासी, मायूसी और बुढ़ापा तो मुझे छू भी नहीं पाया है।"

मैंने उसकी बातों से सहमत होते हुए कहा, "सही है, आपके नेक विचारों की मैं दिल से कद्र करती हूँ निःसन्देह आप एक भरपूर मर्द हैं। गजब की चुस्ती-फुर्ती है आपमें। सचमुच आपकी जवानी सदाबहार है।",

"अरे! ऐसा तो हर लड़की कहती है। लेकिन मुझे कहना ही पड़ेगा कि हकीकत में छोटी बोतल में ही शराब अच्छी मिलती है।" उसकी आँखों में नींद की खुमारी छाने लगी थी। उसने कहा, "फिलहाल अब मुझे नींद आ रही है, उठाना नहीं।"

यह सुनते ही मैंने उस पर कम्बल डाल दिया। अगले ही क्षण वह

गहरी नींद में सोता हुआ खर्राटे ले रहा था। मगर मेरे दिमाग में अभी भी अनेक ख्याल करवटें बदल रहे थे।

मैं सोच रही थी कि आज एक अजनबी आदमी से प्यार कर रही हूँ। मुझे कुछ समय पहले उसके बारे में न तो कुछ मालूम था और न ही वह मुझसे परिचित था और वह मेरे विषय में कुछ जानना भी नहीं चाहता था। वह बड़े आराम से मेरे उस बैड पर सो रहा था, जिस पर कभी मैंने व गिनो ने सुनहरे सपने संजोये थे। वह आदमी स्पष्ट अलफाजों में बातें कर रहा था और हर प्रकार से विश्वसनीय दिखाई पड़ता था।

उसने ऐसा कुछ भी नहीं कहा था जिस पर यकीन न किया जा सके। मेरी आँखों से बराबर आँसुओं की झड़ी लगी हुई थी। मुझमें प्रतिशोध ने कितना बदलाव ला दिया था।

लगभग बीस-पच्चीस मिनट बाद ही यान्सीटी की आँखें खुल गईं। जागते ही वह कहने लगा, ''मुझे सोते हुए कुछ ज्यादा वक्त तो नहीं हो गया? तुम तो अकेली बड़ी बोर हो रही होंगी?''

''जी नहीं... मैं भी आपके निकट ही सरक गयी थी थोड़ी देर आराम करने के उद्देश्य से।'' मैंने उसका दिल रखने के लिए कहा।

यान्सीटी ने खुश होकर कहा, ''आज मेरी पूरी तसल्ली हो गई है। सचमुच तुमसे मिलकर मैं बहुत प्रसन्न हूँ। फिलहाल मैं अपने आपको किसी बीस-बाईस साल के नौजवान की तरह महसूस कर रहा हूँ। मेरी थकान पूरी प्रकार मिट चुकी है।''

इसके साथ ही यान्सीटी ने अपने वस्त्र उठाये, पहने और जूतों के फीते कसने के पश्चात खड़ा होकर मुस्कराने लगा।

''अगर मैं आपसे दोबारा मिलना चाहूँ तो मुझे क्या करना होगा?'' यान्सीटी ने मेरी तरफ देखते हुए कहा।

''जब भी आपको मेरी सेवाओं की जरूरत पड़े, गिसेला को फोन कर दीजिएगा।'' मैंने उसकी उत्सुकता को देखकर कहा।

''क्या आप रोजाना स्वतन्त्र रहती हैं?'' यान्सीटी ने पूछा।

''जी हाँ, अब मैं पूरी प्रकार से स्वतन्त्र हूँ, वैसे भी आप जैसे भद्र पुरुषों को मायूस करना भी तो मेरे उसूल के खिलाफ ही होगा।'' मैंने विनम्रतापूर्वक कहा।

अपनी जेब से एक पर्स निकालते हुए यान्सीटी बोला, ''आपको खुश करने के लिए मुझे क्या देना होगा?''

''जो भी आप सही समझें। आप जो भी मुझे देंगे मैं उसे आपकी उदारता और महानता समझकर स्वीकार कर लूँगी।'' मैंने विनम्रतापूर्वक कहा, ''वैसे आप यदि मुझे ज्यादा दे जाओगी तो खुशी होगी क्योंकि यह मेरी जरूरत है। इसे मैं अपना सौभाग्य समझूँगी।''

''अगर मैं तुम्हें बहुत अधिक देता हूँ तो यह एक अच्छा सौदा नहीं रहेगा। मगर तुम एक नेक, भली और खूबसूरत लड़की हो और तुमने मेरी

भावनाओं का खूब ध्यान रखा है। तुम्हारे सम्पूर्ण समर्पण से निःसन्देह मेरे दिल को अपार खुशी मिली है। मैं तुम्हारे बर्ताव से भी बहुत खुश हूँ।'' यान्सीटी ने मुझसे बड़े प्रेम से कहा।

''यह तो आपकी महानता है कि मुझ नाचीज को आपने अपनी सेवा का अवसर दिया।'' मैंने विनम्रतापूर्वक कहा।

''हर वस्तु की तथा हर व्यक्ति के हुनर की एक कीमत होती है और खुश होने पर उसकी कीमत फौरन चुकानी चाहिए। तुमने मुझे गिसेला से कहीं अधिक यौन-सुख एवं मनोरंजन प्रदान किया है। इसलिए तुमको निश्चय ही उससे ज्यादा मिलना चाहिए।

मगर एक बात अवश्य जीवन में याद रखना—'जैसा आप चाहें दे दीजिए' यह मुहावरा फेरी वालों के लिए छोड़ दीजिए। वर्ना मैं भी ज्यादा देने वाला नहीं हूँ क्योंकि मैं भी एक बिजनेसमैन हूँ।''

जाते वक्त उसने मुझे उम्मीद से अधिक धन दिया था। यह रकम उससे भी ज्यादा थी जो कि एस्ट्रीटा ने विटारबो की यात्रा के बाद दी थी। आज मुझे ऐसा अहसास हो रहा था कि मेरा जन्म तो इसी पेशे के लिए हुआ है।

मैं चलते समय यान्सीटी को दरवाजे तक विदा करने गई। जाते वक्त उसने मेरे हाथ का चुम्बन लिया तथा 'विदा' कहकर चला गया। उसने बाहर से हाथ हिलाते हुए कहा, ''अच्छा फिर मिलेंगे।''

मेरा ख्याल था कि मम्मी मेरे कमरे के बराबर में कान लगाकर हमारी सारी बातें सुन रही होंगी। बाहर निकलते ही वे मुझे बाल पकड़कर बहुत मारेंगी, पीटेंगी तथा न जाने मेरी कैसी दुर्गति करेंगी। मगर आज इसके विपरीत वह बिल्कुल खामोश नजर आ रही थीं।

मुझे देखकर मम्मी बोली, ''अरे एड्रिना! मैं तो सचमुच डर ही गई थी।''

''लेकिन मम्मी, इसमें भला डरने की क्या बात थी?'' मैंने मम्मी से कहा।

''न जाने क्यों, अब से पहले जब मैं बिल्कुल अकेली थी तो मुझे चक्कर आ रहे थे। जैसे कि जरूरत से अधिक मदिरापान के बाद नशा छा जाता है। मुझे अपने कमरे में रखे कुर्सी, मेज और मशीन सभी कुछ घूमता नजर आ रहा था।

मुझे यकीन नहीं हो रहा था कि मैं कपड़े सिलने वाली एड्रिना की ही मम्मी हूँ। मुझे याद आ रहा था कि मैं भी जवान लड़की थी। मैंने शादी की, तुम्हारा जन्म हुआ तथा न जाने कब मुझे इस बुढ़ापे ने घेर लिया। यह सब कब में हो गया मुझे इसका पता भी नहीं चल सका। मानो एक दिन में ही सारा कुछ बदल चुका था। बहुत छोटे से जीवन में सब कुछ हो गया तथा मुझे पता ही नहीं चला। लगता है इसी तरह एक रोज मैं इस दुनिया से कूच कर जाऊंगी तथा ऐसा लगेगा मानो मेरा जन्म ही न हुआ हो।'' मम्मी ने काँपते हुए कहा। वह बहुत जज्बाती नजर आ रही थीं।

"मम्मी! आप ऐसी दिल तोड़ने वाली बातें मत किया करो। अभी तो आप जवान हैं तथा भली-चंगी हैं। भला आपको ऐसी अशुभ बातें सोचने की क्या जरूरत है?" मैंने मम्मी के गले में बाँहें डालकर कहा।

मेरी बातों को अनसुनी करके मम्मी ने कहा, "अगर कोई जीना ही न चाहे तो दूसरे इसमें क्या कर सकते हैं? मरने के लिए भी हिम्मत चाहिए। तुम्हारे स्वर्गीय पापा की कसम एड्रिना! अब मैं और आगे नहीं जीना चाहती।"

यह कहते हुए मम्मी के होठ कांप रहे थे तथा वे फूट-फूटकर रो रही थीं। पहले तो वे बराबर क्रोध दिखाया करती थीं अथवा अंधाधुंध बोलती रहती थीं। मगर आज वे काफी जज्बाती दिखाई पड़ रही थीं।

वे पहले तो कहा करती थीं कि मैं खूबसूरत हूँ तथा जो चाहे इस शरीर के बल पर हासिल किया जा सकता, मगर आज उन्हें अपने शब्दों पर इतना पछतावा हो रहा था कि खुद को रोक ही न पा रही थीं। उन्हें जीवन के प्रति कोई लगाव नहीं रहा था।

मम्मी ने कहा, "आज के पश्चात कभी भी ऐसा मत करना। मुझे तुमसे कुछ भी नहीं चाहिए। मैं खून-पसीने की कमाई से अपने परिवार का गुजारा कर लूँगी।"

मेरी मम्मी के शब्द कि वह जीना नहीं चाहती हैं, मुझे सही लग रहे थे। मुझे गिनो के धोखे का पता चल गया था। अब मेरा सिर्फ शरीर ही जिन्दा बचा था। मेरा प्यार, मेरी भावनाएं, मेरी ख्वाहिशें सब कुछ मर चुकी थीं।

मैंने आभास किया कि मुझे इस जीवन का भरपूर उपयोग करके और जिन्दा रहना चाहिए। मेरा दिल तो करता था कि मम्मी को सब कुछ बता दूँ मगर मम्मी चुप होने का नाम ही न लेती थीं।

आखिर में मैंने कहा, "मम्मी! मुझे बहुत जोर की भूख लगी है।"

यह सुनते ही मम्मी उठीं तथा मेरे लिए खाना बनाने चली गयीं।

कुछ देर पश्चात मम्मी मेरे लिए खाना लेकर आ गई थीं। वे कहने लगीं, "एड्रिना मैंने सूप को गर्म नहीं किया है, क्योंकि थोड़ा सा ही बचा है।"

"तो क्या हुआ मम्मी, उसी से काम चल जायेगा।" मैंने खाने की मेज पर बैठते हुए कहा। मैंने आराम से खाना खाया और खाना खाने के बाद एक भरपूर अंगड़ाई ली।

इस पर मम्मी ने प्रेम से मेरे सिर पर हाथ फिराते हुए कहा, "कोई बात नहीं, जब तुम्हारा दिल चाहे तब उठ जाना।"

मम्मी से कहकर मैं अपने कमरे में गई। अपना बिस्तर सही करके तुरन्त लेट गई। मगर यहाँ का वातावरण अब इतना सुहाना नहीं लग रहा था, जितना कि थोड़ी देर पहले। मुझे बिस्तर पर लेटते ही नींद ने घेर लिया था।

□□□

मैं अगले रोज तक यान्सीटी से पहले की तरह मिलती रही थी।

अक्सर वह गिसेला को फोन कर देता था तथा दोपहर तक उसकी सूचना मुझे गिसेला से प्राप्त हो जाती थी। इसके पश्चात उसने मिलान वापिस जाने की योजना बना ली थी। गिनो को मैंने दस रोज पश्चात का समय दे रखा था।

इसीलिए मैं इस दौरान यान्सीटी से मुलाकात करती रही थी। वर्ना मुझे यान्सीटी को इंकार भी करना पड़ सकता था। गिनो से धोखा खाने के पश्चात मैंने तय किया था कि अब मैं केवल किसी एक की होकर नहीं रहूँगी। बार-बार दिल टूटने से तो अच्छा है कि हर दिन आनन्द से रहो, मौज-मस्ती लो और भूल जाओ। किसी एक की होकर रहने से अन्य भी खतरे हैं। वह भावुकता में आकर हमारा शोषण भी तो कर सकता है।

मेरे शादी के बारे में विचार अभी बदले नहीं थे। यदि मैं शादी करूंगी तो प्रेम विवाह नहीं करूंगी। मैं किसी ऐसे प्रेम विवाह में यकीन नहीं करती, जिसमें पहले से ही यौन सम्बन्ध स्थापित हो चुके हों। भले ही मेरा मंगेतर निर्धन परिवार का क्यों न हो, लेकिन उसे बिना किसी छल-कपट के 'सादा जीवन उच्च विचार' वाली भावना से ओत-प्रोत होना चाहिए। मेरे व उसके ख्यालों में तनिक भी मतभेद नहीं होना चाहिए। एक सभ्य, सज्जन तथा तथा नेकरूह इन्सान से ही मेरी शादी होनी चाहिए।

गिनो से प्यार में धोखा खाने के पश्चात मैंने अपनी पहली आकांक्षाओं के विपरीत एक अलग ही काम चुन लिया था। अब मेरी धारणा बन चुकी थी कि या तो अच्छी पत्नी बना जाये या एक सफल वेश्या।

अब यान्सीटी मुझे हर शाम को उसी रेस्टोरेन्ट में शाम के खाने पर ले जाया करता था। इसके पश्चात वह मेरे साथ घर चला आता था। मेरे साथ कुछ रात बिताने के बाद वापिस होटल लौट जाता था। अब मेरी शाम के बारे में मम्मी ने मुझे कुछ भी बात पूछना बन्द कर दिया था।

वह मुझसे केवल इतना ही पूछा करती थीं कि खाना खाओगी या नहीं या कोई परेशानी तो नहीं, सही से नींद आती है या नहीं आदि-आदि। मैं सर्दी के दिनों में अक्सर सुबह-सुबह मम्मी के पास रसोई में आकर ही गर्मागर्म कॉफी पी लेती थी। साथ ही स्टोव पर थोड़ा हाथ भी सेंक लेती थी।

मगर अब सुबह मम्मी ही बिस्तर पर कॉफी दे जाती हैं। हमारे बर्ताव में भी अब काफी फर्क आ गया था। हमने अपना रास्ता बदल लिया था और मम्मी भी धीरे-धीरे स्वीकार करती जा रही थीं।

हमारे बीच यह एक तरह से स्वीकार किया गया समझौता था। हमारे जीवन में अनेक बदलाव आ चुके थे। अपने कमरे के जो काम अक्सर मुझे करने होते थे, उन्हें अब मम्मी स्वयं ही पूरा कर लेती थीं।

अब यान्सीटी मुझे रोजाना उतना ही पैसा दे जाया करता था। मैं सारा धन मम्मी को बिना बतलाये ही उसी बॉक्स में रख दिया करती थी जिसमें कि मम्मी अपनी बचत सुरक्षित करती थीं। मैं अपनी जेब खर्च के लिए कुछ खुले पैसे ही अपने पास रखती थी। मेरा ख्याल था कि धन के आने से मम्मी

का उग्र रूप भी शान्त हो चुका था तथा यह वास्तव में एक ऐसी चीज है कि इससे किसी का भी मुँह बन्द किया जा सकता है।

मुझे गिनो को फोन किए हुए दस दिन होने को थे। यह वक्त ऐसा लग रहा था, मानो सैकड़ों साल बीत गए हों। गिनो मुझे ठीक वक्त पर निधरित जगह पर लेने आ पहुँचा था। मैंने पता होते हुए भी गिनो के प्रति क्रोध नहीं दिखाया था। क्योंकि वह मेरा पहला प्रेम था और मैं उसे दिल की गहराइयों से चाहती थी।

गिनो ने कार चलाते हुए पूछा, "तो उस चर्च के पादरी ने तुम्हारा दिमाग बदल दिया है? क्यों एड्रिना! मैं कुछ गलत बात तो नहीं कह रहा?"

"नहीं.....नहीं इसमें उस पादरी का कोई कुसूर नहीं है।" मैंने गिनो से कहा, "दरअसल मैंने ही अपना इरादा बदल लिया है।"

"क्या तुमने मम्मी के साथ कार्य पूरा कर लिया है?" गिनो ने उत्सुकतापूर्वक पूछा।

"नहीं, पूरा काम तो अभी नहीं हो सका। कुछ काम बाकी है।" मैंने जवाब दिया।

यह सुनकर गिनो दिल ही दिल में बड़बड़ाया, "नामर्द कहीं का!" दरअसल यह भद्दा अलफाज उसने पादरी के लिए प्रयुक्त किया था।

"यह अलफाज तुमने किसके सम्मान में कह डाले?" मैंने व्यंग्यात्मक अंदाज में कहा।

गिनो ने बात बदलते हुए कहा, "नहीं, मैं कुछ सोच रहा था, वैसे इस बात का तुमसे कोई ताल्लुक नहीं है।"

"क्या तुम्हें उसके प्रति ईर्ष्या हो रही है?" मैंने गिनो से पूछा।

"नहीं मुझे उससे कोई जलन नहीं है, मगर यह भी यकीन नहीं हो रहा है कि पिछले दस दिन में मुझसे मिलने का तुम्हें बिल्कुल भी वक्त नहीं मिल सका।" गिनो ने गाड़ी ड्राइव करते हुए कहा।

इस पर मैंने कहा, "आप मेरी बात का यकीन कीजिए कि पिछले दिनों मैं बहुत मसरूफ थी, भले ही मैं किसी दूसरे काम में लगी रही, जो कि बोरियत के साथ ही थका देने वाला भी रहा। पिछले दिनों मैं यान्सीटी के साथ रही,क्योंकि अभी हमें फर्नीचर की किश्तें भी चुकानी हैं और शादी के लिए जोड़ा भी बनवाना है। मेरा ख्याल था कि किसी का हम पर कर्जा न रहे।"

इससे आगे गिनो ने कुछ नहीं कहा तथा वह सच्चाई जानने की चेष्टा करने लगा कि कहीं मुझे उसकी वास्तविकता का पता तो नहीं लग गया। हम बातें करते हुए गिनो की मालकिन की विला तक आ पहुँचे। गाड़ी बाहर खड़ी करके हम भीतर जा पहुँचे।

गिनो जैसे ही अपने कमरे में जाने के लिए मुड़ा, मैंने उससे कहा, "मैं आज तुम्हारे कमरे में जाने के बदले तुम्हारी मालकिन के बैडरूम में चलना ज्यादा पसन्द करूंगी।"

"कहीं तुम्हारा दिमाग तो खराब नहीं हो गया एड्रिना?" गिनो ने घबराते स्वर में कहा। उसके चेहरे पर डर व घबराहट के मिले-जुले भाव स्पष्ट नजर आ रहे थे।

"अरे! तुम तो ऐसे घबरा रहे हो जैसे सिर मुंडाते ही ओले पड़ने वाले हों?" मैंने गिनो को उकसाते हुए कहा, "जब तुम्हारी मालकिन ही यहाँ नहीं है तथा बैडरूम भी पूरी तरह तुम्हारे कब्जे में है तो किस बात का घबराना है? इससे क्या फर्क पड़ता है? आज हम भी इस बैडरूम में प्रेम की रिहर्सल करके कुछ वक्त के लिए अमीरी का आनन्द उठा लेते हैं।"

"एड्रिना ! भला यह कैसे मुमकिन हो सकता है। इस बारे में तो हम सोच भी नहीं सकते। अगर कहीं हमारे इस दुस्साहस का मालकिन को पता चल गया तो हम पर इतनी बड़ी आफत आ जायेगी कि हम उसकी कल्पना भी नहीं कर सकते।" गिनो ने बेबसी से कहा।

"तो क्या हुआ, हम सतर्कता बरतेंगे? क्या तुम्हारी मालकिन मुझसे कुछ ज्यादा खूबसूरत है, क्या उसका रूप यौवन अधिक बढ़कर है? क्या आपकी नजरों में मेरे प्रेम की कीमत उसके कपड़ों से भी कम है? क्या मुझसे ज्यादा तुम अपनी मालकिन के बिस्तर से प्रेम करते हो?" मैंने गिनो को अपनी बात मनवाने के लिए विवश करते हुए कहा।

मेरे भीतर अचानक आये इस परिवर्तन को देखकर गिनो को बड़ा आश्चर्य हुआ। मैं तुरन्त उठी और बैडरूम के साथ वाले बाथरूम में जा घुसी। मैंने जाते ही गीजर ऑन कर दिया। मैं बाथरूम की भव्यता तथा सजावट को देख रही थी। इसमें हर सुविधा उपलब्ध थी।

मैंने कहा, "लगता है ये लोग प्रेम करने के बाद भी स्नान करते हैं।"

इस पर गिनो ने कहा, "मगर, तुम्हें यह सब कैसे मालूम है?"

वह मेरे साहस व वार्तालाप में आये बदलाव को ही देख रहा था।

मैं गिनो के साथ बैड के एक किनारे पर बैठ गयी। मैंने ही प्रेम की पहल करते हुए उसके गले में अपनी बाँहें डाल दीं। क्योंकि वह मेरा पहला प्रेम था। मैंने उससे समीपता बढ़ाते हुए कहा, "सोचो गिनो! वह दिन कितना सुहाना होगा जबकि हमारा अपना घर होगा। हम दोनों एक साथ रहेंगे और हमारा जीवन सुखमय होगा।"

मैं यह सब न जाने किस भावना में बहकर कह गई थी। उसने मुझे मजबूत आलिंगन में लेकर कहा, "हाँ...हाँ...क्यों नहीं...क्यों नहीं?"

मैं अच्छी प्रकार जानती थी कि हमारी जिन्दगी के रास्ते अलग-अलग हो चुके हैं। फिर भी मैंने कहा, "दो छोटे-छोटे कमरे होंगे। साथ ही रसोई और छोटा सा बाथरूम भी होगा। मगर वह बिल्कुल साफ-सुथरा होगा। प्रत्येक रविवार को हम साथ-साथ रहा करेंगे, घूमे फिरेंगे, पिकनिक मनाया करेंगे, खाना-पीना भी साथ ही हुआ करेगा, जरा सोचो तो गिनो, वह सब कितना अच्छा लगेगा।"

इस पर गिनो ने कोई जवाब नहीं दिया। उसने उत्तेजित होकर मुझे

निर्वस्त्र कर डाला। मैंने अहसास किया कि पिछले दस दिन की इस जिस्मानी भूख ने उसकी क्या हालत बना दी थी। हालाँकि मेरा जिस्म भी उसको देखकर कामावेश में उत्तेजित हो चुका था, मगर अभी भी मेरी आत्मा में रोष भरा हुआ था।

मैंने उसे अपने उफनते यौवन से लिपटते देखकर पूछा, "गिनो! क्या आज मेरी जान ही लेने का इरादा बना लिया है?"

मेरी बात को अनसुनी करके वह मेरे मचलते हुए शबाब से मनमानी करने लगा। वह मेरे ऊपर छाता जा रहा था। कुछ देर पश्चात ही हम दोनों अपनी मंजिल पर पहुँच चुके थे। अगले ही क्षण हम दोनों बिस्तर पर निढाल पड़े थे। हमने एक कढ़ी हुई चादर अपने शरीर पर डाल रखी थी। नर्मो मुलायम गद्दों पर लेटने का अहसास बड़ा ही आनन्ददायक लग रहा था।

इस वक्त दोनों शान्त हालत में आलिंगनबद्ध थे। मैंने अपने दिल की बात कहने के लिए यही अवसर उपयुक्त समझा।

"हाँ, तो गिनो!" एक लम्बा सांस लेकर मैंने खामोशी को तोड़ा, "तुम्हारी पहली पत्नी का नाम एन्टोनिटा पारतीनी है ना?"

वह शायद उस वक्त अर्द्ध मूर्च्छा की हालत में था लेकिन मेरी बात को सुनकर वह लगभग उछल पड़ा था तथा कहने लगा, "यह सब तुमसे किसने कहा?"

"तथा तुम्हारी छोटी बच्ची का नाम मारिया है ना? क्या मैं कुछ गलत तो नहीं कह रही?" मैंने दूसरा सवाल किया।

यद्यपि मेरी बात का वह खंडन करना चाहता था, लेकिन मेरी आँखों में यकीन भरी चमक देखकर वह कुछ भी कहने का साहस न जुटा सका था।

मैंने तड़पते हुए स्वर में कहा, "अरे गिनो! मैंने तो आज तक तुमसे अपनी कोई बात नहीं छिपाई। फिर तुमने मेरे साथ इतना बड़ा धोखा क्यों किया? आखिर इस राज को अपने मन में दफन करने का तुमने यह दुस्साहस किस कारण किया?"

"क्योंकि मुझे तुमसे प्रेम हो गया था एड्रिना!" गिनो ने साहस बटोरकर मुझसे कहा।

"अगर मुझसे तुम्हें सचमुच प्रेम ही हो गया था तो तुमने यह पहले ही क्यों नहीं सोचा कि बात की असलियत खुलने पर मुझे कितना दु:ख होगा। अगर वास्तव में तुम्हें मुझसे प्रेम था तो तुम्हें कम से कम यह तो जानना ही चाहिए था कि यह सब जानकर मुझे कितना गहरा धक्का लगा था। अब मेरी व तुम्हारी भलाई इसी में है कि मुझसे भविष्य में कभी भी मिलने की कोशिश न करना।" यह कहकर मैं बाथरूम की ओर नहाने चली गई।

नहाने के लिए जरूरी वस्त्रों को एक हुक पर टांगकर मैं टब में लेट गयी। मगर गिनो शान्त भाव से बाहर ही खड़ा रहा। थोड़ी देर पश्चात ही उसने मौन तोड़ा, "एड्रिना! क्या हमें अब दोबारा नहीं मिलना चाहिए?"

मैंने आभास किया कि एस्ट्रीटा भी कभी ऐसे ही प्रयास करता रहा था, मगर उन दोनों का अपना अलग-अलग ढंग था।

कुछ देर पश्चात गिनो ने कहा, "एड्रिना! क्या मैं तुम्हारी कुछ सहायता कर सकता हूँ?"

मैंने उससे कहा, "मुझे क्या परेशानी है? यदि आना चाहो तो आ सकते हो।" इसके पश्चात मैंने कुछ नरमी का रुख अपनाया, "अगर तुम्हें कोई पेरशानी न हो तो मेरी पीठ पर साबुन लगा सकते हो।"

नहाते समय उसने मेरे मचलते यौवन को साबुन के झागों में सराबोर कर दिया। स्नान करने के बाद उसने मेरे गीले जिस्म को तौलिये से रगड़कर पोंछने में इस तरह मदद की, मानो मैं उसकी मालकिन थी। अपने जिस्म पर तौलिया लपेट कर मैं बाहर निकली।

मैंने फुर्ती के साथ अपनी ड्रेस पहनी, जबकि गिनो अभी बाथरूम का पानी ही साफ कर रहा था। इसके पश्चात मैं श्रृंगार मेज के सामने आ पहुँची। यहाँ अनेक कीमती सुगन्धित तेल व पाउडर आदि सजे हुए थे। मेरी नजर अचानक एक पाउडर के शो पीस पर पड़ी जिस के ऊपर सोने की नक्काशी हो रही थी। मैं इसे उपयोग करने का मोह न त्याग सकी। मैंने अपना बैग खोला तथा इस सोने के शोपीस को उसमें डाल लिया। आज की पूरी मेहनत मेरी वसूल हो चुकी थी।

मैंने बाहर आकर देखा कि गिनो बिस्तर सही कर रहा था। उस पर एक उपेक्षापूर्ण नजर डालते हुए मैंने कहा, "आओ गिनो, वापस चलते हैं।"

अब शाम का समय हो चुका था। हम कार से अपने घर की ओर वापिस लौट रहे थे। मैं अभी भी ख्यालों के अथाह सागर में गोताखोरी कर रही थी। मेरे दिमाग में एक-एक विचार तूफानी लहरों की प्रकार प्रहार कर रहा था।

मैंने दु:खी दिल से एक बार फिर गिनो को अपना लक्ष्य करके कहा, "गिनो! मैं केवल इतना पूछना चाहती हूँ कि आखिर तुमने ऐसा क्यों किया? यह सब मैं कैसे भुला सकती हूँ?"

मगर गिनो को मेरी बातों का कोई जवाब नहीं सूझ रहा था। वह शान्त भाव से गाड़ी चलाता रहा। इसी दौरान हम घर पहुँच गए थे। मेरे दिल में बड़ा क्रोध था। मैंने गाड़ी से बाहर निकलकर कहा, "गिनो! मैं तुम्हें एक अंगूठी तो जरूर ही दूँगी।"

यह कहते ही मैं अपने घर में प्रविष्ट हो गई।

□□□

मेरा जीवन-चक्र पहले की तरह चल रहा था। ठीक उसी दिशा में और उन्हीं लोगों के साथ। जिन्दगी की भागदौड़ में अपनी जिन्दगी को बिताना मुझे ऐसा लग रहा था मानो लूना पार्क के गोल झूले पर मेरी जिन्दगी झूल रही हो। वह लौट-लौटकर, घूम-घूमकर वापिस वहीं आ जाता था। जिसकी भिन्न-भिन्न आकृति बनी होती है, जैसे हंस, घोड़ा, गद्दी, बिल्ली तथा ड्रेगन

आदि। इसी तरह मेरे पास आने वाले ग्राहक भी भिन्न-भिन्न शक्लों वाले थे। लेकिन हर ग्राहक कभी न कभी मेरे जीवन में जरूर लौट आता था। यही मेरा जीवन-चक्र था।

इधर कुछ समय पश्चात यान्सीटी मिलान से लौट आया था। वह मेरे लिए रेशमी वस्त्र तोहफा स्वरूप लाया था। गिसेला ने कई अन्य लोगों से भी मेरा परिचय कराया। इनमें ज्यादातर जवान, कुछ अधेड़ तथा दूसरे बूढ़े भी थे। अब कोई भी मेरे मखमली रूप-यौवन से खेल सकता था क्योंकि अब मैं एक बिकने वाली चीज बनकर रह गई थी। एक तरह से मेरी हैसियत नगरवधू की होकर रह गयी थी।

गिनो से मेरी मुलाकात लगभग दस दिन पश्चात हो पाई थी। वह स्वयं एक रोज सुबह ही मेरे घर आ धमका। मैं तो उस वक्त बहुत गहरी नींद में सोई हुई थी। अचानक मम्मी ने मुझे जगाया और कहने लगीं, ''उठो एड्रिना! देखो गिनो आया है।''

मैंने अलसायी आँखों को मलते हुए कहा, ''ठीक है, अन्दर ही बुला लो।''

गिनो इस वक्त कुछ गुस्से में नजर आ रहा था। उसके चेहरे पर परेशानी के भाव स्पष्ट दिखाई दे रहे थे। कमरे में घुसकर वह काफी चौकन्ना था। उसकी नजरों से ऐसा जान पड़ता था वह किसी गुमशुदा चीज की खोज में निकला हुआ है।

सामान की उठा-पटक करते हुए उसने अपनी परेशानी व्यक्त की, ''एड्रिना! सही बताओ, क्या मेरी मालकिन की श्रृंगार मेज से तुमने कुछ उठाया है या उनकी कोई चीज भूल से तुम्हारे साथ तो नहीं आ गई?''

''अब सीधे-सीधे कुछ बताओगे भी अथवा नहीं कि तुम्हारी मालकिन का मैंने कौन सा कीमती सामान उड़ाया है या पहेलियाँ ही बुझाते रहोगे?'' मैंने एक भरपूर अंगड़ाई लेते हुए पूछा

गिनो ने माथे से पसीना पोंछते हुए बताया, ''एड्रिना! तुम्हें तो मस्ती सूझ रही है जबकि मेरी जान पर बनी हुई है। हमारी मालकिन का एक कीमती सोने का बना पाउडर का शोपीस उसी रोज से गायब है जबकि तुम विला पर गई थीं। मालकिन ने पूरा घर छान मारा है।

क्योंकि मैं विला का इन्चार्ज था इसलिये सबसे ज्यादा सन्देह मुझ पर ही किया जा रहा है। वैसे मालकिन ने अभी तक मुझे कुछ नहीं कहा है। अभी उनका सन्देह नौकरानियों पर ही है, वर्ना वह मुझ पर आग-बबूला हो जातीं। वह मुझे गिरफ्तार भी करा सकती थीं या नौकरी से भी निकाल सकती थीं।''

मुझे इस बात की आशंका थी कि कहीं बेकसूर नौकरानी ही इस जाल में न फंस जाये। मैंने उत्सुकता से गिनो से पूछा, ''किसी नौकरानी को तो कुछ नहीं कहा?''

''नहीं, फिलहाल तो उन्हें कुछ नहीं कहा। मगर पुलिस को सूचित

कर दिया था। पुलिस ने आकर सबसे जरूरी पूछताछ की थी। उन्होंने यह भी पूछा कि इस विला में और कोई आदमी तो नहीं आया था।''

पल भर सोचकर मैंने कहा, ''अब आप फिक्र न करें, वह शोपीस मैंने ही लिया है।''

''मगर एड्रिना! मैं तो सिर्फ इतना जानना चाहता हूँ कि तुमने वहाँ जाकर चोरी क्यों की? यह घिनौना ख्याल तुम्हारे दिमाग में कैसे आया? तुम्हारी आत्मा ने तुम्हें धिक्कारा क्यों नहीं?'' गिनो ने मेरे मुख पर प्रश्नात्मक दृष्टि डालते हुए कहा।

गिनो की बात सुनकर मुझसे चुप न रहा गया। मैंने कहा, ''यदि तुम जानना ही चाहते हो तो अपना दिल थामकर सुनो–मैंने यह शोपीस इसलिए नहीं चुराया कि मुझे इसकी जरूरत थी, बल्कि इसलिए चुराया कि यह मुझे बहुत पसन्द था। मेरा एक ही सिद्धान्त है कि जो चीज मेरे दिल को भा जाती है, मैं उसे पाकर ही दम लेती हूँ, भले ही वह चोरी से क्यों न प्राप्त करनी पड़े।

यह सिद्धान्त अब मेरी दिनचर्या का एक अभिन्न हिस्सा बन चुका है। मैं रोजाना रात में सड़कों पर घूमने निकलती हूँ। मेरा दिल जिस पर भी आ जाता है, उसे ही मैं अपने साथ घर ले आती हूँ। मैं इस तरह उनका व अपना भरपूर मनोरंजन करती हूँ। उन्हें सम्पूर्ण यौन सुख और हार्दिक सन्तुष्टि प्रदान करती हूँ। मेरे इस हुनर से खुश होकर वे मुझे पर्याप्त पैसा दे जाते हैं।''

''मैं मानता हूँ कि तुम कुछ भी चुरा सकती हो। मगर यदि मैंने तुम्हारी बातों में आकर तुमसे शादी कर ली होती, तो मैं कभी का गिरफ्तार हो गया होता।'' गिनो ने मेरी तरफ देखते हुए कहा।

''शायद मैं उस वक्त ऐसा करने का दुस्साहस न करती। लेकिन ऐसा अब मैंने इसलिए किया था कि तुम्हारे बीवी-बच्चे हैं।'' मैंने अपनी भूल के लिए गिनो को दोषी ठहराते हुए कहा।

''नहीं...एड्रिना! नहीं, मेरे ऊपर इतना भारी इल्जाम मत लगाओ। अपनी मर्जी के बिना कोई भी लड़की चोर या वेश्या नहीं बन पाती।'' गिनो ने घबराते हुए कहा।

''आपने बिल्कुल सही फरमाया है। मैं भी तो बिना मर्जी के और बिना जानकारी के चोर या वेश्या बनी हूँ।'' मैंने गिनो को घूरते हुए कहा।

गिनो ने महसूस किया कि वह मेरे तर्क को काट नहीं सकता था। आखिर में उसने मजबूर होकर कहा, ''तुम क्या करती हो अथवा क्या नहीं करतीं, अब इससे मुझे कोई सरोकार नहीं रहा, मगर मुझे वह शोपीस फौरन और हर हाल में चाहिए। मैं मालकिन से बहाना बना दूंगा कि यह बाग में पड़ा मिला है।''

मैंने उसे ज्यादा परेशान जानकर वह शोपीस अपने पर्स से निकालकर लौटा दिया। शोपीस लेकर वह अपनी मालकिन की विला की ओर चल दिया।

इस प्रकार गिनो को मेरी नयी जीवनचर्या के बारे में पता चल गया

था। इतना राज खुल जाने पर भी मैं अक्सर उससे मिलती रहती थी, क्योंकि मैं उसे अभी भी चाहती थी। हालांकि मैं भली प्रकार जानती थी कि अब हमारे मध्य सब कुछ समाप्त हो चला था। अब मुझे इसकी अधिक फिक्र भी नहीं रह गई थी।

मेरा ख्याल था कि संसार में जो चीजें उत्पन्न होती हैं, वे एक न एक दिल समाप्त भी अवश्य होती हैं। मगर मुझे आकस्पिक सम्बन्ध-विच्छेद अथवा दिलों में दरार पड़ने वाली बात बिल्कुल भी पसन्द नहीं है। खास रूप से जब तक बात स्पष्ट न हो।

मेरे जीवन में एक और व्यक्ति आया जिसका नाम एस्ट्रीटा था। अक्सर गिसेला उससे मिलती रहती थी। वह सदैव इसी प्रयास में लगी रहती थी कि हम दोनों एक हो जायें। वह अवसर की तलाश में रहती थी और जैसे ही उसे उपयुक्त मौका मिलता, वह मुझे एस्ट्रीटा के विषय में सलाह देने से न चूकती थी।

जैसे ही उसने देखा कि काफी समय गुजर चुका है और मेरा क्रोध भी शान्त हो चुका है, उसने मुझसे एक दिन फिर कहा कि वह एस्ट्रीटा से मिली थी। उसके पास तुम्हारे लिए एक समाचार है। वह सीधी तरह से बात नहीं कहती थी कि वह मुझसे प्रेम करना चाहता है।

उसकी इस प्रकार की घुमावदार बातों से परेशान होकर मैंने कहा, "देखो गिसेला! इस तरह घुमा-फिराकर बातें करने का कोई लाभ नहीं है।"

"वह कैसे एड्रिना?" गिसेला ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा।

"मेरा विचार है कि सांप को मारने के बजाय लकीर पीटने से कोई फायदा न होगा। सीधी-सच्ची बात करो कि उसने तुम्हें मेरे पास खबर देकर भेजा है।" मैंने गिसेला को समझाते हुए कहा।

"थोड़ी देर के लिए मैं मान लूँ कि ऐसा ही है, तब तुम्हारा क्या जवाब होगा?" गिसेला ने मेरी आँखों में आँखें डालकर पूछा।

"ऐसे हालात उत्पन्न होने पर मेरा जवाब होगा कि वह भी अन्य ग्राहकों की मानिन्द मेरे पास आने के लिए आमन्त्रित होगा। भला मुझसे वायदा लेने की अब गुंजाइश ही कहाँ बची है। अब तो मैं एक 'सेवक स्वागत' का साधन मात्र बनकर रह गई हूँ।"

गिसेला को मुझसे ऐसे जवाब की कतई उम्मीद नहीं थी। यह सुनकर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। उसका ख्याल था कि मैं उससे नफरत करती हूँ, अत: उससे कभी भी मिलना नहीं चाहूँगी। शायद उसे इस बात का पता ही नहीं था कि अब प्यार तथा नफरत जैसे शब्द मेरे लिए कोई अस्तित्व नहीं रखते।

गिसेला ने मुझे समझाते हुए कहा, "एड्रिना! तुम्हारी बातों से मैं पूरी तरह सहमत हूँ। अगर तुम्हारी जगह मैं हुई होती, तो नि:सन्देह मैं भी ऐसा ही कर गुजरती। कुछ बातें ऐसी भी होती हैं, जिनमें अपनी नापसन्द को भी नजरअन्दाज करना पड़ता है।

वास्तव में एस्ट्रीटा तुम्हें दिल की गहराइयों से प्यार करता है। साथ ही वह तुम्हें शादी करके जीवनसंगिनी भी बनाना चाहता है। मेरा विचार है कि तुम्हें अपने फैसले पर ठंडे दिमाग से सोचना चाहिए। इसमें तुम दोनों की ही भलाई है।''

गिसेला से मेरे बारे में कुछ भी छिपा नहीं था। वह मेरे बारे में सब कुछ जानती थी। इसलिए उससे बहस करने से कोई लाभ होने वाला नहीं था। अब मुझे उसकी बात मान लेने में ही अपनी भलाई नजर आ रही थी। मैंने एस्ट्रीटा का दिल तोड़ना सही न समझा, इसलिए मैंने गिसेला के प्रस्ताव को तुरन्त स्वीकृति दे दी।

मेरा जवाब गिसेला ने एस्ट्रीटा के पास शीघ्र ही पहुँचा दिया। मैं अगले दिन एस्ट्रीटा से उसी दुकान पर मिली, जहाँ पर मेरी यान्सीटी से मुलाकात हुई थी। एस्ट्रीटा से मिलकर मुझे ऐसा महसूस हुआ कि गिसेला का यह कथन कि वह मुझसे बेहद प्रेम करता है और दिल की गहराइयों से चाहता है, शत-प्रतिशत सही था।

जैसे ही उसने मुझे वहाँ देखा, वह एकदम सफेद हो गया तथा अपना विवेक गवाँ बैठा। वह बोलने की भी हिम्मत नहीं जुटा पा रहा था। उसकी भावुकता उस पर हावी हो चुकी थी। वह किंकर्त्तव्यविमूढ़ सा हो गया था। उसका व्यक्तित्व दूसरे लोगों से काफी अलग था।

हमने उस शाम साथ-साथ डिनर लिया तथा हम दोनों घर लौट आये। उस शाम एस्ट्रीटा मेरे जीवन की हर घटना को सुनने के लिए बेताब था। जिस रोज से हम विटारबो गये और गिनो से मेरा सम्बन्ध विच्छेद हुआ, वह हर घटना को विस्तार से जानना चाहता था।

एस्ट्रीटा की अपने बारे में उत्सुकता को देखकर मैंने पूछा, ''मैं यह नहीं समझ पा रही हूँ कि मेरे जीवन के हर घटनाक्रम में तुम इस प्रकार रुचि क्यों लेना चाहते हो?''

''मैंने तो बस यों ही बातचीत का सिलसिला आरम्भ करने के लिए पूछ लिया था। वैसे पूछने का कोई विशेष मकसद भी नहीं था। मेरे विचार में तो वह सब बता देने से आप पर कोई खास फर्क पड़ने वाला नहीं है। क्या आप बतायेंगी कि विटारबो यात्रा से बाद में आपका गिनो से सम्बन्ध विच्छेद किस तरह हुआ?'' एस्ट्रीटा ने मुझसे कहा।

मैंने एस्ट्रीटा को विटारबो की यात्रा के पश्चात का पूरा घटना-क्रम विस्तारपूर्वक सुना डाला। मैंने उसे बताया कि किस तरह गिनो को फोन करके दस दिन बाद का समय दिया, उन दस दिनों के बाद क्या हुआ, मैं किस तरह गिसेला के उकसाने पर यान्सीटी से मिली।

पुलिस विभाग में होने की वजह से एस्ट्रीटा को मैंने यह नहीं बताया था कि मैं यान्सीटी के साथ भी यौन सम्बन्ध बना चुकी हूँ। एस्ट्रीटा ने मुझसे अनेक बार घुमा-फिराकर सवाल किए, मगर मैंने उसे ऐसा कोई संकेत नहीं किया था जिससे उसका संदेह यकीन में बदल जाये।

एस्ट्रीटा ने कहा, "यह मेरी ही गलती थी।"

मगर मैंने कहा, "नहीं, इसमें तुम्हारा ही नहीं, बल्कि किसी का भी कुसूर नहीं था। आप इसे गम्भीरता से न लें।"

उसने कहा, "नहीं, वास्तव में यह मेरी ही गलती थी तथा मेरे कारण ही तुम बरबाद हुई हो। अगर मैं तुम्हारे साथ विटारबो की यात्रा पर ऐसा सलूक न करता, तो हालात कुछ और ही होते, सब कुछ अलग ही होता।"

"यहाँ मैं आपकी बात से सहमत नहीं हूं।" मैंने उससे कहा, "अगर इसमें कोई गलती है, तो सिर्फ गिनो की है। आप तो मुझे ताकत के बल पर पाना चाहते थे। अगर मेरे साथ गिनो इतना बड़ा धोखा न करता, तो मैं उससे कभी की शादी कर चुकी होती तथा मेरी तुमसे सम्भवतः मुलाकात भी न होती।"

एस्ट्रीटा मुझसे यह बातचीत इसलिए नहीं कर रहा था कि उसे कोई दु:ख था, बल्कि इसके विपरीत उसे इस बात की अपार प्रसन्नता थी कि उसने मुझे भ्रष्ट करके कहीं का भी न छोड़ा। अगर मैं उसकी नहीं हो सकी तो मुझे गिनो की भी नहीं बनने दिया जायेगा।

इसीलिए वह बार-बार मेरे प्रति हमदर्दी प्रगट करके हार्दिक सुख का अनुभव कर रहा था। मुझे इस बात का अहसास बाद में हुआ, जबकि वह बार-बार मेरे व मेरे प्रेमियों की बातचीत बड़ी रुचि के साथ सुनता था और मेरे उफनते यौवन पर किसी भूखे भेड़िए की तरह टूट पड़ता था। मेरे शरीर के साथ नोच-खसोट करता हुआ वह न जाने मुझसे किस जन्म के बदले ले रहा था। वह मेरे खूबसूरत शरीर के साथ-साथ मेरी आत्मा और मेरी कोमल भावनाओं के साथ भी खिलवाड़ कर रहा था।

मैं ऐसी कल्पना भी न कर सकती थी कि जो आदमी मेरा दिल से इतना सम्मान करता हो, मुझे दिल की गहराइयों से इतना चाहता हो, वह ऐसा रूप भी धारण कर सकता है। उसके बर्ताव में प्रेम तथा क्रूरता दोनों ही मिलती थीं। मेरे ख्याल से यह क्रूरता उसके व्यवहार के कारण ही थी।

मेरा अन्दाज है कि पुलिसकर्मी किसी भी अपराधी का कमजोर पक्ष पकड़कर उसको इतना सताते हैं कि वह अन्दर से टूट जाता है और उसकी मजबूरियों का नाजायज लाभ उठाकर उससे अपनी बात मनवा लेते हैं। उसका कहना था कि कोई भी अपराधी उसके सामने बिना जुर्म की अनुभूति भी करता है।

एस्ट्रीटा का कथन था कि एक अपराधी का अहम किसी नारी की तरह होता है। वह जब तक सहन करता रहता है उसका सिर ऊपर रहता है और जब वह टूट जाता है, तो तुम उसे जैसा चाहो जहाँ चाहो रख सकते हो।

वह अक्सर मुझे प्रसन्न नजर नहीं आता था। मेरा अनुमान था कि उसके यह दु:खी रहने की प्रवृत्ति एक असाध्य रोग है। मुझे इसकी कोई प्रत्यक्ष वजह भी नजर नहीं आती थी। वह कभी-कभी तो घंटो मेरी गोद में

सिर रखे चुपचाप भाव से लेटा रहता था। मैं उसके बालों में बच्चों की तरह प्यार से हाथ फेरती रहती थी।

यद्यपि मैंने कभी भी उसे दिल से प्रेम नहीं किया, लेकिन फिर भी न जाने क्यों मुझे उसकी ऐसी हालत देखकर उस पर बड़ा रहम आता था और मैं उसके दु:खों को कम करने का उपाय तलाश करती थी। मगर मैं कोई उपाय न पाकर निराश हो उठती थी

उसकी बातों से ऐसा अहसास होता था कि उसने अपने परिवार के प्रति एक घृणात्मक दृष्टिकोण बना लिया था। अपनी पत्नी से उसे सख्त घृणा थी। साथ ही वह अपनी बेटी को भी दिल से नहीं चाहता था। एस्ट्रीटा के माता-पिता ने उसे मुश्किलों से युक्त बचपन दिया और एक बेमेल विवाह को करने पर विवश किया था। इतना सब कुछ होते हुए भी उसे अपने कारोबार पर गर्व था और उसे एक सम्माननीय कार्य मानता था।

हालाँकि एस्ट्रीटा राजनैतिक पुलिस में था। फिर भी उसका मानना था कि मैं राजनीति के बारे में कुछ नहीं जानता। उसका विचार था—"मैं तो पहिये में एक दाँते के समान हूँ, जो वे कहते हैं, मैं करता हूँ।"

उसे रोजाना शाम के समय मिलना ही अच्छा लगता था, लेकिन मैं तो किसी एक आदमी के साथ बंधकर रहना ही पसन्द नहीं करती। इसलिये मैं उसको अक्सर टालती रहती थी। अब मैं उसे हफ्ते में एक बार ही अवसर देती थी। अगर मैं उसके प्रस्ताव को मानकर उसकी हो गई होती, तो वह मुझे भी दूसरी दर्जनों लड़कियों की तरह समझने लगता।

मैं अक्सर नीचे जाकर सड़क से अपने ग्राहक को पकड़कर ऊपर लाने की कोई मर्जी नहीं रखती थी, इसलिये मैं अधिकतर घर पर ही रहती थी। मेरा अपनी मम्मी के साथ एक मौन समझौता था कि वह मेरे कारोबार के विषय में मुझसे कुछ न पूछें। मैं पूरे दिन आराम से बिस्तर पर चादर तानकर लेटी रहती थी।

□□□

अब गिसेला मेरी एक अच्छी दोस्त ही नहीं, बल्कि मेरे इस कारोबार की सक्रिय साझेदार भी बन चुकी थी। मगर अभी भी हमारे विचारों में ग्राहकों को चुनने की जगह को लेकर काफी मतभेद था। क्योंकि गिसेला को बड़े-बड़े होटल या रेस्टोरेन्ट पसन्द थे, जबकि मुझे कैफेटेरिया अथवा सड़क पर ही ग्राहक खोजने में मजा आता था।

इसी प्रकार एक दिन मैं गिसेला के साथ शाम के वक्त एक रेस्टोरेन्ट जा पहुँची। जैसे ही हम खाना खाकर रेस्टोरेन्ट से बाहर निकले, हमारा दिल कुछ देर सड़क पर टहलने को चाह रहा था। हमें अपने आस-पास ही एक कार चक्कर लगाती महसूस हुई।

वैसे गिसेला आज कहीं भी जाने के मूड में नहीं थी। इसलिए वह घर जाने की तैयारी करने लगी। इसी मध्य वही कार हमारे पास आकर रुकी। सड़क के किनारे खड़ी इस कार में दो आदमी सवार थे।

उनमें से एक ने खिड़की से सिर बाहर निकालकर कहा, ''नमस्ते...।''

गिसेला ने भी मुस्कराकर कहा, ''नमस्कार...।''

''यहाँ आप अकेली क्यों घूम रही हैं? क्या हम दोनों तुम्हारा साथ दे सकते हैं?'' उस आदमी ने कहा।

''तुम्हारा स्वागत है। वैसे हमारा साथ निभाना तो आपकी मर्जी पर निर्भर करता है।'' गिसेला ने एक अर्थपूर्ण मुस्कान बिखेरते हुए कहा।

''ठीक है...आइए...आइए...।'' उस आदमी ने कहा, ''मेरी एक बात समझ में नहीं आई कि निर्भर करने से आपका क्या मतलब है?''

इस पर गिसेला ने कार के समीप पहुँचकर कहा, ''आप हमें क्या देना चाहेंगे?''

उस आदमी ने कहा, ''यह तो आप ही बताइए कि आप क्या लेना चाहती हैं?''

इस पर गिसेला ने उस आदमी को एक अच्छी खासी मोटी रकम दोनों के लिए बता दी। उसने कहा, ''मैं मानता हूँ कि फिलहाल जो रकम आपने बताई है, वह बहुत ज्यादा है, लेकिन कोई बात नहीं, आप अन्दर तो आईए।''

यह सुनते ही गिसेला अगली सीट पर जा बैठी। मैं भी पिछली सीट पर जाकर आराम से बैठ गयी। हमसे बातें करने वाले ने ड्राईविंग सीट संभाल ली। दूसरा आदमी पिछली सीट पर मेरे साथ शान्त भाव से बैठा हुआ था।

चालक ने गिसेला की तरफ देखते हुए पूछा, ''अब हमें कहाँ जाना होगा?''

गिसेला ने कहा, ''कोई खास दूर नहीं जाना है। नजदीक ही एड्रिना का घर है, वहीं चलते हैं।''

पिछली सीट पर मेरे साथ बैठा आदमी पूरी तरह मौन साधे हुए था, जबकि गोरा आदमी गिसेला के साथ खुलकर हँसी-मजाक कर रहा था। गिसेला की ड्रेस चुम्बनों के आदान-प्रदान तथा प्रगाढ़ आलिंगन के दौरान ऊपर को सरकती जा रही थी। वह उसे नीचे खींचने का बार-बार प्रयास कर रही थी। गोरे आदमी ने मजाक करते हुए कहा, ''क्यों गिसेला! अब तो परदा उठने ही वाला है।''

''आपका दोस्त तो सचमुच बड़ा मजाकिया है।'' मैंने अपने पास बैठे हुए आदमी से बोर होकर कहा।

''हाँ...।'' उसने एक शब्द में ही पीछा छुड़ा लिया।

अगले ही क्षण कार हमारे कमरे के पास जाकर रुकी। हम सभी पंजों के बल बिना कोई आवाज किए अपने कमरे में दाखिल हो गए। भीतर आकर हमने अन्दर से गेट बन्द कर लिया। मैंने महसूस किया कि गोरे आदमी को बड़ी बेचैनी सी महसूस हो रही थी। इसलिये मैं अपने साथी को साथ लेकर मम्मी के कमरे में आ गयी। इस वक्त गिसेला गोरे आदमी की बाँहों में थी।

अपने साथी से मैंने कुछ देर गेट पर ही इन्तजार करने को कहा।

मैं मम्मी के पास गई। वह गुस्से से मेरी तरफ देखते लगीं। मुझसे बिना कुछ कहे-सुने ही वह रसोईघर में चली गई। मैंने अपने साथी को भी भीतर मम्मी के कमरे में बुला लिया।

अन्दर से मैंने कमरा बन्द कर लिया तथा सोफे के एक किनारे पर बैठ गई। मेरा साथी खाने की मेज वाली कुर्सी पर बैठ गया। मैंने अपने माथे से पसीना पोंछते हुए कहा, ''अफसोस है मेरे पास एक ही कमरा है जिसे मैं उपयोग में लाती हूँ।''

''आपसे मैंने कमरे का तो जिक्र तक नहीं किया, फिर भी न जाने आप इतनी विचलित क्यों हैं?'' मेरे साथी ने कहा।

समय काटने के लिए वह भी मम्मी के कमरे में चक्कर लगाने लगा। कुछ देर सोचते हुए उसने पूछा, ''क्या मैं तुम्हारा नाम जानने की गुस्ताखी कर सकता हूँ?''

''एड्रिना!'' मैंने एक मीठी मुस्कान बिखेरते हुए कहा।

''और बन्दे को 'याकोमो' कहते हैं।'' उसने अपना परिचय देते हुए मुझसे हाथ मिलाया। वह बड़े शर्मीले स्वभाव का आदमी था।

''मैं समझता हूँ कि चन्द लम्हों के पश्चात हम एक-दूसरे को बेहद प्यार करने जा रहे हैं। प्रेम के अथाह सागर में साथ-साथ गोताखोरी करने वाले हैं। क्यों मैंने कुछ गलत तो नहीं कहा न?'' उसने मेरी तरफ देखते हुए कहा।

''जी हाँ...। कुछ पलों में हम एक-दूसरे की आवश्यकता बनकर रह जायेंगे।''

मैं उसे लेकर सामने पार्क के किनारे बने एक कैफे में जा बैठी। यह वही कैफे था जिसमें कि मैं मम्मी और गिनो को पहली बार लेकर आई थी। मम्मी ने यहाँ जमकर शराब पी थी। वहाँ पर तीन या चार आदमी थे जो कि खाने की टेबल के पास बैठे थे।

जैसे ही उसने एक लीटर शराब का आर्डर दिया मैंने कहा, ''अरे! कौन पियेगा इतनी शराब को?''

''क्यों, आप पीना बिल्कुल पसन्द नहीं करतीं?'' उसने हैरत से पूछा।

मैंने उसकी बात का जवाब देते हुए कहा, ''बहुत मामूली सी ले लेती हूँ, वह भी किसी खास अवसर पर। सचमुच मैं इसकी आदि नही हूँ।''

उसने अपना गिलास भरा और पूरा गिलास एक ही सांस में नीचे उतार लिया। इसके पश्चात कुछ देर हम शान्त बैठे रहे। मैं अनायास ही बीती यादों में खो गई। मेरा बचपन कितनी उम्मीदें लेकर आया था। मम्मी मुझे कितना प्यार करती थीं। अब तो मुझे वह भी प्रेम नहीं करती हैं।

मैंने क्या-क्या ख्वाब देखे थे। यौवनकाल आते ही प्यार की पेंगें बढ़ाई और पूरी होने से पहले ही सारे सपने चूर-चूर हो गए थे। मैं आज इस कैफे में अपने पति की अपेक्षा अपने एक ग्राहक के लिए बैठी हुई थी।

''आरम्भ में मैं तुम्हारे मित्र का व्यवहार पसन्द नहीं करती थी।'' मैंने

बातों का सिलसिला आरम्भ किया, ''लेकिन इसके विपरीत अब वह हँसमुख तथा मजाकिया लग रहा है।''

''पहली बात तो यह है कि वह मेरा मित्र नहीं है।'' उसने लापरवाही से कहा, '' दूसरी बात, वह इस योग्य ही नहीं है कि कोई उसे पसन्द कर सके।''

उसने गिलास में शराब उड़ेलते हुए कहा, ''उस आदमी से तुम्हें प्लेग की बीमारी की मानिन्द परहेज रखना चाहिए। हाँ एक बात तो है कि वह अपने आफिस में ऐसा बर्ताव नहीं करता है।''

''क्या कहा, ऑफिस में? किस प्रकार के ऑफिस में?'' मैंने उत्सुकतावश पूछा।

''यह तो मैं नहीं जानता।'' उसने जवाब दिया।

''क्या उसके पास बेशुमार धन-दौलत है?'' मैंने हैरत से पूछा।

''हाँ इस बात से तो नकारा नहीं जा सकता कि उसके पास भरपूर धन-दौलत है।''

''चलो इस मामले में तो वह खुश किस्मत है।'' मैंने उससे कहा।

उसने मेरे गिलास में भी थोड़ी सी शराब डाल दी थी। मैंने गिलास उठाते हुए पूछा, ''एक बात मेरी समझ में नहीं आती कि तुम उसे बिल्कुल पसन्द नहीं करते मगर फिर भी उसके साथ किसी साये की मानिन्द लगे रहते हो। आखिर इसकी क्या वजह हो सकती है?''

''देखिये, वह मेरे बचपन का दोस्त है।'' उसने कहा, ''हम एक ही क्लास में साथ-साथ पढ़े हुए हैं। मेरे उस वक्त के सारे दोस्त ऐसे ही हैं।''

उसने गिलासों में और शराब डाल दी थी। उसने कहा, ''कुछ बातों में मेरा यह दोस्त मुझसे कहीं अच्छा है।''

''आखिर ऐसा क्यों?'' मैंने उत्सुकता से पूछा।

''ऐसा इसलिए कि जब वह किसी चीज को पाने की कामना करता है या किसी भी कार्य को पूरा करने की ठान लेता है तो वह अपने मकसद में कामयाबी प्राप्त करके ही दम लेता है। जबकि मेरे विषय में ऐसा नहीं है। आज की घटना ही देखो, उसने मुझे फोन किया कि आज शाम को मनोरंजन के लिए साथी चाहिए। मैं भी चाहता था, लेकिन जैसे ही तुमसे मेरी मुलाकात हुई, मेरी मर्जी ही खत्म हो गयी।'' उसने अपनी तुलना दूसरे साथी से करते हुए कहा।

मैंने पूछा, ''मगर इसके पीछे भी तो कोई कारण जरूर रहा होगा?''

''तुम्हें देखते ही मेरे दिल में अचानक ऐसे भाव उत्पन्न हुए, मानो तुम एक औरत न होकर, एक ऐसी खूबसूरत चीज हो, जो कि स्पर्श करते ही मैली हो जायेगी। जब मैंने तुम्हारी नाजुक उंगलियों को बेरहमी से मोड़ने की गलती की, तो तुम्हें काफी दुःख हुआ होगा न?'' उसने अत्यन्त जज्बाती होकर कहा।

मैंने उसका दिल रखने के लिए कहा, ''ठीक है, मैंने तो उस वक्त

यही सोचा था कि मैं तुम्हें आकर्षित ही नहीं कर सकी थी, मेरे ही रूप-यौवन में कोई कमी रही होगी, जो मैं तुम जैसे भरपूर आदमी को न रिझा सकी।"

उसने इन्कार की स्थिति में गर्दन हिलाते हुए कहा, "नहीं...नहीं...ऐसा नहीं है, तुम तो जानबूझकर खुद को दोषी मान रही हो। यह तो तुम्हारी उदारता है।"

उससे प्रेम करने की भावना अब मेरे दिल में भी भड़क उठी थी। ऐसा करना पहले तो मुझे बुरा लग रहा था तथा मैं इसमें अपना घोर अपमान महसूस कर रही थी कि उसको मैं उत्तेजित नहीं कर पाई थी, मगर बाद में मुझे लगा कि वह मेरे मदमाते रूप-यौवन से कुछ ज्यादा ही प्रभावित था।

उसने मेरी भावनाओं को परखते हुए तुरन्त कैफे का बिल चुका दिया तथा मेरे साथ चल दिया। उसने मेरे पास सरकते हुए कहा, "अक्सर मेरे साथ ऐसा ही होता है।"

"मैं आपकी भावनाओं को जान चुकी हूँ। मैं तुम्हारा साथ चाहती हूँ और अपने जिस्म की प्यास को बुझाना चाहती हूँ। जब तक तुम मुझे भरपूर प्यार नहीं दोगे मैं तुमसे खुश नहीं हो पाऊंगी।" मैंने उसकी आँखों में आँखें डालकर कहा।

मेरी बात का उसने कोई जवाब नहीं दिया। मुझे ऐसा लगा, मानो मेरी बात को उसने अनसुना कर दिया हो। वह अपने ही विचारों में खोया हुआ था। हम दोनों सड़क पर चल रहे थे।

मैंने उसे छेड़ते हुए कहा, "मुझे एक प्यारा सा चुम्बन तो दीजिए।"

"फिलहाल नहीं बाद में।" उसने मुझे टालते हुए कहा।

मैंने हठ करके उसका एक जोरदार चुम्बन ले लिया। उससे बदले में मैं प्यार की कोई आशा नहीं कर सकती थी।

घर पहुँचने पर हमें पता चला कि उसका साथी यान्कारलो जा चुका था। मेरे साथी ने कहा, "अब तो मुझे पैदल ही घर जाना पड़ेगा।"

मैंने उसकी समस्या का समाधान सुझाते हुए कहा, "हमारे यहाँ से रात की टैक्सी सेवा भी उपलब्ध है तथा आप यदि चाहते हैं तो मेरे साथ भी रात गुजार सकते हैं।"

हम दोनों सीढ़ियाँ चढ़ते हुए ऊपर कमरे में आ गये। मैंने देखा कमरे में घोर अंधेरा था। उसके बाद बराबर के कमरे में झांककर देखा, मम्मी सोने के लिए बिस्तर पर जा चुकी थीं।

उसने याचना भरे अलफाजों में कहा, "मैं समझता हूँ कि अब तो मेरा यहाँ से चले जाना ही सही रहेगा।"

मैंने उसकी बात अनसुनी कर दी थी। मैंने प्रेम से उसका हाथ थामकर बैड पर बिठा दिया। इस वक्त वह अपने कोट की जेब में हाथ डाले हुए ही बैठा था। सबसे पहले मैंने अपना कोट उतारकर हैंगर पर टांग दिया। इसके बाद उसके कपड़े एक-एक करके उतारने आरम्भ कर दिए। मैंने उसके पैर अपनी ही गोद में रखकर बड़े प्रेम से उसके जूते उतारे।

इसके बाद मैंने अपने उफनते यौवन को भी वस्त्रों की अनावश्यक कैद से आजाद कर दिया। मुझे पहली बार या तो गिरजाघर में पादरी को देखकर तीव्र उत्तेजना महसूस हुई थी या अब अपने इस ग्राहक साथी को देखकर फिर से तीव्र उत्तेजना का झटका अनुभव हो रहा था।

मेरा अन्दाज था कि यह हमारा एक पवित्र प्रेम होगा।

मैंने जैसे ही उसे अपने सीने से लगाने के लिए बांहों में लिया, वह मुझे बिल्कुल ठंडा तथा हताश सा लगा। मुझे अपने सारे अरमानों पर पानी फिरता दिखाई देने लगा। मैं बदहवासी से चिल्लाने लगी।

"मैं कहती हूँ चले जाइए यहाँ से...अब मैं तुम्हें यहाँ क्षणभर भी न रुकने दूँगी।" मैं अपने गुस्से पर नियन्त्रण न कर पा रही थी।

"लेकिन क्यों एड्रिना?" उसने हिम्मत बटोरकर पूछा, "आखिर मेरा कुसूर क्या है?"

"यह तुम्हारे भले में ही होगा कि तुम यहाँ से चले जाओ। मेरी बात का यह मतलब मत लगा लेना कि मैं तुम्हें नाराजगी में जाने के लिए कह रही हूँ, मगर मुझे बहुत बुरा लग रहा है।" मैंने निराश होकर कहा।

मेरी बात का उसने कोई जवाब नहीं दिया। उसने अपने कपड़े पहने। इस मध्य मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो कोई मेरे अरमानों पर छुरियाँ चला रहा हो। धीरे-धीरे अपनी पोशाक को सही से धारण करने के बाद उसने अपने जूते पहने और जाने के लिए तत्पर हो गया।

मैं जुदाई की आखिरी घड़ियों में निश्चल रूप से खड़ी हुई उसको अपलक निहार रही थी। मुझे कमरे की हर चीज घूमती नजर आ रही थी। इस दिन मुझे बहुत अधिक अफसोस हुआ था कि मैंने जिस प्रकार उसे दिल की गहराईयों से चाहा, उसके सामने खुद को निष्काम भाव से समर्पित किया, उसके बदले मुझे उससे कुछ भी प्राप्त न हो सका था।

□□□

याकोमो का संग मैंने लगभग यह समझकर छोड़ा था कि अब भूलकर भी उसके बारे में विचार नहीं करूंगी। यद्यपि मैं उसे बहुत चाहती थी लेकिन मैं यह हरगिज पसन्द नहीं कर सकती थी कि मुझे शर्मिन्दा करे।

मैं एक सड़कों पर घूमने वाली लड़की अवश्य हूँ, लेकिन मेरा भी एक उसूल है कि यदि मुझे कोई चाहता है तो मुझे उसी स्थिति में स्वीकार करे जैसी स्थिति में मैं हूँ।

मैंने अनुभव किया कि मेरी शक्ति यथास्थिति स्वीकार करने में है न कि उसमें जो कि मैं वर्तमान में नहीं हूँ। मैं उसको हासिल करने की इच्छाएँ होते हुए भी उसमें विश्वास नहीं रखती।

मेरी शक्ति मेरी गरीबी में थी, मेरा कारोबार, मेरी मम्मी, मेरा गन्दा घर, मेरे सादे वस्त्र तथा मेरा दुर्भाग्य इन सब में है। इन सबको मैंने साहसपूर्वक स्वीकार किया है।

यों तो मेरी मर्जी धरती के गर्भ में छिपे बहूमल्य रत्नों को हासिल करने

की है, लेकिन मैं यह भली प्रकार जानती हूँ मैं उन्हें कभी भी नहीं पा सकूँगी। मरने वाले को हम दिल से चाहते हैं, मगर यह भी एक सच्चाई है कि वह कभी भी हमारे पास वापस नहीं आ सकता।

धीरे-धीरे मैं गिनो से अपने सम्बन्ध पूरी तरह खत्म कर चुकी थी। जैसा कि मैं पहले भी बतला चुकी हूँ कि मैं आकस्मिक ताल्लुक तोड़ने के बजाय प्रत्येक चीज अपने ढंग से जीना व मरना ज्यादा पसन्द करती हूँ। मेरे गिनो के साथ सम्बन्ध मेरी ख्वाहिशी आकांक्षाओं का एक जीता-जागता उदाहरण था। मेरे गिनो से ये सम्बन्ध भी उसी की वजह से टूटे। इसके लिए खुद गिनो ही दोषी है। अब मुझे उसका कोई विशेष पछतावा नहीं था।

अब मैंने अपने आपको इतना नियन्त्रित तथा संयमित कर लिया था कि मैं उससे महीने में दो-तीन बार से ज्यादा नहीं मिल पाती थी। एक रोज गिनो ने मुझे फोन पर मिलने को कहा। मैंने उसकी भावुकता को देखकर उसका प्रस्ताव मंजूर कर लिया।

उससे मिलने के लिए नजदीक के एक मिल्कबार को निश्चित किया गया। मैंने सही समय पर वहाँ पहुँचकर देखा कि वह अकेला नहीं था। उसने हरे रंग का एक बरसाती कोट पहना हुआ था। वह बड़ा सुन्दर और सेहतमंद नजर आ रहा था।

मेरे वहाँ पहुँचते ही गिनो ने मेरा खड़े होकर गर्मजोशी से स्वागत किया। उसने अपने साथी का परिचय कराते हुए कहा, ''यह मेरा अभिन्न दोस्त सोजानो है।''

परिचय कराने पर उसका दोस्त भी खड़ा होकर मुझसे हाथ मिलाने लगा। इसी बीच मैंने अहसास किया कि उसका हाथ बहुत सख्त था। उसकी कठोर उंगलियों के शिकंजे में फँसकर मेरी नाजुक कलाई में जो तकलीफ हुई उसे बस मेरा दिल ही जानता है। मुझे अपनी उंगलियाँ हाथ से भिन्न होती प्रतीत हो रही थीं।

फिर भी मैंने उससे हाथ छुड़ाने की कोशिश करते हुए कहा, ''शायद तुम नहीं जानते कि मुझे इस वक्त कितना दर्द हो रहा है? क्या तुम हर बार ऐसे ही बल प्रयोग करते हो? तुम्हारे हाथ हैं अथवा फौलादी शिकंजा?''

वह मेरी बात पर चुपचाप मुस्कराता रहा। उसका चेहरा बिल्कुल सफेद था। उसकी आँखें नीली, आसमानी रंग की थीं। उसकी नाक चपटी और सिर के केश रंगहीन थे। उसका मुँह चौड़ा था और जबड़े गंदे थे। उसे देखकर ऐसा अहसास होता था मानो अक्सर वह दाँत चबाता रहता हो। गिनो उसके व्यवहार की तारीफ करता जा रहा था तथा बड़े अदब से बातें कर रहा था।

गिनो ने उसकी प्रशंसा के पुल बाँधते हुए कहा, ''सचमुच यह बहुत शक्तिशाली है। इसे 'किलर पंच' का रुतबा हासिल हो चुका है।''

''जी नहीं, यह बात सत्य नहीं है। मुझे अभी यह रुतबा मिला नहीं है, मगर मिलने का पूरा यकीन है।'' सोजानो ने वास्तविकता को उजागर

करते हुए कहा।

"मैं कुछ समझी नहीं...आखिर यह 'किलर पंच' होता क्या है?" मैंने उनसे उत्सुकता से पूछा।

"अगर किसी व्यक्ति में इतनी सामर्थ्य हो जाये कि वह अकेला ही किसी को भी एक ही बार में मौत के घाट उतार सके, तो उसे 'किलर पंच' के नाम से सम्मानित किया जाता है। अब आप स्वयं ही अनुमान लगा सकती हैं कि यह कितना सामर्थ्यशाली तथा शक्तिशाली है।" गिनो ने उत्तेजित होते हुए कहा, "यह बात तो तुमने इससे हाथ मिलाते समय ही महसूस कर ली होगी?"

मेरे चेहरे से हिचकिचाहट प्रकट हो रही थी मगर गिनो के मित्र ने मेरे सामने अपना फौलादी हाथ फैला दिया था। मुझे ऐसा लग रहा था मानो मेरे आगे लोहे की सलाखें फैला दी गयी हों।

"एड्रिना! यह मेरा एक पुराना मित्र है।" गिनो ने कहा, "हम काफी समय से एक-दूसरे के परिचित हैं। मैं इसको अपना भाई मानता हूँ।"

मगर सोजानो ने अपनी स्पष्टवादिता का परिचय देते हुए कहा, "देखिये मैं आपको किसी भ्रम में रखना नहीं चाहता। क्योंकि न तो हम परस्पर दोस्त हैं और न ही भाई हैं। जबकि सच्चाई यह है कि हम दोनों एक ही गैरेज में साथ-साथ काम किया करते थे।"

इस पर गिनो ने अपनी झेंप मिटाने के लिए बताया, "हाँ यह मैं जानता हूँ कि तुम किसी को भी दोस्त बनाना पसन्द नहीं करते हो। क्योंकि तुम जिन्दादिल हो तथा अपने ही तरीके से जीने में आस्था रखते हो।"

सोजानो ने गिनो की बात का विरोध करते हुए कहा, "मेरे विषय में तुम्हें कुछ भी जानकारी नहीं है।" सोजानो बहुत नाराज लग रहा था।

गिनो ने अपना तर्क प्रस्तुत किया, "मैं तुमसे सुबह-शाम नियमित रूप से मिला करता हूँ।"

सोजानो ने उसको मजाक उड़ाते हुये कहा, "इस प्रकार मिलने-मिलाने से क्या तुमने मेरे बारे में खास जानकारी हासिल की होगी?"

इस तरह दोनों में काफी विवाद बढ़ चुका था। मैंने अचानक अनुभव किया कि सोजानो जो कुछ भी कह रहा था उसको कर गुजरने पर भी जोर दे रहा था। उसने गुस्से में भरकर एक हाथ गिनो के ऊपर रखकर दबा दिया था।

मैंने उन्हें रोकते हुए कहा, "अगर यहाँ आप लोग अपने बल प्रदर्शन के लिए ही आये हैं तो मैं ही चली जाती हूँ, क्योंकि मैं किसी के बीच झगड़ा होता नहीं देख सकती।"

गिनो ने सोजानो को समझाते हुए बताया, "मैंने तुम्हारी मुलाकात एक महिला दोस्त से करायी और तुम हो कि मेरी ही जान लेने पर आमादा हो। यह बेचारी अपने दिल में क्या सोचेगी कि हम दोनों अच्छे मित्र न होकर एक-दूसरे के खून के प्यासे हैं।"

सोजानो ने मेरी तरफ पलटकर कहा, "तुम्हें हमसे डरने की कोई जरूरत नहीं है। तुम यहाँ पूर्णत: सुरक्षित हो सुन्दरी।"

"मुझे आप पर पूरा भरोसा है, मैं आपसे तो बिल्कुल नहीं डरती, "मगर मुझे यह जानलेवा हमले तथा उठापटक बिल्कुल भी पसन्द नहीं है।" मैंने सोजानो से कहा।

मिल्क बार में गहरी खामोशी छाई हुई थी। सोजानो के हाथ बरसाती कोट की जेब में पहुँच चुके थे। गिनो सिगरेट के कश लगाने लगा।

सोजानो उठ खड़ा हुआ। वह कहने लगा, "सही है, यहाँ से मैं ही जा रहा हूँ।"

गिनो ने उसे रोकते हुए कहा, "अच्छा ठीक है, हम पहले की मानिन्द ही हैं। सोजानो ने भी खुश होकर गिनो से हाथ मिला लिया था। इसके पश्चात सोजानो वहाँ से चला गया।

मैंने गिनो से कहा, "आप लोगों में दोस्ती या भाईचारा हो सकता था लेकिन तुमने देखा कि वह किस प्रकार से बातें कर रहा था?"

गिनो ने सामान्य होते हुए कहा, "मैं मानता हूँ कि उसकी आदत ऐसी है मगर इतना बुरा नहीं है। जरूरत पड़ने पर वह मेरे काम भी आ जाता है।"

"वह कैसे...?" मैंने हैरान होकर पूछा।

मैंने यह महसूस किया कि गिनो मुझसे कहना चाह रहा था। उसने कहा, "मेरी मालकिन की विला तो तुम्हें याद ही होगी न?"

"हाँ...हाँ...इतनी जल्दी कैसे भुला सकती हूँ?" मैंने पलकें झुकाकर गर्दन हिलाते हुए बताया।

"मैं सोचता हूँ कि तुम वहाँ दोबारा लौट कर तो गयी नहीं होंगी?" गिनो ने कहा।

"मगर आपने मुझे याद ही कब किया था?" मैंने उसे दोष देते हुए कहा।

"नहीं, कोई बात नहीं। हमारी मालकिन तो एक अमीर महिला है तथा कोई एक चीज उसके लिए ज्यादा मूल्य भी नहीं रखती है। मैंने उसके यहाँ कोई चोरी भी नहीं की है।" गिनो ने बताया।

"नहीं, चोरी तो वो मैंने ही की थी।" मैंने गिनो से कहा।

वह मेरी बात को अनसुनी करता हुआ बोला, "मैंने कीमती वस्तु को अपने निकट ही रखा है। मैं उसे बेच भी नहीं सकता था। मैं उसे अपनी जेब में ही रखता था। मैंने एक दिन अपनी यह बात सोजानो के सामने भी रख दी।"

"क्या आपने उससे मेरे बारे में भी जिक्र किया था?" मैंने गिनो से पूछा।

"नहीं, तुम्हारा तो मैंने उससे कोई जिक्र तक भी नहीं किया। मैंने तो केवल यही कहा कि वह चीज एक लड़की ने दी है। मैंने सोजानो से इस चीज को बेचने में सहायता माँगी। उसने इसे तीन दिन में बेचकर, अपना कमीशन काटकर बाकी रकम मुझे लाकर दे दी।" गिनो ने मुझसे कहा।

उसने अपनी जेब से नोटों की गड्डी निकालकर मेरे आगे रख दी तथा कहने लगा, ''एड्रिना! यह सब कुछ तुम्हारा है।''

''नहीं, मुझे कुछ नहीं चाहिए।'' मैंने साफ शब्दों में गिनो से कहा।

''लेकिन, तुम यह सब क्यों नहीं लेना चाहतीं?'' गिनो ने मुझसे पूछा।

''दरअसल, तुम मुझे जलील करना चाहते हो'' मैंने गिनो से कहा, ''मेरी एक बात समझ में नहीं आती कि जो किस्सा खत्म हो चुका है अब उसे फिर से उठाने की क्या जरूरत है?''

वह एक अर्थपूर्ण नजर से मुझे घूरे जा रहा था और मेरी बात को समझने की कोशिश कर रहा था। मुझे ऐसा आभास हुआ कि वह मुझे समझ पाने में अभी भी पूरी तरह असफल रहा है। क्योंकि मेरे व उसके वातावरण में धरती-आसमान का अन्तर है। वह माहौल मुझसे अच्छा भी हो सकता है या बुरा भी।

गिनो ने मुझसे कहा, ''मेरा ख्याल है कि इस धन को तुम इसलिए नहीं लेना चाह रही हो कि तुमने चोरी की थी तथा तुम्हें शायद चोरी पकड़े जाने का डर भी हो। लेकिन फिलहाल तुम्हें चिन्ता की कोई आवश्यकता नहीं है। क्योंकि अब सब कुछ सही हो चुका है।''

''मैं कुछ समझी नहीं कि सब कुछ ठीक-ठाक होने से तुम्हारा क्या मतलब है?'' मैंने उत्सुकतावश पूछा।

''मेरी बात का यकीन करो कि अब सब कुछ ठीक हो गया है। क्योंकि अब एक नौकरानी पर सन्देह कर लिया गया है।'' गिनो ने कहा, ''चोरी के तुरन्त बाद से कुछ दिन तक तो मुझ पर भी शक किया जाता रहा। फिर मैंने इस इल्जाम से बचने का उपाय खोजा। मैंने अपनी मालकिन के कुछ डालर चुराकर एक नौकरानी के कमरे में रख दिए। जो कि तलाश करने के दौरान उसके कमरे से बरामद हुए। इस तरह दोनों चोरियों के लिए उसे ही मुजरिम मान लिया गया।''

मैंने गिनो से पूछा, ''अब वह औरत कहाँ है?''

''फिलहाल तो वह जेल के अन्दर है।'' गिनो ने सीना फुलाकर कहा।

''और उसका नाम क्या है?'' मैंने अगला सवाल किया।

''उसका नाम है—लूसा फैलीनो।'' गिनो ने धीरे से बताया।

मैंने गुस्से में कहा, ''मैं तो तुम्हारी असलियत आज जान पायी हूँ। तुम तो बड़े मक्कार व्यक्ति निकले। तुमने एक बेकसूर औरत को जेल भिजवा दिया है और प्रसन्न होकर मुझे बताने भी चले आये।''

यह सुनते ही गिनो ने भयंकर रूप धारण कर लिया। मेरे हाथ को बेरहमी से मोड़ते हुए वह मुझ पर वार करना ही चाहता था कि मैंने उसे एक जोरदार झटका देकर स्वयं को उसकी गिरफ्त से मुक्त किया। अब मेरे भी गुस्से की सीमा न रही। मैंने उसे बार-बार मक्कार और धोखेबाज कहा। अन्त में वह क्रोध की वजह से अपने ही बाल नोचने लगा।

वेटर को बिल अदा करके मैं तुरन्त खड़ी हो गई। मैंने गिनो को घूरते

हुए कहा, "आज से मेरा तुम्हारा इन्सानियत का रिश्ता भी खत्म होता है। तुम्हारी भलाई इसी में है कि कभी भी मुझसे मिलने की चेष्टा न करना।"

अब अंधेरा घिर चुका था। आसमान में बादल घिरे हुए थे। जैसे ही मैं मिल्कबार से घर की तरफ जाने लगी, मुझे ऐसा लगा कि कोई मेरा पीछा कर रहा है। सड़क के दूसरे किनारे पर मुझे सोजानो जाता दिखाई पड़ा। गुस्से की वजह से मेरी काया थर-थर कांपने लगी। अचानक गिनो ने मुझे पीछे से आकर बाँहों में भर लिया।

गिनो ने कहा, "सुनो एड्रिना! मैं तुम्हें बहुत प्यार करता हूँ। हम दोनों साथ-साथ रहते आए हैं। इतनी आसानी से अलग नहीं हो सकेंगे।"

मैंने खुद को उसके बाहुपाश से मुक्त किया तथा तेज कदमों से चलने लगी। गिनो ने फिर से मेरा पीछा किया तथा मेरी गर्दन में हाथ डालकर मेरा चुम्बन लेने की कोशिश की। मैंने इस बार भी उससे खुद को छुड़ा लिया। साथ ही मैंने सहायता के लिए सोजानो को पुकारा। वह फुर्ती से सड़क पार करके हमारे सामने आ खड़ा हुआ।

मैंने उससे कहा, "सोजानो जरा अपने दोस्त को समझाइए। यह बीच सड़क में मुझे परेशान कर रहा है। यह मेरे साथ मनमानी करना चाहता है। तुम इसके दोस्त होने के नाते इसे भली-भाँति समझा सकते हो।"

सोजानो ने गरजते हुए कहा, "तुमने सुना कि यह बेकसूर महिला क्या कह रही है?" इसके साथ ही सोजानो का एक जोरदार घूँसा पड़ते ही गिनो सड़क पर चित्त लेट गया।

अब सोजानो मेरे साथ-साथ चल रहा था। मुझे दुःख था कि मैंने उसे बुलाया था, मैं उसे पसन्द भी नहीं करती थी। मैं उसके बर्ताव से भी भयभीत थी। मैं अब घर पहुँच चुकी थी। मैंने घर आते ही सोजानो को धन्यवाद दिया।

सोजानो कहने लगा, "मैं भी तुम्हारे साथ अन्दर आ रहा हूँ।"

मैं चाहकर भी उसे इन्कार करने का दुःसाहस न कर सकी। मैंने कहा, "जैसी आपकी मर्जी। आइए, आपका स्वागत है।"

उसने मेरे रूप यौवन का मूल्यांकन करते हुए कहा, "घबराओ नहीं, मैं दूसरे लोगों से दुगनी कीमत चुकाऊंगा।"

उसके जिस्म का एक-एक नया वस्त्र धीरे-धीरे अलग होने लगा। मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो कोई शल्य चिकित्सक (सर्जन) किसी बड़े ऑपरेशन के पहले तैयारियों में जुटा हो। मुझे डरते देखकर उसने कहा, "अरे! इतना घबराने की आवश्यकता क्या है? तुम इतना डर क्यों रही हो?"

"नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है।" मैंने हौसला जुटाते हुए कहा।

उसने फिर कहा, "नहीं तुम मुझे पसन्द नहीं कर रही हो।"

मैंने कहा, "मुझे पेरशान करके अपना कीमती वक्त नष्ट न करो। मेरे लिए कोई भेदभाव वाली बात नहीं है कि तुम स्वयं हो या कोई और है। दूसरों का दिल बहलाना मेरा तो काम है और इसे मैं पूरी श्रद्धा, विश्वास व लगन से करती हूँ।"

सोजानो व्यंग्यात्मक रूप में बोला, "मैं तुम्हें उसी वक्त अच्छा लगता था जबकि तुम्हें अपने प्रेमी गिनो से छुटकारा पाना था। अब तो तुम्हारा मतलब निकल चुका है। भला अब मैं तुम्हें क्यों अच्छा लगने लगा।"

इस बात का मुझे पूरा भय बना हुआ था कि यह मुझे किसी भी कीमत पर नहीं छोड़ेगा। मैंने उससे कहा, "वाकई में तुम्हें गलतफहमी हुई है कि मैं तुम्हें पसन्द नहीं कर रही हूँ। दरअसल मुझे तो गिनो का दृश्य देखकर भय लग रहा था।"

उसने मुझसे पूछा, "क्या तुम्हें अभी भी मुझसे भय लग रहा है?"

"नहीं, अब तो आपके लिए मेरी जान भी हाजिर है, चाहो तो मुझे भी मार सकते हो।" मैं आत्मसमर्पण की भावना से बोली

"अरे! तुम्हें यह किसने कह दिया कि मैं तुम्हें जान से मार दूँगा? तुम तो बेकार ही बार-बार डर रही हो।" उसने पूछा, "क्या तुम्हें गिनो ने डरा दिया था?"

इस पर मैंने कहा, "नहीं, मुझे तुम्हें देखकर ऐसा लगा कि आप कुछ भी कर सकते हैं।"

सोजानो ने गंभीरतापूर्वक कहा, "तो क्या तुम चाहती हो कि मैं फौरन कपड़े पहनकर यहाँ से दफा हो जाऊँ?"

"आपके लिए मेरी तरफ से हर समय स्वागत है, जब तक चाहें रुकिए, लेकिन लाइट जरूर बन्द कर दीजिए।" मैंने मुस्कराकर कहा।

उसने फुर्ती से उठकर लाइट ऑफ कर दी। मुझ पर एक ऐसा डर छाता जा रहा था, मानो मैं इन्सान होते हुए भी किसी जानवर के साथ हम बिस्तर होने जा रही थी।

हकीकत में मेरे लिये यह रात कयामत की रात से कम नहीं थी। यद्यपि उसमें पाशविकता कूट-कूटकर भरी हुई थी, फिर भी मैं उसे इन्कार नहीं कर सकती थी। मेरे फरिश्ते ही ऐसे वक्त में मेरी प्राण रक्षा कर सकते थे। मेरा शरीर थर-थर कांप रहा था, फिर भी वह मेरे शरीर को पागलों की मानिन्द नोच रहा था। मेरी चीख-पुकार पर उसे बड़ा मजा आ रहा था। मुझे अपनी आत्मा अपने जिस्म से अलग होती लग रही थी।

भला उस विराट मर्द को मैं कब तक झेल पाती? मैं कुछ देर बाद ही निढाल होकर बिस्तर पर गिर पड़ी। मैं कुछ देर तक पड़ी रही थी। वह भी आधे घण्टे तक मेरे पास ही लेटा रहा। उसने उठकर फिर लाइट जलाई। उसने उठते ही मुझसे तर्क करना आरम्भ कर दिया, "क्या तुम मुझसे अब भी डरती हो?"

"मैं कुछ नहीं जानती।" मैंने पीछा छुड़ाते हुए कहा।

"अगर तुम्हें यह पता चल जाये कि मैं वास्तव में कौन हूँ तो तुम्हारे डर की कोई सीमा न रहेगी।" उसने मेरी आँखों में देखते हुए कहा।

"क्यों?" मैंने घबराते हुए पूछा, "त...तुम कौन हो?"

उसने सीना फुलाकर कहा, "मैं विया पालेस्ट्रो का आदमी हूँ।" उसने

यह भी बताने की जरूरत महसूस नहीं की कि पालेस्ट्रो को क्या हो गया था।

अगली सुबह अखबारों में एक घटना छपी—एक मकान में रहने वाले जौहरी की हत्या हो गयी। उस पर कातिल ने किसी भारी चीज से प्रहार किया था। मेरा यकीन था कि वास्तव में खूनी सोजानो ही है तथा उसने घूंसे का प्रहार करके उसकी जान ले ली होगी। पुलिस को भी उसके खिलाफ कोई सुराग नहीं मिला था। पुलिस का कहना था कि जौहरी ने चोरी की कीमती वस्तु खरीदी थी, इसी लेन-देन में जौहरी का खून हुआ होगा।

अक्सर देखने में आता है कि हम जब भी कोई ऐसी खबर सुनते हैं जिससे हमें आश्चर्य अथवा डर लगता हो, हमारा मस्तिष्क खाली हो जाता है और हम चारों ओर से ध्यान हटाकर उसी घटना पर सोचने लगते हैं। मैं भी सोजानो के विषय में ही सोच रही थी। यह हमारा सौभाग्य ही था कि उस रात मैं व गिनो उसके शैतानी पंजे से बच गए थे।

वह जाते समय मुझे कुछ देना चाहता था मगर मैंने प्रसन्नतापूर्वक मना कर दिया। उसने कहा कि क्या मैं दूसरे लोगों की मानिन्द तुम्हारी कीमत अदा नहीं कर सकता। इस पर मैंने बताया कि तुमसे कुछ भी लेने के लिए तय नहीं किया था। मैंने तो सिर्फ प्रेम व सहानुभूति के वशीभूत होकर निष्काम भाव से ही यह सब किया था।

उसने सन्तुष्ट होकर अपनी जेब से कोई चमकीली सी चीज निकालकर मेज पर रखी और कहने लगा, "ठीक है, मेरी तरफ से यह तुच्छ भेंट जरूर स्वीकार कर लें।"

यह वही शोपीस था जो कि मैंने गिनो की मालकिन की विला से हटाया था। इसे ध्यान से देखने पर मैंने फौरन पहचान लिया था।

इस शोपीस के बारे में पूछताछ करने पर उसने मुझे बताया, "मुझे गिनो ने इसे बेचने के लिए कहा था। मैं जौहरी के पास इसे लेकर पहुँचा तो उसने इसकी बहुत कम कीमत लगाई थी, मैंने इसको अत्यन्त कीमती समझकर अपने पास ही रख लिया।"

मैंने स्वयं को नियन्त्रित करते हुए कहा, "धन्यवाद।"

सोजानो कमरा छोड़कर जा चुका था। मैं बार-बार गिनो के बारे में सोच रही थी। क्योंकि मैंने उम्मीद की थी कि वह मुझसे शादी करेगा। लेकिन उसके धोखा देने के पश्चात मैंने उसकी मालकिन के यहाँ से चोरी इसलिए की थी कि उसे सजा मिल सके। वह कीमती तोहफा मैंने उसे लौटा दिया था। लेकिन वह तोहफा उसने मालकिन को लौटाने की बजाय अपने पास ही रख लिया था। इस जुर्म में एक निर्दोष नौकरानी को जेल की हवा खानी पड़ी थी। यही कीमती वस्तु गिनो ने बेचने के लिए सोजानो को दी। जिसके द्वारा क्रोधावेश में जौहरी की हत्या कर दी। मैं बार-बार सोच रही थी कि यह सारी भूल मेरी शादी की इच्छा, एक सुखी परिवार का सपना संजोने के कारण हुई। मेरी सुन्दरता, जिसे मम्मी मेरी धरोहर मानती थीं, तार-तार होकर टूट रही थी। वास्तव में मैं दोषी हूँ या निर्दोष, अभी भी मैं नहीं जान पा रही थी।

□□□

मैं काफी देर तक विचारों की उधेड़बुन में खोई रही। मुझे सुबह-सुबह रात के भयावह ख्वाबों को याद करके भी बड़ा भय लग रहा था। मैंने निश्चय किया कि जौहरी का जीवन तो नहीं लौटाया जा सकता, मगर उस निर्दोष नौकरानी को जरूर बचाने की कोशिश करूंगी।

मैं अगले दिन सवेरे ही तैयार होकर एस्ट्रीटा को फोन करने के लिए गई। मैं एक आश्चर्यजनक हल्कापन अनुभव कर रही थी। जौहरी के कातिल का केवल मुझे ही पता था। मुझे यह भी भय था कि कहीं सोजानो का राज मुझसे न खुल जाये। यह राज मेरे दिल में ऐसे उफन रहा था मानो किसी ने गागर में सागर भर दिया हो।

मैं सोच रही थी कि मुजरिमों के राज उनकी प्रेमिकाओं अथवा पत्नियों द्वारा ही ज्यादा खुलते हैं। क्योंकि औरतें इस तरह की बातें अधिक समय तक नहीं छुपा पाती हैं। मेरा ख्याल था कि अपराधी इस प्रकार अपना भार हल्का करने की चेष्टा करते हैं,जैसे कि कोई चीज एक दूसरे में बंटने पर उसका वजन कम हो जाता है। इसके विपरीत मेरा यह भी विचार था कि यह अपराध तो कम होने की अपेक्षा इसका वजन बढ़ता ही चला जा रहा है।

टेलीफोन बूथ की तरफ जाते वक्त मैंने गली में एक अखबार खरीद लिया था। मैं जौहरी के कातिल के विषय में जानना चाहती थी, कि पुलिस अभी तक इस राज को उजागर कर पाई है या नहीं। उसमें लिखा था कि अभी कातिल का पता नहीं चला।

मैं फोन करके जेल जाने वाली निर्दोष नौकरानी को मुक्त कराने के बारे में एस्ट्रीटा से बातें करना चाहती थी। मैं उससे एक-डेढ़ महीने से नहीं मिल सकी थी। मुझे बड़ी हैरानी हो रही थी कि एस्ट्रीटा मेरी आवाज न पहचान कर मुझसे किसी अजनबी की मानिन्द बातें कर रहा था।

एस्ट्रीटा ने अधूरे दिल से मुझे दोपहर में लन्च के बाद मिलने का वक्त दे दिया था। मेरे पास दो-ढाई घन्टे का जो वक्त शेष था, उसे गुजारने के लिए मैंने गिसेला से मिलने का प्रोग्राम बनाया।

जैसे ही मैं गिसेला के घर पहुँची, मैंने अभी सीढ़ियाँ चढ़नी आरम्भ ही की थीं कि मकान मालकिन मेरे पास आई तथा कहने लगी, "शायद आप गिसेला से मिलने जा रही हैं? वह अब यहाँ नहीं रहती हैं।"

"क्यों? वह अचानक कहाँ चली गई?" मैंने हैरानी से कहा।

"कुछ दिन पहले वह वाया कासा ब्लान्का में सात नम्बर की कोठी में चली गई हैं।" उसने मुझे समझाते हुए कहा, "यह शहर की एक नई आबादी वाला हिस्सा है। उन्हें लेने के लिए एक सुन्दर आदमी आया था, उसी के साथ वह अपना सामान लेकर चली गई थीं।"

हालांकि यह खबर सुनकर मुझे काफी थकान और बेचैनी सी महसूस

हुई, फिर भी मैंने गिसेला को उसके नये पते पर जाकर मिलने का दृढ़ इरादा कर लिया।

मैं टैक्सी लेकर गिसेला के नये पते पर जा रही थी। वहाँ का नजारा बड़ा ही मनोहारी था। वहाँ पर बड़े-बड़े मकान, पार्क, लॉन तथा जलाशय बने हुए थे। मैं यह सोचकर पीड़ित हो रही थी कि गिसेला ने मुझे भी अपने जैसा बनाने की कोशिश की थी। मैं इस समय हिचकियाँ लेकर रो रही थी। मुझे इस हालत में देखकर ड्राईवर भी परेशान था।

अचानक टैक्सी एक सुसज्जित सफेद इमारत के सामने जा रुकी। मैं नीचे उतरकर गेट के पास गई। मैंने पूछा, "क्या सिगनोरीना डी सैन्टीस भीतर हैं? कृपया जरा उनसे कहना एड्रिना आई है।"

नौकरानी ने ले जाकर मुझे एक ऐसे कमरे में बिठा दिया जिसमें हीटर लगा था। वह गैलरी से होकर फिर से बाहर आई तथा बोली, "अब आप भीतर जा सकती हैं।"

मैं इस नयी इमारत की सुन्दरता को देखकर चकरा गयी थी कि मैं यहाँ किस लिए आई हूँ। मगर अचानक गिसेला की आवाज से मेरी विचार श्रृंखला टूट गयी। मुझे देखकर वह कहने लगी, "अरे एड्रिना! तुम यहीं बैठो, मैं अभी आती हूँ।"

जैसे ही मैं फिर से उसी जगह पर आकर बैठी, फौरन एक खूबसूरत बिल्ली मेरी गोद में आ बैठी। ऐसी खूबसूरत बिल्ली मैंने पहली बार देखी थी। गिसेला ने कहा, "यह एक बेशकीमती परसियन बिल्ली है। मैंने इसे एक हजार लिरा में खरीदा है। क्योंकि यह मुझे बेहद पसन्द आ गई थी।"

इस वक्त गिसेला बिल्कुल बदली हुई लग रही थी। उसके स्वास्थ्य में पहले से काफी सुधार था तथा पहनावे में शालीनता थी।

गिसेला ने मौन तोड़ा, "अच्छा, तुम्हें मेरा यह नया घर पसन्द आया?"

वास्तव में मैं ईर्ष्यालु नहीं हूँ, मगर उस वक्त मुझे गिसेला के हावभाव व बातचीत करने के ढंग से जलन हो रही थी। मैं उसे कुछ सुनाना चाहती थी मगर मन ही मन कुछ सोचकर चुप हो गयी थी। क्योंकि वह मेरी पुरानी सहेली थी।

मैंने कहा, "मैं कैसे कह सकती हूँ? तुम्हारी खुशी और सुन्दर सा नया घर। मगर गिसेला! यह सब हुआ कैसे?"

"क्या तुम्हें यान्कारलो याद है? वह खूबसूरत गोरा आदमी मेरे साथ उस शाम को झगड़ रहा था। वह मुझसे मिलने दोबारा फिर आया था। वास्तव में वह इतना बुरा नहीं था, जैसे कि देखने में लगता था। वह एक दिन फिर से आया तथा कहने लगा, "मैं तुम्हें चौंका देना चाहता हूँ।"

मेरा ख्याल था कि वह मेरे लिए कोई पर्स, सैन्ट या कोई वस्तु लाया होगा। वह उसे यहाँ पर देने के बदले मुझे कार तक ले जाना चाहता था। इसलिए मैं उसके साथ चल दी। वह मुझे कार में बिठाकर यहाँ ले आया तथा

यह भव्य इमारत दिखाई। यह बिल्कुल खाली पड़ी थी।

मैंने सोचा कि यह उसकी अपनी इमारत थी तथा मुझे दिखाना चाहता है। उसने मुझसे पूछा, ''तुम्हें यह कैसी लग रही है? क्या तुम्हें पसन्द है?''

''अच्छी है...।'' मैंने उससे बताया।

उसने फिर कहा, ''यह मैंने तुम्हारे लिए खरीदी है। तुम समझ सकती हो कि मेरी क्या स्थिति हुई होगी।''

वह मुस्कुरा रही थी। मैंने कहा, ''मुझे बहुत खुशी है।''

इसके बाद हम दोनों ऊपर की मंजिल पर जाकर आसपास का दृश्य देखने लगे। पास ही एक नदी बह रही थी तथा हरियाली का दृश्य बड़ा ही मनोरम था।

मैंने कहा, ''बड़ा ही मनभावन नजारा है।''

''क्या तुम कुछ पीना पसन्द करोगी?'' गिसेला नै पास के एक कपबोर्ड से एक बोतल व दो गिलास निकालते हुए पुछा। वह किसी मालकिन की तरह बातें कर रही थी। हम एक मेज के समीप आ बैठे। मैंने गिसेला से सिप करते हुए कहा, ''तुमने मुझसे मिलना भी आवश्यक न समझा, तुमने यह कुछ अच्छा नहीं किया।''

इस पर गिसेला ने कहा, ''भला इस समय मुझे फुर्सत ही कहाँ मिल पाती है। नये घर को जमाना तथा सजाना भी एक अच्छी खासी मुसीबत है। फर्नीचर, पर्दे, क्रॉकरी तथा और भी जाने क्या-क्या खरीदना पड़ता है।''

''मैं तुम्हारा मतलब सब समझती हूँ।'' मैं बोली, ''अब तुम्हें अच्छा घर मिल चुका है। अब तुम्हारे पास मुझसे मिलने अथवा बात करने का वक्त ही कहाँ है, अब तो मुझसे मिलने में भी तुम्हें लज्जा आया करेगी।''

''अरे नहीं! मुझे जरा भी लज्जा नहीं है। अगर तुम ऐसा सोचती हो तो यह तुम्हारी नादानी है। यह तो अवश्य है कि मैं अब पहले की तरह बाहर नहीं जा पाऊंगी, वर्ना मैं किसी बड़ी आपत्ति में पड़ जाऊंगी।'' गिसेला ने कहा।

''अब तुम्हें परेशान होने की जरूरत नहीं होगी। मुझे यहाँ दोबारा भी नहीं देखोगी। मैं तो केवल यह मालूम करना चाहती थी अचानक तुम्हें क्या हो गया है?'' मैंने गिसेला से कहा।

इस पर गिसेला ने कहा, ''अच्छा कुछ अपने विषय में भी तो बताओ।''

''कुछ नहीं, सब कुछ वही तो है।'' मैंने जवाब दिया।

''और एस्ट्रीटा का क्या हुआ?'' गिसेला ने उत्सुकता से पूछा।

''उससे तो मैं मिलती ही रहती हूँ।'' मैंने गिसेला से बताया।

''और तुम्हारा वह गिनो?'' गिसेला ने अपने अल्फाजों पर जोर देकर कहा।

''वह भी कभी न कभी मिल ही जाता है।'' मैंने गिसेला को जवाब दिया।

याकोमो की याद से मुझे दुःख हुआ।

"मेरा दिल तो कहता है कि एस्ट्रीटा तुमको अब भी दिल की गहराईयों से चाहता है। मेरी बात मानो तथा उसके साथ शादी कर लो।" गिसेला ने मुझे एस्ट्रीटा से प्रेम के लिए उकसाते हुए कहा।

"नहीं, मैं तो उसे पसन्द ही नहीं करती। न तो एस्ट्रीटा को ही, और न ही किसी और को।" मैंने अपनी मर्जी प्रगट की।

"मगर क्यों एड्रिना? क्या तुम नहीं चाहतीं कि तुम भी मेरी तरह एक सुखमय घर संसार बसाने का ख्वाब साकार कर सको?" गिसेला ने मेरे चेहरे पर प्रश्नात्मक नजर डालते हुए कहा।

"मुझे घर तो जरूर चाहिए।" मैंने कहा, "लेकिन मैं अपनी मालकिन खुद बनना पसन्द करूंगी न कि किसी दूसरे की।"

गिसेला ने ताव में आकर कहा, "अरे मेरी तरफ देख एड्रिना! मैं भी तो अपनी मालकिन खुद ही हूँ। मेरे घर में मेरा ही हुक्म चलता है। मेरा अपना घर, अपना दिन, अपनी अलग जिन्दगी है। मेरे घर में मेरी इच्छा के खिलाफ तो पत्ता भी नहीं हिलता।"

इस पर मैंने गिसेला से कहा, "देखो गिसेला! यह वैसी स्वतन्त्रता नहीं है जैसी कि मैं चाहती हूँ।"

"मैं कुछ समझी नहीं एड्रिना! आखिर तुम कहना क्या चाहती हो? तुम्हारी बात का मतलब मेरी समझ में नहीं आ पा रहा है।" गिसेला बोली।

"चलो ऊपर की मंजिल पर चलते हैं, पूरी कोठी नहीं दिखाओगी क्या?" मैंने बात का शीर्षक बदलते हुए कहा।

"फिलहाल तुम्हें घर से क्या लेना है? तुम्हें तो स्वतन्त्र ही घूमना पसन्द है न?" गिसेला ने मुझ पर व्यंग्य किया।

"अरे नहीं! यह तो बहुत अच्छा घर है। मेरा भी दिल करता है कि मेरा भी एक ऐसा ही सुन्दर घर होना चाहिए था।" मैंने गिसेला से कहा।

गिसेला की आँखों में इस वक्त आँसू छलक आए थे। वह कहने लगी, "तुम मेरी अच्छी दोस्त नहीं हो। तुम मुझसे जलती हो। तुम बार-बार मेरा मानसिक सन्तुलन खो रही हो।"

मैं खड़ी होकर उसके पास गई तथा उसके कन्धे पर हाथ रखकर कहने लगी, "तुम ऐसा क्यों कहती हो गिसेला? मैं तो तुमसे इतनी भी ईर्ष्या नहीं करती।"

गिसेला ने मुझसे कहा, "फिलहाल इसमें चार कमरे बिल्कुल खाली पड़े हैं। तुम चाहो तो यहाँ आकर भी रह सकती हो।"

मुझे पूरी बिल्डिंग में घुमाने के बाद वह कहने लगी, "आओ एड्रिना! थोड़ी-सी शराब और ले लेते हैं, तुम काफी थकी हुई मालूम पड़ती हो।"

"नही गिसेला, आज नहीं फिर कभी। अभी तो मुझे जाना होगा।" मैंने अपनी बात पर जोर देते हुए कहा।

"ऐसी भी क्या जल्दी है एड्रिना? थोड़ी देर और बैठो।" गिसेला बोली।

"नहीं, मैं नहीं रुक सकती, मुझे ज्यादा मजबूर न करो।" मैंने गिसेला से कहा।

गिसेला मुझे विदा करने हॉल तक आ गई। गिसेला ने आहिस्ता से कहा, "तुम तो जानती ही हो कि वह अक्सर रोम जाते रहते हैं। मैं तुम्हें बता दूँगी तथा तुम अपने दो दोस्तों के साथ आ सकती हो। हम मनोरंजन करेंगे।"

"और अगर उन्हें पता चल गया तो?" मैंने आशंका व्यक्त की।

"भला इसमें उनको कैसे पता चलेगा?" गिसेला ने लापरवाही से कहा।

मैंने उत्सुकतावश पूछा, "क्या उन्होंने दोबारा अपने उस दोस्त के विषय में कुछ कहा था जो कि पहले दिन उनके साथ मिला था?"

"नहीं, उन्होंने तो मुझसे उस आदमी का कभी जिक्र तक नहीं किया। वैसे क्या तुम उसे पसन्द करती हो?" गिसेला ने मुझे ध्यान से देखते हुए कहा।

"हाँ, अगर दोबारा उनका दोस्त याकोमो मिले, तो कहना कि मैंने उन्हें याद किया है।" मैंने गिसेला से आग्रहपूर्वक कहा।

एस्ट्रीटा से मिलने का भी वक्त होने वाला था। इसलिए मैं फुर्ती से घर की तरफ लपकी। घर आने पर मम्मी ने मुझे बताया कि घर पर तुम्हारे कमरे में कोई तुम्हारा इन्तजार कर रहा है। मैंने वहाँ झाँककर देखा तो मुझे एस्ट्रीटा खड़ा मिला। मैंने मुस्कुराहट बिखेरते हुए कहा, "अच्छा आप हमारी प्रतीक्षा में इस कदर बेचैन हैं?"

उसने बिना कुछ कहे ही मेरी खूबसूरत कलाई को अपने फौलादी शिकंजे में जकड़ लिया तथा मुझसे कुछ कहने की कोशिश करने लगा। वह साहस बटोरकर बोला, "एड्रिना! मैं तुम्हें बेहद प्रेम करता हूँ।"

"मैं तुम्हारे प्यार की कद्र करती हूँ। मगर प्यार का भी एक समय होता है, उसकी मर्यादाएं होती हैं। फिलहाल मैंने आपसे किसी अन्य काम के लिए ही वक्त माँगा था।" मैंने एस्ट्रीटा से कहा।

मैं बार-बार यही सोच रही थी कि उसका प्रेम भी अनूठा है। मैं जबकि एक ऐसे परेशानी के दौर से गुजर रही होती हूँ कि सब मुझे सिर्फ वासना का शिकार ही बनाकर छोड़ देते हैं, मगर वह फिर भी मुझे चाहता है।

मैंने उसे याद दिलाया, "आप तो पुलिस में एक बड़े ऑफिसर हैं।"

"आपने बिल्कुल सही जाना है।" एस्ट्रीटा ने कहा।

"तो आप मुझे गिरफ्तार करके जेल भिजवा दें, क्योंकि मैं एक चोर हूँ।" मैंने बताया।

"क्यों, तुम्हें क्या हुआ एड्रिना?" उसने हैरत जाहिर करने के बजाय गुस्सा दिखाया "मुझे ठंडे दिमाग से बताओ कि बात क्या है?" एस्ट्रीटा ने क्षण भर ठहरकर कहा।

"अरे! मैंने बताया न कि मैं चोर हूँ।" एस्ट्रीटा को मैंने पूरी घटना

संक्षेप में सुना डाली थी। मगर यह भी नहीं बताया था कि जौहरी का कातिल भी इसी चोरी से ताल्लुक रखाता है।

उसने कहा, "जल्दी का काम शैतान का होता है। इसलिए जल्दबाजी में कोई कदम मत उठाना। अभी वह नौकरानी जेल में बन्द है। उसे सजा भी नहीं सुनाई गयी है। हमें अभी उसकी प्रतीक्षा कर लेनी चाहिए।"

"नहीं, मुझसे अब ज्यादा प्रतीक्षा नहीं हो सकती। उसे मारा-पीटा भी गया है। वह जेल में यातनाएं सह रही है। उस निर्दोष के बारे में तुम्हें अवश्य कोई फैसला लेना होगा।" मैंने एस्ट्रीटा से कहा।

वह कमरे में ही चहलकदमी करता हुआ, दिल ही दिल में बड़बड़ाता रहा, "प्रश्न यह है कि उन डालरों का क्या होगा, जो नौकरानी के कमरे से बरामद हुए हैं?"

"मगर उस नौकरानी ने तो हमेशा यही कहा है कि उसने कोई चोरी नहीं की है। डालर तो दोबारा उसके पास से बरामद दिखाए गए हैं। हम कह सकते हैं कि यह उसी आदमी के द्वारा वहाँ पर रखे गए हैं जो कि उसे घृणा व आपसी रंजिश के कारण चोरी के जुर्म में फंसाना चाहता है।" मैंने एस्ट्रीटा को मश्वरा दिया।

"क्या तुम्हारे पास वह कीमती तोहफे फिलहाल हैं?" एस्ट्रीटा ने मुझसे पूछा।

"जी हाँ।" मैंने उसे एस्ट्रीटा को दिखाया।

मगर एस्ट्रीटा ने उसे छूने से इंकार करते हुए कहा, "नहीं...नहीं, फिलहाल इसे अपने पास ही सम्भाल कर रखो।"

मैंने कहा, "क्यों न इसको इसकी मालकिन के पास ही पहुँचा दिया जाये?"

एस्ट्रीटा ने कहा, "तुम अभी इसे गम्भीरता से नहीं ले रही हो। अगर इसे तुम्हारे पास बरामद दिखाया जायेगा, तो तुम्हें गिरफ्तार करना ही मेरा पहला फर्ज हो जायेगा।"

"क्या इसे डाक द्वारा नहीं भेजा जा सकता?" मैंने सवाल किया।

"नहीं, यह भी सही नहीं रहेगा।" उसने कहा, "क्या तुम किसी पादरी से परिचित हो?"

मैंने याद करके बताया , "हाँ एक पादरी मेरा परिचित है। विटारबो से आने पर मैं अपनी भूल स्वीकार करने के लिए उस पादरी के पास गई थी।"

"क्या तुम उसके पास फिर से जा सकती हो?" एस्ट्रीटा ने कहा।

"मैं तो जाती ही रहती हूँ, एक बार फिर जा सकती हूँ।" मैंने उससे कहा।

"तुम यह सारी कहानी पादरी को सुनाकर अपनी गलती स्वीकार कर लेना तथा यह कीमती तोहफा पादरी को दे आना, ताकि वह तुम्हारे नाम से पुलिस को दे सके। कोई भी पादरी यह बताने को मजबूर नहीं है कि चोरी

की वस्तु उसे किससे मिली। एक--दो दिन पश्चात मैं तुम्हें फोन करूंगा, ताकि तुम्हें तनाव से छुटकारा मिल सके।'' एस्ट्रीटा ने कहा।

यह सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई, मानो मुझे पंख लग गए थे और आकाश में उड़ान भर रही थी। मैं एस्ट्रीटा से लिपट गई। मैंने उसके मुख पर कई चुम्बन जड़ दिये। एस्ट्रीटा ने कहा, ''भविष्य में ऐसा मत करना। अगर तुम्हें धन की जरूरत हो, तो मैं उसके लिए तैयार हूँ। निःसंकोच बोल देना।''

''पादरी के पास क्या मैं आज ही जाऊँ?'' मैंने एस्ट्रीटा से पूछा।

''क्यों नहीं? नेक काम में देर कैसी?'' एस्ट्रीटा ने मुझसे कहा।

काफी देर मैं खामोश मुद्रा में खड़ी रही। मुझे बड़ा आराम मिल रहा था। मैंने पूछा, ''क्या तुम मुझे बहुत अधिक चाहते हो?''

उसने गर्दन हिलाते हुए कहा, ''हाँ, अपनी जान से भी अधिक।''

मैंने कहा, ''ठीक है, तो प्रतीक्षा कीजिए।''

अगले ही क्षण मम्मी ने दरवाजा खटखटाया। दरवाजा खोलने पर उन्होंने बताया कि मुझसे कोई नौजवान मिलना चाहता है। झाँककर मैंने देखा तो बाहर याकोमो खड़ा था। याकोमो को मम्मी के कमरे में बिठाकर मैंने एस्ट्रीटा से कहा, ''क्षमा करें, मुझे अभी कहीं जाना पड़ेगा।''

उसके प्रतिवाद करने पर मैंने बहाना बनाया, ''मेरी आन्टी की तबियत काफी सीरियस है, मुझे फौरन हॉस्पिटल जाना होगा।''

एस्ट्रीटा ने कहा, ''कोई बात नहीं मैं वापस चला जाता हूँ।'' जैसे ही वह जूते पहनने को झुका, मैंने उसे उसका कोट पकड़ा दिया। और इस उद्देश्य से कि उससे अभी-अभी सहायता ली है उसे अगले दिन शाम को खाने पर आमन्त्रित कर दिया।

यद्यपि वह चुप था, फिर मुझे डर था कि वह कहीं मम्मी के कमरे में याकोमो को न देख ले। मैंने कहा, ''मैं पादरी के पास जरूर चली जाऊंगी।''

वह काफी बेचैन नजर आ रहा था। इसके साथ ही वह गर्दन हिलाकर चला गया।

□□□

कमरे का द्वार खोलने के लिए मैंने जैसे ही हैंडिल पर हाथ रखा, मेरे दिल में अजीबोगरीब भावनाएं उमड़ने लगीं। मेरे और याकोमो के मध्य भी ठीक वैसे ही ताल्लुक थे जैसे कि मेरे और एस्ट्रीटा के। मेरे भीतर एस्ट्रीटा से मिलने में एक अजीब सा डर तथा आश्चर्यजनक इच्छा भी थी।

ठीक इसी प्रकार मेरे दिल में याकोमो के प्रति भी ऐसे ही भाव पनप रहे थे। लेकिन फर्क सिर्फ इतना था कि एस्ट्रीटा मुझे प्यार करता था और मैं याकोमो को चाहने लगी थी। मुझे मालूम था कि मैं याकोमो को बुरी तरह से प्यार करने लगी थी तथा यह और भी बुरा हो जायेगा। मैं नहीं जानती कि याकोमो मुझे दिल से चाहता है या नहीं।

दरवाजे पर मुझे सोचते हुए चक्कर आ रहे थे। मैंने हिम्मत बटोरकर भीतर प्रवेश किया। वह अभी भी खड़ा हुआ था।

याकोमो ने कहा, ''मैं तो ऐसे ही इधर से गुजर रहा था, सोचा आज आपसे भी मुलाकात हो जाये तो ज्यादा अच्छा है। शायद मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था।''

''नहीं, तुमने बिल्कुल सही किया है। मैं भी लन्च के वास्ते बाहर जाने वाली थी। अब कितना अच्छा लगेगा, हम दोनों साथ-साथ चलेंगे।'' मैंने कहा।

''क्या तुम्हें पता है कि मैं हकीकत में कौन हूँ?'' उसने कहा।

''मैं सब समझती हूँ। तुम बड़े शैतान आदमी हो। तुमने मुझसे मिलने की एक बार भी जरूरत महसूस नहीं की।'' मैंने एक मादक अदा के साथ कहा।

''मैं सचमुच व्यस्त रहा था।'' याकोमो ने कहा।

अपने सीने पर याकोमो का हाथ रखते हुए मैंने पूछा, ''जरा मेरे दिल की धड़कन तो सुनो, यह क्या कहना चाह रही है।'' मुझमें गजब की उत्तेजना समा गयी थी। मैंने स्वयं को संभालते हुए कहा, ''थोड़ा ठहरिये, मैं अभी आई।''

कुछ वक्त बाद मैं तैयार होकर उसके साथ चल दी। मैंने सड़क पर आकर कहा, ''क्या तुम सचमुच मुझसे नाराज हो?''

हम दोनों धूप में साथ-साथ घूम रहे थे।

''मैं आज बहुत प्रसन्न हूँ कि हमारी फिर से मुलाकात हो सकी।'' मैंने उसके हाथ में हाथ डालकर कहा।

''मैं भी तुमसे मिलकर आज बहुत खुश हूँ। जरा सुनिए! मैं तुमसे कुछ कहना चाहता हूँ।'' उसने धीरे से मेरा हाथ पकड़कर कहा।

''तो कह डालिए न?'' मैंने बड़े प्रेम से कहा।

''आज की हमारी और तुम्हारी मुलाकात एक बहुत बड़ा संयोग है, फिलहाल मेरे पास एक पैनी भी नहीं है, इसलिए अच्छा होगा कि हम अलग-अलग हो जायें।'' उसने मुझे आजमाने के इरादे से कहा।

''अरे तो इसमें घबराने की क्या जरूरत है? मेरे पास आपका दिया हुआ काफी पैसा है। हम बड़े मजे से लन्च कर सकते हैं।'' मैंने प्यार से कहा। मुझे अपार खुशी हो रही थी कि आज मैं बिल चुकाऊँगी।

''नहीं...नहीं ऐसा करना शोभा नहीं देता, इससे काम नहीं चलेगा, मेरा जाना ही सही रहेगा।'' उसने मेरा हाथ छुड़ाते हुए कहा।

मैंने उसकी बगल में हाथ डालते हुए कहा, ''अब आप सोच-विचार छोड़िए, क्योंकि रेस्टोरेन्ट आ चुका है। आओ भीतर चलें।''

हम दोनों भीतर जाकर मेज के पास जा बैठे। वेटर को आर्डर लेते देख मुझे याद आया कि याकोमो ने पहली मुलाकात में ही शराब भी ली थी। अत: सबसे पहले मैंने शराब का आर्डर दिया। मैंने एक सौ लिरा का नोट

मेज के नीचे से याकोमो की तरफ बढ़ा दिया।

उसने कुछ देर झिझकते हुए कहा, "मेरे पास काफी पैसा है।" क्षण भर सोचने के पश्चात उसने कहा, "मैं महीने भर से तुम्हारे पास आने की सोच रहा था। मगर इतना व्यस्त था कि मुझे समय ही नहीं मिल सका था। मैं तो तुम्हारी परीक्षा ले रहा था कि तुम्हें मुझसे प्रेम है या पैसे से?"

"अब आप किस अन्जाम पर पहुँचे?" मैंने कहा।

"मुझे प्रतीत हुआ कि मैं ही गलती पर था, तुम अपनी जगह एकदम खरी निकलीं।" उसने कहा।

"क्या तुम अपने दोस्त के विषय में जानते हो कि उसने गिसेला के साथ घर बसा लिया है?" मैंने याकोमो से कहा।

याकोमो ने बड़ी घृणा से कहा, "अरे, वे दोनों तो एक-दूसरे के लिए ही इस दुनिया में आए हैं।"

"तुमने मेरे बारे में कभी नहीं सोचा?" मैंने उसकी आँखों में झांकते हुए कहा।

"नहीं, मेरा चरित्र बहुत दुर्बल है।" उसने विवशता प्रकट की।

"कोई बात नहीं, तुम मुझे दर्शन देते रहो, मैं तो अपना दिल इस प्रकार भी समझा लूँगी।" मैंने एक लम्बी सांस लेते हुए कहा। उससे बातें करते हुए मैंने अनुभव किया कि मैं जितना ज्यादा याकोमो को चाहती थी, वह उतना मुझे नहीं चाहता था।

उसने कहा, "अगर मैं तुम्हारी जगह पर होता, तो तुम्हें अधिकाधिक शराब पिलाने का प्रयास करता।"

"मगर क्यों?" मैंने उत्सुकतावश पूछा।

"क्योंकि नशा हो जाने पर किसी से भी इच्छानुसार कार्य लिया जा सकता है।" याकोमो ने अपना मत प्रकट किया।

उसके ख्याल मुझे व्यंग्यात्मक लगे। मैंने प्रतिवाद किया, "मैंने ऐसा कुछे भी नहीं सोचा है और अगर तुम ऐसा सोचते हो, तो मैं यहाँ से चले जाना ही बेहतर समझूँगी।"

"नहीं, आप कहीं नहीं जायेंगी, तथा मेरे साथ यहीं ठहरेंगी।" इसके साथ ही हम दोनों बड़े आराम से भोजन करने लगे।

"एड्रिना! तुम देखती रहना, मैं शराब पीता रहूँगा तथा नशा पूरा होने पर घोषणा कर दूँगा कि मुझे तुमसे अटूट प्यार है।" उसने गिलासों में शराब उड़ेलते हुए कहा।

उसकी बातों से नाराज होकर मैंने पूछा, "तुम मुझे बहुत परेशान कर रहे हो, मैं तो काफी तंग आ चुकी हूँ।"

जल्दी से लंच लेने के बाद हम अपने कमरे में वापस आ चुके थे। उस पर नशा बुरी प्रकार हावी हो चुका था। मैंने उसके जूते उतारने में सहायता की। जैसे ही मैं उसका कोट उतारने लगी, वह बोला, "लगता है तुम मुझे बेइज्जत करना चाहती हो।"

"तुम्हारी आयु कितनी होगी" मैंने उससे सवाल किया।

वह मेरी तरफ मुस्कुराकर बोला, "मेरी आयु इस समय लगभग 19 वर्ष होगी।"

मैंने उसकी टाई खोलते हुए कहा, "तुम मुझसे दो साल छोटे हो।"

वह झिझक रहा था।

मैंने कहा, "मुझे तो तुम उन्नीस के नहीं लगते हो। तुम्हारी उम्र 25 से कम नहीं हो सकती। मेरा अन्दाजा कभी गलत नहीं हो सकता।"

उसे शान्त देखकर मैंने अगला सवाल किया, "वैसे आप क्या काम करते हैं?"

"मैं फिलहाल तो एक विद्यार्थी ही हूँ।" उसने जवाब दिया।

"यानि अभी आप पढ़ रहे हैं? मगर कौन सी कक्षा में?" मैंने उत्सुकतावश पूछा।

"मैं लॉ कर रहा हूँ।" उसने सीना फुलाकर बताया।

"क्या आप किसी बोर्डिंग हाऊस में रहते हैं?" मैंने अगला सवाल किया।

"जी नहीं, फिलहाल मैं एक विधवा औरत के मकान में पेइंग गेस्ट की हैसियत से रहता हूँ।" उसने मेरे उफनते यौवन पर नजर डालते हुए कहा।

उसका फौलादी जिस्म कपड़ों की अनावश्यक कैद से मुक्त हो चुका था। वह अब धीरे-धीरे मुझे गुदगुदा रहा था। कभी वह मेरे साथ नोच-खसोट करता तो कभी मेरे मचलते शबाब पर चुम्बन अंकित करता। वह मुझे बाहुपाश में लेकर डबल बैड की तरफ बढ़ गया। अगले ही पल वह मुझ पर छाता जा रहा था। हमारे जिस्म एक-दूसरे में समा जाने को बेचैन हो रहे थे। हमारी महकती साँसें एक-दूसरे के चेहरों से टकरा रही थीं। अचानक उसने मुझे प्रगाढ़ आलिंगन में लेकर इतने जोर से भींचा कि मेरा रोम-रोम प्रसन्न हो उठा। मुझे ऐसा लगा मानो दुनिया भर के जवां पुरुषों का पौरुष उसमें समा गया था। हमारा यौन सुख बुलन्दियों को छूने लगा था। मुझे ऐसा लगा मानो किसी दहकते ज्वालामुखी का लावा मेरे अन्दर उड़ेल दिया गया हो। अगले ही क्षण मुझे जीवन का एक सुखद एहसास हो रहा था। मानो मेरी सदियों की प्यासी आत्मा शान्त हो उठी हो।

इसके साथ ही वह निढाल होकर गिर पड़ा था। हम बहुत देर तक एक दूसरे की बाँहों में सिमटे पड़े रहे।

काफी देर बाद हम दोनों बिस्तर से उठ खड़े हुए। फ्रेश होने के लिए हम बाथरूम में गए। थोड़ी देर पश्चात ही हम कुर्सियों पर थे। उसने धीरे से कहा, "मैं तुमसे एक बात पूछना चाहता हूँ, क्या आप पर मैं यकीन करूं कि आप मेरे किसी गोपनीय राज को किसी के भी आगे उजागर नहीं करेंगी?"

"कहिये, आप क्या कहना चाहते हैं?" मैंने उससे पूछा।

"दरअसल बात यह है कि मैं एक पार्सल आपके पास रखना चाहता

हूँ। वह कुछ दिन यहीं रखा रहेगा। फिर मैं इसे ले जाऊँगा तथा यह हो सकता है कि इसके पश्चात दूसरा भी यहीं रखना पड़े।"

मैंने उससे कहा, "सही है, आप यहाँ रख सकते हैं।"

"क्या तुम यह भी नहीं पूछना चाहोगी कि इस पार्सल में क्या है?" उसने कहा।

"अगर आप इस विषय में प्रकाश डालना उचित नहीं समझते, तो न सही। मैं कभी भी आपको इसके लिए मजबूर नहीं करूँगी।"

"मगर, इसमें कोई खतरनाक चीज भी हो सकती है।" उसने कहा।

"सही है, आपके प्रेम की खातिर मैं यह जोखिम उठाने को तैयार हूँ।" मैंने कहा।

"यह कोई चोरी की वस्तु भी हो सकती है।" उसने मुझसे कहा।

"नहीं, मुझे यकीन है कि तुम ऐसा भूलकर भी नहीं कर सकते। तुम किसी भले घर के सभ्य तथा नेक युवक लगते हो।" मैंने आगे कहा, "मैं खुद भी एक चोर हूँ और यह कीमती वस्तु भी मैंने कहीं से चुराई है। अब मैंने अपनी भूल को स्वीकारने का फैसला किया है और मुझे पादरी के पास जाना है।"

उसने अपने एक राज को बताते हुए कहा, "मैं लोगों के एक ऐसे समूह से सम्बन्ध रखता हूँ, जो कि वर्तमान सरकार के विरोध में काम करते हैं और इस हुकूमत को गिरा देना चाहते हैं।"

मैंने याकोमो से कहा, "राजनीति के बारे में तो मुझे तनिक भी जानकरी नहीं है, लेकिन अक्सर मैं एस्ट्रीटा को राजनीति के बारे में बातें करती हुई देखती हूँ। मगर यह कार्य तो बहुत ही खतरनाक है। न जाने तुम इसे क्यों करते हो?"

वह चुपचाप से मेरी बातें सुनता रहा।

वह कहने लगा, "तो अब मैं यह निश्चित रूप से मान लूँ कि तुम मुझे पार्सल रखने से नहीं रोकोगी? अच्छा, मैं एक-दो दिन में पार्सल रखने आ रहा हूँ। उसमें पार्टी की प्रचार सामग्री होगी। मुझे आप पर यकीन है कि आप यह राज भी किसी पर उजागर नहीं करेंगी।"

इसके साथ ही उसने अपने कपड़े पहने और फौरन चला गया। अभी तक गिनो, सोजानो, एस्ट्रीटा और न जाने कौन-कौन मेरे पास रह चुके थे, लेकिन किसी ने भी मुझे इतना यौनसुख और मनोरंजन नहीं दिया था जितना कि इस आदमी ने दिया था।

अक्सर मैं सोचती थी कि इन बुराइयों की जड़ में मैं भी कहीं न कहीं साझीदार जरूर हूँ, लेकिन मैं क्या कर सकती हूँ। मेरी आधी-अधूरी आकांक्षायें बार-बार मेरे अंत:करण को झकझोर रही थीं।

□□□

निर्बाध गति से वक्त आगे बढ़ रहा था। सारी गतिविधियाँ नियमित रूप से चल रही थीं। याकोमो दो-तीन दिन पश्चात आने का वायदा कर गया था।

मैंने एक और नेक काम करने का संकल्प किया कि गिनो की मालकिन की नौकरानी को जेल से मुक्त कराया जाये। इसलिए एस्ट्रीटा द्वारा बताई गई योजना के मुताबिब मुझे पादरी के पास भी जाना है।

सर्दियों के दिन काफी छोटे होने के कारण, सुबह व शाम का वक्त घर पर ही गुजारना होता है। घूमने-फिरने के लिए पर्याप्त समय नहीं मिल पाता है। मुझे पादरी के पास जाना था। मैं तैयार होकर घर से चर्च के लिए धीरे-धीरे चली जा रही थी। मेरे दिमाग में कोई विशेष जल्दबाजी नहीं थी, क्योंकि पादरी से मैंने कोई वक्त निश्चित नहीं किया था।

इस गिरजाघर पर मैं विटारबो की यात्रा के पश्चात ही जा रही थी। मैं उस समय के फादर एलिया पादरी को तलाश कर रही थी। कन्फैशल पर जाकर मैंने देखा कि पादरी के सामने कोई अन्य आदमी खड़ा है, इसलिए मैं आल्टर के सामने जाकर झुक गई।

थोड़ी देर पश्चात कन्फैशल खाली हो गया, मैं सीधे वहाँ पर पहुँच गई थी तथा घुटनों के बल जमीन पर बैठ गई थी। अपनी आँखें बन्द करके मैंने अपने कारोबार, गिनो, एस्ट्रीटा और सोजानो की कहानी बताई। मैंने चोरी व कत्ल की कहानी भी सुनाई। मैंने यह भी बताया कि मैं कहाँ पर रहती हूँ तथा मेरी क्या-क्या ख्वाहिशें थीं और मैं कैसे रास्ते से भटक गयी थी।

अपने कारोबार सम्बन्धी सभी बातें मैंने बिना किसी छिपाव के उन्हें साफ-साफ बतला दीं। मैं इतना भी नहीं जनती थी कि इन सबके बताने से पादरी पर क्या असर पड़ेगा। लेकिन मेरा एक मात्र उद्देश्य प्रभु यीशु के सामने अपने दिल का बोझ हल्का करना था।

मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे कि एक नारी अपना घर साफ करके शान्ति का अनुभव करती है। मेरा दिल हल्का होता जा रहा था, क्योंकि अपने दिल की बात किसी दूसरे से कहने पर भी दिल काफी हल्का हो जाता है, जबकि मैं तो प्रभु के दरबार में पूरी तरह समर्पण की भावना से बैठी थी।

मेरी बातों को ध्यानपूर्वक सुनकर पादरी ने कहा, ''मेरी बच्ची! तूने कुछ भयानक और डरावनी बातें भी सुनाई हैं। इनमें से कुछ का तो तुझसे सम्बन्ध है और कुछ का दूसरे लोगों से । मैं कोशिश करूँगा कि प्रभु तेरे साथ इंसाफ करे।''

मैंने देखा पादरी इटालियन है। मैंने उनसे पूछा, ''क्या तुम ही फादर एलिया हो?''

''प्रभु खुद तुम्हारे सामने हैं। क्या तुमने कभी पहले भी अपना अपराध मंजूर किया है?'' पादरी ने ओजस्वी वाणी में कहा।

''हाँ, एक बार मैंने पहले भी ऐसा किया है।'' मैंने कुबूल किया।

''अब तुम्हें हर चीज पर बिन्दुवार आकलन करना है। क्या तुम्हें पश्चाताप है कि तुमने एक गम्भीर जुर्म किया है?'' पादरी ने कहा।

''हाँ, मैं कुबूल करती हूँ।'' मैंने विनम्रतापूर्वक कहा।

''क्या तुम हार्दिक पछतावा करोगी?'' पादरी ने पूछा।

"हाँ फादर! मुझे विश्वास है, मैं सच्चे दिल से पश्चाताप करूँगी।" मैंने यकीन के साथ कहा।

"मेरी बच्ची! अगर तुम अपने पश्चाताप का सच्चाई से पालन करोगी, तो तुम्हें तनाव से आजादी मिल सकती है। दुर्भाग्यवश तुम ही अकेली स्त्री ऐसी नहीं हो। तुम अनुभव करती हो कि एक व्यक्ति का खून हो चुका है तथा करने वाले को कोई दण्ड भी नहीं मिला है। क्या तुम्हारे दिल में नहीं आता कि सच्चाई को सामने लाया जाये तथा न्याय किया जाये?"

पादरी के इस सुझाव से मेरा सन्देह व डर बढ़ता जा रहा था। वैसे उनका सुझाव अपनी जगह एक सही फैसला था। मैं भली-भाँति जानती थी कि यदि मैंने यह बात किसी को बाहर सुनाथी, तो मुझे भी जेल की हवा खानी पड़ जायेगी।

उन्होंने मुझे उकसाया, "तुम्हारे इस इच्छा से किए गए बलिदान से प्रभु भी प्रसन्न होंगे। कानून सजा भी देता है और माफ भी कर देता है। लेकिन तुम्हें इंसाफ स्थापित करने में हमें सहयोग देना चाहिए! मेरी बच्ची! क्या तुम्हें उस मृतक की आवाज सुनाई नहीं पड़ रही है जो कि बेकसूर ही मार दिया गया था? वह न्याय मांग रहा है।"

"ठीक है, मैं इस बारे में गंभीरतापूर्वक सोचूँगी।" मैंने कहा, "आपके पास मैं कल पुन: आऊँगी तथा बताऊँगी कि मैंने क्या निश्चय किया है।"

"कोई बात नहीं, जब भी वक्त मिले आ जाना।" पादरी ने उदारतापूर्वक कहा।

"जी, बहुत अच्छा।" मैंने ईश्वर की एक प्रार्थना की और कन्फैशल छोड़ दिया था। मुझे पादरी ने आशीर्वाद दिया। वह कीमती तोहफा मैंने अपने पर्स से निकाला तथा पादरी को दे दिया। ताकि वह इसको आज ही पहुँच दें। मैं पादरी को धन्यवाद देकर गिरजाघर से बाहर आ गई।

मेरा ख्याल था कि पुलिस को सोजानो का नाम बता देना ही मेरे लिए सबसे बड़ा खतरा होगा। साथ ही वह मुझे भी नहीं छोड़ेगा। घर आकर इसी चिन्ता में मैंने खाना भी नहीं खाया। और सीधे ही बिस्तर पर आ गयी। मैं सोचने लगी कि मेरी अपराध स्वीकार करने की इस इच्छा ने एक नई परेशानी पैदा कर दी थी। मैंने सोचा कि इस घर में मैं आज आखिरी रात गुजार रही हूँ तथा मैं संभवत: कल ही जेल चली जाऊँगी।

अगले दिन मैं हारी-थकी सी उठी तथा सोचने लगी कि बस कुछ देर में पुलिस मुझे पकड़ने के लिए आने ही वाली है। मेरा दिल कुछ भी करने या खाने में नहीं लग रहा था। मैं घर से बाहर जाने की हिम्मत भी न जुटा पा रही थी।

इसी प्रकार भय व निराशा की स्थिति में सोचते हुए मुझे दो दिन बीत गए।

तीसरे दिन मेरे दिल में आया कि जेल जाने से पूर्व कम से कम एक बार तो याकोमो से मिल ही लूँ। इसलिए मैं शाम के वक्त तैयार होकर बड़ी

सतर्कता से घर से बाहर निकली।

मुझे याकोमो का घर मालूम था। मैंने उसे एक अच्छी सी टाई देने का वायदा किया था। इसलिए टाई खरीदने के लिए मैं एक शोरूम में जा घुसी। मैंने एक भूरे लाल रंग की बेहद कीमती टाई पसन्द की। सेल्समैन ने याकोमो के विषय में पूछा कि वह देखने में गोरा है तथा गेहुआं रंग का है।

मैंने कहा, ''उसका रंग खूबसूरत गेहुआं है।'' इसके साथ ही मैंने टाई पैक कराकर उसकी कीमत चुकाई तथा शोरूम से चल पड़ी। मैं याकोमो से मिलने आठवीं मंजिल तक चढ़ गई। जैसे ही मैंने उसके द्वार की घंटी बजाई वह फौरन बाहर आया तथा कहने लगा, ''अरे! आप आई हैं? आइये..... आइये इधर से आइये।''

अन्दर जाकर सोफे पर बैठते हुए मैंने कहा, ''क्या आप किसी की प्रतीक्षा में थे?''

''नहीं तो, मगर आज अचानक आपको इस नाचीज की याद कैसे आ गई?''

वह मेरा स्वागत करना भूलकर हैरत प्रकट करने में लगा हुआ था।

''आज अचानक मेरे मन में आया कि चलो तुम्हें भी अलविदा कहती चलूँ। क्योंकि मेरा ख्याल है कि अब हम एक-दूसरे से नहीं मिल सकेंगे।'' मैंने उदास मन से कहा।

''मगर ऐसा क्यों?'' उसने मेरे चेहरे पर प्रश्नात्मक दृष्टि डालते हुए कहा।

''क्योंकि मेरा ख्याल है कि कल संभवतः मुझे जेल भेज दिया जायेगा।''

''जेल?'' वह आश्चर्य से उछलकर बोला, ''ऐसी बुरी बात क्यों कहती हो?'' साथ ही वह अपनी वजह से भी बहुत फिक्रमन्द था कि कहीं पुलिस पर याकोमो का रहस्य न खुल गया हो।

''फिलहाल आप कोई फिक्र न करें। कम से कम तुम्हें तो चिन्ता करने की आवश्यकता ही नहीं है।'' मैंने याकोमो से कहा।

''वैसे इसके अलावा तुम्हारा जेल जाने का और क्या कारण हो सकता है?'' उसने अपने मस्तिष्क पर जोर देते हुए कहा।

मैंने कहा, ''अच्छा पहले दरवाजा बन्द करो तथा मेरे करीब आकर बैठो।''

बन्द कमरे के शान्त माहौल में मैंने उसे पूरे घटनाक्रम से अवगत कराया। मैंने उसे बताया, ''अपना गुनाह कबूलने के पश्चात मैंने वह बहुमूल्य वस्तु पादरी को दे दी थी तथा वह अब पुलिस को पूरा रहस्य बता देगा।''

''मगर आप ऐसा सोचती ही क्यों हैं?'' याकोमो ने कहा, ''आपको तो पादरी से मिलना चाहिए था।'' याकोमो ने अचानक मेरे कन्धे पर हाथ रखते हुए कहा, ''अरे! तुम तो एक बहादुर लड़की हो। भला तुम क्यों भयभीत होने लगीं? तुम्हें तो निर्भीकतापूर्वक डटे रहना है।''

उसने कुछ देर पश्चात मौन भंग किया, "और तुम्हारे मित्र सोजानो के विषय में क्या ख्याल है? वह तुम्हारी नजरों में कैसा आदमी है?"

"वह लम्बी कद-काठी का एक खूबसूरत आदमी है। चौड़ा चकला सीना, उन्नत ललाट और नेकदिल इन्सान है। सबसे बड़ी खूबी उसमें यह है कि वह प्रतिभाशाली होने के साथ ही काफी शक्तिशाली भी है।" इसके साथ ही मैंने उसे गिनो व सोजानो के लड़ाई-झगड़े की भी पूरी बात सुना डाली।

"इसका अर्थ तो यह हुआ कि वह अचानक आवेश में आने पर ही ऐसा करता है?"

"उसने गिनो पर भी अचानक ही आघात किया था। वह तो एक अच्छा खासा सांड है।" मैंने कहा।

"मेरे ख्याल में तुम्हें ऐसे ही आदमी से प्यार करना चाहिए था। तुमने मुझसे प्रेम क्यों किया?" याकोमो ने कहा।

इस पर मैंने कहा, "आपकी बराबरी सोजानो से नहीं की जा सकती। वह तो एक बड़ा मुजरिम है।" वह असन्तुष्ट दिखाई दे रहा था। मैंने उससे कुछ देर इधर-उधर की बातें करने के पश्चात कहा, "पार्सल दीजिए, मैं लेती जाऊँगी।"

"नहीं, नहीं अब मैं पार्सल तुम्हें नहीं दूँगा, क्योंकि तुम्हारे इधर घर पर अक्सर एस्ट्रीटा आता रहता है जोकि बहुत खतरनाक पुलिसकर्मी है।" कुछ सोचते हुए उसने एक कविता की पंक्तियाँ दोहराईं।

उसे इस तरह गुनगुनाते देख मैंने पूछा, "इस कविता का मतलब क्या है?"

"कुछ विशेष नहीं। अपनी पसंदीदा कविता होने के कारण कभी-कभी गुनगुना लेता हूँ।" याकोमो ने बताया।

मैंने शान्त भाव से उसका मुख अपनी नाजुक हथेलियों में लेते हुए कहा, "सचमुच तुम्हारी आँखें बहुत खूबसूरत हैं।"

याकोमो ने कहा, "मेरी मम्मी भी बड़े प्रेम व गर्व से कहा करती थीं कि मेरा बेटा बड़ा सुन्दर है। यों तो हर माँ को अपना बच्चा सुन्दर लगता है, लेकिन वे मुझे प्रेम से 'मिनो' कहती थीं।

"तो मैं भी तुम्हें मिनो कहकर ही पुकार सकती हूँ" मैंने उसकी आँखों में देखते हुए कहा।

अचानक कॉल बैल की आवाज सुनते ही वह उठा तथा गेट खोलने चला गया। फौरन ही दो आदमी अन्दर प्रविष्ट हुए जिनमें से एक तो मिनो का हमउम्र था तथा दूसरा लगभग 40 साल का होगा। मेरा विचार था कि ये दोनों कामरेड राजनैतिक दल से सम्बद्ध होंगे तथा यहाँ किसी विशेष काम से ही आए होंगे।

मिनो ने मेरा उनसे परिचय कराते हुए कहा, "यह हैं मेरे दोस्त टूलियो तथा यह हैं टोमासो और आप हैं एड्रिना।"

एक दूसरे से मिलकर सबने खुशी व्यक्त की।

टूलियो ने कहा, "अगर आप इस समय व्यस्त हैं, तो हम कल फिर इसी वक्त आ सकते हैं।"

यद्यपि मिनो ने उन्हें रोकने का प्रयास किया, मगर मैंने नि:संकोच मिनो पर अपना हक जमाते हुए कहा, "आप चाहें तो फिर आ सकते हैं।"

टोमासो ने कहा, "सही है, हम आपसे दोबारा मुलाकात कर लेंगे।"

लम्बा आदमी नाराजगी से मेरी तरफ देखे जा रहा था। झुंझलाहट के कारण मिनो भी गुस्से में मुझे घूरे जा रहा था।

उनके जाने के पश्चात् वह बोला, "कहिये, ऐसा कौन सा जरूरी काम था, जो मेहमानों को भी भगा दिया?"

"मैं आज की खूबसूरत शाम आपकी बाँहों में बिताना चाहती हूँ।" मैंने उससे लिपटते कहा।

"मगर मैं तो फिलहाल खाना खाने जा रहा हूँ।" मिनो ने कहा।

"क्या अपनी मकान मालकिन मेडोला के घर?" मैंने उत्सुकतावश पूछा।

"हाँ, तुमने बिल्कुल सही सोचा है।" मिनो ने बड़ी नफरत से कहा।

"तो फिर मुझे भी अपने साथ में ले चलिये न ?" मैंने आग्रहपूर्वक कहा।

"फिलहाल आप यहीं ठहरिये, पहले मैं उनसे जाकर पूछ लेता हूँ। मैं तुम्हारा परिचय अपनी प्रेमिका के रूप में ही कराऊँगा।" मिनो ने पीछा छुड़ाते हुए कहा।

"जैसा आप सही समझें। मैं आपके वापिस आने तक यहीं प्रतीक्षा करूंगी।" मैंने कहा। उसके मधुर ख्वाबों में खोयी हुई मैं अपनी अस्त-व्यस्त पोशाक सही करने लगी।

मेरा ख्याल था कि वह चुपके से मेरे पीछे आकर मेरी आँखें बन्द कर लेगा। कुछ देर पश्चात आकर उसने कहा, "हमें सुपर पर जाना होगा।"

मिनो से मैंने कहा, "क्या तुम्हें मुझे अपनी प्रेमिका बताते हुए लज्जा लगती है? अगर सचमुच ऐसा है तो मैं वापिस चली जाती हूँ।"

"भला मुझे क्यों लज्जा आने लगी?" मिनो ने मुस्कुराकर कहा।

"मैं नहीं मानती, उस समय तुम गुस्से में थे। मैं सब जानती हूँ, तुम्हें मुझसे प्रेम ही नहीं रहा।"

मिनो ने कहा, "प्रेम से तुम्हारा मतलब मात्र शारीरिक मिलन तक ही सीमित है न?"

मैं चुप हो गई। तभी एक बूढ़ा नौकर हमें खाने वाले कमरे में बुलाकर ले गया। वहाँ हमारी मुलाकात सिगोरा मेडोला से हुई। उसने काले रेशमी कपड़े धारण किए हुए थे और अपने केश भी रंगे हुए थे। पास ही उसकी बेटी बैठी हुई थी।

"आओ बेटी इधर बैठो, क्या नाम है तुम्हारा?" उसने बड़े प्रेम से कहा।

''एड्रिना...।'' मैंने धीरे से कहा।

''मेरी बेटी की तरह ही, अब यहाँ पर एक नहीं दो-दो एड्रिना हैं। उसने मुझ पर नजर डालते हुए कहा।

दूसरी एड्रिना के मुकाबले मैं मामूली कपड़ों में एक सीधी-सादी साधारण सी कम पढ़ी-लिखी लड़की दिखाई पड़ती थी। मुझसे मिलने में उसने कोई खास रुचि या खुशी नहीं दिखाई थी। मैंने ही माहौल की शांति को भंग किया ''यह भी एक अजीब संयोग है कि अलग-अलग माहौल में पली तथा भिन्न-भिन्न आदत की दो एड्रिना यहाँ उपस्थित हैं।''

उसे मेरी खूबसूरती से जलन हो रही थी। वह बिल्कुल शान्त थी। अचानक मैडम सिग्नोरा का स्वर गूँजा, ''आप लोग कितने वक्त से मिलते रहे हैं, मुझे तो कुछ मालूम ही नहीं था?''

''हमारी जान-पहचान लगभग एक महीने पुरानी है।'' याकोमो ने कहा।

''क्या यह लड़की रोमन है?'' मैडम सिग्नोरा ने आश्चर्य से कहा।

''जी हाँ, पिछली सात पीढ़ियों से।'' याकोमो ने मजाकिया अन्दाज में बताया।

''तो तुम लोग शादी कब तक करने जा रहे हो?'' मैडम सिग्नोरा ने पूछा।

''बस रहने के लिए एक छोटी सी हरियाली से परिपूर्ण सुन्दर सी विला होते ही शादी कर डालेंगे।''

मेरा ख्याल था कि मकान की इच्छा के कारण ही कभी भी मेरा विवाह नहीं हो पायेगा।

''मैं समझती हूँ, विला में तुम्हें काफी नौकर भी रखने होंगे?'' मैडम सिग्नोरा ने कहा।

इसी मध्य नौकरानी खाने की प्लेटें लगा गई थी।

मिनो ने कहा, ''नहीं, रसोई और खाने-पीने का आवश्यक कार्य एड्रिना खुद ही बड़े चाव से कर लेती है।''

''मेरे ख्याल में एक स्त्री को घर का खाना पकाना, देखभाल और सफाई का काम तो आना ही चाहिए।'' मैडम सिग्नोरा ने मेरे चेहरे पर अपनी पारखी दृष्टि गड़ाते हुए कहा।

मिनो ने हमारे सामने ही शराब के पैग लेने आरम्भ कर दिये। वह काफी नशे में था।

मिनो ने मेरी खिल्ली उड़ाते हुए कहा, ''एड्रिना एक औरत नहीं है तथा न हो वह कभी बन पायेगी। उसने हमेशा बिस्तर लगाये हैं और साफ किये हैं। यह तो सीधी-सादी लड़की है। उसकी मम्मी कमीजें सिलती हैं। यह भी काम में उनका हाथ बंटाती है और भी न जाने क्या-क्या काम करती है।''

आश्चर्यपूर्वक वे दोनों मुझे घूरे जा रही थीं। मुझे बड़ी आत्मग्लानि

महसूस हो रही थी।

मकान मालकिन व्यंग्य से बोली, ''तो तुम याकोमो से शादी करने जा रही हो?''

मैं अचानक उठते हुए बोली, ''मुझे एक जरूरी कार्य याद आ गया है। अतः मुझे फौरन जाना होगा। फिलहाल मैं कुछ अच्छा सा महसूस नहीं कर रही। यहाँ बैठने में कुछ आनन्द नहीं आ रहा है। निःसंकोच मैं यह भी तुम्हें अवश्य बता देना चाहती हूँ कि सचमुच तुम प्रेम करने लायक नहीं हो।''

''चलो अच्छा हुआ, तुम्हें मेरी असलियत का ज्ञान तो हुआ।'' मिनो ने गंभीरता से कहा।

''नहीं, असलियत यह नहीं है, बल्कि मैं तो तुम्हें प्रेम करती हूँ। मैं तो तुम्हें यह एक टाई भेंट करने आई थी, क्या तुम्हें यह पसंद है?'' मैंने मिना से पूछा।

''क्या कहा टाई? यानि तुम मुझे ललचाने के लिए टाई भेंट करना चाहती हो, कहीं यह भी तो चोरी की नहीं है।'' मिनो ने आँख नचाकर कहा।

मेरे दिल पर यह एक और प्रहार हुआ था, फिर भी मैंने हिम्मत करके कहा, ''मैं यह टाई तुम्हारे लिए नीचे एक शोरूम से खरीदकर लाई हूँ।''

मैं मायूस मन से जैसे ही जाने के लिए मुड़ी, मिनो ने मुझसे कहा, ''कल शाम को मिलने की चेष्टा करूंगा।''

यह सुनकर मैं वापिस अपने घर लौट आई।

□□□

उस दिन के बाद मेरी दिनचर्या पहले की तरह हो गयी थी। यद्यपि मिनो मेरी बुराई करता था, फिर भी मैं उसे दिल की गहराईयों से चाहती थी। मैं उसे अपनाने के लिए अपना कारोबार तक बदलने व छोड़ने को तैयार थी। यह कैसा अजीब विरोधाभास था कि उसके न चाहने पर भी वह मुझे काफी पसंद था।

यद्यपि मेरे पास पैसे का सर्वथा अभाव था, फिर भी मैं उससे निःस्वार्थ भाव से ही मिलती थी, उससे कभी कुछ नहीं लेती थी। मैं जानती थी कि परिवार से उसे थोड़ा ही जेबखर्च मिलता था। मैं तो उसके लिए काफी कुछ करना चाहती थी, लेकिन वह इसका अवसर ही न देता था। मैं उसे कभी नहीं भुला सकती।

वह लौटकर मेरे पास आया तथा जाने-अनजाने में कही गई कड़ुवी बातों के लिए माफी मांग रहा था।

उसकी आदत से प्रभावित होकर मैंने कहा, ''शायद आप नहीं जानते कि मैं क्या थी? और समय ने मुझे क्या से क्या बना दिया। मैंने भी कभी सपने संजोये थे कि एक अच्छे सम्पन्न परिवार में रहती तथा अपनी अच्छी शिक्षा, रहन-सहन होते और दैनिक जरूरतों को पूरा करने के लिए अपार धन होता।''

यानि तुम सिग्नोरा लोबाको बनना चाहती हो?'' मिनो ने कहा।

"यह तुम किसका उदाहरण दे रहे हो?" मैंने पूछा।

"सिग्नोरा एक सम्पन्न परिवार में जन्मी और पली लड़की का नाम है। उसने बहुत सम्पन्न परिवार में एक ऐसे इन्जीनियर से शादी कर ली जोकि सिर्फ पैसे के लिए ही कार्य करता था। वह तो अपने परिवार के प्रति वफादार था मगर उसकी पत्नी सिग्नोरा लोबाको उसके प्रति वफादार न थी।"

मैंने कहा, "इस दुनिया में सबके चरित्र अलग-अलग होते हैं।"

इस बात पर वह बहस करने को तैयार था कि पैसा होने पर चरित्र नहीं बदल जाता है। सिग्नोरा ने एक सम्पन्न पति तो तलाश कर लिया है, लेकिन वह अपनी आदत नहीं बदल पायेगी। अपने पति के प्रति वह वफादार भी नहीं रह सकती । साथ ही साथ वह मुझसे भी तर्क कर रहा था कि मनुष्य का स्वभाव नहीं बदला जा सकता।

इस पर मैंने कहा, "हम मनुष्य हैं तथा हम खुद इसका फैसला नहीं ले सकेंगे ।"

उसने कहा, "इस जगत की सुन्दरता को बिगाड़ने के लिए पूरी मानव जाति ही उत्तरदायी है। मानव रहित जगत अधिक सुन्दर हो सकता है। इसका न कोई आदि है न कोई अन्त। हम सभी स्वार्थ सिद्धि में लगे हैं।"

उसकी बातें आदर्शवादी जान पड़ती थीं। मैंने उसे समझाने की कोशिश करते हुए कहा, "शायद आप नहीं जानते कि हम सभी उस मनुष्य समाज के अंग हैं। अगर यह समाज न होता, तो आज हम भी न होते।"

वह बात को बदलते हुए बोला, "क्या तुम पादरी से मिली थीं?"

मैंने कहा, "जी हाँ, मैंने उससे फोन पर बातें की थीं। उस पादरी ने वह कीमती चीज पुलिस को पहुँचा दी थी तथा मेरे विषय में कोई बात नहीं बतायी थी।"

मैंने उसे आकर्षित करने का प्रयास किया, मगर उसकी विचारधारा परिपक्व हो चुकी थी। इसलिए मेरा प्रयास व्यर्थ रहा।

"क्या तुम पार्टी के लिए कार्य करना चाहोगी?" मिनो ने बात को बदलते हुए कहा।

"किसके लिए? क्या मुझे आपका कोई काम करना है? यदि ऐसा है तो मैं सहर्ष करूंगी।" मैंने कहा, "मैं तो खुद आपके लिए कोई कार्य करके आपके नजदीक आना चाहती हूँ।"

मिनो ने पूछा, "क्या तुम्हें भय नहीं लगता है?"

"कैसा डरना और किससे डरना? जब आप ही नहीं डरते, तो भला मैं क्यों डरने लगी?" मैंने सीना चौड़ा करके कहा।

"पूरी तरह सोच-समझ लो, यह काम बड़ा कठिन और जोखिम भरा है।" मिनो न चेतावनी दी।

"कोई बात नहीं, आपकी वजह से मैं कुछ भी सह लूँगी।" मैंने पूरे यकीन से कहा।

"तुम कुछ भी समझने की चेष्टा नहीं कर रही हो। क्या तुमने ईश्वर की प्रार्थना की है?" मिनो ने पूछा।

"जी हाँ।" मैंने कहा।

"जरा सुनाओ तो सही?" मिनो उत्सुकतापूर्वक बोला।

"मेरे पिता स्वर्ग में कौन सी कला है?"

"थोड़ा सोचिए कि यह प्रार्थना न जाने कितने व्यक्तियों ने की होगी? किस-किस भावना से की होगी?" वह पल भर शान्त होकर बोला, "कुछ चीजें महसूस की जा सकती हैं, उन्हें यथार्थ में देखने के पश्चात भी समझना बड़ा कठिन होता है। मैं ऊपर से तो छूकर देख सकता हूँ, मगर तुम्हारे अन्दर क्या-क्या भावनायें हैं, यह अनुभव नहीं कर सकता। तुम्हारे सीने पर यौवनपुष्प निःसन्देह खूबसूरत और आकर्षक हो सकते हैं। उनके आकार, प्रकार गर्मी व रंग को देखा-परखा जा सकता है। मगर मैं यह नहीं समझ पाया कि सिर्फ माँ बनने के पश्चात इनमें दूध कहाँ से आ जाता है? इसलिए उस ईश्वर की प्रकृति को समझना जितना कठिन है, उतना ही हमारे काम भी मुश्किल हैं।"

कुछ देर पश्चात मैंने पूछा, "फिर अपने काम दूसरों को कैसे समझाते हो तथा किस तरह कराना पसन्द करते हो? जैसे अपनी विचारधाराओं से दूसरों को प्रभावित करना तथा प्रचार सामग्री लिखना, बाँटना आदि-आदि।"

"यह कोई कठिन काम नहीं है। यह तो सभी को करना होता है। अपने ख्याल दूसरों पर प्रगट करना, समझाना आदि-आदि। इसकी मात्रा भी कम या अधिक हो सकती है।" मिनो ने मुझे समझाते हुए कहा।

"मैं इससे ज्यादा कुछ नहीं जानती। मैंने तो सिर्फ तुम्हें प्यार किया है और मेरे लिए दिल उन बातों को समझने की कोशिश ही नहीं कर रहा है। मैं उसके प्यार में अन्धी हो चुकी थी। मुझे सिर्फ प्रेम ही प्रेम नजर आ रहा था। मुझे लगा कि मैं अपने रास्ते से भटक गयी हूँ। तथा वह सब कुछ नहीं है जो कि मैं देख रही हूँ तथा कर रही हूँ। इससे अलग भी कुछ जीवन की आवश्यकताएं हैं। मेरे अन्दर एक अजीब सा परिवर्तन आता जा रहा था।

□□□

फरवरी महीने की कड़ाके की सर्दी थी। बर्फीली हवाएं चल रही थीं। धूप में बैठना बड़ा आनन्ददायक प्रतीत होता था। पिछले कुछ विवाद अपने आप सुलझ गए थे। सोजानो का कहीं अता-पता नहीं था। मैंने अपनी जीवन-शैली को काफी कुछ बदल दिया था। मिनो से मिलकर मेरे प्रेम की उमंग शान्त हो चुकी थी। मैंने दूसरे व्यक्तियों से भी मिलना-जुलना खत्म कर दिया था।

अपने स्वभाव को बदलने के लिए मुझे नया कुछ सीखना था जिससे कि मैं व्यस्त रह सकूँ। मैं अधिक महत्वाकांक्षी तो नहीं थी, मगर एक अच्छा जीवन बिताने के लालच ने मुझे न जाने किस नर्क में धकेल दिया था।

मैंने एक दिन मिनो से पूछा, "क्या तुम मुझे अब भी नहीं चाहते, तुम्हारे लिए मैं सबकुछ त्याग सकती हूँ।"

मिनो ने उत्साहपूर्वक कहा, "मैं निश्चय ही तुमसे शादी करूंगा।

निकट भविष्य में हमारे पास भी बहुत सा पैसा होगा। हम एक सुखमय घर संसार बसायेंगे जिसमें सारे सुख के साधन और नौकर-चाकर भी होंगे। मेरी दादी जो कि मरने ही वाली है उनकी अपार धन-दौलत जल्दी ही भविष्य में हमारे सपनों को साकार करेगी।''

''कोई गम्भीरतापूर्वक बात करना तो तुम्हारे लिए बड़ी मुश्किल है। आप तो हर चीज को मजाक में ले जाते हैं।'' मैंने मिनो से कहा।

एक दिन मैं मिनो के साथ पिक्चर देखने गई। शाम का खाना भी साथ-साथ खाया। भीड़-भाड़ की वजह से टिकिट भी बड़ी मुश्किल से मिले। अन्दर हॉल में जाने पर हम अलग-अलग हो गए। मैं मिनो को तलाश ही रही थी कि मुझे अचानक किसी ने छू दिया। देखने पर पता चला कि पास ही सोजानो बैठा था। उसके संकेत पर मैं डर से पीली पड़ गई। अगर मैं बैठ न जाती तो चकराकर गिर भी सकती थी। इसलिए उसका धन्यवाद करते हुए मैं उसके पास ही बैठ गई।

वह किसी गार्ड की तरह मेरे सामने खड़ा हो गया था। मुझे इस बात का डर था कि कहीं पादरी के आगे मेरे गुनाह कबूलने से उसे कोई हानि हो गयी हो या उसे पता लग गया हो। अगर उसे पता लग गया कि मैंने उसका राज पादरी को बता दिया है तो वह मेरी जान ले लेगा।

मिनो मुझे तलाश कर रहा था। पिक्चर खत्म होने के पश्चात् संयोगवश बाहर आने पर हम तीनों ही मिल गये। मैंने मिनो से पूछा, ''अब हम कल मिल पायेंगे।''

मेरे बर्ताव से मिनो को काफी आश्चर्य हुआ। मैंने उसे जल्दी में 'अलविदा' कहा तथा गाड़ी में बैठकर सोजानो के साथ घर की ओर चल दी। डर के कारण मैं उसे मना भी न कर सकती थी। पूरे रास्ते मैं उससे कुछ भी न कह सकी थी। घर आकर मैंने हिम्मत की, ''आज फिर कैसे आना हुआ?''

उसने कहा, ''तुमने ही दोबारा तो आने को कहा था, इसलिए आज आ निकला हूँ। तुम्हारे साथ वह आदमी कौन था?''

मैंने कहा, ''वह मेरा एक मित्र है।''

''क्या तुमने मिनो को उसके बाद देखा है?'' मिनो ने मुझसे पूछा।

''नहीं कभी नहीं।'' मैंने बताया।

''मैं तो समझता था कि जौहरी के कत्ल के बारे में सिर्फ तुम दोनों ही जानते हो।'' मुझसे सोजानो ने बताया।

मैंने कहा, ''आप मुझसे तो निश्चिंत रहिए, मैं किसी कीमत भी तुम्हारे खिलाफ जुबान खोलने वाली नहीं हूँ। तुम्हारा राज खोलकर मुझे भी तो जेल जाना पड़ेगा। भला मैं ऐसा क्यों करने लगी? मिनो भी तुम्हारे बारे में कुछ नहीं बोलेगा, वह भी तुमसे डरता है और न ही उसे इससे कोई लाभ है।''

गली में साथ-साथ जाते हुए मैंने मिनो के बारे में सोचा तथा हौसला

करके सोजानो से कहा, "अच्छा होगा यदि तुम यहीं से लौट जाओ।"

"मगर क्यों...?" सोजानो ने पूछा।

मैं उससे बताना चाहती थी कि मैंने अपनी जीवन शैली बदलने का निश्चय किया है और मिनो की ही होकर रहना चाहती हूँ लेकिन साहस नहीं कर सकी थी।

उसने कहा, "बोलो, क्या बात है? किसे चाहती हो?"

मैंने मिनो का नाम छिपाते हुए कहा, "कोई और है, जिसे तुम नहीं जानते । मेहरबानी करके अब मुझे जाने दीजिए।"

"और अगर मैं तुम्हें न जाने दूँ तो?" सोजानो ने पूछा।

"शायद कुछ चीजें तुम जबरदस्ती भी नहीं करा सकते।" मैंने कहा।

सोजानो ने कहा, "मैं तुम्हारे बारे में ही सोचता रहा था। मैं तुम्हें अपनाना चाहता हूँ। मेरे पास काफी पैसा है। मैं मिलान जाकर गैराज खोलना चाहता हूँ। यदि तुम मेरी होकर रहोगी, तो तुम्हें कोई दुख न होगा।"

मुझे ऐसा लगा कि मैं भीतर ही भीतर पिघल रही हूँ। मुझमें उसे उत्तर देने की भी शक्ति न थी। मैंने घबराते हुए कहा, "तुम मेरे बारे में कुछ भी नहीं जानते हो।"

"मेरे बारे में तुमसे अधिक कोई नहीं जानता। तुमसे मिलकर मेरा अकेले रहना कठिन हो गया है।" सोजानो ने मेरी कमर में हाथ डालकर कहा।

कोई रास्ता न देखते हुए मैंने कहा, "मुझे सोचने के लिए वक्त चाहिए था।"

मेरा दिल कर रहा था कि किसी तरह यहाँ से भाग जाऊँ, लेकिन कोई मार्ग ही नजर नहीं आ रहा था। उसे वस्त्र उतारते देख मैंने बहाना किया, "मेरे पास आज शाम कोई आने वाला था, इसलिए मैं मम्मी को बताकर आती हूँ कि हमें कोई परेशान न करे।"

मैंने जल्दी से मम्मी से कहा, "मै गिसेला अथवा जलीन्दा के पास जा रही हूँ। अन्दर जो व्यक्ति है उससे मेरे बारे में कुछ भी नहीं बताना है। मुझे कल सुबह फोन करना। मैं यहाँ से जा रही हूँ।"

मम्मी भी नहीं जान सकीं कि यह क्या बात है। मैंने बाहर आकर एक टैक्सी ली तथा मिनो के यहाँ जा पहुँची। कालबैल दबाते ही एक नौकरानी आई। उसके पीछे-पीछे मैडम मेडोली भी थी।

"क्या तुम सिग्नोर देवदाती से मिलना चाहती हो?" मैडम मेडोली ने पूछा।

"जी हाँ।" मैंने कहा।

"मगर वह तो गिरफ्तार हो चुका है।" उसने कहा।

"अरे! यह सब अचानक कैसे हो गया?" मैंने हैरत से कहा।

उसने कहा, "मैं तो केवल यह जानती हूँ कि जब वह घर आया तो पुलिस उसका पीछा कर रही थी। उसने हमें कुछ भी बताना आवश्यक नहीं समझा।"

"मगर कोई तो कारण रहा होगा?" मैंने कुछ देर बाद पूछा, "क्या आप बता सकती हैं कि वे उन्हें कहाँ ले गए या कोई सूचना छोड़ी है?"

इतने सवालों को एक साथ सुनकर वह झल्लाकर अपने नौकर से बोली, "इन्हें बाहर का रास्ता दिखा दो।"

मेरा ख्याल था कि सोजानो व मिनो के अपराध में कोई सम्बन्ध हो सकता है। मुझे कोई मार्ग नहीं सूझ रहा था। परेशानियाँ एक-एक करके नहीं आतीं। मैंने एस्ट्रीटा से सहायता लेनी चाही। मैं घूमती-फिरती सैन्ट्रल पुलिस आफिस आ पहुँची। मैंने एक कमरे में झांककर देखा दो व्यक्ति मिनो को दोनों ओर से पकड़े हुए खड़े थे। मैंने मिनो को आवाज दी, मगर पुलिस वालों ने उससे नहीं मिलने दिया। मुझे बाहर निकाल दिया।

मैंने बाहर आकर दस बजे एस्ट्रीटा को फोन किया, "मैं एड्रिना बोल रही हूँ। तुमसे फौरन मिलना चाहती हूँ।"

एस्ट्रीटा ने फोन पर कहा, "ठीक है, मैं अभी आ रही हूँ।"

मैंने उसे यह फोन दूसरी बार किया था, मगर हालात जुदा-जुदा थे। पहली बार उसकी आवश्यकता थी और अबकी बार खुद मेरी। पहली बार मिनो से शादी की गड़गड़ की गई थी। इस बार मुझे प्रतीत हो रहा था कि उसे मेरे व मिनो के सम्बन्ध का पता लग गया होगा इसलिए वह ईर्ष्यावश उसे बन्द कराने की साजिश करता रहा होगा तथा मौका देखकर बन्द करा दिया होगा।

कुछ देर पश्चात एस्ट्रीटा भी आ गया। उसने मेरा हाथ चूमकर हॉल में पड़े दीवान बैड की तरफ संकेत किया। मैंने उससे बिना किसी पूर्व भूमिका के कहा "अगर आपने मिनो को बन्द कराया है तो उसे फौरन छुड़वा दीजिए।"

"अरे क्या कहा मिनो...? कौन मिनो...?" एस्ट्रीटा ने हैरत प्रगट की।

"मैं समझती हूँ कि तुम्हें मेरे और मिनो की प्रेम कहानी का पता चल चुका है तथा वह तुमने ही बन्द कराया है।" मैंने एस्ट्रीटा से कहा।

एस्ट्रीटा ने कहा, "मेरी बात का यकीन करो, मैं ना तो उसे जानता हूँ, न ही मैंने उसे बन्द कराया है। मुझे तुम्हारे और उसके प्यार के बारे में कोई ज्ञान नहीं है।"

मैंने रोते-बिलखते हुए कहा, "मैं कुछ भी नहीं जानती...मुझे तो मेरा मिनो चाहिए...उसे छुड़वा दो।"

उसने मुझे चुप करते हुए कहा, "हौसला रखो, मैं अपनी तरफ से पूरी कोशिश करूंगा।"

मैंने उसकी आँखों में झांकते हुए कहा, "अगर तुमने उसे छुड़वा दिया, तो मैं तुम्हें मनचाही खुशियाँ प्रदान करूंगी। तुम जैसा चाहोगे, मैं वैसा ही करूंगी।"

जैसे ही वह फोन करने गया, मैंने सोचा कि वह उसे तुरन्त छुड़वा देगा। मगर उसने आकर निराशापूर्वक बताया, "एड्रिना! मैं उसके लिए कुछ

नहीं कर सकता, क्योंकि उसने पुलिस पर हमला किया है। जिसके फलस्वरूप एक सिपाही की हास्पिटल जाते-जाते ही मौत हो गई। उसके बीवी-बच्चे भी हैं। और तुम कहती हो कि मैंने उसे पकड़वाया है। मैं विवश हूँ, अब कुछ नहीं किया जा सकता।

मुझे खुशी हुई कि मिनो अभी बाहर है और उसने एक सिपाही को मार डाला है। मैं उसे खोजने के विषय में ही सोच रही थी कि एस्ट्रीटा के पास दूसरा फोन आया। उसने फोन पर बात करके मुझे बताया कि मिनो जेल में बन्द है। उसे पकड़ने के लिए पुलिस ने दो स्थानों पर छापे मारे थे। एक विधवा मैडम के यहाँ और दूसरा घर पर तुम्हारे यहाँ पहुँच कर जैसे ही पुलिस ने उससे कागजात मांगे, उसने पुलिस पर फायर कर दिया तथा भाग गया।

मिनो की जेल जाने की बात सुनते ही मैं मूर्च्छित हो गई। होश में आने पर मैंने सोचा कि सोजानो भी भाग गया है। उसे भी यह यकीन हो गया होगा कि मैं उससे झूठ बोलकर पुलिस के पास गई थी। वह मुझे जिन्दा नहीं छोड़गा। एस्ट्रीटा ने मुझे सांत्वना दी, "फिक्र न करो, कोई भी कार्य असम्भव नहीं है। मैं उसे बचाने की पूरी चेष्टा करूंगा।"

"ठीक है, जो हो सकता है वह तो करो, मैं हमेशा आपकी कृतज्ञ रहूँगी।" मैंने उससे कहा।

एस्ट्रीटा ने बताया, "यद्यपि मैं उसका नाम नहीं जानता, फिर भी मेरी सलाह है कि पुलिस कमिश्नर को तुम वह सब कुछ बता दो, जो तुम्हें पता है, वह तुम्हें उनसे मिलते रहने की चेतावनी देकर छोड़ देंगे। अगर तुम नहीं गयीं, तो यह तुम्हारे लिए और भी बुरा होगा।"

यह सुनते ही मैं उससे विदा होकर चल दी। उसकी नजरें मेरा पीछा कर रही थीं।

❑❑❑

काफी रात बीत चुकी थी। मन्त्रालय भवन से बाहर आकर मैं पैदल ही चलने लगी। मैं फुर्ती से पीजा के निकट जा पहुँची। कुछ समझ नहीं आता था कि रैन बसेरे के लिए कहां जाऊं। गिसेला का घर यहाँ से बहुत दूर था। मेरे पैर भी जवाब दे चुके थे। इसलिए मैंने जलीन्दा के पास जाने की सोची। उसके यहाँ मैं कभी भी अपने ग्राहक के साथ रात गुजार सकती थी।

मैंने जलीन्दा के घर पहुँचकर कहा "मुझे एक रात के लिए कमरा चाहिए।"

उसने जाते ही पूछा "आज तुम अकेले ही आई हो। आओ शाम का खाना तुम मेरे साथ खाओगी। तुम्हारी तबीयत तो ठीक है ना? आजकल तुम रात को घर क्यों नहीं सोती हो?"

मैंने उससे कहा,"आज तुमसे मिलने को दिल कर रहा था, सोचा मिलती चलूं। वैसे मेरी तबियत बिल्कुल सही है, लेकिन घर पर मन नहीं लग पा रहा था।"

"लगता है किसी की लम्बी प्रतीक्षा ने तुम्हारा दिल तोड़ दिया है?"

जलीन्दा ने व्यंग्य किया।

"शायद तुम सही कहती हो।" मैंने कहा।

उसने मेरे बार-बार इंकार करने पर भी मेरे कमरे में खाने के लिए कुछ मिठाईयाँ, कुछ फल तथा सिगरेट लाकर रख दीं।

उसने कहा,"भूख लगने पर ले लेना। कोई भी जरूरत पड़ने पर मुझे बुला लेना, शर्माने की कोई जरूरत नहीं है।"

आज से पहले मैं कभी भी उसके यहाँ अकेली नहीं गई थी। मैं सोच रही थी कि 'मेरे घर से आने के पश्चात क्या हुआ होगा। मेरे आने पर सोजानो लाल-पीला हुआ होगा, पुलिस पहुंचने पर उसने उन पर फायर कर दिया होगा तथा भाग गया होगा। उसने दोबारा अपराध कर दिया था।' मैं विचारों के इसी उधेड़बुन में रात भर नहीं सो सकी थी।

अगले दिन प्रातः ही फोन की आवाज आई। जलीन्दा ने कहा,"तुम्हारा फोन है, शायद तुम्हारी मम्मी का होगा।"

मम्मी ने मुझे फोन पर बताया कि मुझे उन्हें सबकुछ बताकर ही जाना चाहिए था। वे मेरे पश्चात पुलिस आने पर काफी परेशान हुई थीं। उन्होंने कहा कि सिग्नोरा देवदाती घर पर मेरी प्रतीक्षा में है। मैंने मम्मी से बताया,"आप चिन्ता न करें, मैं जल्दी ही आ रही हूँ। उसे अभी वहीं रोक कर रखना।"

मैं फौरन रिसीवर रख कर घर के लिए चल पड़ी। मुझे मिनो के वहाँ पहुँचने पर बड़ा आश्चर्य हो रहा था। मैंने सोचा-यह सब एस्ट्रीटा ने ही इन्तजाम किया होगा। मैं उससे मिलकर बहुत सी बातें करने को बेचैन थी। मेरा मत था कि रात की घटना से सोजानो भी बदले की भावना से घूम रहा होगा। कहीं ऐसा न हो कि वह रास्ते में ही मिल जाये।

घर पहुँचने पर मम्मी ने पूछा,"अरे तुम आ गई बेटी। मुझे बता तो दिया होता कि मैं पुलिस को लेने जा रही हूँ।"

मैंने बताया,"नहीं मम्मी! मैं किसी पुलिस को लेने नहीं गई थी।"

मेरे कहने पर मम्मी को यकीन नहीं हुआ। वे यही सोचती रहीं कि पुलिस मेरे द्वारा भेजी गई थी। मैंने पूछा,"मगर उस जख्मी पुलिस वाले का क्या हुआ?"

"नहीं-नहीं, तुम्हें गलत खबर मिली है। एक पुलिसवाले ने स्वयं ही अपने एक हाथ में खरौंच बना ली थी तथा मैंने घर पर ही मरहम-पट्टी कर दी थी। वह सही हो गया था।" मम्मी ने बताया।

"अब देवदाती कहां है?" मैंने पूछा।

मम्मी ने मेरे कमरे की तरफ संकेत किया। मैंने कमरे में जाकर उससे पूछा,"आप सही तो हैं? शायद बहुत थक चुके होंगे?"

मिनो ने कहा,"हाँ मैं बिल्कुल सही हूँ। मुझे कोई थकान महसूस नहीं हो रही है।"

वह एकदम तनावमुक्त लग रहा था। मैंने उससे पूछा,"क्या तुम मुझसे प्यार करोगे?"

उसने कहा कि वह मुझे अब भी उतना ही प्रेम करता है जितना पहले करता था। मैं नहीं समझ पा रही थी कि अचानक उसमें यह परिवर्तन कैसे आ गया था? हम दोनों मिलने के लिए बेचैन थे। हम सब कुछ भुलाकर एक दूसरे में समा जाने को तैयार हो उठे। अपनी यौन-पिपासा शान्त करने के पश्चात मुझे लगा कि मेरा बिछुड़ा हुआ मिनो मुझे वापस मिल गया है। मुझे मेरी मंजिल मिल चुकी है।

बाद में मैंने उससे पूछा, "अब तो बता दो कि यह सब कैसे हो गया?"

"नहीं, कुछ भी तो नहीं हुआ है।" उसने बताया।

"मगर कुछ तो हुआ ही है? मुझसे भी छिपाना चाहते हो क्या?" मैंने जोर देकर पूछा

"मुझे उम्मीद है कि तुम्हें सारा भेद पता है। मैंने कल रात पार्टी के भेदों की पुलिस से मुखबिरी की थी। मुझे पार्टी का नेतृत्व करने के लिए खास दावेदार माना गया था और उन लोगों ने मुझे अलग कराने के लिए ही जेल भिजवा दिया था। मैंने उनके सारे रहस्य खोल दिए हैं।"

"क्या उनसे तुम्हें भय लग रहा है?" मैंने मिनो से पूछा।

"नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है, बल्कि अब मैं तनाव मुक्त हो गया हूँ। अब मैं तुम्हारे साथ भी बेफिक्री से रह सकूँगा।" मिनो ने उत्तर दिया।

"वहाँ तुमसे कौन से पुलिस वाले ने पूछताछ की थी?" मैंने मिनो से पूछा।

"वह एक लम्बी कद-काठी का जवान था। उसका सिर गंजा व गहरी आँखें थीं, वह कोई पुलिस का बड़ा अधिकारी जान पड़ता था।" मिनो ने कुछ सोचते हुए कहा।

मैंने कहा, "निःसन्देह वह एस्ट्रीटा ही रहा होगा।"

उसने मुझे समझाया कि मैं एक अमीर परिवार से सम्बन्धित हूँ और मैं गलत रास्ते पर चल रहा हूँ। मुझे यह रास्ता छोड़ देना चाहिए।

मैंने कहा,"तुम्हारे मित्र टूलियो तथा टोमासो का क्या हुआ?"

"मैं उनके विषय में कुछ नहीं जानता। वे जल्दी ही पकड़े जायेंगे।" मिनो ने उत्तर दिया।

"नहीं, तुमने यह गलत किया है। उनके भी अपने परिवार हैं।" मैंने कहा।

"क्यों नहीं पकड़े जाने चाहियें? मैंने इसमें कोई गलती नहीं की है।" मिनो बोला।

मैं उसके सामने अपने और एस्ट्रीटा के सम्बन्ध काफी देर तक न छिपा सकी। मैंने उसे बताया कि जेल से उसे किस प्रकार छुड़ाया गया। मैंने उसे बताया कि उसका व उसके दोस्तों का कुछ नहीं बिगड़ेगा।

"नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। मैं और वे दोनों एक नाव में एक साथ सफर नहीं कर पायेंगे। हम में काफी मतभेद हो चुके हैं। मेरे अन्दर का कामरेड मर चुका है। वह ऐसा नहीं चाहेंगे।" मिनो ने कहा।

मैंने कहा,"आपको जरा भी घबराने की जरूरत नहीं है। सारा कुछ सही हो जायेगा। तुम फिर से अपनी पढ़ाई करो, डिग्री लो और आराम से अपने परिवार के साथ रहो। मुझे इस जुदाई का कोई दु:ख नहीं होगा, बल्कि तुम्हें सही रास्ते पर चलते देख मुझे खुशी होगी।"

"मगर मैं इतना खुश नहीं हो सकता।" उसने कहा।

मैंने कहा,"मगर क्यों? हमें अपनी वस्तु स्थिति को कबूल कर लेना चाहिए। देखो मैंने भी बहुत सी महत्वाकांक्षाएं की थीं तथा आज मैं बरबाद हो गई हूँ। अगर तुम भी इसी प्रकार के सपने संजोते रहोगे, तो तुम्हारा अन्त भी बुरा ही होगा।"

"मगर मुझे विश्वास नहीं होता। शायद तुम नहीं जानतीं कि मैंने क्या-क्या काम किए हैं और मेरी सजा जेल ही है। अब मैं जा रहा हूँ। मैं तुम्हें एक शुभ सूचना देता हूँ कि मैंने तुम्हारे साथ रहने का दृढ़ संकल्प कर लिया है।" मिनो ने कहा।

"क्या कहा, मेरे साथ? हमारे ही घर पर?" मैंने हैरत से पूछा।

"हाँ...हाँ तुम्हारे ही साथ। मेरे घर से जो भी पैसा आता है उससे ठीक से गुजारा कर लेंगे।" मिनो ने यकीन के साथ कहा।

मैं उससे वायदा नहीं कर सकी थी। मैं ख्यालों की उधेड़बुन मुं लगी थी। मैं अपने मन में कोई फैसला न ले सकी कि उसे क्या उत्तर दूं?

□□□

एस्ट्रीटा की सलाह के मुताबिक मैं दोपहर को पुलिस कमिश्नर से मिलने गई। मैं सोजानो के बारे में पुलिस को बयान देना चाहती थी। पुलिस कमिश्नर लगभग 50 साल का खूबसूरत और चुस्त-दुरुस्त व्यक्ति था। वह स्वभाव से थोड़ा हंसमुख लगता था।

मैंने जैसे ही उसे आने का मकसद बताया, वह बड़ा खुश हुआ। उसने कहा, "आज हम तुम्हारा सुबह से ही रास्ता देख रहे हैं।"

मैंने कहा, "मैं जल्दी आने में असमर्थ थी।"

पुलिस कमिश्नर ने मेरे मुख पर प्रश्नात्मक दृष्टि डालते हुए कहा, "कहिए, आपको क्या कहना है?"

"सर ! मैं उसका नाम तो नहीं जानती। वैसे उसने मुझे कारसो से लिया था।" मैंने विनम्रतापूर्वक बताया।

"तो वह आपके कमरे में कैसे पहुँचा?" पुलिस कमिश्नर ने पूछा।

फिलहाल मुझे एक आवश्यक काम से बाहर जाना था। इसलिए मैं उसे कमरे पर छोड़कर बाहर चली गई थी।" मैंने साहस बटोरकर कहा।

"लेकिन उसका तो विचार था कि तुम पुलिस को सूचित करने गई थीं। वह जोर से चीखा भी था।" पुलिस कमिश्नर ने रौबदार आवाज में पूछा।

"सर! यह तो मैं जानती थी।" मैंने रुमाल से अपना मुँह साफ करते हुए कहा।

"क्या तुम यह भी नहीं जानती थीं कि वह एक खतरनाक व्यक्ति है। उसने पुलिस पर फायर किया था तथा वह तुम्हारी जान भी ले सकता

था।'' पुलिस कमिश्नर ने पूछा।

''जी वास्तव में मुझे इसका एहसास था।'' मैंने दृष्टि झुकाकर कहा।

''तो क्या तुम नहीं बताओगी कि वह आदमी कौन है? तुम्हें उससे डरने की जरा भी जरूरत नहीं है। हम उसे गिरफ्तार कर लेंगे।'' पुलिस कमिश्नर ने सीना फुलाकर कहा।

''सर! मैं आपसे पहले ही बता चुकी हूँ कि मैं उसका नाम नहीं जानती। मेरे पास आने वाले ग्राहकों के नामों की लिस्ट बहुत लम्बी होती है। प्रत्येक ग्राहक का नाम याद रख पाना मुश्किल ही नहीं असम्भव भी है।'' मैंने कहा।

''मगर हम उसके नाम व काम के बारे में सब कुछ जानते हैं।'' पुलिस कमिश्नर ने कहा।

''ओके, फिर आप मुझे क्यों परेशान कर रहे हैं?'' मैंने आग्रहपूर्वक कहा।

''हम यह भी जानते हैं कि उसने पुलिस पर फायर क्यों किया है तथा वह क्यों भागकर गया है। उसके विषय में तुम्हें भी अवश्य ही जानकारी होगी।'' वह मेरे मुख पर आने-जाने वाले भावों को पढ़ रहा था।

''सर! आप मेरी बात का विश्वास कीजिए कि मैं इससे अधिक कुछ नहीं जानती।'' मैंने मायूसी से कहा।

वह कमरे में टहलने लगा। फिर झटके से घूमकर मेरा मुख ऊपर करके बोला, ''तुम जानबूझकर छिपा रही हो। अगर मेरी जगह कोई और होता, तो तुम्हारा बहुत बुरी हालत होती।''

''ठीक है सर! आप कुछ भी कर सकते हैं।'' मैंने मजबूर होकर कहा।

वह बार-बार कुछ कहने के लिए उकसा रहा था। मैंने कहा, ''मुझे उसके बारे में इससे ज्यादा जानकारी नहीं है। अब मैं जाना चाहूँगी।''

पुलिस कमिश्नर ने कुछ सोचकर कहा, ''अच्छा तुम जा सकती हो। लेकिन तुम राजनैतिक लोगों के साथ रही हो। इसका अन्जाम जानती हो?''

पुलिस कमिश्नर से आज्ञा लेकर मैं बाहर आ गई। मुझे डर था कि सोजानो मुझे और मिनो दोनों को मार डालेगा। मैंने सोचा, क्यों न मैं मिनो को साथ लेकर आत्महत्या कर लूँ। लेकिन इसमें दोनों का एकमत होना आवश्यक है।

मुझे घर जाते वक्त चक्कर आने लगे। मैंने एक डॉक्टर से अपना चैकअप कराया। उसकी रिपोर्ट को सुनकर मैं प्रसन्नता से पागल हो उठी उसने कहा, ''आप माँ बनने वाली हैं, लगभग दो महीने का गर्भ है। आपको इससे कोई पछतावा तो नहीं? क्या तुम जानती हो कि इसका पिता कौन है?''

''जी मैं बहुत प्रसन्न हूँ। मुझे कोई पश्चाताप नहीं है। सोजानो इस बच्चे का पिता है।'' मैंने कहा।

मैंने सोचा, कि बच्चा आखिर मेरा ही तो है। मैं इसे पढ़ाऊंगी और अच्छे संस्कार दूँगी। मैं काफी प्रसन्न थी। घर पहुँचकर मैंने सामने ही मिनो बैठा देखा। मैंने जाते ही उसे 'गुड ईवनिंग' कहा। वह नशे में था। वह अपना

सूटकेस व दूसरा सामान भी लाया था। उसने आते ही मम्मी को पटा लिया था।

मम्मी ने कहा, ''एड्रिना इसलिए पैदा नहीं हुई कि वह ऐसा जीवन बिताए जैसा कि वह बिता रही है। उसे भी बेहतर जीवन बिताने का अधि कार है। उसमें क्या कमी है? बेपनाह रूप-यौवन की प्रतिमा है वह और अच्छी भी है। अगर सुन्दर तथा बुरी होती तो यह भी महलों की रानी बन सकती थी।''

''क्या हम घर को बोर्डिंग हाऊस बनाने जा रहे हैं? मम्मी ने व्यंग्यात्मक स्वर में कहा।

''मम्मी! क्या तुम्हें उसका आना पसन्द नहीं है? वह यहाँ बसने के लिए नहीं आया, चला ही जायेगा।'' मैंने मम्मी से कहा।

आज हम पहली बार साथ-साथ घर पर मम्मी के साथ खाना खा रहे थे। वह मजाक करने लगा, ''मैं जल्दी ही काम करना आरम्भ कर दूँगा। मम्मी आगे से घर का काम किया करेंगी।''

''अच्छा क्या कार्य कर रहे हो?'' मम्मी ने मिनो से कहा।

''एड्रिना के दोस्त मिस्टर एस्ट्रीटा मुझे काम दिला रहे हैं।'' मिनो ने उत्तर दिया।

मैं उसकी इस व्यंग्यात्मक बातों को समझ रही थी। खाना खाने के बाद हम दोनों अपने कमरे में चले गए। मुझे बार-बार होने वाले बच्चे की फिक्र हो रही थी। मैंने मिनो से कहा, ''कृपया इस तरह की बातें मम्मी से न किया करो। वह तुम्हारे विषय में अभी कुछ नहीं जानती हैं। मेरे सीने में तुम्हारी एक-एक बात सुई की तरह चुभ रही थी।''

मैं उससे ज्यादा बहस न करके वहाँ से उठकर दूसरे काम में जा लगी। हम दोनों अलग-अलग ख्यालों में खोये हुए थे। मैं बच्चे के बारे में सोचती हुई लोरियाँ दोहराने लगी थी, ''विला ट्रिस्टी, विला ट्रिस्टी...।''

वह मुझसे बोला कि मैं यों ही लोरियाँ सुनाती रहूँ। मुझे अच्छा लगता है। मैंने कहा कि मैं अच्छा नहीं गाती। मैंने फिर से गाना शुरू किया। मुझे बचपन याद आ रहा था, मम्मी भी ऐसे ही गाती थीं। जब मुझे गाते हुए एक घंटा बीत गया उसने कहा, ''अब बन्द भी करो, बोर हो रहे हैं।''

मैंने वहाँ दो सूटकेस रखे देखे। इनमें एक पर कापरी का लेबल लगा हुआ था। मैंने उससे पूछा कि क्या तुम भी कापरी गये थे? उसने स्वीकृति में सिर हिला दिया। मैंने उससे कहा, ''क्यों न हम लोग भी कापरी ही चलें?''

हमें इस तरह बातचीत करते हुए शाम हो गई तथा हम शान्तिपूर्वक बिस्तर पर जा लेटे।

□□□

मैंने अगले दिन मिनो का सूटकेस खोलकर देखा। उसमें पुस्तकें व अन्य कागज थे। उसने कहा कि इन्हें छोड़ दो, ये मेरे किसी कार्य के नहीं हैं। मैंने उससे पूछा कि क्या तुम्हें आगे पढ़ाई पूरी नहीं करनी? उसने सख्ती

से इंकार कर दिया। मैंने आगे कुछ नहीं कहा और सूटकेस बन्द करके वहीं रख दिया। वह आज बहुत सुस्त था। उसने शेव भी नही बनाई थी। उसने अपनी परेशानी का जिक्र तक नहीं किया।

शाम को आकर उसने बताया कि वह कमरा छोड़ देगा। मैं उससे यह भी पूछने की हिम्मत न कर सकी कि तुम्हारी भविष्य की क्या योजना है, मैं तुम्हारे साथ चल सकती हूँ अथवा नहीं। न जाने वह बिना कुछ बताये कहाँ चला गया था। शाम को वह सोने के वक्त नशे की हालत में लौटा था।

''ठीक है, अब तुम दूसरी औरतों के पास जाने लगे हो?'' मैंने मिनो से पूछा

उसने मुस्कराते हुए कहा, ''जैसे कि यहाँ पर आता रहता हूँ वैसे तुम तो मेरे पास ही हो।''

मुझे लग रहा था कि उसका मेरे प्रति लगाव बहुत कम हो गया है। मैंने अचानक क्रोध में कहा, ''देखो, मैं एक निर्धन लड़की हूँ, तथा महत्वहीन हूँ, लेकिन मैं सिर्फ प्यार ही चाहती हूँ, इसके सिवाय मुझे कुछ नहीं चाहिए।''

वह मेरी तरफ देखकर बोला, ''प्यार...प्यार, क्या इसके सिवाय भी कुछ और है?''

इसी तरह दिन बीतते रहे। उसने पढ़ाई-लिखाई के स्थान पर कुछ नयी आदतें पाल ली थीं। वह दिन भर सिगरेट फूँकता, नशा करता और प्यार करता था। मैं भी मायूस होती जा रही थी। कमरा अधजली सिगरेटों व धुएं से भरा रहता। मुझे ऐसा लगता था कि उसे यह फिक्र थी कि उसके पुलिस को दिये गये बयान से वह कभी भी फंस सकता है।

एक रोज मैंने उससे कहा, ''अगर आपको यह दुःख है कि आपके बयान एस्ट्रीटा ने नोट कर लिए हैं तो मैं एस्ट्रीटा से कहकर उनको समाप्त करा दूँगी।''

उसने कहा कि तुमने ऐसा क्यों सोचा। मैंने उससे बताया कि एक रोज तुमने बताया था कि शायद यही दुःख मुझको परेशान कर रहा है। उसने कहा कि यह सब कैसे मुमकिन हो सकेगा। मैंने उससे कहा कि यह सूचना मैं उसे फोन पर दे दूँगी व उसके साथ मन्त्रालय जाकर देख आऊँगी। उसने बताया कि वह तुम्हें कुछ नहीं बतायेगा तथा अपनी योजना के अनुसार काम करता रहेगा।

मैंने उससे पूछा कि उसे घर पर ही बुला लें? उसने कहा कि जैसा तुम सही समझो, करो। हम फौरन ही टेलीफोन बूथ पर गए। वहाँ से एस्ट्रीटा को फोन पर खबर दी। उसने कहा कि वह सिर्फ मेरे घर पर ही दोपहर बाद मिल सकता है। वह हमसे कैफे में भी नहीं मिलना चाहता था।

मैंने अनुभव किया कि वह अपने अहसान का बदला चाहता है--''मैं जानती हूँ उसे क्या चाहिए।'' मैंने मिनो से कहा तथा घर लौट आये थे,

''किसी भी स्त्री को कोई भी बलपूर्वक प्रेम के लिए तैयार नहीं कर सकता है। उसने एक बार मुझे तब ब्लैकमेल किया था, जबकि मुझे अहसास नहीं था।''

''मगर उससे प्यार करने में तुम्हें क्या परेशानी है?'' मिनो ने कहा।

''क्योंकि मैं तुम्हें दिल से प्रेम करती हूँ।'' मैंने कहा।

''यदि उसने रिपोर्ट नष्ट करने से इंकार किया तो?'' मिनो ने आशंका व्यक्त की।

''फिक्र मत कीजिए, वह रिपोर्ट नष्ट करेगा।'' मैंने पूरे आत्मविश्वास के साथ कहा।

''मगर वह सिर्फ इसी शर्त पर मानने को तैयार हो तो?'' मिनो ने कहा।

''मैं वैसा ही करूंगी, जैसा कि आप चाहेंगे।'' मैंने सीढ़ियाँ चढ़ते हुए बताया।

वह मेरी कमर में हाथ डालकर बोला, ''अच्छा मैं चाहता हूँ कि तुम एस्ट्रीटा के पास नहीं जाकर उसे ही यहाँ बुला लो। जैसे ही तुम भीतर होंगे, मैं उसे गोली मार दूँगा। उसे बिस्तर के नीचे दबाकर हम दोनों बिस्तर पर प्रेम करेंगे।'' यह कहते हुए उसकी आँखों में काफी चमक थी। मैं भयभीत हो चुकी थी कि उसकी सलाह के पीछे उसका क्या मकसद छिपा है।

मैंने कहा, ''मिनो भगवान के वास्ते कभी ऐसी बात ख्वाब में भी न सोचना।''

''अरे नहीं, मैं तो ऐसे ही मजाक कर रहा था।'' मिनो ने कहा।

मुझे डर था कि कहीं वह सच्चाई में न बदल जाये। मैंने मम्मी को सामान लेने बाहर भेज दिया। मेरा ख्याल था कि एस्ट्रीटा दस्तावेज मिटा देगा व मिनो की फिक्र समाप्त हो जायेगी। हमारे लिए अब दो ही समाधान थे। या तो विवाह करके हम एक हो जायें या फिर बिल्कुल अलग हो जायें। पहला थोड़ा मुश्किल था। वह धूम्रपान करता हुआ इधर-उधर कमरे में घूम रहा था। मैंने कहा, ''जरा सुनिये, मुझे आपसे कुछ आवश्यक बातें करनी हैं।''

उसने कहा कि कहो क्या कहना है। मैंने उससे बताया, कि मेरी तबियत कुछ दिन से सही नहीं थी। मैं डॉक्टर के पास गई थी। उसने मुझे बताया है कि मैं दो महीने से गर्भवती हूँ।

''अच्छा तो तुम गर्भवती हो?'' वह हैरानी से बोला।

''हाँ, और मुझे यकीन है कि वह तुम्हारा ही है।'' मैंने कहा।

''अच्छा तो यह एक कारण और होगा और मुख्य कारण होगा जिससे तुम मुझे भूल जाओ तो अच्छा ही होगा।'' मिनो ने कहा।

''क्यों? तुम्हारा क्या अर्थ है मैं कुछ समझी नहीं।'' मैंने कहा।

''मैं पीटर फैमीलीयास बनने जा रहा हूँ। मुझे एक बेकसूर जीव के लिए भी वही करना होगा जो तुम्हारे प्रेम के साथ नहीं कर सका हूँ।'' मिनो ने कहा।

"ठीक है जैसा तुम्हें अच्छा लगे। मैं तुमसे सच्चाई बता चुकी हूँ।" मैंने कहा।

"एक बच्चा ही जीने का सहारा हो सकता है। अक्सर लोग सिर्फ बच्चा ही प्रभु से मांगते हैं और कहते हैं कि इसके बदले में चाहे सब कुछ ले ले। तुम भी इस बच्चे के लिए चोरी कर सकती हो तथा खून कर सकती हो।" मिनो ने कहा।

"किसने कहा कि मैं बच्चे के लिए चोरी अथवा खून कर सकती हूँ? मैं तो सिर्फ तुम्हें प्रसन्न देखाना चाहती हूँ।" मैंने मिनो से कहा।

"अगर तुम खुश हो, तो मैं भी खुश हूँ, क्या तुम खुश हो?" मिनो ने पूछा।

"हाँ, मैं खुश हूँ, क्योंकि मुझे बच्चों से प्यार है और क्योंकि यह बच्चा तुम्हारा है।" मैंने कहा।

उसने हँसकर कहा कि तुम काफी तेज हो। मैंने पूछा कि वह कैसे? वह जोर से चिल्लाया, "अपनी गरीबी को स्वीकारने में तुम्हें शर्म नहीं आनी चाहिए। इसके लिए तुम्हें जीना है और जीना ही पड़ेगा।"

कुछ देर पश्चात उसने अपनी भूल का एहसास किया और बोला, "मुझे क्षमा कर दो। अगर तुम मुझे छोड़ना चाहो, तो मैं अभी चला जाता हूँ। तुम जैसा चाहो करो।" यह सुनकर मैं चुप हो गई।

तभी कॉलबैल बजी। मैं बोली, "एस्ट्रीटा आया है, जल्दी से चले जाओ।"

मैंने बिस्तर सही कर गेट खोला तो सामने सोजानो खड़ा था। मैंने गेट बन्द करना चाहा मगर उसने पूरी ताकत से खोल दिया।

मैंने उससे पूछा कि तुम यहाँ क्यों आये हो? उसने कहा कि तुम मेरे विषय में पुलिस को सूचना देने गयी थीं न? मैंने कहा कि मैंने ऐसा कुछ नहीं किया। उसके दोबारा पूछने पर मैंने बताया कि मैं तुम्हें छोड़कर इसलिए गई थी कि मैं किसी और से प्रेम करती थी। मैं पुलिस के पास नहीं गई थी। पुलिस तो स्वयं ही आई थी, वह किसी और की खोज में थी।

"तुम भगवान को धन्यवाद दे सकती हो कि तुम एक औरत हो।" वह मुझे तंग कर रहा था।

मैंने गुस्से में कहा कि बेवकूफ यहाँ से चले जाओ। उसने कहा कि मूर्ख मैं नहीं तुम हो।

मैंने चिल्लाकर कहा, "कुत्ते यहाँ से चला जा वर्ना तेरा हुलिया बिगाड़ दूँगी।"

ठीक तभी एस्ट्रीटा आ गया। मैंने हिम्मत करके कहा, "इस दुष्ट से कहो कि यह तुरन्त चला जाये। न जाने यह मुझसे क्या चाहता है?" सोजानो ने पीछे मुड़कर नहीं देखा था।

एस्ट्रीटा ने उससे कहा कि तुम यहाँ से इसके कहने पर क्यों नहीं चले जाते? तुम्हें किस चीज की प्रतीक्षा है? सोजानो ने कहा कि मुझे इससे कुछ आवश्यक बातें करनी हैं। अच्छा होगा कि तुम यहाँ से अभी चले जाओ।

कोई भी पीछे हटने का नाम न लेता था। काफी देर इन्तजार करने के बाद एस्ट्रीटा को जान से मार देगा। मगर एस्ट्रीटा ने उसे वश में करके उसे बाहर निकाल दिया तथा गेट बन्द कर दिया।

एस्ट्रीटा के द्वारा पूछने पर मैंने बताया, ''मैं तो उसे कारलो के नाम से जानती थी। मुझे उसका नाम नहीं मालूम।'' मैंने झूठ बोल दिया था।

''कारलो।'' वह मेरे पास आ गया था। मैं खिड़की के पास खड़ी बाहर की तरफ देख रही थी। उसने मेरी कमर में हाथ डालकर पूछा, ''तुम कैसी हो?''

''मैं बिल्कूल सही हूँ।'' मैंने कहा।

इसके पश्चात मैंने उससे कहा, ''मैंने आपको एक एहसान करने के लिए बुलाया था। आपको वह व्यक्ति तो याद होगा जिससे जेल में सवाल किए थे व मेरे कहने पर छुड़ाया था?''

''हाँ, मगर वह लौटकर नहीं आया।'' एस्ट्रीटा ने कहा।

''मैं उसकी साक्षात्कार सच्चाई जानना चाहती थी कि क्या वह बहुत डरा हुआ था?'' मैंने कहा।

''यह तो मैं नहीं जानता था कि वह डरा हुआ था या नहीं, लेकिन उसने पहली पूछताछ में ही सच्चाई उगल दी थी। उसके खिलाफ़ कोई भी सबूत न था।''

मैंने कहा, ''मानो कि तुमने वह सब बयान रिकार्ड कर लिये हैं, तुम उन्हें मेरे कहने से समाप्त कर दो।''

''तुम्हें उसी ने यहाँ भेजा है?'' वह बोला।

''नहीं, मेरा ख्याल है कि मैं कसम खाकर कहती हूँ कि मैं इसी वक्त मर जाऊँ, अगर मैंने कुछ भी झूठ बोला हो।'' मैंने कहा।

''वह कहते हैं कि पुलिस रिकार्ड खत्म हो जाये और उनकी गतिविधियाँ चलती रहें। मगर तुम मुझे क्या दोगी?'' एस्ट्रीटा ने कहा।

''कुछ भी नहीं।'' मैंने कहा, ''इस समय कुछ भी नहीं।''

''यदि मैं इंकार कर दूँ तो?'' वह बोला।

''मुझे बहुत दुःख होगा, क्योंकि मैं उसे प्यार करती हूँ और जिससे उसे दुःख होता हो वह वस्तु मेरे लिए भी कष्टप्रद होगी।'' मैंने कहा।

''मगर तुमने तो कहना था कि...।'' वह बोला।

''अब मैं अपना ख्याल बदल चुकी हूँ।''

''मगर क्यों?'' एस्ट्रीटा ने पूछा।

''क्यों की कोई भी वजह नहीं है।'' मैंने कहा।

वह बोला, ''वह मनहूस दिन था, जिस दिन मैं तुमसे मिला था और मैं पैदा हुआ था। तुम्हारे दोस्त को डरने की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि वह साक्षात्कार लिखा ही नहीं गया।''

वह अलविदा कहकर चला गया था। मैं उसका अभिवादन कर रही थी। मैंने मिनो को अपने हाथ में रिवाल्वर लिए देखा। मैंने पूछा, ''यह क्या

करने जा रहे हो?'

''मैंने एस्ट्रीटा को मारने का दिल बना लिया था। क्या तुम्हें यकीन है कि मुझसे सम्बन्धित कोई भी कागज पुलिस के पास नहीं है?'' मिनो ने कहा।

मैंने कहा, ''तुमने जो भी सोचा था वह पूरा क्यों नहीं किया?''

''वह मनहूस दिन पैदा हुआ था, अत: उसे एक दो-साल और शाप में ही जीने दो।'' उसने कहा, ''वास्तव में एस्ट्रीटा वीर है। उसने शक्तिशाली सोजानो को इस तरह मारा था, जैसे कि मालिक नौकर को मारता है।''

''तुम क्या समझते हो? सोजानो क्या करेगा?'' मैंने पूछा।

''कौन जाने क्या करेगा?'' वह बोला।

हम खाना खाने के लिए मम्मी के कमरे में जा पहुँचे। मेज पर ताश पड़े देखकर हम दोनों खेलने लगे। जब मैं बार-बार हारने लगी, मैंने ताश फेंक दिए। मैं शान्त भाव से बैठ गई।

मैं बार-बार यही सोच रही थी कि सोजानो का अगला कदम कैसा होगा?

''क्या वह एस्ट्रीटा को मार देगा?'' मैंने सोचा।

''मुझे कोई हैरत नहीं होगी यदि उसने ऐसा कर कर दिया।'' मिनो ने कहा।

''हमें एस्ट्रीटा को सतर्क कर देना चाहिए। वह एस्ट्रीटा को मारने की कोशिश करेगा।'' मैंने मशवरा दिया।

''अरे यह ख्याल पहले क्यों नहीं आया था?'' मिनो ने कहा।

हमने शीघ्रतापूर्वक एक टैक्सी ली तथा एस्ट्रीटा के पते पर चल दिये। जैसे ही हम उसके पते घर पहुँचे हमें काफी भीड़ लगी दिखाई दी। पूछताछ करने पर पता चला कि किसी ने एक आदमी को सीढ़ियों से नीचे फेंक दिया है। मगर भीड़ में साफ नजर नहीं आया था कि कौन नीचे गिरा था। मैंने मिनो को आवाज दी, मगर वह गायब हो चुका था।

मैं घर लौट आई। मैं पूरी रात उसकी प्रतीक्षा करती रही। अगले रोज अखबार में मैंने एस्ट्रीटा की मौत की खबर छपी हुई देखी। सोजानो ने एस्ट्रीटा का घर तक पीछा किया तथा एस्ट्रीटा के घर से निकलते ही उसको सीढ़ियों पर रखकर दबा दिया था। उसकी दर्दनाक मौत के पश्चात उसे सीढ़ियों पर नीचे फेंक दिया था। मैं इसे पढ़ते ही मूर्छित हो गई।

मिनो अगले दिन तक भी नहीं लौटा था। उसे खोजने का कोई उपाय नजर नहीं आ रहा था। तीसरे दिन दोपहर पश्चात मम्मी मेरे कमरे में आई और मेरे बिस्तर पर एक लिफाफा फेंककर चली गई थीं। यह मिनो द्वारा लिखा गया खत था। मम्मी के जाने के पश्चात मैंने पत्र पढ़ा। उसमें लिखा था–

''प्यारी एड्रिना!

तुम जब तक यह खत प्राप्त करोगी, मैं मर चुका होऊँगा। मैंने जब

पिस्टल खोलकर देखी तो उसमें गोली नहीं थीं। शायद तुमने खतरा जानकर निकाल ली होंगी। मुझे तुमसे बड़ा प्यार था। तुम्हें पिस्टल का ठीक से पता नहीं था। उसमें एक गोली बाकी थी जो कि तुम न जान सकीं। मुझे उससे अपना फैसला पूरा करने में सहायता मिल गई। वैसे तो मरने के अनेक उपाय थे।

जैसा कि मैंने तुमसे कहा, मैं कुछ दिन से तुम्हें चाहने लगा था। आत्म विवेचन के पश्चात मैंने यही पाया कि मुझे तुमसे नफरत करनी चाहिए थी। क्योंकि मुझे तुम्हारी हर बात नापसन्द थी। मेरे साक्षात्कार में जो बातें सामने आई उनसे मेरा चरित्र उजागर होता था। यह मेरी कायरता का ही सवाल नहीं था, मेरे मुखबिर होने की भी बात नहीं थी, बल्कि मेरी ख्वाहिशों में, महत्वाकांक्षाओं में रुकावट आ गई थी तथा रहस्य भी उजागर हो चुका था। मुझे ऐसा यकीन है कि मेरे मरणोपरान्त सब ठीक हो जायेगा।

घबराओ नहीं, अब मैं तुमसे घृणा नहीं करता हूँ। अब मैं तुम्हें इतना प्यार करता हूँ कि तुम्हारे बारे में सोचते-सोचते मैंने जिन्दगी से भी समझौता कर लिया है। अगर सम्भव होता तो तुम्हारी महत्वाकांक्षा के अनुसार मैं जीवित रहता, तुमसे शादी भी करता तथा हम सुखी भी रह सकते थे, मगर वास्तव में यह सब मुमकिन ही नहीं था।

मैंने उस भविष्य में होने वाले अपने बच्चे को याद करते हुए भी दो खत लिख छोड़े हैं। एक अपने परिवार के नाम और दूसरा एक वकील मित्र को। वे काफी नेकदिल इन्सान हैं। मुझे उम्मीद है, वे अपना फर्ज अवश्य निभायेंगे। यदि वे मना करते हैं, तो मेरा वकील मित्र जोकि मैं समझता हूँ अदालत में जाने की जल्दी नहीं करेगा। उस पर विश्वास करना। मेरे बारे में सोचती रहना, मेरा तुम्हें आखरी चुम्बन! मिनो

नोट—मेरे वकील का नाम फ्रेसको ल्यूरो है। और वह वाया कोला डि रियान्जो में रहता है।''

खत को पढ़कर मैं काफी देर तक फूट-फूटकर रोती रही। अन्त में हाथ-मुँह धोकर उदास मन से मैं पुलिस कमिश्नर से जाकर मिली। मेरी दु:ख भरी कहानी को सुनकर उसने कहा, ''हमें उसके विषय में अभी कोई खबर नहीं मिली है। तुम उसको मरा चाहती हो या जिन्दा?''

मैंने कहा, ''मैं तो उसे जिन्दा ही चाहती हूँ। मगर मुझे भय है कि वह अब तक मर चुका होगा।''

उसने कहा, ''चिन्ता न करो, हो सकता है कि खत लिखते समय आत्महत्या का विचार रहा हो मगर बाद में उसका यह विचार बदल गया हो।''

''हाँ ऐसा भी हो सकता है। आखिर वह भी तो एक इन्सान है।'' मैंने कहा ।

''तुम आज शाम को आ जाना, अगर हमें कोई सूचना होगी, तो अवश्य देंगे।'' पुलिस कमिश्नर ने कहा।

इसके पश्चात मैं गिरजाघर गई, जहाँ मेरे संस्कार हुए थे। मैं घुटनों

के बल फर्श पर माँ मेडोना के आगे बैठी थी। मुझे लगा माँ ने मेरी दुआ कबूल नहीं की थी। मैं शाम में गिरजाघर से ही पुलिस कमिश्नर के पास चली गई। उसने मुझे एक फोटो दिखाकर कहा, ''देखिये इस व्यक्ति ने स्टेशन के पास होटल में खुदकशी कर ली है। मगर इसकी शिनाख्त नहीं हो सकी है।''

यह फोटो मिनो का ही था। मैं घर लौट आई। मैं मम्मी की गोद में सिर रखकर रोने लगी। मैंने उनसे कहा कि मैंने मिनो को प्रेम किया और गर्भवती हूँ। मैंने बच्चे का पिता सोजानो होने का जिक्र तक नहीं किया। मैंने कहा कि अब मैं अपनी जीवन-शैली बदल दूँगी। अथवा तुम्हारे साथ काम करूंगी या दोबारा नौकरी कर लूँगी।

मम्मी ने हौसला दिलाते हुए कहा, ''जो भी करो बहुत सोच समझकर करना, जल्दबाजी में कुछ नहीं करना। मैं जो कुछ भी अब तक करती रही, केवल देखने के लिए कि मेरा परिवार मेरे लिए क्या करता है।''

मैंने कहा,''यही प्रश्न मेरे बच्चे से भी सम्बद्ध है। मेरे अपने जीवन से इतना नहीं।''

अगली सुबह को मिनो के दोनों दोस्त आए जिन्हें उसने पत्र में लिखा था कि वे सतर्क रहें, उसने पुलिस के सामने पार्टी का भेद खोल दिया है।

मैंने उनसे कहा, ''अगर आप वफादार हैं तो फिक्र की आवश्यकता ही नहीं है। मिनो का साक्षात्कार सिर्फ एस्ट्रीटा ने लिया था और उसने रिकार्ड भी नहीं किया था तथा अब वह मर चुका है।''

उनमें से एक ने कहा, ''सही है उसे हमसे विश्वासघात करने का यही अन्जाम मिलना चाहिए था।''

मैंने उन्हें समझाया कि वास्तव में मिनो का मकसद तुम्हें नुकसान पहुँचाना नहीं था।

वे दोनों चले गए।

एकान्त होने पर मैंने मिनो और अपने होने वाले बच्चे के बारे में सोचा, ''मेरा बच्चा एक खूनी तथा एक वेश्या का बच्चा होगा। कोई भी आदमी दुनिया में दूसरे को मार सकता है जबकि औरत सिर्फ धन के लिए अपना जिस्म भी बेच सकती है।''

मैंने दृढ़ संकल्प किया कि अगर लड़का हुआ तो मैं उसका नाम याकोमो ही रखूँगी, जो कि मिनो की यादगार होगा और अगर लड़की हुई तो उसका नाम लैटीशिया होगा। क्योंकि जो मैं चाहती थी, वह नहीं कर पाई थी। एक सुखी-सम्पन्न तथा प्रसन्न जीवन। मेरा विश्वास है कि मैं यह सब मिनो के परिवार की सहायता से अवश्य प्राप्त कर सकूँगी।

समाप्त

रोम की नारी



एक ऐसी महत्वाकांक्षी नवयुवती की कथा, जिसे हर नए मर्द से दोस्ती गांठने और उसका संसर्ग प्राप्त करने में आनन्द आता था। अपने रूप और जवानी का जाल वह ऐसे मर्दों पर फेंकती थी, जो धनवान भी हों और समाज में इस तरह प्रभावशाली भी हों कि उसे आगे बढ़ने का मार्ग प्रशस्त कर सकें। अपने रूप और यौवन के बल पर वह एक दिन 'रोम की नारी' जैसे महत्वपूर्ण पद को विभूषित करने लगी।

रवि पॉकेट बुक्स

A.H.W. RAVI SERIES